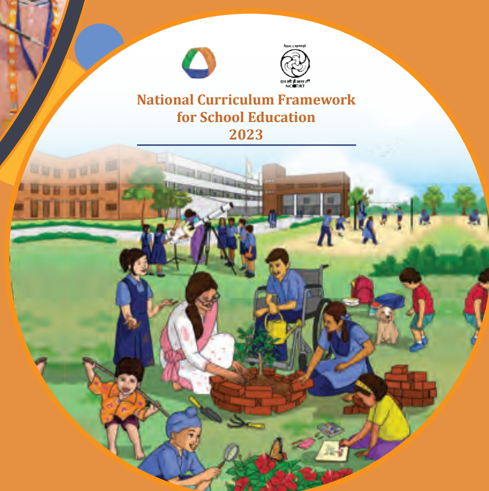

रा.शै.अ.प्र.प.

वार्षिक रिपोर्ट 2023-24

रा.शै.अ.प्र.प.

वार्षिक रिपोर्ट 2023–2024

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

जनवरी 2025
माघ 1946

PD 3H BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् 2025

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा राज प्रिंटर्स, ए-9, सेक्टर बी-2, ट्रोनिका सिटी, लोनी, गाजियाबाद (उ.प्र.) 201102 द्वारा मुद्रित।

आमुख

वर्ष 2023–24 के दौरान स्कूल और अध्यापक शिक्षा से संबंधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में रा.शै.अ.प्र.प. की असाधारण यात्रा का अनावरण करते हुए मैं अत्यंत गर्व और संतुष्टि के साथ प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। यह रिपोर्ट सभी के लिए समान और उच्च गुणवत्तायुक्त अधिगम अनुभव प्रदान करने के प्रति हमारी दृढ़ प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

रा.शै.अ.प्र.प. ने पूरे भारत में शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण प्रगति की है, जिसका उदाहरण परिषद् द्वारा हाल में अर्जित की गई उपलब्धियाँ हैं। इसका उद्देश्य असाधारण गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, ताकि विद्यार्थियों को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों में निहित रखते हुए प्रौद्योगिकी-संचालित दुनिया के लिए तैयार किया जाए। इन प्रयासों में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) तथा विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का विकास शामिल है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के साथ संरेखित किए गए हैं। आधारभूत अधिगम के लिए जादुई पिटारा जैसे नवाचार तथा पी.एम. ई-विद्या, स्वयं मूक, ई-पाठशाला और दीक्षा जैसे डिजिटल प्रयासों से शैक्षिक पहुँच और गुणवत्ता का विस्तार किया गया है। रा.शै.अ.प्र.प. ने निष्ठा के माध्यम से समग्र शिक्षक प्रशिक्षण और सीखने के प्रतिफलों के माध्यम से विद्यार्थी आकलन तक अपने प्रयासों को विस्तारित किया है। योग ओलंपियाड, कला उत्सव, राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी और राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रम रचनात्मकता और कौशल विकास को बढ़ावा देने की दिशा में रा.शै.अ.प्र.प. की प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं।

इसके अतिरिक्त, रा.शै.अ.प्र.प. मनो-सामाजिक सहायता के लिए 'मनोदर्पण' और मानसिक स्वास्थ्य सत्रों के लिए 'सहयोग' जैसी पहलों के माध्यम से विद्यार्थियों के कल्याण को प्राथमिकता देता है। रा.शै.अ.प्र.प. में स्थापित राष्ट्रीय आकलन केंद्र — परख विद्यार्थी-आकलन के लिए एन.ई.पी. 2020 के तहत अनिवार्य मानदंड और मानक निर्धारित करता है जो योग्यता-आधारित आकलन, बड़े पैमाने पर उपलब्धि सर्वेक्षण, स्कूल बोर्डों की समानता और सभी शैक्षिक स्तरों के लिए समग्र प्रगति कार्ड तैयार करने पर केंद्रित है। इसके साथ ही रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा परिषद् की कार्यक्रम सलाहकार समिति और समग्र शिक्षा, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के परियोजना अनुमोदन बोर्ड द्वारा अनुमोदित अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रमों के माध्यम से शैक्षिक उत्कृष्टता का नवाचार और समर्थन जारी रखा गया है।

2023–24 की वार्षिक रिपोर्ट में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों, कार्यपुस्तिकाओं, पूरक पठन सामग्रियों, शिक्षक संदर्शिकाओं और जर्नलों सहित प्रमुख प्रकाशनों का विवरण दिया गया है। इसमें विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भाषा, व्यावसायिक शिक्षा, डिजिटल और समावेशी शिक्षा जैसे विभिन्न क्षेत्रों में शोध गतिविधियों के साथ-साथ अल्पकालिक और दीर्घकालिक क्षमता निर्माण कार्यक्रमों को भी शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त, रिपोर्ट में स्कूलों और अध्यापक शिक्षा संस्थानों के लिए शिक्षा में नवाचारी अभ्यासों और प्रयोगों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना के क्रियान्वयन और प्रख्यात व्यक्तित्वों पर अभिव्यक्ति शृंखला जैसे विस्तार कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला गया है, जबकि रा.शै.अ.प्र.प. के संकाय और अतिथि शिक्षाविदों, अध्यापकों और विद्यार्थियों से जुड़ी महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संलग्नताओं का उल्लेख किया गया है।

हम 'सभी के लिए उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' सुनिश्चित करने के हमारे मिशन में स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार और अन्य सहयोगियों से प्राप्त उनके निरंतर समर्थन के लिए बहुत आभारी हैं। मैं रा.शै.अ.प्र.प. के समस्त संकाय की परिषद् के अधिदेशों को पूरा करने में उनकी अटूट प्रतिबद्धता के लिए सराहना करता हूँ।

मैं इस वार्षिक रिपोर्ट में परिषद् की उपलब्धियों को प्रदर्शित करने में योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.) के संकाय, दिनेश कुमार, *प्रोफेसर* एवं *प्रमुख*; अशिता रवींद्रन, *एसोसिएट प्रोफेसर* और पी.डी. सुभाष, *एसोसिएट प्रोफेसर* द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना करता हूँ।

इस रिपोर्ट का उद्देश्य शैक्षणिक समुदाय, नीति निर्माताओं, अध्यापकों और अभ्यासकर्ताओं (प्रैक्टिशनरों) के साथ संवाद को बढ़ावा देना है। इसमें बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के रा.शै.अ.प्र.प. के प्रयासों तथा शैक्षिक योजनाकारों, विद्वानों और विशेषज्ञों को आमंत्रित करके सभी के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने में परिषद् की प्रगति को चिह्नित करने और उसके मूल्यांकन का सिंहावलोकन किया गया है।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
अक्तूबर 2024

शब्द संक्षेप

ए.बी.पी.	आकांक्षी विकास खंड कार्यक्रम
ए.सी.	अकादमिक समिति
ए.डी.एच.डी.	एकाग्रता की कमी से सक्रियता विकार
ए.आई.	कृत्रिम बुद्धि
ए.आई.सी.ए.वी.एफ.	अखिल भारतीय बाल शैक्षिक ऑडियो वीडियो महोत्सव
ए.आई.सी.ई.ई.सी.सी.	अखिल भारतीय बाल शैक्षिक ई-सामग्री प्रतियोगिता
ए.आई.सी.टी.ई.	अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्
ए.आई.एल.	कला समेकित शिक्षा
ए.आई.एस.ई.एस.	अखिल भारतीय स्कूल शिक्षा सर्वेक्षण
ए.एम.एच.एफ.	परिधान मेड-अप और होम फर्निशिंग सेक्टर
ए.आर.	संवर्धित वास्तविकता
बी.ए.	कला स्नातक
बी.ए.एड.	कला और शिक्षा स्नातक
बी.एड.	शिक्षा स्नातक
बी.एल.एड.	प्राथमिक शिक्षा स्नातक
बी.एससी.	विज्ञान स्नातक
बी.एससी.बी.एड.	विज्ञान स्नातक और शिक्षा स्नातक
बी.टेक.	प्रौद्योगिकी स्नातक
बी.ई.ओ.	ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
बी.आर.सी.	ब्लॉक संसाधन केंद्र
सी.ए.टी.सी.	संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर
सी4वाई	युवा केंद्र
सी.ए.जी.	पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह
सी.ए.पी.ई.	प्राथमिक शिक्षा तक व्यापक पहुँच
सी.ए.यू.	केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय
सी.बी.एस.ई.	केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
सी.डी.ई.सी.	पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन केंद्र
सी.ई.ओ.	मुख्य कार्यकारी अधिकारी
सी.ई.टी.	शैक्षिक प्रौद्योगिकी केंद्र
सी.आई.ई.टी.	केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान
सी.आई.आई.एल.	केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान
सी.आई.आर.	अंतर्राष्ट्रीय संबंध केंद्र

सी.एल.ए.पी.	सतत अधिगम पहुँच परियोजना
सी.एल.ए.एस.एस.	स्कूलों में कंप्यूटर साक्षरता और अध्ययन
सी.एल.आई.एल.	विषयवस्तु और भाषा समेकित शिक्षण
सी.एल.ओ.	पाठ्यक्रम/गतिविधि अधिगम प्रतिफल
सी.एम.आर.आई.एस.ई.	सम्मान, अखंडता, शक्ति और उत्कृष्टता
सी.एन.सी.एल.	राष्ट्रीय साक्षरता प्रकोष्ठ केंद्र
सी.ओ.एल.	अधिगम राष्ट्रमंडल
कोविड-19	2019 में कोरोना वायरस रोग
सी.पी.डी.	सतत व्यावसायिक विकास
सी.पी.जी.एस.ए.एस.	कृषि विज्ञान स्नातकोत्तर अध्ययन महाविद्यालय
सी.आर.सी.	क्लस्टर संसाधन केंद्र
सी.आर.सी.सी.	क्लस्टर संसाधन केंद्र समन्वयक
सी.आर.पी.एफ.	केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल
सी.एस.आई.आर.	वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद्
सी.एस.आई.आर.– आई. एम.एम.टी.	वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् – खनिज और सामग्री प्रौद्योगिकी संस्थान
सी.एस.एस.	केंद्र प्रायोजित योजना
सी.एस.एस.–वी.एस.ई.	माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिए केंद्र प्रायोजित योजना
सी.टी.ई.	अध्यापक शिक्षा कॉलेज
सी.टी.ई.एस.	प्राथमिक विद्यालय विज्ञान के शिक्षण के लिए प्रमाण पत्र कार्यक्रम
सी.डब्ल्यू.एस.एन.	विशेष आवश्यकता वाले बच्चे
डी.ए.ए.एच.	कृषि एवं पशुपालन विभाग
डी.ए.बी.	विभागीय सलाहकार बोर्ड
डी.ए.सी.ई.पी.	सामुदायिक शिक्षा और भागीदारी में विकासात्मक गतिविधियाँ
डी.ए.आई.सी.	डॉ. अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र
डी.ए.वी.	दयानंद एंग्लो वैदिक
डी.बी.सी.	व्यापार और वाणिज्य विभाग
डी.सी.जी.सी.	मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा कोर्स
डी.सी.एस. एंड डी.	पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग
डी.डी.आई.एस.एल.ई.आर.	भारतीय सांकेतिक भाषा और शैक्षिक संसाधनों का डिजिटल डेटाबेस
डी.ई.	शिक्षा विभाग
डी.ई.ए.ए.	कला और सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग
डी.ई.ई.	प्रारंभिक शिक्षा विभाग
डी.ई.जी.एस.एन.	विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग
डी.ई.के.	शैक्षिक किट प्रभाग

डेलनेट	विकासशील पुस्तकालय नेटवर्क
डी.ई.एम.	डिजिटल उन्नयन मॉडल
डी.ई.पी.एफ.ई.	शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग
डी.ई.एस. एंड डी.पी.	शैक्षिक सर्वेक्षण और डेटा प्रसंस्करण विभाग
डी.ई.एस.एम.	विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
डी.ई.एस.एस.	सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग
डी.ई.टी.	इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी विभाग
डी.जी.एस.	जेंडर अध्ययन विभाग
डी.एच.ई.आर.	मानविकी, शिक्षा और अनुसंधान विभाग
डी.एच.एच.एम.	गृह विज्ञान और आतिथ्य प्रबंधन विभाग
डी.एच.पी.एस.	स्वास्थ्य और पैरामेडिकल विज्ञान विभाग
डी.एच.एस.ई.	उच्चतर माध्यमिक शिक्षा निदेशालय
डी.आई.सी.टी. एंड टी.डी.	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी विभाग और प्रशिक्षण प्रभाग
डी.आई.ई.टी.	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
दीक्षा (DIKSHA)	ज्ञान साझाकरण संबंधी डिजिटल अवसंरचना
डी.एल.	अधिगम डिज़ाइन
डी.एम.एस.	प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल
डी.ओ.एस.ई.एल.	स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
डी.पी.एस.ई.	विज्ञान शिक्षा में डिप्लोमा कार्यक्रम
डी.आर.सी.	जिला संसाधन केंद्र
डी.आर.डी.ओ.	रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
डी.टी.ई.	अध्यापक शिक्षा विभाग
डी.वी.ई.टी.	व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण में डिप्लोमा
डी.वी.ई.टी.	व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण निदेशालय
ई.बी.एस.बी.	एक भारत श्रेष्ठ भारत
ई.सी.	स्थापना समिति
ई.सी.सी.ई.	प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा
ई.सी.ई.	नागरिक सहभागिता संवर्धन
ई.डी.	इंजीनियरिंग प्रभाग
एडसिल	एजुकेशनल कंसल्टेंट्स इंडिया लिमिटेड
ई.डी.यू.एफ.आई.	फिनलैंड की राष्ट्रीय शिक्षा एजेंसी
एड.डब्ल्यू.जी.	शिक्षा कार्य समूह
ई.एल.पी.एस.ए.	अनुभव-भाषा-चित्र-प्रतीक-अनुप्रयोग
ई.एल.टी.	अंग्रेजी भाषा शिक्षण
ई.एम.आर.एस.	एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय

ई.पी.यू.बी.एस.	इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन
एरिक	शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति
ई.एस.डी.	सतत विकास के लिए शिक्षा
ई.टी.बी.	एनर्जाइज्ड पाठ्यपुस्तकें
ई.वी.एस	पर्यावरण अध्ययन
एफ.सी.	वित्त समिति
एफ.सी.आर.आर.	फ्लोरिडा सेंटर फॉर रीडिंग रिसर्च
एफ.जी.डी.	फोकस समूह चर्चा
एफ.एल.एन.	मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता
जी20	बीस का समूह (दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले 20 देशों का समूह)
जी.सी.ई.डी.	वैश्विक नागरिकता शिक्षा
जनरेशन जेड	जनरेशन ज़ूमर
जी.आई.एन.टी.एल.	शिक्षण-अधिगम हेतु वैश्विक नवाचारी नेटवर्क
जी.एस.पी.	हरित स्कूल कार्यक्रम
एच.आई.वी.	ह्यूमन इम्यूनोडेफिशिएंसी वायरस
आई.ए.बी.	संस्थान सलाहकार बोर्ड
आई.ए.एस.ई.	उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान
आई.सी.ए.आर.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्
आई.सी.सी.आर.	भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्
आई.सी.टी.	सूचना और संचार प्रौद्योगिकी
आई.ई.ए.	अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक उपलब्धि मूल्यांकन संघ
आई.ई.आर.	इंडियन एजुकेशनल रिव्यू
आई.आई.ए.डी.	भारतीय कला एवं डिजाइन संस्थान
आई.आई.एम.सी.	भारतीय जनसंचार संस्थान
आई.आई.एस.ई.आर.	भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान
आई.आई.टी.	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
आई.आई.टी.ई.	भारतीय अध्यापक शिक्षा संस्थान
आई.जे.ई.टी.	इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी
आई.के.एस.	भारतीय ज्ञान प्रणाली
इंड-ई.डी.यू.जी.ए.	स्कूल पाठ्यचर्या के विज्ञान और गणित को समझने के लिए स्वदेशी शैक्षिक खेल
आई.ओ.टी.	इंटरनेट ऑफ थिंग्स
आई.क्यू.ए.सी.	आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ
आई.आर.डी.	अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग
आई.आर.आई.एस.ई.	अनुसंधान नवाचार और स्टेम (STEM) शिक्षा में प्रेरक भारत
आई.एस.बी.एन.	अंतर्राष्ट्रीय मानक पुस्तक संख्या

आई.एस.एल.	भारतीय सांकेतिक भाषा
इसरो (ISRO)	भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
आई.टी.ई.पी.	समेकित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम
जे.एन.एन.एस.एम.ई.ई.	जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय बाल विज्ञान, गणित और पर्यावरण प्रदर्शनी
जे.एन.वी.	जवाहर नवोदय विद्यालय
जे. स्टोर	जर्नल संग्रहण
जे.डब्ल्यू.सी.	संयुक्त कार्य समिति
के.जी.बी.वी.	कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय
के.पी.एस.	किलोबिट प्रति सेकंड
के.आर.आई.वी.ई.टी.	कोरियाई व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान
के.आर.पी.	मुख्य संसाधन व्यक्ति
के.वी.एस.	केंद्रीय विद्यालय संगठन
लैन	लोकल एरिया नेटवर्क
एल.बी. एस.एन.ए.ए.	राष्ट्रीय लाल बहादुर शास्त्री प्रशासन अकादमी
एल.डी.डी.	पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग
लाइफ (LiFE)	पर्यावरण के लिए जीवनशैली
एल.आर.सी.	भाषा संसाधन केंद्र
एल.टी.एम.	अधिगम-शिक्षण सामग्री
एम.डी.एस.	महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय
एम.एड.	शिक्षा स्नातकोत्तर
एम.फिल.	दर्शनशास्त्र स्नातकोत्तर
मैनिट (MANIT)	मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान
एम.सी.क्यू.	बहुविकल्पीय प्रश्न
एम.आई.एल.	आधुनिक भारतीय भाषाएँ
एम.आई.एस.	प्रबंधन सूचना प्रणाली
एम.ओ.ई.	शिक्षा मंत्रालय
एम.ओ.ओ.सी. (मूक)	बृहद मुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम
एम.ओ.यू.	समझौता ज्ञापन
एम.पी.	मध्य प्रदेश
एम.पी.डी.	मीडिया उत्पादन प्रभाग
एम.एस.एम.ई.	सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम
एन.ए.ए.सी.	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्
नाल्को	नेशनल एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड
एन.ए.एस.	राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण
एन.बी.बी.	राष्ट्रीय बाल भवन

एन.सी.सी.	राष्ट्रीय कैडेट कोर
एन.सी.ई.आर.टी	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
एन.सी.एफ.–एफ.एस.	बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
एन.सी.एफ.	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
एन.सी.एफ.–एस.ई.	विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
एन.सी.पी.सी.आर.	राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग
एन.सी.टी.	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
एन.सी.टी.ई.	राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्
एन.सी.वी.टी.	राष्ट्रीय व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद्
एन.डी.ए.	राष्ट्रीय रक्षा अकादमी
एन.डी.एम.सी.	उत्तरी दिल्ली नगर निगम
एन.ई.एच.यू. (नेहू)	नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी
एन.ई.पी.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति
एन.ई.आर.आई.ई.	पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
एन.ई.एस.टी.एस.	राष्ट्रीय आदिवासी विद्यार्थी शिक्षा सोसायटी
एन.ई.सी.आर.डी.	राष्ट्रीय पाठ्यक्रम अनुसंधान और विकास संस्थान
एन.ई.डी.	राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान
एन.आई.ई.	राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान
नीपा (NIEPA)	राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
निपुण (NIPUN)	राष्ट्रीय साक्षरता और संख्या ज्ञान दक्षता पहल
एन.आई.एस.ई.आर.	राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान
निष्ठा (NISHTHA)	विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल
एन.के.एन.	राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क
एन.एल.ई.पी.टी.	राष्ट्रीय शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक परीक्षण पुस्तकालय
एन.ओ.सी.	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा निरीक्षण समिति
एन.पी.ई.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति
एन.पी.ई.पी.	राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना
एन.आर.जी.	राष्ट्रीय संसाधन समूह
एन.आर.ओ.ई.आर.	राष्ट्रीय मुक्त शैक्षिक संसाधन भंडार
एन.एस.क्यू.एफ.	राष्ट्रीय कौशल योग्यता रूपरेखा
एन.एस.एस.	राष्ट्रीय सेवा योजना
एन.एस.टी.सी.	राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति
एन.टी.डी.एल.	राष्ट्रीय परीक्षण विकास पुस्तकालय
एन.टी.एस.ई.	राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा
एन.टी.एस.एस.	राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना

एन.वी.एस.	नवोदय विद्यालय समिति
ओ.बी.	ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड
ओ.ई.आर.	ओ.ई.आर. मुक्त शैक्षणिक संसाधन
ओ.जे.टी. ऑफ एन.सी.वी.टी.	राष्ट्रीय व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद् का ऑन-द-जॉब प्रशिक्षण
ओ.पी.ए.सी. (ओपेक)	ऑनलाइन सार्वजनिक पहुँच कैटलॉग
ओ.एस.ई.पी.ए.	ओडिशा स्कूल शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण
ओ.एस.एस.	ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर
ओ.टी.डी.सी.	ओडिशा पर्यटन विकास निगम लिमिटेड
पी.ए.बी.	परियोजना अनुमोदन बोर्ड
पी.ए.सी.	कार्यक्रम सलाहकार समिति
परख (PARAKH)	समग्र विकास के लिए प्रदर्शन मूल्यांकन, समीक्षा और ज्ञान का विश्लेषण
पी.ई.सी.आर.	प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण
पी.जी.डी.जी.सी.	मार्गदर्शन और परामर्श में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
पी.जी.आई.	प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक
पी.जी.टी.	स्नातकोत्तर शिक्षक
पीएच.डी.	डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी
पी.एल.ओ.	कार्यक्रम अधिगम प्रतिफल
पी.एम.डी.	योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग
पी.एम.जी.के.वाई.	प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना
पी.एम.एम.एम. एन.एम.टी.टी.	पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक और शिक्षण मिशन
पी.ओ.ए.	क्रियान्वयन कार्यक्रम
पॉक्सो	यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण
पी.पी.एम.सी.	कार्यक्रम योजना एवं निगरानी केंद्र
पी.पी.आर.	परियोजना प्रगति समीक्षा
प्रभास (PRABHASS)	प्रवासी भारतीय शैक्षणिक और वैज्ञानिक संपर्क
प्रशस्त (PRASHAST)	पूर्व-मूल्यांकन समग्र छानबीन उपकरण
पी.आर.डी.	योजना एवं अनुसंधान प्रभाग
पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.	पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान
क्यू.जी.आई.एस	क्वांटम भौगोलिक सूचना प्रणाली
क्यू.एम.टी.	गुणवत्ता निगरानी टूल
क्यू.आर.	त्वरित प्रतिक्रिया
आर.ए.ए.	राष्ट्रीय आविष्कार अभियान
आर.ए.एस.	राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह

आर.बी.वी.पी.	राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी
आर.सी.आई.	भारतीय पुनर्वास परिषद्
आर.सी.एस.एम.ई.	विज्ञान और गणित शिक्षा संसाधन केंद्र
आर.आई.ई.	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
आर.एम.एस.ए.	राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान
आर.एन.आई.	भारतीय समाचारपत्र रजिस्ट्रार
आर.पी.डी.सी.	क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र
आर.एस.बी.वी.पी.	राज्य स्तरीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी
आर.टी.ई.	शिक्षा का अधिकार
आर.वी.एस.के.	राष्ट्रीय विद्या समीक्षा केंद्र
एस.सी.	अनुसूचित जाति
एस.सी.सी.	राज्य समन्वय समिति
एस.सी.ई.आर.टी.	राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
एस.डी.जी.	सतत विकास लक्ष्य
एस.डी.एम.सी.	दक्षिण दिल्ली नगर निगम
एस.ई.	स्कूल शिक्षा
एस.ई.डी.जी.	सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह
एफ.एल.एन.	आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता
एस.आई.ई.	राज्य शिक्षा संस्थान
एस.आई.आर.डी.	राज्य ग्रामीण विकास संस्थान
एस.एल.बी.वी.पी.	राज्य स्तरीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी
एस.एम.सी.	स्कूल प्रबंधन समिति
एस.ओ.पी.टी.	स्कूल शिक्षकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम
एस.पी.ए.आर.एस.एच.	पेंशन प्रशासन प्रणाली (रक्षा)
एस.पी.एम.सी.	स्क्रीनिंग-सह-प्रगति निगरानी समिति
एस.आर.जी.	राज्य संसाधन समूह
एस.आर.पी.	राज्य संसाधन व्यक्ति
एस.एस.ए.	सर्व शिक्षा अभियान
एस.एस.के.	माध्यमिक विज्ञान किट
एस.टी.	अनुसूचित जनजाति
एस.टी.सी.	विशेष प्रशिक्षण केंद्र
एस.टी.ई.ए.एम.	विज्ञान, प्रौद्योगिकी इंजीनियरिंग, कला और गणित
स्वयं/एम.ओ.ओ.सी.	युवा महत्वाकांक्षी प्रतिभाओं के लिए सक्रिय-शिक्षण वेब का अध्ययन
एस.डब्ल्यू.डी.	दिव्यांग विद्यार्थी
टी.बी.पी.	खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र

टी.जी.टी.	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
टी.पी.सी.आई.	तकनीकी शिक्षणशास्त्र सामग्री एकीकरण
यू.डी.एल.	सार्वभौमिक अधिगम डिजाइन
यू.जी.सी.	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
उल्लास (ULLAS)	समाज में सभी के लिए आजीवन अधिगम की समझ
उम्मीद (UMMEED)	समझ, प्रेरणा, प्रबंधन, समानुभूति, सशक्ति और विकास करें
यूनेस्को (UNESCO)	संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन
यूनिसेफ़ (UNICEF)	संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष
यू.एन.ओ.डी.सी.	संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय
वी.ई.टी.	व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण
वी.एच.एम.	वैन हिले मॉडल
वी.आर.	आभासी वास्तविकता
वी.एस.के.	विद्या समीक्षा केंद्र
वी.टी.टी.ई.	वॉयसेज ऑफ टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स
वी.वी.एम	विद्यार्थी विज्ञान मंथन
डब्ल्यू.एच.ओ.	विश्व स्वास्थ्य संगठन
वाईफाई	वायरलेस फिडेलिटी
योजना (YOJANA)	रा.शै.अ.प्र.प. की गतिविधियों का वार्षिक विवेकपूर्ण मूल्यांकन

विषय-सूची

आमुख *iii*

1. विहंगावलोकन 1–35
2. प्रमुख प्रकाशन 36–45
3. अनुसंधान अध्ययन 46–66
4. विकास गतिविधियाँ 67–96
5. क्षमता निर्माण कार्यक्रम 97–126
6. विस्तार गतिविधियाँ 127–186
7. रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा समन्वित की जा रही शिक्षा मंत्रालय की प्रमुख योजनाएँ 187–215
8. रा.शै.अ.प्र.प. में आने वाले अतिथि और अंतरराष्ट्रीय सहयोग 216–221
9. परिशिष्ट 222–308

I. रा.शै.अ.प्र.प. के संकाय सदस्यों द्वारा प्रकाशन और प्रस्तुतियाँ 223–242

II. रा.शै.अ.प्र.प. संकाय के पर्यवेक्षण में वर्ष के दौरान प्रदान की गई एम.फिल./पीएच.डी.डिग्रियाँ 243–244

III. पुरस्कार और अध्येतावृत्तियाँ 245–247

IV. वर्ष 2023–24 के लिए बहिर्नियमावली में उल्लिखित रा.शै.अ.प्र.प. की समितियों का विवरण 248–277

V. 31 मार्च, 2024 को रा.शै.अ.प्र.प. के समेकित संस्वीकृत पदों की संख्या और आरक्षण की स्थिति 278

VI. 31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्तियाँ एवं भुगतान लेखा 279–282

VII. वर्ष 2023–24 के दौरान जारी किए गए प्रकाशन 283–291

VIII. प्रकाशन प्रभाग और इसके क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र 292

IX. रा.शै.अ.प्र.प. के संघटक और संकाय 293–307

‘हमारे सामने विभिन्नताओं को खत्म करने की चुनौती नहीं है बल्कि उनके साथ रहते हुए एक रहने की है।’

— रवीन्द्रनाथ टैगोर

‘The Problem is not how to wipe out the differences but how to unite with the differences intact.’

— Rabindranath Tagore

1. विहंगावलोकन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) को 6 जून, 1961 को रजिस्ट्रेशन ऑफ सोसाइटी अधिनियम (1860 का अधिनियम 21) के अंतर्गत एक संस्था के रूप में पंजीकृत किया गया था। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने 27 जुलाई, 1961 को एक प्रस्ताव द्वारा इसकी स्थापना की औपचारिक घोषणा की और परिषद् ने 1 सितंबर, 1961 को अपना कार्य आरंभ किया। देशभर में स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के उद्देश्य से नीतियों और कार्यक्रमों को तैयार करने में केंद्र एवं राज्य सरकारों को सहायता तथा मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की स्थापना की गई थी।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्राथमिक उद्देश्यों में स्कूली शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्रों में अनुसंधान का संचालन, प्रचार और समन्वयन करना शामिल है। यह आदर्श पाठ्यपुस्तकों, पूरक पठन सामग्री, समाचार पत्र, पत्रिकाओं को तैयार करने और प्रकाशित करने तथा शैक्षिक किट, मल्टीमीडिया डिजिटल संसाधन और अन्य अनेक सामग्रियाँ विकसित करने के लिए भी जिम्मेदार है। परिषद् द्वारा सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, नवाचारी शैक्षिक विधियों का विकास और प्रसार किया जाता है तथा यह राज्य शैक्षिक विभागों, विश्वविद्यालयों, गैर-सरकारी संगठनों और अन्य शैक्षिक संस्थानों के साथ सहयोग करती है। इसके अतिरिक्त, रा.शै.अ.प्र.प. स्कूली शिक्षा से संबंधित विचारों और सूचनाओं के लिए एक केंद्रीय भंडार के रूप में कार्य करती है तथा प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण को प्राप्त करने के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करती है।

रा.शै.अ.प्र.प. का गठन भारत की स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में स्थापित सात संस्थानों— केंद्रीय शिक्षा संस्थान (1947), केंद्रीय पाठ्यपुस्तक अनुसंधान ब्यूरो (1954), केंद्रीय शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन ब्यूरो (1954), माध्यमिक शिक्षा विस्तार कार्यक्रम निदेशालय (1958), राष्ट्रीय बेसिक शिक्षा संस्थान (1956), नेशनल फंडामेंटेल एजुकेशन सेंटर (1956) और राष्ट्रीय ऑडियो-विजअुल शिक्षा संस्थान (1959) के विलय से हुआ था। इस एकीकरण ने देश में शिक्षा के प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता को दर्शाया। पिछले कुछ वर्षों में, भारतीय शैक्षिक परिदृश्य की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की संरचना और जिम्मेदारियों का विकास हुआ है। आज, रा.शै.अ.प्र.प. देशभर में फैले विभिन्न संस्थानों के माध्यम से काम करती है। इसमें नई दिल्ली में स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.), जिसमें 20 विभाग, प्रभाग और प्रकोष्ठ हैं; अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूरु और मेघालय में स्थित पाँच क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) और दो केंद्रीय संस्थान— भोपाल में पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) और नई दिल्ली में केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) शामिल हैं।

रा.शै.अ.प्र.प. ने राष्ट्रीय सर्वोच्च निकाय के रूप में, भारत की विविध संस्कृतियों और भाषाओं को बढ़ावा देते हुए शिक्षा को राष्ट्रीय दायरे में लाने हेतु नए विचार और नया स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यद्यपि रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यपुस्तक विकास में अपने काम के लिए व्यापक रूप से जाना जाती है, किंतु इसकी भूमिका इससे कहीं अधिक व्यापक रूप से विस्तारित है। यह शैक्षिक अनुसंधान, नवाचारी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के कार्यान्वयन और एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. जैसे राज्य-स्तरीय शैक्षिक निकायों को अकादमिक सहायता प्रदान करने में सघनता से शामिल रही है। रा.शै.अ.प्र.प. ने विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान और भाषाओं जैसे विषयों में पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिनमें बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 के अनुरूप नवीनतम पाठ्यपुस्तकें शामिल हैं।

रा.शै.अ.प्र.प. ने भारत में शैक्षिक नीतियों को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) और 1992 में क्रियान्वयन कार्यक्रम (पी.ओ.ए.) के लिए महत्वपूर्ण शोध और विकास इनपुट प्रदान किए। इन नीतियों के अनुरूप, रा.शै.अ.प्र.प. ने 'प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा' (1988) विकसित की और बाद में स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों के लिए दिशानिर्देश और पाठ्यक्रम जारी किए। रा.शै.अ.प्र.प. ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के निर्माण में भी योगदान दिया, जिसका उद्देश्य भारत में शिक्षा में क्रांति लाना है।

रा.शै.अ.प्र.प. ने शिक्षकों की शिक्षा पर लगातार ध्यान केंद्रित किया है। अपने क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) के माध्यम से, इसके द्वारा चार वर्षीय एकीकृत बी.एससी.-बी.एड., बी.ए.-बी.एड., दो वर्षीय बी.एड., बी.एससी.एड., एम.एड. और एम.एससी.एड. जैसे सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। यहाँ एन.आई.ई., नई दिल्ली और आर.आई.ई. में मार्गदर्शन और परामर्श में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी प्रदान चलाए हैं। परिषद् अध्यापकों को शिक्षा में नवीनतम विकास के बारे में अद्यतन जानकारी देने के लिए अल्पकालिक सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करती है। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विद्यार्थियों में उत्कृष्टता और नवाचार को प्रोत्साहित करने के प्रयासों के तहत प्रदर्शनियों, प्रतियोगिताओं और विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण शिक्षा, वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जी.सी.ई.डी.) और अन्य अनेक कार्यों को बढ़ावा दिया जाता है। रा.शै.अ.प्र.प. के प्रमुख कार्यक्रमों में से एक राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा (एन.टी.एस.ई.) है, जिसमें विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और चिकित्सा एवं इंजीनियरिंग जैसे व्यावसायिक क्षेत्रों के पाठ्यक्रम हेतु प्रत्येक वर्ष 2000 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

रा.शै.अ.प्र.प. ने अपनी पाठ्यपुस्तकों और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अलावा, अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए प्रिंट और डिजिटल दोनों प्रारूपों में पूरक सामग्रियों की एक विस्तृत शृंखला विकसित की है। इसने विज्ञान और गणित में प्रयोग करने के लिए किट और उपकरण भी विकसित किए हैं। रा.शै.अ.प्र.प. ने सक्रिय और व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ावा देकर, स्कूली शिक्षा को प्रभावी बनाना और अधिगम को वास्तविक जीवन के लिए अधिक आकर्षक और संगत बनाना जारी रखा है।

रा.शै.अ.प्र.प. राज्यों के साथ अपने सहयोग को मजबूत करने के लिए, केंद्रीय क्षेत्र की अनेक परियोजनाओं और योजनाओं में शामिल रही है। इनमें माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायीकरण, अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम, स्कूली शिक्षकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (एस.ओ.पी.टी.), स्कूलों में विज्ञान शिक्षा में सुधार के लिए योजना, स्कूली शिक्षा का पर्यावरण अभिविन्यास, स्कूलों में कंप्यूटर साक्षरता और अध्ययन कार्यक्रम, ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड (ओ.बी.) योजना, सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए.), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आर.एम.एस.ए.) और समग्र शिक्षा आदि शामिल हैं। रा.शै.अ.प्र.प. ने स्कूलों में योग को भी बढ़ावा दिया है और सेवा-पूर्व और सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम प्रदान किए हैं।

पिछले कुछ वर्षों में, रा.शै.अ.प्र.प. ने बाहरी एजेंसियों द्वारा वित्तपोषित कई अंतरराष्ट्रीय परियोजनाएँ भी शुरू की हैं, जिसने भारत में नीति निर्माण, शैक्षिक योजना और कार्यक्रम विकास के लिए बहुमूल्य डेटा का योगदान दिया है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण परियोजनाओं में शैक्षिक उपलब्धि मूल्यांकन अंतरराष्ट्रीय संघ (आई.ई.ए.) अध्ययन,

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम नवीनीकरण (पी.ई.सी.आर.), भाषा और विज्ञान में उपलब्धियों पर अध्ययन, आई.ई.ए. कंप्यूटर शिक्षा अध्ययन, सामुदायिक शिक्षा और भागीदारी में विकासात्मक गतिविधियाँ (डी.ए.सी.ई.पी.), प्राथमिक शिक्षा तक व्यापक पहुँच (सी.ए.पी.ई.), जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) और राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.) शामिल हैं। इन परियोजनाओं ने देश में शिक्षा नीतियों और परिपाटियों को आगे बढ़ाने में रा.शै.अ.प्र.प. की भूमिका को और मजबूत किया है।

रा.शै.अ.प्र.प. की हाल की उपलब्धियाँ भारत में शिक्षा को बढ़ाने के लिए इसकी निरंतर प्रतिबद्धता का प्रमाण हैं। इसके उल्लेखनीय योगदानों में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) और स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का विकास, साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के साथ संरेखित पाठ्यपुस्तकों का निर्माण शामिल है। बुनियादी स्तर के लिए शुरू की गई नवाचारी पहलों में से एक 'जादुई पिटारा' है, जो शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) का एक संग्रह है। इसके अलावा, रा.शै.अ.प्र.प. ने पी.एम. ई-विद्या जैसी परियोजनाओं के माध्यम से अपनी डिजिटल पहुँच का विस्तार किया है, जिसमें डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा दिया जाता है और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच को बढ़ाया जाता है। अन्य महत्वपूर्ण डिजिटल प्लेटफॉर्म में 'स्वयं' एम.ओ.ओ.सी., ई-पाठशाला और 'दीक्षा' शामिल हैं, जो विद्यार्थियों, अध्यापकों और अभिभावकों के लिए संसाधनों का भंडार प्रदान करते हैं। स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल (निष्ठा) में एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया जाता है और प्रशस्त (पूर्व-आकलन समग्र स्क्रीनिंग टूल) से स्कूलों को विद्यार्थियों की नि:शक्तता की जाँच करने में मदद मिलती है।

रा.शै.अ.प्र.प. ने स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों के लिए 'अधिगम प्रतिफल' एवं स्कूल और कक्षा प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के लिए गुणवत्ता निगरानी टूल (क्यू.एम.टी.) विकसित करके आकलन और निगरानी में भी प्रगति की है। परिषद् ने विद्यार्थियों में रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए कला उत्सव, योग ओलंपियाड, ए.आई.सी.ए.वी.एफ., राष्ट्रीय आविष्कार अभियान तथा राष्ट्रीय भूमिका निर्वहन और लोक नृत्य प्रतियोगिता जैसे राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम आयोजित किए हैं। रा.शै.अ.प्र.प. ने वर्ष 2017 और 2021 में राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो एन.ए.एस. के बाद के हस्तक्षेपों में योगदान देता है। इसके अलावा, परिषद् ने राष्ट्रीय कौशल योग्यता रूपरेखा (एन.एस.क्यू.एफ.) के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और शिक्षा के अधिकार (आर.टी.ई.) अधिनियम 2009 को लागू करने के लिए शैक्षणिक प्राधिकरण के रूप में काम करना जारी रखा। इसके अतिरिक्त, रा.शै.अ.प्र.प. का योगदान स्कूली शिक्षा से बाहर हुए बच्चों के लिए सेतु पाठ्यक्रम बनाने और शुरुआती शिक्षा में खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र (टी.बी.पी.) को एकीकृत करने तक फैला हुआ है।

रा.शै.अ.प्र.प. ने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के समर्थन में, मनोसामाजिक सहायता के लिए 'मनोदर्पण', मानसिक स्वास्थ्य पर लाइव अंत:क्रियात्मक सत्रों के लिए 'सहयोग' और आत्महत्या रोकथाम हेतु 'उम्मीद' कार्यक्रम जैसी पहलें शुरू की हैं। परिषद् ने साइबर सुरक्षा, 'प्रज्ञाता' डिजिटल शिक्षा रूपरेखा और वैकल्पिक शैक्षणिक कैलेंडर पर दिशानिर्देश भी विकसित किए हैं। अंतरराष्ट्रीय सहयोग के रूप में, रा.शै.अ.प्र.प. ने कोरियाई अध्ययन अकादमी और फिनलैंड की राष्ट्रीय शिक्षा एजेंसी सहित अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। रा.शै.अ.प्र.प. का राष्ट्रीय आकलन केंद्र, 'परख', आकलन मानकों और दिशानिर्देशों को बनाने तथा समग्र प्रगति कार्ड तैयार करने पर ध्यान केंद्रित करता है। रा.शै.अ.प्र.प. हर साल 5 करोड़ से अधिक पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित करती है, 52 तरह की कार्य-भूमिकाओं के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रम उपलब्ध कराती है और वीरगाथा — परमवीर चक्र विजेताओं की कहानियाँ जैसी पूरक सामग्री भी उपलब्ध कराती है। परिषद् डॉक्टरेट अध्येतावृत्ति, शोध कार्यक्रम और नवाचारी शैक्षणिक अभ्यासों के लिए पुरस्कारों को भी प्रोत्साहन देती है।

संगठनात्मक संरचना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् महानिकाय के सदस्य हैं— सभी राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के शिक्षा मंत्री; अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.); सचिव, भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग); विश्वविद्यालयों के चार उप-कुलपति (प्रत्येक क्षेत्र से एक); अध्यक्ष, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड; आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन; निदेशक, केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो; प्रशिक्षण निदेशक, प्रशिक्षण और रोज़गार महानिदेशालय, श्रम मंत्रालय; शिक्षा प्रभाग, योजना आयोग के एक प्रतिनिधि; परिषद् की कार्यकारिणी समिति के सदस्य और भारत सरकार द्वारा मनोनीत व्यक्ति (छह से अधिक नहीं जिनमें कम से कम चार स्कूल के अध्यापक होंगे)। केंद्रीय शिक्षा मंत्री इसके अध्यक्ष (पदेन) और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सचिव इस महानिकाय के संयोजक हैं।

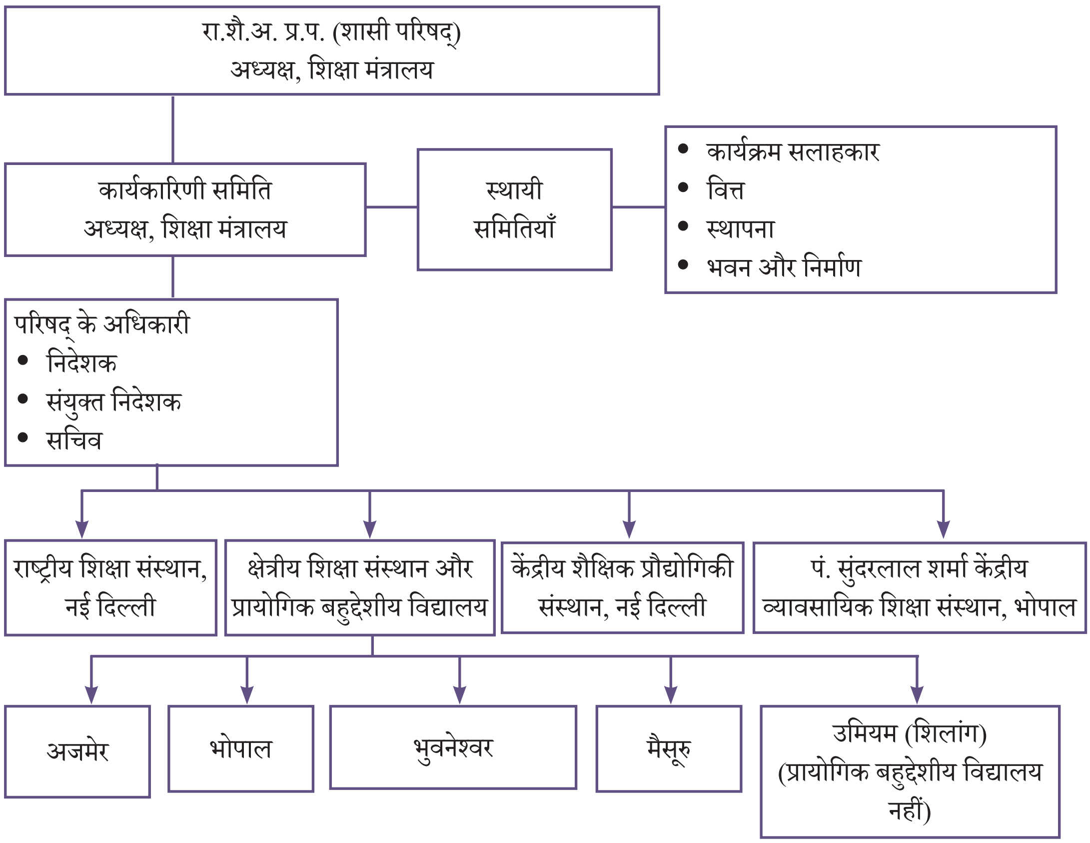

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का मुख्य शासी निकाय इसकी कार्यकारिणी समिति है। समिति आम तौर पर बहिर्नियमावली में निर्धारित रूप में परिषद् के उद्देश्यों को पूरा करने का कार्य करती है और परिषद् के सभी मामलों और निधि का प्रबंधन नियंत्रित करती है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री इसके अध्यक्ष (पदेन) होते हैं तथा केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री इसके उपाध्यक्ष (पदेन) होते हैं। कार्यकारिणी समिति के सदस्य हैं— निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.; सचिव, शिक्षा मंत्रालय (स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग), भारत सरकार; अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग; विद्यालयी शिक्षा में रुचि रखने वाले चार विख्यात शिक्षाविद (इनमें से दो स्कूल के अध्यापक होंगे); संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.; रा.शै.अ.प्र.प. के तीन संकाय सदस्य (इनमें से कम-से-कम दो प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष स्तर के हों); शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि और वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि (जो रा.शै.अ.प्र.प. का वित्तीय

सलाहकार हो)। रा.शै.अ.प्र.प. के सचिव कार्यकारिणी समिति के संयोजक के रूप में कार्य करते हैं। कार्यकारिणी समिति निम्नलिखित स्थायी समितियों/बोर्डों के सहयोग से कार्य करती है—

- वित्त समिति
- स्थापना समिति
- भवन और निर्माण समिति
- कार्यक्रम सलाहकार समिति
- शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति
- राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की अकादमिक समिति
- केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान का सलाहकार बोर्ड
- पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान का सलाहकार बोर्ड
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की प्रबंध समितियाँ
- राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों के सलाहकार बोर्ड

बैठकें

वर्ष 2023–24 के दौरान, महापरिषद् की 58वीं बैठक 17 जुलाई, 2023 को एन.आई.ई., नई दिल्ली में आयोजित की गई। कार्यकारिणी समिति की 110वीं बैठक 27 फरवरी, 2024 को आयोजित की गई। स्थापना समिति की 51वीं बैठक 27 मार्च, 2024 को आयोजित की गई। भवन एवं निर्माण समिति की 47वीं बैठक 26 मई, 2023 को एन.आई.ई., नई दिल्ली में आयोजित की गई।

रा.शै.अ.प्र.प. के वरिष्ठ पदाधिकारी

परिषद् के शैक्षिक कार्यों की देखभाल निदेशक, संयुक्त निदेशक और सचिव द्वारा की जाती है। संकायाध्यक्ष (अनुसंधान) अनुसंधान कार्यक्रमों का समन्वयन तथा शैक्षिक अनुसंधान एवं नवाचार समिति (ई.आर.आई.सी.) के कार्यों की देखभाल करते हैं; संकायाध्यक्ष (अकादमिक) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली के विभागों के कार्यों का समन्वयन करते हैं; संकायाध्यक्ष (समन्वय) रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न घटकों की अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार गतिविधियों का समन्वयन करते हैं।

रा.शै.अ.प्र.प. के वरिष्ठ पदाधिकारी 2023–24	
निदेशक	दिनेश प्रसाद सकलानी
संयुक्त निदेशक	श्रीधर श्रीवास्तव
सचिव	अमन शर्मा (1 जनवरी, 2024 से) प्रत्यूष कुमार मंडल (31 दिसंबर, 2023 तक)
संयुक्त निदेशक (सी.आई.ई.टी.)	अमरेंद्र प्रसाद बेहरा
संयुक्त निदेशक (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)	दीपक पालीवाल
संकायाध्यक्ष (अकादमिक)	अंजुम सिबिया
संकायाध्यक्ष (अनुसंधान)	दिनेश कुमार
संकायाध्यक्ष (समन्वय)	गौरी श्रीवास्तव

कार्यक्रमों का आयोजन एवं क्रियान्वयन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) और राज्यों की अलग-अलग शैक्षिक आवश्यकताओं के व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए तैयार किए जाते हैं। इन आवश्यकताओं का अभिनिर्धारण मुख्यतः राज्य समन्वय समितियों (एस.सी.सी.) के तंत्र के माध्यम से किया जाता है, जो राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के संकाय तथा राज्य शिक्षा विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच समन्वय के लिए एक मंच प्रदान करता है। प्रत्येक एस.सी.सी. की अध्यक्षता संबंधित राज्य के शिक्षा सचिव द्वारा की जाती है, जिसमें संबंधित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) के प्राचार्य सदस्य-संयोजक के रूप में कार्य करते हैं। एस.सी.सी. द्वारा चिह्नित शैक्षिक आवश्यकताओं की शुरुआत में आर.आई.ई. के संस्थान सलाहकार बोर्ड (आई.ए.बी.) द्वारा समीक्षा की जाती है, उसके बाद इन पर उन संस्थानों की प्रबंध समितियों द्वारा विचार किया जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिए, प्रस्तावों का पहले अलग-अलग विभागों के सलाहकार बोर्ड (डी.ए.बी.) द्वारा मूल्यांकन किया जाता है और फिर एन.आई.ई. की शैक्षणिक समिति (ए.सी.) को भेजा जाता है। केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) और पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) के कार्यक्रम भी अपने-अपने संस्थान सलाहकार बोर्ड के माध्यम से इसी तरह की प्रक्रिया से गुजरते हैं। अंततः, सभी प्रस्तावित कार्यक्रमों की समीक्षा कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) द्वारा की जाती है, जो कार्यक्रम विकास के लिए एक सुसंगत दृष्टिकोण सुनिश्चित करने के लिए योजनाओं, कार्यक्रमों और अनुसंधान प्रस्तावों का मूल्यांकन करने के लिए जिम्मेदार है। पी.ए.सी., रा.शै.अ.प्र.प. की कार्यकारिणी समिति को रिपोर्ट करती है, जो भारत में स्कूली शिक्षा की आवश्यकताओं को प्रभावी तरीके से संबोधित करने के लिए अनुसंधान, प्रशिक्षण, विस्तार और अन्य पहलों पर मार्गदर्शन प्रदान करती है।

रा.शै.अ.प्र.प. के अधिदेश का एक महत्वपूर्ण आयाम शैक्षिक अनुसंधान का संचालन और प्रायोजन करना है। शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (ई.आर.आई.सी.), रा.शै.अ.प्र.प. के घटकों और अन्य संस्थानों द्वारा प्रस्तावित अनुसंधान कार्यक्रमों के मूल्यांकन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह सुनिश्चित करते हुए कि रा.शै.अ.प्र.प. शिक्षा क्षेत्र में उभरती चुनौतियों के प्रति उत्तरदायी बनी रहे, ई.आर.आई.सी. स्कूल और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान को प्रोत्साहन और समर्थन देने के लिए समर्पित है।

रा.शै.अ.प्र.प. की संघटक इकाइयाँ

देश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में स्थित रा.शै.अ.प्र.प. की प्रमुख संघटक इकाइयाँ निम्नलिखित हैं—

1. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.), नई दिल्ली
2. केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.), नई दिल्ली
3. पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), भोपाल
4. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), अजमेर
5. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भोपाल
6. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भुवनेश्वर
7. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), मैसूरु
8. पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), उमियम (मेघालय)

I. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान

नई दिल्ली में स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) द्वारा पाठ्यचर्या के शैक्षिक पहलुओं से संबद्ध अनुसंधान एवं विकास कार्य किया जाता है; आदर्श-पाठ्यचर्यात्मक और अनुपूरक सामग्री तैयार की जाती है; विद्यालयी शिक्षा से संबंधित आधार सामग्री विकसित की जाती है और बच्चों के चहुँमुखी विकास के लिए पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर प्रयोग किया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान अल्पावधिक/दीर्घावधिक पाठ्यक्रम एवं कार्यक्रम संचालित करता है और केंद्र द्वारा प्रायोजित विद्यालय सुधार योजनाओं के कार्यान्वयन और क्षमता विकास के लिए मुख्य संसाधन व्यक्तियों और शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण का आयोजन करता है।

एन.आई.ई., नई दिल्ली में स्थित रा.शै.अ.प्र.प. के मुख्य विभाग/प्रभाग/प्रकोष्ठ हैं —

1. प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.) प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में नीतियों और कार्यक्रमों पर भारत सरकार (जी.ओ.आई.) को सलाह देने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. का एक नोडल विभाग है। विभाग समग्र शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु शिक्षा का अधिकार (आर.टी.ई.) अधिनियम, 2009 के कार्यान्वयन के लिए राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों को लगातार समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करता रहा है। विभाग की प्रमुख भूमिकाओं एवं कार्यों में बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के लिए पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रमों, पाठ्यपुस्तकों और अन्य शिक्षण-अधिगम सामग्री का विकास; राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा और स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर आधारित संसाधनों एवं सहायक सामग्रियों का विकास; अध्यापकों और अन्य प्रमुख पदाधिकारियों के लिए नवीन संसाधन सामग्री और सहायक सामग्री जैसे कि दिशानिर्देश, मैनुअल, हैंडबुक, प्रशिक्षण मॉड्यूल, आदि; आर.टी.ई. अधिनियम के तहत स्कूल में नहीं पढ़ने वाले बच्चों और विशेष प्रशिक्षण केंद्रों (एस.टी.सी.) में काम करने वाले अध्यापकों के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री; शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करते हुए शिक्षा के बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के विभिन्न पहलुओं पर शिक्षक प्रशिक्षकों और राज्य स्तरीय प्रमुख पदाधिकारियों का प्रशिक्षण/अभिविन्यास; बुनियादी और प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अनुसंधान करना; समकालीन मुद्दों और प्रमुख विषयों पर गोष्ठियाँ, सम्मेलन, परामर्श बैठकें और समीक्षा बैठकों का आयोजन; बुनियादी और प्रारंभिक स्तर पर एन.ई.पी. 2020, एन.सी.एफ.-एफ.एस. व एन.सी.एफ.-एस.ई. और शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के तहत योजना, कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन गतिविधियों के संबंध में शैक्षणिक सहायता और इनपुट प्रदान करना; तथा दो पत्रिकाओं अर्थात *प्राथमिक शिक्षक* और *प्राइमरी टीचर* के माध्यम से विकसित संसाधन सामग्री, अनुसंधान और नवीन अभ्यासों के निष्कर्षों और अन्य वैचारिक प्रपत्रों को साझा करने के रूप में सूचनाओं का प्रसार करना सम्मिलित है।

विभाग सेवा-पूर्व कार्यबल के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के विकास और शिक्षा के बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के क्षेत्र में बुनियादी स्तर पर काम करने वाले शैक्षिक कार्मिकों के लिए अनुकरणीय प्रशिक्षण सामग्री और संसाधन सामग्री के सृजन में शामिल है। यह प्री-स्कूल/बालवाटिका की योजना, कार्यान्वयन और निगरानी, सहायता सामग्री विकसित करने में राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के प्रमुख पदाधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संचालन, प्री-स्कूल शिक्षा/बालवाटिका के क्षेत्र में ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम और शिक्षा के बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों से संबंधित ई-सामग्री, इंफोग्राफिक्स और अन्य अधिगम-शिक्षण सामग्री (एल.टी.एम.) के विकास में भी सम्मिलित है।

सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों और एजेंसियों को बुनियादी स्तर के लिए अनुसंधान अध्ययन, संगत संसाधन सामग्री, पाठ्यपुस्तकों के विकास, प्रशिक्षण और अभिविन्यास कार्यक्रमों के आयोजन तथा राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर की संगोष्ठियाँ और सम्मेलन जैसी विस्तार गतिविधियों के आयोजन द्वारा लगातार महत्वपूर्ण इनपुट और अकादमिक सहायता प्रदान की जाती है। बुनियादी स्तर में कक्षा 1 और 2 भी शामिल हैं। स्कूली शिक्षा के लिए नई संरचना के तहत, एन.ई.पी. 2020 प्रारंभिक स्तर को कक्षा 3–5 (9–11 वर्ष के बीच) के रूप में परिभाषित करता है। विभाग पाठ्यपुस्तकें, ई-सामग्री, अधिगम-शिक्षण सामग्री, शिक्षक पुस्तिकाएँ और अन्य संगत संसाधन सामग्री विकसित करता है, प्रशिक्षण और अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करता है और विस्तार गतिविधियों का भी आयोजन करता है।

2. भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)

भाषा शिक्षा विभाग की स्थापना वर्ष 2005 में स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों में भाषा शिक्षा के सरोकारों को पूरा करने के व्यापक उद्देश्य से की गई थी। विभाग भाषा शिक्षा में हुए समसामयिक घटनाक्रमों से अवगत रहता है। विभाग स्कूली शिक्षा में विविधता को ध्यान में रखते हुए, स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों के लिए अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रम आयोजित करता है और भाषा शिक्षा के नवीन सिद्धांतों के आधार पर राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों को अकादमिक इनपुट प्रदान करता है। यह मातृभाषा और अन्य भाषाओं के बीच एक सेतु बनाने पर ध्यान केंद्रित करता है। इसका उद्देश्य भाषा के अधिगम में वांछनीय सामग्री, शैक्षणिक अभ्यास और संसाधनों को सामने लाना है जो विद्यार्थियों के बीच जीवन-कौशल और ज्ञान विकसित कर सकते हैं जैसा कि एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 में परिकल्पित है। इसी तरह, भाषा सीखने के महत्व के साथ-साथ जेंडर, पर्यावरण, समाज और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (सी.डब्ल्यू.एस.एन.) से संबंधित सरोकारों के बारे में भी जागरूकता पैदा की जा रही है। विभाग मातृभाषा आधारित भाषा सीखने और बहुभाषावाद को हमारे सामाजिक अस्तित्व के मूल के रूप में मजबूत करने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सिद्धांत और व्यवहार के क्षेत्रों में नवाचारों के साथ अद्यतन रहता है। विभाग ने सभी स्तरों के लिए चार भाषाओं में अधिगम प्रतिफलों के आधार पर गतिविधियों हेतु एक रूपरेखा का विकास किया है।

3. विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.) 1 सितंबर 1995 को स्थापित किया गया था। तब से विभाग विशेष आवश्यकता वाले बच्चों और सामाजिक रूप से वंचित समूहों, जैसे— अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों के बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। यह सभी के लिए समावेशी शिक्षा प्रणाली के कार्यान्वयन एवं प्रणालीगत सुधारों हेतु विशेषकर सामाजिक रूप से वंचित और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के संदर्भ में अधिक महत्व रखता है। विभाग में अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ का गठन किया गया है, जिसे अल्पसंख्यकों की शिक्षा और कल्याण को बढ़ावा देने हेतु 28 जुलाई 2006 को गठित किया गया था।

विभाग की प्रमुख भूमिकाएँ सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों (एस.ई.डी.जी.) अर्थात दिव्यांग बच्चों और समाज के सामाजिक रूप से वंचित समूहों के बच्चों के लिए समग्र शिक्षा जैसे सरकार के प्रमुख कार्यक्रमों के माध्यम से समान और समावेशी स्कूली शिक्षा की सुविधा प्रदान करना है, ताकि अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों (घुमंतू, अभिसूचित, आदिम, तटीय एवं पहाड़ी जनजातियों और प्राकृतिक आपदाओं एवं मानवीय गतिविधियों के कारण अशांत जनजातीय क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए) और अल्पसंख्यकों (भाषा संबंधी और

धार्मिक) के बच्चों की शिक्षा से संबंधित मुद्दों और समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया जा सके तथा इन वंचित समूहों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जा सके। विभाग सभी कार्यक्रमों/योजनाओं/समितियों के तहत दिव्यांग बच्चों के कवरेज को बढ़ाने और एस.ई.डी.जी. बच्चों के दृष्टिकोण से शिक्षा का अधिकार (आर.टी.ई.) अधिनियम, 2009 के कार्यान्वयन हेतु सहायता देने की भूमिका निभाता है।

विभाग द्वारा अनुसंधान करने और अनुसंधान आधारित शिक्षक मार्गदर्शिका, मैनुअल, हैंडबुक और प्रशिक्षण पैकेज आदि विकसित करने; विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु कार्यनीतियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए अध्यापकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों और नीति-निर्माताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने; सार्वभौमिक अधिगम के डिजाइन (यू.डी.एल.) पर आधारित समावेशी पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री के विकास का समर्थन करने के कार्य किए जाते हैं। इससे शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों और सामाजिक रूप से वंचित समूहों को शामिल करने के कार्यान्वयन हेतु केंद्र, राज्यों, गैर-सरकारी संगठनों और अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय एजेंसियों को संसाधन सहायता प्रदान की जाती है।

4. जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)

जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.) जेंडर समानता के लिए प्रतिबद्ध है और यह रा.शै.अ.प्र.प. की व्यापक भूमिकाओं एवं कार्यों के अनुसार अपनी गतिविधियों की योजना बनाता है तथा उन्हें क्रियान्वित करता है। यह अपनी अनुसंधान परियोजनाओं, सामग्रियों के विकास, विभिन्न हितधारकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रमों और विस्तार कार्यक्रमों के माध्यम से सभी जेंडर की समानता की दिशा में काम करता है।

विभाग का विश्वास है कि जेंडर को राष्ट्रीय और राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखा का एक महत्वपूर्ण व्यवस्थापक सिद्धांत बनाया जाना चाहिए और जेंडर समावेशी समाज तैयार करने के लिए इसे प्रभावी तरीके से क्रियान्वित किया जाना चाहिए। इसकी परिकल्पना है कि शिक्षा को जेंडर समानता, जेंडर न्याय, सद्भाव और शांति के सिद्धांत के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.) को अपने शुरुआती वर्षों में 1979 में महिला शिक्षा इकाई के रूप में बनाया गया था। बालिकाओं की शिक्षा एवं महिला सशक्तीकरण के मुद्दों को और अधिक गहनता से संबोधित करने के लिए 1989 में यह महिला अध्ययन का एक पूर्ण विभाग बना। वर्ष 2014 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के एक ऐतिहासिक फैसले के आलोक में, जिसमें ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को 'तीसरे जेंडर' के रूप में मान्यता दी गई थी और उनके सरोकारों को भी संबोधित किया गया था, विभाग का नाम बदलकर जेंडर अध्ययन विभाग कर दिया गया।

विभाग की भूमिकाएँ और कार्य हैं— देशभर में ट्रांसजेंडर मुद्दों सहित शिक्षा में जेंडर संबंधी सरोकारों पर शिक्षक प्रशिक्षकों, शैक्षिक योजनाकारों, जेंडर समन्वयकों और प्रशासकों सहित प्रमुख शैक्षिक कार्मिकों को संवेदनशील बनाना; पाठ्यपुस्तकों और अन्य शिक्षण-अधिगम सामग्री से जेंडर पूर्वाग्रह को खत्म करना; जेंडर समानता के लिए विश्लेषण, दिशानिर्देश, पुस्तिकाएँ और अन्य अनुकरणीय सामग्री के लिए साधनों को विकसित करना; जेंडर समानता को बढ़ावा देने और पाठ्यक्रम एवं उसके संचालन को जेंडर-समावेशी बनाने के लिए पाठ्य और गैर-पाठ्य सामग्री विकसित करना; जेंडर से इतर विद्यार्थियों में आत्मसम्मान एवं आत्मविश्वास पैदा करना; राज्यों में पाठ्यपुस्तकों और स्कूली पाठ्यक्रमों में सभी जेंडर के बीच समानता, शांति एवं सद्भाव को बढ़ावा देने वाले मूल्यों को शामिल करने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं, पाठ्यपुस्तक लेखकों और शैक्षिक योजनाकारों की क्षमता निर्माण और उन्मुखीकरण का कार्य करना; जेंडर अध्ययन, लड़कियों की शिक्षा एवं उनके सशक्तीकरण के क्षेत्रों में नवीन परियोजनाएँ तैयार करना और अनुसंधान करना; अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों के लिए हस्तक्षेप कार्यनीति तैयार

करना, शिक्षक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करना तथा अध्यापकों की सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षा को बढ़ावा देना, ताकि उनके के बीच जेंडर संवेदनशीलता को बढ़ावा दिया जा सके; रा.शै.अ.प्र.प., शिक्षा मंत्रालय, नीति आयोग, महिला एवं बाल विकास विभाग, नीपा, महिला अध्ययन केंद्रों, विश्वविद्यालयों, शिक्षा संकायों, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय और स्वैच्छिक एजेंसियों की उन घटक इकाइयों के साथ घनिष्ठ सहयोग में काम करना, जो जेंडर अध्ययन और बालिकाओं/महिलाओं की शिक्षा एवं सशक्तीकरण के क्षेत्र में काम कर रही हैं; और बालिकाओं के शैक्षिक तथा समग्र विकास के लिए समर्थन और संवेदनशीलता अभियानों के माध्यम से समुदाय को संगठित करना।

विभाग का लक्ष्य है कि जेंडर भेद के बिना प्रत्येक विद्यार्थी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अपने अधिकार का प्रयोग करने में सक्षम हो, जीवन की चुनौतियों का सामना कर सके और सही अर्थों में सशक्त होकर, भयरहित रहकर सूचित विकल्प चुन सके और कार्रवाई कर सके। जेंडर अध्ययन विभाग शिक्षा और विद्यार्थियों के जीवन की गुणवत्ता पर ये महत्वपूर्ण प्रभाव डालने के लिए प्रतिबद्ध है— शिक्षा में आने वाली बाधाओं को दूर करने में अग्रणी भूमिका निभाना; शिक्षा में सभी प्रकार के भेदभाव का निवारण करना; बालिकाओं और ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के पक्ष में सकारात्मक सामाजिक बदलाव लाने की दिशा में काम करना और उन्हें अपनी पूरी क्षमता हासिल करने में सक्षम बनाना।

आने वाले वर्षों में विभाग की परिकल्पना है कि नए पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों और अन्य पाठ्यपुस्तकों/गैर-पाठ्यसामग्री में जेंडर दृष्टिकोण को समेकित करने की दिशा में कार्य किए जाएँ, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनमें जेंडर के आधार पर किसी भी पूर्वाग्रह, रूढ़िवादिता और भेदभाव से मुक्त उचित और संगत विषयवस्तु शामिल हो।

5. सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.) अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार संबंधी गतिविधियों के क्षेत्रों में योगदान देता है। विभाग द्वारा संभाले जाने वाले विषय-क्षेत्रों में इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, वाणिज्य और शारीरिक शिक्षा शामिल हैं। वर्ष 2023–24 में, मुख्य रूप से विकास संबंधी गतिविधियों और प्रमुख संसाधन व्यक्तियों की क्षमता निर्माण में योगदान दिया गया। विभाग द्वारा आयोजित महत्वपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रमों में माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र किट 'अर्थ मंजूषा' का उपयोग सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों एवं अन्य पाठ्यसामग्री की तैयारी और 'आयुष्मान भारत' के तत्वावधान में स्कूल स्वास्थ्य व कल्याण का क्षेत्र शामिल है। साथ ही, माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र किट 'अर्थ मंजूषा' के उपयोग पर सांकेतिक भाषा के साथ कानूनी साक्षरता पर एक पुस्तिका और एक ऑडियो-वीडियो मार्गदर्शिका भी तैयार की गई। विभाग में प्रमुख पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, शारीरिक शिक्षा और कल्याण हैं। वर्तमान समय में सभी समूह पाठ्यक्रम और पाठ्यसामग्री का विकास करने में संलग्न हैं। विस्तार संबंधी गतिविधियों के संबंध में, विभाग ने पोषण माह, संविधान दिवस और चंद्रयान-3 जैसी विभिन्न प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में योगदान दिया और 'परीक्षा पे चर्चा 2024' का समन्वय भी किया।

6. विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)

विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.) विज्ञान गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.) मध्य (मिडिल) और माध्यमिक (सेकेंडरी) स्तरों पर विज्ञान, गणित और पर्यावरण में स्कूली शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए काम करता है। विभाग अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, मूल्यांकन और विस्तार गतिविधियों में संलग्न है। यह विज्ञान

एवं गणित शिक्षा से संबंधित नवीन शिक्षण-अधिगम विधियों और अन्य मुद्दों पर अनुसंधान आयोजित करता है तथा विद्यार्थियों, अध्यापकों, शिक्षक प्रशिक्षकों और विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों, पूरक सामग्रियों और ई-संसाधनों सहित प्रिंट और डिजिटल रूपों में शिक्षण-अधिगम सामग्री का विकास करता है। विभाग विज्ञान, गणित और पर्यावरण शिक्षा को लोकप्रिय बनाने के लिए सामग्री भी तैयार करता है और उसका प्रसार करता है। अध्यापकों और शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम नियमित रूप से आमने-सामने और ऑनलाइन दोनों तरीकों से आयोजित किए जाते हैं।

विभाग की विभिन्न विस्तार गतिविधियों में गोष्ठियों, राज्य और राष्ट्रीय स्तर की विज्ञान प्रदर्शनियों का आयोजन और *स्कूल साइंस* का प्रकाशन शामिल है। राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी (आर.बी.वी.पी.), जिसे पहले बच्चों के लिए जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान, गणित और पर्यावरण प्रदर्शनी (जे.एन.एन.एस.एम.ई.ई.) के रूप में जाना जाता था, एक वार्षिक कार्यक्रम है जो इस विभाग द्वारा जिला, क्षेत्रीय और राज्य स्तर पर आयोजित विज्ञान प्रदर्शनियों की श्रृंखला के समापन के रूप में आयोजित किया जाता है। राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनियों के लिए शैक्षणिक मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता भी प्रदान की जाती है। राष्ट्रीय आविष्कार अभियान (आर.ए.ए.) के तहत विभाग द्वारा एक वार्षिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह (आर.ए.एस.) भी आयोजित किया जाता है।

विभाग ने एक विज्ञान पार्क और एक हर्बल गार्डन विकसित किया है, जहाँ स्कूलों के बच्चों को लाभांवित करने के लिए इसका अभ्यास कराने के हेतु बहुमूल्य जानकारी और विचार प्रदान किए जाते हैं। विभाग में विज्ञान एवं गणित शिक्षा के लिए एक संसाधन केंद्र (आर.सी.एस.एम.ई.) है जो, विज्ञान और गणित शिक्षा पर प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का एक समृद्ध भंडार है। विभाग में जीवविज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी और गणित की चार प्रयोगशालाएँ भी हैं, जो संबंधित क्षेत्रों में गतिविधियाँ, प्रयोग और व्यावहारिक अनुभव आयोजित करने के केंद्र हैं। विभाग द्वारा स्कूल स्तर पर विज्ञान, गणित और पर्यावरण शिक्षा से संबंधित विभिन्न मुद्दों और सरोकारों पर भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय को सहायता और सलाह भी दी जाती है।

7. पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग

पाठ्यक्रम अध्ययन एवं विकास विभाग (डी.सी.एस. एंड डी.) पाठ्यक्रम अनुसंधान एवं विकास के विभिन्न आयामों की देखरेख के उद्देश्य से काम कर रहा है। विभाग पाठ्यचर्या अभ्यासों और पाठ्यपुस्तकों पर ज्ञान आधार तैयार

करने के अलावा, पाठ्यक्रम अनुसंधान एवं विकास पर स्कूली शिक्षा में सेवारत राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों की एजेंसियों के क्षमता निर्माण पर भी काम कर रहा है। विभाग विभिन्न गतिविधियों जैसे अध्यापकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, राज्य पदाधिकारियों आदि की क्षमता निर्माण, शिक्षण-अधिगम संसाधनों को संगत बनाने, पाठ्यचर्या के विभिन्न पहलुओं पर पाठ्यक्रम विकसित करने, पाठ्यचर्या संबंधी मुद्दों पर हितधारकों को शैक्षिक सहायता प्रदान करने के लिए पाठ्यचर्या सामग्री और दिशानिर्देश विकसित करने और उन्हें प्रसारित करने, पाठ्यचर्या के परस्पर संबंद्ध ज्ञान-आधार की जाँच करने के लिए पाठ्यचर्या अनुसंधान करने और पाठ्यक्रम डिजाइन एवं विकास की प्रक्रिया में नियोजित तंत्रों का संचालन करने जैसी विभिन्न गतिविधियों को पूरा करता है।

8. कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग (डी.ई.ए.ए.)

वर्ष 2005 में कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग की शुरुआत से भारत की शैक्षिक संरचना में कला को समेकित करने का दूरदर्शी दृष्टिकोण प्रदर्शित होता है। विभाग का उद्देश्य विकास, प्रशिक्षण, अनुसंधान और अभिविन्यास पर ध्यान केंद्रित करके बच्चों की सौंदर्य क्षमताओ को प्रकट करना तथा योगदान देने वाले नागरिकों के रूप में उनके समग्र विकास को बढ़ावा देना है। विभाग के महत्वपूर्ण दायित्वों में से एक स्कूलों में कला शिक्षा की स्थिति पर शोध करना और सभी स्तरों पर कला शिक्षा को क्रियान्वित करना है। इसमें न केवल शिक्षण-अधिगम सामग्री विकसित करना शामिल है, बल्कि प्रमुख संसाधन व्यक्तियों, अध्यापकों और प्रशासकों के लिए सेवा-कालीन प्रशिक्षण और अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करना भी शामिल है। 'निष्ठा' जैसी पहलों में विभाग के योगदान से शिक्षा क्षेत्र में क्षमता निर्माण के प्रति इसकी प्रतिबद्धता प्रदर्शित होती है।

एन.ई.पी. 2020 की अनुशंसाएँ डी.ई.ए.ए. के उद्देश्यों से बहुत अनुरूपता रखती हैं, जिसमें कला, कलाकारों, कारीगरों तथा आदिवासी, लोक, क्षेत्रीय और शास्त्रीय रूपों में स्थानीय विशेषज्ञों के साथ काम करने पर बल दिया गया है ताकि शिक्षा प्रणाली में पारंपरिक भारतीय ज्ञान और उसके लोकाचार को शामिल किया जा सके। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 और एन.ई.पी. 2020 के अनुसार पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को विकसित करने में डी.ई.ए.ए. की भागीदारी, विद्यार्थियों के बीच रचनात्मकता और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा को नया रूप देने में इसके सक्रिय रुख को दर्शाती है।

विभाग की एक और महत्वपूर्ण गतिविधि 2015 से राष्ट्रीय स्तर के 'कला उत्सव' का आयोजन करना है। 'कला उत्सव' कला के विभिन्न विषयों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों और अध्यापकों की कलात्मक प्रतिभा को पोषित करने और प्रदर्शित करने का एक मंच है। इस वार्षिक कार्यक्रम में न केवल रचनात्मकता का जश्न मनाया जाता है बल्कि कलात्मक अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों की गहरी समझ और प्रशंसा को भी बढ़ावा दिया जाता है।

विभिन्न विषयों में कला को एक शैक्षणिक साधन के रूप में समेकित करने के लिए विभाग का अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्रों के साथ समन्वय विशेष रूप से उल्लेखनीय है। विभाग द्वारा पाठ्यक्रम में कला को शामिल करने के माध्यम से न केवल सीखने को अधिक आकर्षक बनाया जाता है, बल्कि विद्यार्थियों के रचनात्मक और आलोचनात्मक विचार कौशल को भी पोषित किया जाता है, जिससे अंततः उनका शैक्षिक अनुभव समृद्ध होता है। कुल मिलाकर, कला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए डी.ई.ए.ए. का बहुआयामी दृष्टिकोण भारत के विकसित होते शैक्षिक परिदृश्य के अनुरूप समग्र विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

9. शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.), जिसे पहले एन.आई.ई. कार्यशाला के रूप में जाना जाता था, की संकल्पना 1964 में स्कूल स्तर पर विज्ञान और गणित के शिक्षण-अधिगम के लिए उपकरणों/वस्तुओं के डिजाइन और विकास के लिए अकादमिक सहायता प्रदान करने हेतु की गई थी।

तभी से, एन.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प. के महत्वपूर्ण विभागों/प्रभागों में से एक रहा है, जिसे स्कूली शिक्षा में शिक्षण-अधिगम को बढ़ाने का दायित्व सौंपा गया है। इसमें किट के रूप में स्कूल उपकरणों के डिजाइन, विकास और प्रोटोटाइप उत्पादन में व्यावहारिक अनुभव के माध्यम से मुद्रित माध्यम को सहायता देना शामिल है। यह प्रभाग विद्यार्थियों, अध्यापकों और शिक्षक प्रशिक्षकों को अपने द्वारा उत्पादित विभिन्न किटों के उपयोग पर व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान करता है। यहाँ प्लास्टिक प्रसंस्करण और विभिन्न अन्य व्यवसायों में प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है। प्रभाग बच्चों के लिए विज्ञान, गणित और प्रौद्योगिकी में व्यावहारिक गतिविधियों जैसी विभिन्न विस्तार गतिविधियों का आयोजन करता है और प्रभाग प्रदर्शनियों, विश्व पुस्तक मेलों, विश्व व्यापार मेलों और वैश्विक शिक्षा महासम्मेलनों में भाग लेता है।

इस प्रकार, डी.ई.के. निम्नलिखित प्रकार के कार्य करता है— (i) प्रोटोटाइप किटों का अनुसंधान डिजाइन और विकास, (ii) फर्मों का पैनल तैयार करना, (iii) राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों और अन्य संगठनों से प्राप्त आदेशों के आधार पर किटों की आपूर्ति का क्रियान्वयन और समन्वयन और (iv) शैक्षिक किटों के उपयोग और विकास पर अध्यापकों, विद्यार्थियों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना।

10. शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)

विभाग रा.शै.अ.प्र.प. के सबसे पुराने विभागों में से एक है। यह वर्ष 1961 में रा.शै.अ.प्र.प. की स्थापना के समय अस्तित्व में आया था। संगठनात्मक परिवर्तनों और समय-समय पर महत्वपूर्ण क्षेत्रों में बदलाव के कारण इसके नामकरण और काम के प्रबलन में बदलाव आया है, फिर भी इसका फोकस विभाग में उपलब्ध विशेषज्ञता/संसाधनों को ध्यान में रखते हुए, हमेशा मनोवैज्ञानिक आधार और मार्गदर्शन एवं परामर्श पर रहा है।

विभाग, मार्गदर्शन एवं परामर्श के क्षेत्रों पर प्रमुखता से शिक्षा सिद्धांत और अभ्यास के लिए मनोवैज्ञानिक ज्ञान के अनुप्रयोग के माध्यम से स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के रा.शै.अ.प्र.प. के उद्देश्यों को साकार करने में संलग्न है। विभाग ने अपने संसाधनों का विस्तार किया है और स्कूली शिक्षा के विभिन्न पहलुओं अर्थात पाठ्यचर्या योजना, पाठ्यपस्तुक लेखन, शिक्षक प्रशिक्षण और आकलन आदि पर मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करने में सहयोग करता है।

विभाग कार्य के विशिष्ट क्षेत्रों में ठोस प्रयास करता है, विशेष रूप से स्कूल प्रणाली के लिए परामर्शदाताओं की तैयारी और प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करना, सभी स्तरों में पाठ्यचर्या क्षेत्रों में मनोवैज्ञानिक इनपुट प्रदान करना, ताकि विद्यार्थियों की विशिष्टता को समझने, जीवन कौशलों का निर्माण करने और नैतिकता, मानवीय व संवैधानिक मूल्यों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। विभाग स्कूलों के कामकाज और अध्यापक शिक्षा में नैतिक शिक्षा को समेकित करता है और यह सुनिश्चित करता है कि नैतिक शिक्षा के साथ ही मानसिक और भावनात्मक कल्याण, पाठ्यक्रम विकास और शिक्षक प्रशिक्षण दोनों के अभिन्न अंग बने रहें।

11. शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग (डी.ई.आर.)

शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग (डी.ई.आर.) शिक्षा में नीतिगत अनुसंधान को बढ़ावा देने; एक विचार-केंद्र (थिंक टैंक) की भूमिका निभाने; विद्यालयी और अध्यापक शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार लाने, उनका समन्वय करने, उन्हें प्रायोजित तथा प्रवर्तन करने के कार्य में संलग्न है और रा.शै.अ.प्र.प. की एक स्थायी समिति, जिसे शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (ई.आर.आई.सी.) कहा जाता है, के सचिवालय के रूप में कार्य कर रहा है। यह स्थायी समिति ई.आर.आई.सी. विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा के प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में अनुसंधान को प्रोत्साहन और सहायता देने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है। 'ई.आर.आई.सी.' समिति के सदस्यों में विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों के शिक्षा तथा संबद्ध विषयों में कार्यरत विख्यात अनुसंधानकर्ता और राज्य शिक्षा संस्थानों और राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों (एस.सी.ई.आर.टी.) के प्रतिनिधि शामिल हैं।

प्रभाग विश्वविद्यालय/अनुसंधान संस्थानों में अपनी डॉक्टोरल डिग्री के लिए कार्यरत विद्यार्थियों को रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टोरल अध्येतावृत्ति प्रदान करता है। युवा शिक्षाविदों/शैक्षिक अनुसंधानकर्ताओं को अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से एक और नई योजना 'रा.शै.अ.प्र.प. अनुसंधान संबद्धता (शिक्षाविद/अनुसंधानकर्ता पूल)' शुरू की गई है। इस योजना के अंतर्गत उन्हें स्कूली शिक्षा से संबंधित अपने संगत क्षेत्रों में योगदान करने और अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

12. अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)

अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.) सतत व्यावसायिक विकास (सी.पी.डी.) कार्यक्रमों के साथ-साथ सेवा-पूर्व और सेवाकालीन दोनों तरह के अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों को तैयार करने और आयोजित करने का कार्य करता है। अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.) के कार्यक्रम और गतिविधियाँ अध्यापक शिक्षा में संगत मुद्दों से संबंधित शोध, सामग्री और पत्रिकाओं के विकास एवं अध्यापकों को उनके व्यावसायिक विकास के लिए सशक्त बनाने हेतु कार्यक्रमों के आयोजन पर केंद्रित है। विभाग राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के प्रकाश में बी.आई.टी.ई., डी.आई.ई.टी., एस.सी.ई.आर.टी., सी.टी.ई. और आई.ए.एस.ई. जैसे अध्यापक शिक्षा के केंद्र प्रायोजित संस्थानों को अकादमिक सहायता प्रदान करता है। विभाग अध्यापक शिक्षा और स्कूली शिक्षा में नवाचारों, प्रयोगों को भी बढ़ावा देता है और विस्तार गतिविधियों का संचालन करता है।

इसके अतिरिक्त, विभाग निम्नलिखित क्षेत्रों में एन.ई.पी. 2020 के व्यापक प्रसार और कार्यान्वयन में संलग्न है— अध्यापक शिक्षा में नीतिगत और सलाहकार की भूमिका निभाना तथा अध्यापक शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए केंद्र प्रायोजित योजनाओं के निर्माण, क्रियान्वयन और मूल्यांकन में शिक्षा मंत्रालय (एम.ओ.ई.) और राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र सरकारों को तकनीकी सहायता प्रदान करना; अध्यापक शिक्षा में बहु-विषयक इनपुट को सहायता प्रदान करना और उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री और शिक्षणशास्त्र सुनिश्चित करना, जिसमें सभी अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम समग्र बहु-विषयक संस्थानों के अंदर आयोजित किए जा रहे हों; अध्यापक शिक्षा, पाठ्यक्रम विकास और शिक्षणशास्त्र के क्षेत्र में 'थिंक टैंक' के रूप में कार्य करना; अनुभवात्मक, समग्र, एकीकृत, जाँच-परक, खोज-उन्मुख, विद्यार्थी-केंद्रित, चर्चा-आधारित, नम्य और आनंददायक शिक्षा को बढ़ावा देना; सेवा-पूर्व अध्यापक तैयारी कार्यक्रमों में प्रवेश हेतु अध्यापक शिक्षा के समान मानकों का समर्थन करना; स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के सभी पहलुओं को संबोधित करने के लिए 'परिवर्तन प्रबंधन प्रक्रियाओं' के रूप में उन्हें विकसित करने में एस.सी.ई.आर.

टी./एस.आई.ई./डी.आई.ई.टी./बी.आई.टी.ई. की सहायता करना; आमने-सामने और ऑनलाइन मोड में विभिन्न स्तरों पर शिक्षक प्रशिक्षकों, मास्टर प्रशिक्षकों और प्रमुख संसाधन व्यक्तियों (के.आर.पी.) के लिए विभिन्न अवधियों के सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रम (सी.पी.डी.) का आयोजन करना; अध्यापक शिक्षा और स्कूली शिक्षा के विभिन्न मुद्दों एवं सरोकारों पर शोध अध्ययन करना, जैसे कि सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम, इंटर्नशिप, सी.पी.डी. कार्यक्रम और शिक्षणशास्त्र; अध्यापकों, शिक्षक प्रशिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों के लिए सी.पी.डी. कार्यक्रमों हेतु मॉड्यूल और अन्य पूरक सामग्री, जैसे कि निष्ठा, दीक्षा, एम.ओ.ओ.सी. और पी.एम. ई-विद्या विकसित करना; और अनुभवात्मक शिक्षण, खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र, खेल और कला-समेकित शिक्षणशास्त्र और कहानी-आधारित शिक्षणशास्त्र को बढ़ावा देने के लिए संदर्भ पुस्तकें, पुस्तिकाएँ, दिशानिर्देश, मैनुअल और पत्रिकाओं का विकास करना, जैसा कि अध्यापक शिक्षा और स्कूली शिक्षा के लिए एन.ई.पी. 2020 में रेखांकित किया गया है।

13. शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग की स्थापना 2012 में दो पूर्व विभागों— शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन विभाग (डी.ई.एम.ई.) और शैक्षिक सर्वेक्षण एवं डेटा प्रोसेसिंग विभाग (डी.ई.एस. एंड डी.पी.) को मिलाकर की गई थी, ताकि जनगणना और नमूना आधार पर शैक्षिक सर्वेक्षण किए जा सकें। इसका उद्देश्य देश में शैक्षिक नियोजन को मजबूत करने के लिए स्कूली शिक्षा के विभिन्न आयामों पर प्रामाणिक जानकारी (डेटा/डेटाबेस) प्रदान करना था।

प्रभाग के मुख्य कार्य हैं— राष्ट्रीय स्तर पर शैक्षिक डेटाबेस बनाना, उसे व्यवस्थित रखना और समय-समय पर अद्यतन करना; सांख्यिकीय पैकेजों का उपयोग करते हुए मात्रात्मक अनुसंधान विधियों में प्रशिक्षण प्रदान करना; रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न घटकों द्वारा किए गए बड़े पैमाने के सर्वेक्षणों, अध्ययनों और परियोजनाओं से संबंधित आँकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए एक केंद्रीय सुविधा के रूप में कार्य करना; शैक्षिक सर्वेक्षण आयोजित करने और स्कूली शिक्षा से संबंधित मुद्दों का मूल्यांकन करने में राज्य संसाधन व्यक्तियों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करना; शिक्षक प्रशिक्षकों, सेवारत शिक्षकों, सेवापूर्व अध्यापकों और संसाधन व्यक्तियों द्वारा उपयोग हेतु शैक्षिक मूल्यांकन में अवधारणात्मक सामग्री विकसित करना; तथा अधिगम आकलन से संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधान करना, प्रतिभा की पहचान के लिए एक विशेष परीक्षण कार्यक्रम के रूप में राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा (एन.टी.एस.ई.) का संचालन करना।

प्रभाग अखिल भारतीय विद्यालय शिक्षा सर्वेक्षण (ए.आई.एस.ई.एस.) और राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) जैसे बड़े पैमाने पर सर्वेक्षण आयोजित करने में शामिल रहा है। एन.ए.एस. 2021, एक राष्ट्रीय स्तर का व्यापक आकलन अध्ययन, सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की सीखने की उपलब्धियों के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए आयोजित किया गया था। इसके लिए 36 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के 1,10,000 सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में कक्षा 3, 5 और 8 के विद्यार्थियों की मानकीकृत परीक्षाएँ कराई गई थीं। इस सर्वेक्षण में कक्षा 3 और 5 के लिए भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन (ई.वी.एस.) तथा कक्षा 8 के लिए भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान शामिल थे।

प्रभाग ने स्कूली शिक्षा के विभिन्न विषयों, जैसे 2025 तक स्कूल नामांकन का प्रक्षेपण और रुझान तथा ग्रामीण-शहरी असमानता सूचकांक पर शोध अध्ययन भी किया है। इसके अतिरिक्त, प्रभाग गुणवत्ता परीक्षण विकास, प्रश्न पत्र सेटिंग, आइटमों के विकास और सांख्यिकीय विधि एवं सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर पर राज्य पदाधिकारियों की क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करने में शामिल है।

प्रभाग का एक प्रमुख कार्यक्रम देश में प्रतिभाओं की पहचान करने और उन्हें बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना (एन.टी.एस.एस.) है। एन.टी.एस.एस. के पुरस्कार विजेताओं को डॉक्टरेट की डिग्री तक उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति मिलती है।

14. अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)

अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की भूमिका के अनुरूप विभिन्न गतिविधियाँ संचालित करता है। प्रभाग सूचना और विशेषज्ञता के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग के अकादमिक सचिवालय के रूप में जिम्मेदारी का निर्वहन करता है और यूनेस्को, यूनिसेफ जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों और अन्य वैश्विक नेटवर्किंग संगठनों और एजेंसियों के साथ काम करता है। प्रभाग, स्कूल शिक्षा के विविध विशिष्ट क्षेत्रों में एन.आई.ई. और रा.शै.अ.प्र.प. की अन्य घटक इकाइयों में रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न विभागों द्वारा अन्य देशों के अध्यापकों, शिक्षक प्रशिक्षकों और शिक्षा व्यावसायिकों के लिए विभिन्न सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन के लिए एक माध्यम के रूप में भी कार्य करता है। इसके अतिरिक्त, प्रभाग भारत और विदेशों में ऐसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के तत्वावधान में आयोजित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों, बैठकों, प्रदर्शनियों और प्रशिक्षणों में रा.शै.अ.प्र.प. संकाय के इच्छुक सदस्यों की भागीदारी की सुविधा भी प्रदान करता है।

पिछले तीन वर्षों के दौरान, आई.आर.डी. ने कोरिया गणराज्य, इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया, मॉरीशस, भूटान, श्रीलंका, बांग्लादेश और मालदीव जैसे प्रमुख भागीदारों के साथ संरचित संबंध विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया है। इसके परिणामस्वरूप रा.शै.अ.प्र.प. और कोरियाई अध्ययन अकादमी (दक्षिण कोरिया), कर्टिन विश्वविद्यालय (ऑस्ट्रेलिया), मॉरीशस शिक्षा संस्थान (मॉरीशस) और फ्लोरिडा सेंटर फॉर रीडिंग रिसर्च (एफ.सी.आर.आर.), फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी और सेंट फ्रांसिस विश्वविद्यालय के शिक्षा महाविद्यालय के बीच स्कूली शिक्षा के कई क्षेत्रों में आपसी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए अलग-अलग समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं, जिसके निकट भविष्य में ठोस परिणाम देखने को मिलेंगे। रा.शै.अ.प्र.प. मॉरीशस में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम अनुसंधान और विकास संस्थान (एन.आई.सी.आर.डी.) की स्थापना में मॉरीशस शिक्षा संस्थान, मॉरीशस के साथ मिलकर काम कर रहा है।

15. पुस्तकालय और प्रलेखन विभाग (एल.डी.डी.)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का पुस्तकालय शिक्षा और अंतरानुशासनिक विषयों के क्षेत्र में देश के सबसे संसाधनयुक्त सूचना केंद्रों में से एक है। पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग का मुख्य कार्य स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा पर प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक संसाधनों को एकत्र करना, व्यवस्थित करना और प्रसारित करना है। एल.डी.डी. पारंपरिक संदर्भों, रेफरल सेवाओं और दस्तावेज उपलब्ध कराने के माध्यम से शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों की सहायता करता है। विभाग मैनुअल तैयार करके राज्यों और अन्य संगठनों के पुस्तकालय कार्मिकों के लिए सेवाकालीन शिक्षा की सुविधा भी प्रदान करता है। पुस्तकालय विस्तार सेवाओं के माध्यम से ग्रंथसूचियाँ प्रसारित करता है, डेलनेट के माध्यम से संसाधनों के साझाकरण को सक्षम बनाता है और पाठकों के लिए मुफ्त इंटरनेट पहुँच प्रदान करता है।

पुस्तकालय में मनोविज्ञान, पर्यावरण शिक्षा, विशेष आवश्यकता वाले समूहों के लिए शिक्षा, साहित्य और भाषा, नैतिक शिक्षा, किशोरावस्था शिक्षा, विज्ञान और गणित शिक्षा, सामाजिक विज्ञान शिक्षा और जेंडर अध्ययन से संबंधित पुस्तकों का विशाल संग्रह है। रा.शै.अ.प्र.प. का पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग एक प्रमुख केंद्र है,

जिसमें स्कूली पाठ्यक्रम, विभिन्न समितियों/आयोगों की रिपोर्ट, शैक्षिक सर्वेक्षण तथा स्कूल और अध्यापक शिक्षा में नीति दस्तावेजों से संबंधित पुस्तकों, पत्रिकाओं, शोध सामग्री और पूरक पठन सामग्री का एक विस्तृत संग्रह है।

पुस्तकालय में एक संग्रह अनुभाग (डिजिटल और भौतिक दोनों) है, जहाँ प्रयोक्ता इस पुस्तकालय में रा.शै.अ.प्र.प. की चार पीढ़ी की पाठ्यपुस्तकें और अन्य पूरक पाठ्यपुस्तकों का लाभ ले सकते हैं। यह प्रभाग पुस्तकालय सदस्यों के लिए जे-स्टोर और वाई.फाई. तक मुफ्त पहुँच भी प्रदान करता है। एल.डी.डी. स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के प्रयासों का समर्थन करता है। पुस्तकालय शैक्षणिक हितों की सुगमता हेतु ज्ञान संसाधन प्राप्त करता है और उन्हें उपलब्ध कराता है। इसके अलावा, संकाय स्कूल पुस्तकालयों के उन्नयन और सहयोग के क्षेत्र में अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार गतिविधियाँ करता है।

16. योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

इस प्रभाग का गठन कार्यक्रम निर्धारण, अनुवीक्षण, मूल्यांकन की प्रक्रिया के समन्वयन एवं शिक्षा मंत्रालय में आवधिक रिपोर्ट तथा विवरणी जमा करने के प्रयोजन से किया गया है। यह रा.शै.अ.प्र.प. के अकादमिक कार्यक्रमों या गतिविधियों के संबंध में सूचना वितरण केंद्र के रूप में कार्य करता है तथा कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) द्वारा अनुमोदित सभी कार्यक्रमों का मूल्यांकन भी करता है। इसे परिषद् की स्थायी कार्यनीतियों की संकल्पना और इसके विभिन्न कार्यक्रमों के उचित कार्यान्वयन का दायित्व सौंपा गया है। पी.एम.डी. अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए दिशानिर्देश जारी करता है, सूचना के प्रसार के लिए विभिन्न दस्तावेज तैयार करता है, कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी) और परियोजना अनुमोदन बोर्ड (पी.ए.बी.) द्वारा अनुमोदित कार्यक्रमों की प्रगति की निगरानी करता है।

अल्पकालिक और दीर्घकालिक अकादमिक कार्यक्रमों को तैयार करने एवं कार्यान्वयन एवं प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के घटकों को समर्थन प्रदान करते हुए, पी.एम.डी. निम्नलिखित गतिविधियों में शामिल रहा है—

- रा.शै.अ.प्र.प. की वार्षिक रिपोर्ट तैयार करना;
- शिक्षा मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के भाग को तैयार करना;
- शैक्षिक कार्यक्रमों के निर्माण के लिए सामान्य दिशानिर्देशों की तैयारी, विकास और अद्यतनीकरण;
- कार्यक्रम प्रक्रम समितियों— विभागीय सलाहकार बोर्ड, शैक्षणिक समिति, संस्थान सलाहकार बोर्ड और प्रबंधन समितियों की बैठक में समय-सारणी तैयार करना और उनमें भागीदारी करना; कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठकों का आयोजन करना;
- संस्थानों/विभागों/प्रभागों/प्रकोष्ठों द्वारा किए गए कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की प्रगति की तिमाही निगरानी करना; फॉलोअप कार्रवाई के माध्यम से जानकारी का संग्रह और प्रसंस्करण; रा.शै.अ.प्र.प. के वार्षिक कार्यक्रम बजट तैयार करना; प्रशासनिक-सह-वित्तीय अनुमोदनों के लिए पी.ए.सी. और पी.ए.बी. अनुमोदित कार्यक्रमों के प्रस्तावों का प्रसंस्करण; रा.शै.अ.प्र.प. की प्रमुख गतिविधियों और उपलब्धियों पर मासिक और त्रैमासिक रिपोर्ट तैयार करना; शिक्षा मंत्रालय के साथ रा.शै.अ.प्र.प. के समझौता ज्ञापन तैयार करना; कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठकों की सिफारिशों के अनुसार अनुलिपिकरण एवं वित्तीय पहलुओं हेतु एन.आई.ई. विभागों या प्रभागों या प्रकोष्ठों, सी.आई.ई.टी., पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. और आर.आई.ई. के कार्यक्रम प्रस्तावों की समीक्षा करना; और
- समग्र शिक्षा-समेकन योजना के तहत शिक्षा मंत्रालय के परियोजना अनुमोदन बोर्ड (पी.ए.बी.) द्वारा अनुमोदित परियोजनाओं का समन्वयन करना। पी.एम.डी. इन नियमित गतिविधियों के अलावा, स्कूल और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रमों को पूरा करने में भी संलग्न है।

17. हिंदी प्रकोष्ठ

हिंदी को 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू होने के साथ ही संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा घोषित किया गया और हिंदी के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी भारत सरकार को सौंपी गई। राजभाषा अधिनियम, 1963 के अधिनियमन के परिणामस्वरूप, भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग के आदेश लगातार जारी किए जाते हैं। हिंदी को राजभाषा बनाए जाने के बाद राजभाषा अधिनियम, 1976 क्रियान्वित किए गए। परिषद् के दैनिक कार्यों में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं उसके समुचित क्रियान्वयन हेतु रा.शै.अ.प्र.प. में हिंदी प्रकोष्ठ की स्थापना की गई।

हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी आदेशों, नियमों और संकल्पों का पालन करने के हर संभव प्रयास किए जाते हैं। यह परिषद् के प्रशासनिक कार्यों में समय-समय पर इन आदेशों, निर्देशों आदि का अनुपालन भी सुनिश्चित करता है।

18. प्रकाशन प्रभाग (पी.डी.)

रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा शैक्षणिक सामग्रियों की एक विस्तृत शृंखला प्रकाशित की जाती है, जिसमें स्कूल की पाठ्यपुस्तकें, कार्यपुस्तिकाएँ, पूरक पठन सामग्री, शिक्षक संदर्शिकाएँ, प्रयोगशाला मैनुअल, आकलन पर स्रोत पुस्तकें, गणित प्रश्न प्रदर्शिकाएँ, शोध रिपोर्ट, मोनोग्राफ और शैक्षिक पत्रिकाएँ शामिल हैं। राज्य और संघ राज्य क्षेत्र राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तक कार्यक्रम के तहत इन पुस्तकों के स्वीकरण, अनुकूलन या अनुवादित हेतु रा.शै.अ.प्र.प. से कॉपीराइट की अनुमति का अनुरोध कर सकते हैं। इन सामग्रियों का व्यापक रूप से केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केंद्रीय विद्यालयों, जवाहर नवोदय विद्यालयों, तिब्बती स्कूलों तथा भारत और विदेशों में कई सार्वजनिक स्कूलों में उपयोग किया जाता है।

रा.शै.अ.प्र.प. ने वर्ष 2023–24 के लिए स्वीकरण/अनुकूलन/अनुवाद के लिए, 23 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों को उनके अनुरोध के आधार पर अपनी पाठ्यपुस्तकों का कॉपीराइट प्रदान किया।

प्रत्येक वर्ष, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा गैर-पाठ्यसामग्री के अलावा, कक्षा 1 से 12 तक के लिए पाठ्यपुस्तकें मुद्रित की जाती हैं। हर वर्ष अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू में रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न प्रकाशनों की लगभग छह करोड़ प्रतियाँ तैयार की जाती हैं, जिनमें पाठ्यपुस्तकें भी शामिल हैं। इन प्रकाशनों का व्यापक रूप से सी.बी.एस.ई. से संबद्ध स्कूलों में उपयोग किया जाता है, जिसमें केंद्रीय विद्यालय, जवाहर नवोदय विद्यालय, तिब्बती बच्चों के लिए केंद्रीय विद्यालय तथा सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के कई निजी स्कूल शामिल हैं। अनेक राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों ने रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यपुस्तकों के लिए कॉपीराइट हासिल कर लिया है। इसके अतिरिक्त, रा.शै.अ.प्र.प. अपनी पाठ्यपुस्तकों में क्यू.आर. कोड को समेकित करता है।

अपने प्रकाशनों की व्यापक उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए, रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन विभाग ने देशभर में 995 समर्पित पुस्तक विक्रेताओं को विक्रेताओं के रूप में सूचीबद्ध किया है। उर्दू प्रकाशनों का वितरण उर्दू अकादमी, एन.सी.टी. दिल्ली सरकार के माध्यम से किया जाता है।

प्रभाग स्कूलों को उनकी जरूरतों के हिसाब से पाठ्यपुस्तकों के लिए ऑनलाइन ऑर्डर देने के लिए एक समर्पित वेब पोर्टल प्रदान करता है। स्कूल अपनी सुविधा के अनुसार किसी भी सूचीबद्ध विक्रेता से या सीधे रा.शै.अ.प्र.प. से अपनी पाठ्यपुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। वेब पोर्टल पर व्यक्तियों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और संस्थानों द्वारा रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशनों के ऑनलाइन ऑर्डर की सुविधा भी दी जाती है, जिसकी प्रदायगी पंजीकृत पुस्तक डाक के माध्यम से की जाती है और ग्राहक को कोई अतिरिक्त लागत नहीं चुकानी पड़ती।

प्रकाशन प्रभाग विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं और सरकारी एजेंसियों को भी सीधे पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराता है, जिनमें नवोदय विद्यालय समिति, विभिन्न राज्यों के मॉडल स्कूल और अन्य संगठन जैसे अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, गुजरात, असम, एस.सी.ई.आर.टी. त्रिपुरा, नागालैंड स्कूल शिक्षा बोर्ड, अंडमान और निकोबार पाठ्यपुस्तक ब्यूरो, झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद्, पांडिचेरी सरकार, लक्षद्वीप, दमन और दीव शिक्षा विभाग, चंडीगढ़ प्रशासन, एन.डी.एम.सी., गोवा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, एम.पी. पाठ्यपुस्तक निगम (उर्दू) तथा जम्मू और कश्मीर में स्कूल शिक्षा निदेशालय शामिल हैं।

रा.शै.अ.प्र.प. कोलकाता, बेंगलुरु, अहमदाबाद और गुवाहाटी में स्थित चार क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र (आर.पी.डी.सी.) प्रचालित करता है, जो देश के पूर्वी, दक्षिणी, पश्चिमी और उत्तर-पूर्वी भागों की जरूरतों को पूरा करते हैं। दिल्ली मुख्यालय उत्तरी क्षेत्र की सेवा करता है। व्यक्तियों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और स्कूलों के लिए रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशनों तक आसान पहुँच सुनिश्चित करने के लिए चार आर.पी.डी.सी., पाँच क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान और दिल्ली मुख्यालय में रा.शै.अ.प्र.प. संचालित विक्रय केंद्र पूरे साल काम करते हैं। रिपोर्टिंग वर्ष के दौरान, 587 प्रकाशन जारी किए गए।

रा.शै.अ.प्र.प. ने अपने प्रकाशनों को प्रदर्शित करने और बेचने के लिए विश्व पुस्तक मेला 2024, कोलकाता पुस्तक मेला 2024 जैसे पुस्तक आयोजनों और प्रदर्शनियों में भी भाग लिया।

19. राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ (सी.एन.सी.एल)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के अनुसार, मार्च 2021 में रा.शै.अ.प्र.प. में राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र के लिए एक प्रकोष्ठ का गठन किया गया था। यह बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के साथ ही महत्वपूर्ण जीवन-कौशलों हेतु मुद्रित और गैर-मुद्रित दोनों तरह की संसाधन सामग्री विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए 'सभी के लिए शिक्षा' (प्रौढ़ शिक्षा) के प्रति समर्पित है। यह प्रकोष्ठ शिक्षा मंत्रालय के कार्यक्रम 'उल्लास — नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' के अनुसार काम करता है जो 'सभी के लिए शिक्षा' पर केंद्रित है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सभी के लिए शिक्षा के संबंध में पाँच प्रमुख घटकों पर प्रकाश डाला गया है— बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता, महत्वपूर्ण जीवन-कौशल, व्यावसायिक कौशल विकास, बुनियादी शिक्षा और सतत शिक्षा। प्रकोष्ठ वयस्क शिक्षार्थियों के लिए उक्त घटकों को पूरा करने वाली विभिन्न संसाधन सामग्री विकसित करता है, जैसे कि चार खंडों में 'उल्लास' प्राइमर, उल्लास संक्षिप्त प्राइमर, इनकी संदर्शिकाएँ, कार्यपत्रक, आकलन मद, प्राइमर पर आधारित वीडियो कार्यक्रम, महत्वपूर्ण जीवन-कौशलों पर ऑडियो कार्यक्रम, एनिमेटेड फिल्में, स्टोरीबुक और प्रचार सामग्री, जैसे— जिंगल, वृत्तचित्र, फ्लायर्स, ब्रोशर और सूचनात्मक पुस्तिकाएँ।

प्रकोष्ठ का लक्ष्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा अनुशंसित शत प्रतिशत साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करना है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, प्रकोष्ठ ने राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के साथ अभिसरण सहयोग में अभिविन्यास कार्यशालाओं सहित विभिन्न राज्यों के अध्यापकों, प्रमुख संसाधन व्यक्तियों और मास्टर प्रशिक्षकों के लिए विभिन्न कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया।

इसी क्रम में, प्रकोष्ठ द्वारा उक्त घटकों पर मौजूदा विशेषज्ञता के साथ तालमेल विकसित करते हुए विभिन्न संसाधन सामग्री का निर्माण करने की परिकल्पना की गई है। प्रकोष्ठ ने 'उल्लास' के प्रभावी कार्यान्वयन और प्रसार के लिए, राज्यों के साथ समन्वय में काम करते हुए विस्तृत दिशानिर्देश, पुस्तिकाएँ, ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम, पैम्फलेट, मोनोग्राफ आदि विकसित करने और विकसित संसाधन सामग्रियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने की योजना बनाई है।

20. परख (प्रदर्शन आकलन, समीक्षा और समग्र विकास के लिए ज्ञान का विश्लेषण)

राष्ट्रीय आकलन केंद्र–परख (प्रदर्शन आकलन, समीक्षा और समग्र विकास के लिए ज्ञान का विश्लेषण) की स्थापना रा.शै.अ.प्र.प. में फरवरी 2023 में एक स्वतंत्र घटक इकाई के रूप में की गई थी। इसके प्राथमिक उद्देश्यों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनिवार्य अन्य कार्यों के साथ-साथ विद्यार्थी आकलन से संबंधित मानदंड, मानक, दिशानिर्देश निर्धारित करना और गतिविधियों को क्रियान्वित करना शामिल है। 'परख' के लिए फोकस के चार प्रमुख क्षेत्र हैं— योग्यता आधारित आकलन में क्षमता विकास; बड़े पैमाने पर उपलब्धि सर्वेक्षण; स्कूल बोर्डों की समानता; और बुनियादी, आरंभिक मध्य और माध्यमिक स्तरों के लिए समग्र प्रगति कार्ड तैयार करना।

II. केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.), एक प्रमुख राष्ट्रीय संस्थान और रा.शै.अ.प्र.प. की एक घटक इकाई है, जिसकी स्थापना 1984 में शैक्षिक प्रौद्योगिकी केंद्र (सी.ई.टी.) और शिक्षण सहायक सामग्री विभाग के विलय के माध्यम से की गई थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य शैक्षणिक प्रौद्योगिकियों, जैसे— रेडियो, टी.वी., फिल्मों, सेटेलाइट संचार और साइबर मीडिया के उपयोग को अलग-अलग या संयोजन में बढ़ावा देना है। संस्थान शैक्षिक अवसरों को बढ़ाने, साम्यता को बढ़ावा देने और स्कूल स्तर पर शैक्षिक प्रक्रियाओं की गुणवत्ता में सुधार करने हेतु गतिविधियाँ करता है। संस्थान में चार प्रमुख विभाग हैं— सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी विभाग और प्रशिक्षण प्रभाग (डी.आई.सी.टी. एवं टी.डी.), योजना और अनुसंधान प्रभाग (पी.आर.डी.), मीडिया उत्पादन प्रभाग (एम.पी.डी.) और अभियांत्रिकी प्रभाग (ई.डी.)।

डी.आई.सी.टी. एवं टी.डी. विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए मल्टीमीडिया सामग्री बनाने, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आई.सी.टी. के उपयोग पर प्रशिक्षण प्रदान करने और अध्यापकों, शिक्षक प्रशिक्षकों और अन्य हितधारकों के लिए शिक्षा में आई.सी.टी. विधि पर शोध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शिक्षा में आई.सी.टी. को समेकित करने पर केंद्रित संकाय प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है, जिसमें ओपन-सोर्स सामग्री का विकास और प्रसार शामिल है। यह प्रभाग देश के हर कोने में स्कूलों, विद्यार्थियों और अध्यापकों तक आई.सी.टी. संसाधनों का विस्तार करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके अतिरिक्त, यह सी.आई.ई.टी. और रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइटों के साथ-साथ उनके अन्य वेब अनुप्रयोगों से संबंधित निर्णयों, उनके विकास, निरंतर अद्यतनीकरण और रख-रखाव के लिए जिम्मेदार है।

पी.आर.डी. संस्थान के अंदर अनुसंधान की योजना बनाने, संचालन करने और प्रसार से संबंधित गतिविधियों की देखरेख करता है। यह नए कार्यक्रम प्रस्तावों के विकास की देखरेख करने और सी.आई.ई.टी. के संस्थागत सलाहकार बोर्ड (आई.ए.बी.), रा.शै.अ.प्र.प. की कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) और भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय (एम.ओ.ई.) के परियोजना सलाहकार बोर्ड जैसे निकायों से अनुमोदन प्राप्त करने के लिए भी जिम्मेदार है, ताकि अनुमोदित कार्यक्रमों का समय पर क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जा सके। इसके अतिरिक्त, पी.आर.डी. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् मुख्यालय के साथ सी.आई.ई.टी. की शैक्षणिक गतिविधियों पर मासिक, त्रैमासिक और वार्षिक रिपोर्ट संकलित और साझा करता है, डिजिटल समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ प्रकाशित करता है एवं राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर विस्तार और प्रसार गतिविधियों का समन्वयन करता है।

मीडिया उत्पादन प्रभाग (एम.पी.डी.) का प्राथमिक कार्य स्कूल जाने वाले बच्चों (बुनियादी से माध्यमिक स्तर तक) के साथ-साथ अध्यापकों, प्रशिक्षकों और अन्य हितधारकों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक ऑडियो-विज़ुअल कार्यक्रम तैयार करना है। उत्साही और योग्य पेशेवरों की एक टीम ऐसे कार्यक्रम बनाने के लिए लगन से काम करती है, जिनको अंतिम रूप देने से पहले विशेषज्ञों और हितधारकों द्वारा सावधानीपूर्वक समीक्षा की जाती है। इन कार्यक्रमों को ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से प्रसारित करने के लिए पैकेज किया जाता है, जिसमें कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों, व्यावसायिक शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के लिए पी.एम. ई-विद्या डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों पर प्रसारण शामिल है। पाठ्यक्रम-आधारित वीडियो कार्यक्रमों के अलावा, ऑडियो कार्यक्रम ऑल इंडिया रेडियो स्टेशनों, ज्ञानवाणी, एफ.एम. रेडियो चैनलों, सामुदायिक रेडियो स्टेशनों और आई-रेडियो के माध्यम से विकसित और प्रसारित किए जाते हैं। ये कार्यक्रम विद्यार्थियों, अध्यापकों और आम जनता के लिए ऑफलाइन भी उपलब्ध कराए जाते हैं। इन ऑडियो-विज़ुअल सामग्रियों को दीक्षा पोर्टल और मोबाइल ऐप के माध्यम से भी प्रसारित किया जाता है।

इंजीनियरिंग प्रभाग (ई.डी.) का प्राथमिक कार्य संस्थान को नवीनतम तकनीकों से लैस करना है, जिससे सी.आई.ई.टी. अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त कर सके। ई.डी. संस्थान की जरूरतों के आधार पर उपकरणों की खरीद और रख-रखाव के लिए जिम्मेदार है। सी.आई.ई.टी. में अत्याधुनिक उत्पादन सुविधाएँ हैं, उपकरणों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए निरंतर उन्नयन और उचित रख-रखाव किया जाता है। संस्थान का उद्देश्य स्कूलों और शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों को कवर करते हुए सर्वश्रेष्ठ ई-सामग्री (ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, एनीमेशन) बनाना और इस सामग्री को ऑफलाइन और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म (एयर, वेब और मोबाइल) के माध्यम से प्रसारित करना है। इसका लक्ष्य संवर्धित वास्तविकता (ए.आर.), आभासी वास्तविकता (वी.आर.), मिश्रित वास्तविकता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग करते हुए देशभर के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है।

III. पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) रा.शै.अ.प्र.प. की एक घटक इकाई है, जो भारत सरकार का एक स्वायत्त संगठन है। यह व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय सर्वोच्च अनुसंधान और विकास संस्थान है।

पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. में छह विभाग— (1) कृषि और पशुपालन विभाग (डी.ए.ए.एच.), (2) व्यापार और वाणिज्य विभाग (डी.बी.सी.), (3) इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी विभाग (डी.ई.टी.), (4) स्वास्थ्य और परा-चिकित्सा विज्ञान विभाग (डी.एच.पी.एस.), (5) गृह विज्ञान और आतिथ्य प्रबंधन विभाग (डी.एच.एच.एम.), (6) मानविकी, शिक्षा और अनुसंधान विभाग (डी.एच.ई.आर.) और तीन केंद्र— (क) पाठ्यचर्या विकास और मूल्यांकन केंद्र (सी.डी.ई.सी.) तथा एन.एस.क्यू.एफ. प्रकोष्ठ, (ख) अंतरराष्ट्रीय संबंध केंद्र, (ग) कार्यक्रम योजना और निगरानी केंद्र (पी.पी.एम.सी.) हैं।

संस्थान की भूमिकाओं और कार्यों में राष्ट्रीय कौशल योग्यता रूपरेखा (एन.एस.क्यू.एफ.) के तहत माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा कार्यक्रम के व्यावसायीकरण में शिक्षा मंत्रालय और राज्य सरकारों को सलाह देना और सहायता करना; स्कूलों में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए सीखने के प्रतिफल-आधारित पाठ्यक्रम, शिक्षण-अधिगम सामग्री और दिशानिर्देश विकसित करना; अनुसंधान को बढ़ावा देना और संचालित करना तथा शोध निष्कर्षों का प्रसार करना; माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण के

कार्यान्वयन पर प्रधानाचार्यों और व्यावसायिक समन्वयकों सहित प्रमुख पदाधिकारियों को उन्मुख और प्रशिक्षित करना तथा व्यावसायिक अध्यापकों का प्रशिक्षण आयोजित करना शामिल है।

संस्थान अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, मूल्यांकन और विस्तार की व्यापक श्रेणियों में विभिन्न गतिविधियाँ करता है। यह एन.एस.क्यू.एफ. (प्रिंट और गैर-प्रिंट दोनों) के अंतर्गत व्यावसायिक पाठ्यक्रम एवं शिक्षण सामग्री विकसित और संशोधित करता है; व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित विषयगत मुद्दों पर शोध अध्ययन करता है; राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के व्यावसायिक शिक्षा के प्रमुख अधिकारियों (प्रशासकों और प्रबंधकों) और व्यावसायिक अध्यापकों/अनुदेशकों सामान्य और अनु. जाति/अनु. जनजाति श्रेणी दोनों) के लिए प्रशिक्षण आयोजित करता है; शैक्षिक योजनाकारों, व्यावसायिक स्कूलों के प्रधानाचार्यों, व्यावसायिक परामर्शदाताओं आदि के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करता है और व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन पर आकलन अध्ययन करता है। यह सामयिक महत्व के मुद्दों पर राष्ट्रीय संगोष्ठियों एवं राष्ट्रीय बैठकों का भी आयोजन करता है। संस्थान व्यावसायिक शिक्षा पर शोध निष्कर्षों को साझा करने और व्यावसायिक शिक्षा पर जानकारी प्रसारित करने के लिए एक भारतीय व्यावसायिक शिक्षा पत्रिका और व्यावसायिक शिक्षा पर एक त्रैमासिक बुलेटिन प्रकाशित करता है। व्यावसायिक शिक्षा में उत्कृष्टता के लिए रा.शै.अ.प्र.प. पुरस्कार हर साल विद्यार्थियों, अध्यापकों, संस्थानों और उद्योगों को मान्यता देने व प्रोत्साहित करने के लिए दिए जाते हैं। संस्थान सुरक्षित वातावरण में कौशल सीखने और सीखने में नम्यता को बढ़ावा देने के लिए कौशल ई-पुस्तकालय स्थापित करने की प्रक्रिया में है। संस्थान माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) के कार्यान्वयन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा को क्रियान्वित करने में राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों को सहायता प्रदान कर रहा है। संस्थान रोजगार कौशल, 21वीं सदी के कौशल और भविष्य के व्यावसायिक कौशलों के निर्माण के लिए अल्पकालिक ऑनलाइन और ऑफलाइन पाठ्यक्रम शुरू कर रहा है।

IV. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई)

अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूरु और पूर्वोत्तर में उमियम (मेघालय) स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के अध्यापकों या शिक्षक-प्रशिक्षकों की शैक्षिक आवश्यकताओं (सेवा-पूर्व तथा सेवाकालीन शिक्षा) को पूरा करते हैं। विद्यालयी अध्यापकों को विभिन्न विद्यालयी विषयों के अध्यापन हेतु सेवा-पूर्व व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा हेतु क्षेत्रीय संसाधन संस्थानों के रूप में कार्य करते हैं; राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों को नीतियों के क्रियान्वयन अपेक्षित सहायता देते हैं और केंद्र प्रायोजित योजनाओं के क्रियान्वयन, अनुवीक्षण और मूल्यांकन हेतु सहायता प्रदान करते हैं।

आर.आई.ई. के प्रमुख शैक्षणिक कार्य

आर.आई.ई. के प्रमुख शैक्षणिक कार्य इस प्रकार हैं—

- नवाचारात्मक सेवा-पूर्व शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अभिकल्पन तथा उनका क्रियान्वयन करना;
- क्षेत्र में राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के डी.आई.ई.टी., सी.टी.ई., आई.ए.एस.ई. तथा एस.सी.ई.आर.टी. के कर्मचारी वर्ग तथा अन्य शैक्षिक पदाधिकारियों के क्षमता निर्माण हेतु शिक्षा जारी रखने अथवा सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना;
- विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा से संबंधित विषयों पर अनुसंधान और विकास गतिविधियाँ आयोजित करना;

- विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा से संबंधित विषयों पर परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराना;
- क्षेत्र में राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों को विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा को शैक्षिक समर्थन प्रदान करना;
- क्षेत्र में केंद्र प्रायोजित योजनाओं के क्रियान्वयन, निगरानी तथा मूल्यांकन में सहायता प्रदान करना;
- पाठ्यचर्या सामग्री, पाठ्यपुस्तकों तथा अनुदेशात्मक सामग्री आदि के विकास, क्षेत्र-परीक्षण और मूल्यांकन में राज्यों की सहायता करना।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के मुख्य कार्यों में से एक कार्य क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में नवाचारात्मक सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों को तैयार करना तथा उन्हें संचालित करना है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी की शिक्षा में चार वर्षीय समेकित बी.ए.-बी.एड. पाठ्यक्रम, विज्ञान शिक्षा में बी.एस-सी.बी.एड. या बी.एस-सी.एड., विज्ञान तथा मानविकी में दो वर्षीय बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम, एम. एड, एम.एस.सी.-एड. तथा मार्गदर्शन और परामर्श में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.जी.सी.) संचालित होते हैं। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में पीएच.डी. कार्यक्रम के लिए सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। चार वर्षीय समेकित बी.ए.-बी.एड. और बी.एस-सी.बी.एड. या बी.एस-सी.एड. पाठ्यक्रम में गुणवत्ता अर्थात विषय-सामग्री, प्रक्रिया, शिक्षणशास्त्र तथा सह-पाठ्यचर्यात्मक क्रियाकलापों में सुविज्ञता प्राप्त अच्छे अध्यापक तैयार करने पर मुख्य बल दिया गया है। विज्ञान तथा मानविकी में दो वर्षीय बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम एन.सी.टी.ई. के दिशानिर्देशों पर आधारित एक प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम है।

1. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), अजमेर

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर की स्थापना वर्ष 1963 में हुई थी, जिसे बाद में वर्ष 1995 में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), अजमेर नाम दिया गया। यह उत्तरी क्षेत्र की शैक्षिक हितों की देखभाल करता है जिसमें हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, चंडीगढ़, जम्मू और कश्मीर एवं लद्दाख के राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र शामिल हैं। यह एम.डी.एस. विश्वविद्यालय, अजमेर से संबद्ध है और इसके पाठ्यक्रम एन.सी.टी.ई., नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। संबद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति की अध्यक्षता में प्रबंधन समिति अकादमिक हित के मामलों पर सलाहकार की भूमिका निभाती है। संस्थान को वर्ष 2017–18 में नैक द्वारा 'ए+' ग्रेड से मान्यता दी गई है। संस्थान ने हाल ही में पुनः मान्यता के लिए नैक को अपनी एस.एस.आर. रिपोर्ट सौंपी है। संस्थान महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर से संबद्ध है और कार्यक्रम अधिगम प्रतिफल (पी.एल.ओ.) और पाठ्यक्रम/ गतिविधि सीखने के प्रतिफल (सी.एल.ओ.) की उपलब्धि पर बल देने के साथ बी.एस.सी.बी.एड., बी.ए.बी.एड., बी.एड., एम.एड. और मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा जैसे कार्यक्रम और पाठ्यक्रम उपलब्ध कराता है।

देश के उत्तरी क्षेत्र के शिक्षा के एक उन्नत और अग्रणी संस्थान के रूप में, यहाँ नवीन सेवा-पूर्व कार्यक्रमों को चलाने का प्रयास किया जाता है और अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाता है, निर्देशात्मक सामग्री का विकास किया जाता है और विभिन्न स्कूल विषयों में सेवारत अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है तथा उन्हें संचालित करने के तरीके बताए जाते हैं। स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा पर एक क्षेत्रीय संसाधन संस्थान के रूप में, यह राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को एक सहायता प्रणाली प्रदान करता है और राज्य स्तर की एजेंसियों को शिक्षा के बेहतर तरीकों, अभ्यासों और पैटर्न से संबंधित जानकारी का दस्तावेजीकरण और प्रसार किया जाता है। संस्थान शिक्षा के राज्य विभागों को स्कूली शिक्षा के सभी पहलुओं से संबंधित नीतियों और कार्यक्रमों पर सलाह देता है और शिक्षा मंत्रालय और रा.शै.अ.प्र.प. मुख्यालय से शुरू होने वाली राष्ट्रीय स्तर की नीतियों और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में

सहायता प्रदान करता है। संस्थान मुख्य रूप से अनुसंधान, विकास और प्रशिक्षण के क्षेत्रों में विशिष्ट परियोजनाओं के द्वारा राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों और रा.शै.अ.प्र.प., डी.आई.ई.टी., आई.ए.एस.ई., सी.टी.ई. आदि जैसे जिला स्तर के अध्यापक शिक्षा संस्थानों की क्षमता निर्माण का लक्ष्य रखता है।

संस्थान निम्नलिखित चार सेवा-पूर्व कार्यक्रम, अर्थात आई.टी.ई.पी. चार वर्षीय समेकित बी.ए.बी.एड. कार्यक्रम, आई.टी.ई.पी. चार वर्षीय समेकित बी.एस.सी.बी.एड. कार्यक्रम, दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम, दो वर्षीय एम.एड. कार्यक्रम तथा मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (दूरस्थ/ऑनलाइन और आमने-सामने) उपलब्ध कराता है।

2. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल पहले क्षेत्रीय शिक्षा कॉलेज के रूप में जाना जाता था। इसे 1963 में रा.शै.अ.प्र.प. के एक संघटक के रूप में स्थापित किया गया। यह देश के पश्चिमी क्षेत्र की स्कूली शिक्षा से संबंधित सेवा-पूर्व और सेवाकालीन जरूरतों को पूरा करने के लिए जाना जाता है, जिसमें मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा राज्य, दमन और दीव तथा दादरा एवं नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र शामिल हैं।

संस्थान की भूमिका में रा.शै.अ.प्र.प. के एक क्षेत्रीय केंद्र के रूप में सामान्य रूप से शिक्षा और विशेष रूप से स्कूल व अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षण, अनुसंधान और विकास कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एक उन्नत केंद्र के रूप में कार्य करना; विज्ञान और गणित शिक्षा (भौतिक विज्ञानों, जैविक विज्ञानों, गणित), सामाजिक विज्ञान एवं भाषाओं और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण अध्यापकों को तैयार करना; स्कूली शिक्षा से संबंधित अध्यापकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, पर्यवेक्षकों और प्रशासकों के लिए सेवाकालीन कार्यक्रम आयोजित करना; नवीन प्रयोगों को आजमाने के लिए संस्थान की प्रयोगशाला के रूप में एक मॉडल प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल (डी.एम.एस.) का नियोजन, विकास एवं प्रबंधन; और राज्य/जिला व अध्यापक शिक्षा संस्थानों जैसे अनुसंधान, प्रशिक्षण, विकास और विस्तार के क्षेत्रों में एस.सी.ई.आर.टी., डी.आई.ई.टी./सी.टी.ई. और आई.ए.एस.ई. की क्षमता निर्माण हेतु क्षेत्र के राज्यों के लिए एक सहायता प्रणाली के रूप में कार्य करना; और रा.शै.अ.प्र.प. या भारत सरकार द्वारा शुरू की गई स्कूली शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबंधित नीतियों और कार्यक्रमों पर राज्य के शिक्षा विभागों को सलाह देना है।

विद्यालयी शिक्षा की आवश्यकताओं के संदर्भ में उपरोक्त भूमिका निभाने के लिए संस्थान अनुसंधान, प्रशिक्षण, विकास, विस्तार, निगरानी, मूल्यांकन और प्रसार आदि के व्यापक क्षेत्रों में कार्यक्रम चलाता है। क्षेत्र के राज्यों की वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं का आकलन राज्य समन्वय समिति (एस.सी.सी.) की बैठकों में किया जाता है, जो राज्य के पदाधिकारियों के साथ आयोजित की जाती हैं और राज्य के अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों के लिए सेवाकालीन कार्यक्रम आयोजित करके इनका समाधान किया जाता है।

3. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भुवनेश्वर

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर द्वारा ओडिशा, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, त्रिपुरा तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की स्कूली शिक्षा से संबंधित सेवा-पूर्व तथा ओडिशा, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की सेवाकालीन आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। संस्थान द्वारा एन.सी.टी.ई के अनुमोदन के बाद उत्कल विश्वविद्यालय से संबद्धता के तहत निम्नलिखित नियमित सेवा-पूर्व पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं— 1. चार वर्षीय समेकित बी.एस-सी. बी.एड., 2. चार वर्षीय समेकित बी.ए.बी.एड., 3. दो वर्षीय बी.एड., 4. दो वर्षीय एम.एड.। इसके अतिरिक्त संस्थान

द्वारा मार्गदर्शन एवं परामर्श में दूरस्थ-सह-प्रत्यक्ष माध्यम में एक डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी संचालित किया जाता है। संस्थान ऑनलाइन-सह-21 दिवसीय संपर्क कार्यक्रम के माध्यम से माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षा में डिप्लोमा कार्यक्रम (डी.पी.एस.ई.) चलाता है। संस्थान उत्कल विश्वविद्यालय के पूर्व-पीएच.डी. शिक्षा पाठ्यक्रम के नोडल केंद्र के रूप में भी कार्य करता है।

आर.आई.ई., भुवनेश्वर का मुख्य कार्य अध्यापक शिक्षा और शैक्षिक अनुसंधान के एक संस्थान के रूप में कार्य करना है। संस्थान के कार्यों में इसके अतिरिक्त शिक्षक प्रशिक्षण, नए शैक्षणिक क्षेत्र की संकल्पनाओं में कौशल विकास के क्षेत्रों में एस.सी.ई.आर.टी., आई.ए.एस.ई., सी.टी.ई. और डी.आई.ई.टी. की क्षमता निर्माण कार्य करना; कार्यनीतिक संस्थागत और कक्षा प्रबंधन तकनीक, सामग्री उत्पादन, पाठ्यक्रम नवीनीकरण, निगरानी और शैक्षिक अनुसंधान; समग्र शिक्षा जैसी केंद्र प्रायोजित योजनाओं के कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन में सहायता करना; चार वर्षीय समेकित बी.एस-सी.बी.एड. और बी.ए.बी.एड. पाठ्यक्रम, दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम, दो वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के माध्यम से नवाचारी सेवा-पूर्व शिक्षक तैयारी कार्यक्रमों को संकल्पित करना और प्रायोगिक तौर पर संचालित करना; समावेशी शिक्षा, जेंडर संवेदनशीलता, बहु-कक्षा शिक्षण, विशेष शिक्षा आदि के विशेष संदर्भ में पाठ्यचर्या सामग्री, पाठ्यपुस्तकों, अनुदेशात्मक सामग्रियों के विकास, क्षेत्र-परीक्षण एवं मूल्यांकन और प्रशिक्षण पैकेज की तैयारी में राज्यों की सहायता करना; रा.शै.अ.प्र.प. के एक क्षेत्रीय केंद्र के रूप में कार्य करना तथा क्षेत्र और राज्य विशिष्ट आवश्यकता आधारित कार्यक्रमों को डिजाइन करने के अतिरिक्त रा.शै.अ.प्र.प. की नीतियों और कार्यक्रमों को क्रियान्वित करना; शैक्षिक अनुसंधान सहित स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के लिए क्षेत्रीय संसाधन संस्थान के रूप में कार्य करना; स्कूली शिक्षा में उनकी जरूरतों के अनुसार पूर्वी क्षेत्र तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में राज्यों को अकादमिक सहायता प्रदान करना; नवाचारी कक्षा अभ्यासों का दस्तावेजीकरण और प्रसार करना सम्मिलित है।

4. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), मैसूरु

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु (पूर्व में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय) की स्थापना 1 अगस्त, 1963 को हुई थी जो राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), नई दिल्ली द्वारा स्थापित पाँच ऐसे संस्थानों में से एक है। क्षेत्रीय संस्थानों की शुरुआत मुख्य रूप से नवाचारी सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम और संगत अनुसंधान, विकास और विस्तार गतिविधियों के माध्यम से स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार के उद्देश्य से की गई थी।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु ने स्वयं को स्कूल और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित संस्थान के रूप में स्थापित किया है। संस्थान ने देश और दक्षिणी क्षेत्र के शैक्षिक परिदृश्य में बदलाव से उत्पन्न जिम्मेदारियों और चुनौतियों को वहन करने का प्रयास किया है। सेवा-पूर्व शिक्षा से सेवाकालीन शिक्षा पर अपना ध्यान केंद्रित करने में एक बड़े बदलाव के बाद, संस्थान 1995 से क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के रूप में कार्य कर रहा है। संस्थान के सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम मैसूरु विश्वविद्यालय से संबद्ध हैं और दक्षिण भारतीय राज्यों, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और संघ राज्य क्षेत्रों पुदुच्चेरी और लक्षद्वीप की जरूरतों को पूरा करते हैं। स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में नवीन अभ्यासों को आजमाने के लिए एक प्रयोगशाला के रूप में आर.आई.ई., मैसूरु से एक मॉडल प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल (डी.एम.एस.) जुड़ा हुआ है। इनका उपयोग विभिन्न विषय क्षेत्रों में योग्य अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों को तैयार करने हेतु संस्थानों के प्रशिक्षुओं के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए भी किया जाता है। संस्थान के मुख्य कार्यों में सेवाकालीन और सेवा-पूर्व दोनों प्रकार के अध्यापकों को प्रशिक्षित

करना; स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के लिए मानवीय और चिंतनशील अभ्यासकर्ताओं को तैयार और प्रशिक्षित करना, जो समावेशी व्यवस्थाओं का प्रबंधन करने में सक्षम हों; दक्षिणी क्षेत्र के विशेष संदर्भ में अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार सहित स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता का केंद्र बनना; संवैधानिक मूल्यों और समकालीन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना; शिक्षण-अधिगम में वर्तमान रुझानों और स्कूली शिक्षा की उभरती माँगों पर बल देते हुए अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना; विभिन्न शैक्षिक योजनाओं के निर्माण और कार्यान्वयन के लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के साथ सहयोग करना; स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले संगठनों को आवश्यकता आधारित शैक्षणिक सहायता प्रदान करना तथा स्कूल और अध्यापक शिक्षा के मामले में समानधर्मी संस्थानों के साथ पारस्परिक सहयोग का नेटवर्क बनाना और उसे व्यवस्थित रखना सम्मिलित है।

संस्थान मैसूरु विश्वविद्यालय से संबद्ध है। स्नातक पाठ्यक्रम पाँच राज्यों और दो संघ राज्य क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। परास्नातक कार्यक्रम सभी भारतीय विद्यार्थियों के लिए खुला है। प्रवेश रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा आयोजित सामान्य प्रवेश परीक्षा के आधार पर होता है। सभी शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिए विकल्प आधारित क्रेडिट सिस्टम को अपनाया गया है।

5. पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई. ई.), उमियम, मेघालय

पूर्वोत्तर राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु 1995 में मेघालय राज्य की राजधानी शिलांग में पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान की स्थापना, रा.शै.अ.प्र.प. की एक घटक इकाई के रूप में की गई थी जिसमें रा.शै.अ.प्र.प. के आदेश के अनुरूप असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा शामिल हैं। संस्थान पूर्वोत्तर क्षेत्र में सक्रिय संगठन की भूमिका निभाकर स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी बनने के लिए तैयार है। संस्थान का लक्ष्य क्षेत्र में मानव संसाधन विकास की सुविधा देने का है, ताकि राज्य अध्यापक शिक्षा के साथ-साथ स्कूल के सभी पक्षों में गुणवत्तापूर्ण निवेश देने में सक्षम बन सकें। एन.ई.आर.आई.ई. का दृष्टिकोण क्षेत्र में मानव संसाधनों के विकास को सुविधाजनक बनाना है ताकि राज्य स्कूल के साथ-साथ अध्यापक शिक्षा के सभी पहलुओं में गुणवत्तापूर्ण इनपुट प्रदान करने में सक्षम हो सकें।

संस्थान मुख्य रूप से राज्य और जिला स्तर के संसाधन संस्थानों/अध्यापक शिक्षा संस्थानों और क्षेत्र में स्थित राज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षा बोर्डों के अनुसंधान, विकास और प्रशिक्षण हेतु क्षमता निर्माण के लिए काम करता है। संस्थान निम्नलिखित गतिविधियों में शामिल हैं— भारत सरकार और रा.शै.अ.प्र.प. के कार्यक्रमों का प्रचार और समर्थन; पूर्वोत्तर में स्कूली शिक्षा का विकास; राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाओं, अध्यापकों के व्यावसायिक विकास, शिक्षा के सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों पर शोध के आलोक में शिक्षा, विज्ञान और गणित शिक्षा में भाषा के क्षेत्रों में एक अलग प्रकार की व्यावसायिक पहचान का विकास आदि।

एन.ई.आर.आई.ई. ने सत्र 2015–16 से अपना दो वर्षीय नियमित पूर्णकालिक बी.एड. पाठ्यक्रम शुरू किया है। पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) द्वारा अनुमोदित किया गया है और पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय (एन.ई.एच.यू.), शिलांग से विधिवत संबद्ध किया गया है। दो वर्षीय बी.एड. के अलावा, एन.ई.आर.आई.ई. मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (डी.सी.जी.सी.) भी प्रदान करता है, जो एक वर्ष की अवधि का और मिश्रित मोड में है। इसके अलावा, एन.ई.आर.आई.ई प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल

और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) में छह माह का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम भी चलाता है। संस्थान निकट भविष्य में एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम और अन्य स्नातकोत्तर कार्यक्रम शुरू करने के लिए भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहा है।

V. प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय

अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूरु स्थित प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय (डिमॉन्सट्रेशन मल्टीपरपज स्कूल) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों का एक अभिन्न अंग हैं जो विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में नवाचारों का प्रयास करने के लिए प्रयोगशालाओं के रूप में कार्य करते हैं। प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.), नई दिल्ली के साथ संबद्ध हैं तथा कक्षा 1–12 तक हिंदी और अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्रदान करते हैं। इन विद्यालयों में संस्थान के शिक्षक-प्रशिक्षकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

1. प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, अजमेर

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय (डी.एम.एस.) की स्थापना 1964 में क्षेत्रीय शिक्षा कॉलेज (अब क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान), अजमेर के नियंत्रणाधीन गति निर्धारण संस्थान के रूप में देश के स्कूली शिक्षा में सुधार के लिए नवाचारी विचारों और प्रयोगों को आजमाने के लिए की गई थी। यह सी.बी.एस.ई. से संबद्ध सह-शिक्षा विद्यालय है जो पूर्व-प्राथमिक से कक्षा 12 तक 700 से अधिक विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के लिए मानविकी, विज्ञान, वाणिज्य और व्यावसायिक वर्गों के विकल्प उपलब्ध हैं।

2. प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भोपाल

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भोपाल 1965 में अस्तित्व में आया, जो सी.बी.एस.ई के साथ संबद्ध है। यह प्री-स्कूल से लेकर कक्षा 12 तक शिक्षा का एक व्यापक कार्यक्रम चलाता है। स्कूल का मिशन बच्चों के समग्र विकास के लिए राष्ट्र में स्कूली शिक्षा का एक मॉडल प्रदान करना है। स्कूल की भूमिका नवीनतम तकनीकों का उपयोग करके गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और भावी अध्यापकों को इंटर्नशिप कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षण का अवलोकन करने, सीखने और अभ्यास करने में सक्षम बनाना है।

3. प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भुवनेश्वर

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भुवनेश्वर स्कूल शिक्षा के प्रमुख क्षेत्रों से संबंधित अनुसंधान और विकास में भाग लेकर भारत के पूर्वी क्षेत्र में एक गति निर्धारक विद्यालय के रूप में कार्य करता है और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर के अधिकाँश शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के केंद्र के रूप में कार्य करता है। इस विद्यालय में समाज के सभी वर्गों के छात्र-छात्राएँ आते हैं। यहाँ, पूर्व-प्राथमिक, कक्षा 1 और कक्षा 6 (अतिरिक्त खंड) में प्रवेश यादृच्छिक चयन द्वारा किया जाता है। 3–4 वर्ष के आयु वर्ग में 25 विद्यार्थियों को और 4–5 वर्ष के आयु वर्ग में 45 विद्यार्थियों को कक्षा 1 में और 35 विद्यार्थियों को कक्षा 6 में प्रवेश दिया गया है। स्कूल के विद्यार्थियों को कक्षा 11 (विज्ञान, वाणिज्य और कला वर्ग) में प्रवेश के लिए प्राथमिकता दी जाती है। इस स्कूल में 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों को योग्यता के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से स्कूल के विद्यार्थियों ने आई.आई.टी., एन.आई.एस.ई.आर. और आई.आई.एस.ई.आर. जैसे राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी योग्यता साबित की है। स्कूल से निकले बच्चों ने चिकित्सा, इंजीनियरिंग, कानून, शिक्षा, खेल, मॉडलिंग, फिल्म, नौकरशाही और आध्यात्मिक संस्थानों के क्षेत्र में देश और दुनियाभर में बहुत प्रशंसा अर्जित की है।

4. प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, मैसूरु

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, मैसूरु संस्थान की नई कार्यनीतियों तथा अनुदेशात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अपनाने और उनके प्रायोगिक परीक्षणों के लिए एक प्रयोगशाला के रूप में कार्य करता है। स्कूल द्वारा बी.एस.सी. (शिक्षा) के विद्यार्थियों को अवलोकन करने, सीखने और अध्यापन में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाते हैं तथा यह संस्थान के कर्मचारियों के लिए सहयोगात्मक प्रशिक्षण और अनुसंधान प्रयास के केंद्र के रूप में कार्य करता है। यह सी.बी.एस.ई. से संबद्ध है और बच्चे के समग्र व्यक्तित्व विकास पर बल देते हुए अध्यापन और मूल्यांकन के नवाचारी दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है।

2023–24 में परिषद् की प्रमुख उपलब्धियाँ

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाएँ (एन.सी.एफ.)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुक्रिया में, रा.शै.अ.प्र.प. ने चार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाओं (एन.सी.एफ.), अर्थात, बुनियादी स्तर, विद्यालयी शिक्षा, अध्यापक शिक्षा और वयस्क शिक्षा के लिए एन.सी.एफ. के विकास की पहल की। वर्ष 2020 और 2022 के बीच, रा.शै.अ.प्र.प. ने विश्वविद्यालयों के सहयोग से मोबाइल ऐप सर्वेक्षण और जिला-स्तरीय परामर्श आयोजित किए, जिसमें विश्वविद्यालय के कुलपति, संकाय सदस्य, विद्यार्थी, अभिभावक और नागरिक समाज के सदस्यों सहित लगभग 8,000 प्रतिभागी शामिल हुए। इनपुट एकत्र करने के लिए स्कूल शिक्षा बोर्डों के साथ भी परामर्श किया गया। बुनियादी स्तर के लिए एन.सी.एफ. (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 20 अक्तूबर, 2022 और स्कूल शिक्षा के लिए एन.सी.एफ. (एन.सी.एफ.-एस.ई.) को 23 अगस्त, 2023 को जारी किया गया। अध्यापक शिक्षा के लिए विकसित एन.सी.एफ. को अंतिम रूप दिया जा रहा है, जबकि वयस्क शिक्षा के लिए एन.सी.एफ. अभी भी प्रगति पर है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का हिंदी में अनुवाद किया गया है। एन.सी.एफ.-एस.ई. के जारी होने के बाद, रा.शै.अ.प्र.प. ने बुनियादी स्तर के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री विकसित की, जिसके तहत 3–6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए एक संग्रह 'जादुई पिटारा' को 20 फरवरी, 2023 को विमोचित किया गया और कक्षा 1 व 2 के लिए पाठ्यपुस्तकें 4 जुलाई, 2023 को विमोचित की गईं।

जादुई पिटारा

'जादुई पिटारा' भौतिक और डिजिटल दोनों स्वरूपों में उपलब्ध है, एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की सिफारिशों के आधार पर बुनियादी स्तर के लिए विकसित शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) का एक संग्रह है। इस संग्रह में चित्र और पढ़ने के पोस्टर, खिलौने, गुड़िया, कठपुतलियाँ, गतिविधि कार्ड, प्रशिक्षक पुस्तिका, पठन शृंखला 'बरखा' और एक प्रयोक्ता पुस्तिका शामिल है। इसमें विकास के सभी पाँच हस्त क्षेत्रों (डोमेन) को कवर किया गया है और बच्चों में आलोचनात्मक चिंतन तथा समस्या-समाधान को प्रोत्साहित करते हुए विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से सीखने की खेलपरक विधियों को एकीकृत किया गया है। प्रयोक्ता पुस्तिका सामग्री, उनके उद्देश्यों और बच्चों के साथ उपयोग के तरीकों पर मार्गदर्शन प्रदान करती है। जादुई पिटारा के डिजिटल संस्करण का 22 भाषाओं में अनुवाद किया गया है और इसे 'दीक्षा' पोर्टल पर अपलोड किया गया है। जादुई पिटारा की सामग्री को प्रदर्शित करने वाले और उनके कक्षा में उपयोग को प्रदर्शित करने वाले लघु वीडियो भी दीक्षा पोर्टल पर उपलब्ध हैं। अध्यापकों और अभिभावकों के लिए डिजाइन किया गया ई-जादुई पिटारा प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है। इसमें बच्चों की आयु के अनुरूप गतिविधियाँ डिजाइन करने के लिए क्रियाकलापों का सेट, कहानियाँ, कविताएँ, गाने, पहेलियाँ, कार्ड, ऑडियोबुक, खिलौने, खेल और चार्ट शामिल हैं। इसमें ए.आई.-आधारित बॉट,

कथा सखी, अभिभावक तारा और अध्यापक तारा भी शामिल हैं, जो एन.सी.एफ.-एफ.एस., एन.ई.पी. 2020, उन्मुख और अन्य दस्तावेजों से संबंधित सवालों के जवाब दे सकते हैं।

निष्ठा

निष्ठा— 'विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल' एक समेकित अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम अगस्त 2019 में शुरू किया गया है। जिसका उद्देश्य लगभग 42 लाख प्राथमिक अध्यापकों और स्कूलों के प्रमुखों, एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. के संकाय सदस्यों और ब्लॉक क्लस्टर संसाधन समन्वयकों की क्षमता का निर्माण करना है। कोविड महामारी के कारण, 'निष्ठा-ऑनलाइन' का 2020 में शुभारंभ किया गया और प्रारंभिक स्तर पर बचे हुए प्रशिक्षण को उच्च गुणवत्ता वाली ई-सामग्री का उपयोग करते हुए दीक्षा प्लेटफॉर्म पर ऑनलाइन आयोजित किया गया। निष्ठा (प्राथमिक) ने आमने-सामने और दूरस्थ माध्यम से 42 लाख अध्यापकों को शामिल किया। 2021–22 में, निष्ठा ने बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता तथा माध्यमिक स्तर तक विस्तार किया, जिसमें अध्यापकों की गुणवत्ता और विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफलों में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया गया।

प्राथमिक स्तर पर, निष्ठा 30 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों में 11 भाषाओं में 18 ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करती है और 24 लाख अध्यापक और स्कूल प्रमुख इसमें शामिल हैं। 2 भाषाओं में 6 ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के साथ, निष्ठा ई.सी.सी.ई., 36 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों में 25 लाख पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर के अध्यापकों तथा स्कूल प्रमुखों को लक्षित करता है। इस स्तर में, 7 क्षेत्रीय कार्यशालाओं में ए.टी.एफ. और डी.टी.एफ. को एन.सी.एफ.-एफ.एस. और जादुई पिटारा पर उन्मुख किया गया। 29 जुलाई, 2021 को शुरू किए गए माध्यमिक स्तर के कार्यक्रम का लक्ष्य 33 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों में 10 भाषाओं में 12 सामान्य और 1 शिक्षणशास्त्र ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के साथ 10 लाख अध्यापकों और स्कूल प्रमुखों को शामिल करना है, जिसमें 7.2 लाख अध्यापक पहले ही शामिल हो चुके हैं।

7 सितंबर, 2021 को शुभारंभ किए गए निष्ठा एफ.एल.एन. का लक्ष्य पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर लगभग 25 लाख अध्यापकों और स्कूल प्रमुखों को कवर करना है, जिसमें लगभग 12.5 लाख अध्यापकों ने पाठ्यक्रम पूरा कर लिया है। रा.शै.अ.प्र.प. ने इस उद्देश्य के लिए 12 ऑनलाइन मॉड्यूल का एक विशेष पैकेज विकसित किया है, जो निपुण भारत मिशन के उद्देश्यों के अनुरूप है। निष्ठा एफ.एल.एन. का फिर से शुभारंभ किया जाएगा और राज्यों से डेटा प्राप्त करने के बाद निष्ठा ई.सी.सी.ई. के लिए प्रशिक्षण के दूसरे चरण की योजना बनाई जाएगी। निष्ठा शैक्षिक प्रौद्योगिकी, निष्ठा प्रशासक और निष्ठा कौशल भी विकसित किया गया है।

आकलन सुधार — परख

परख (प्रदर्शन आकलन, समीक्षा और समग्र विकास के लिए ज्ञान का विश्लेषण) के तहत पूरे भारत में शैक्षिक मूल्यांकन को बढ़ाने के लिए कई तरह के प्रयास किए जाते हैं। पीएच.डी., चैंबर ऑफ कॉमर्स के सहयोग से किए गए योग्यता-आधारित मूल्यांकन में क्षमता विकास के लिए देशभर में कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (एन.सी.एफ. 2023) के साथ संरेखित सीखने की योग्यताओं का प्रसार करना है, जिससे शिक्षक प्रशिक्षकों और अध्यापकों को हाल के शैक्षणिक और नीतिगत बदलावों से परिचित कराया जा सके। परख के अंतर्गत 3 नवंबर, 2023 को राज्य शैक्षिक उपलब्धि सर्वेक्षण आयोजित किया गया, जिसमें 30 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों में कक्षा 3, 6 और 9 में लगभग 8.5 मिलियन शिक्षार्थियों का आकलन किया गया, जिसमें बुनियादी साक्षरता, संख्यात्मकता, भाषा और गणित में उनकी योग्यताओं का मूल्यांकन किया गया। इसने परीक्षा सुधार सिफारिशें विकसित करने, क्षेत्रीय कार्यशालाओं का आयोजन करने और सभी बोर्डों में समानता

प्राप्त करने के उद्देश्य से नीतिगत अनुशंसाएँ तैयार करने हेतु डेटा एकत्र करने के लिए विभिन्न शैक्षिक बोर्डों के साथ काम करके स्कूल बोर्डों की समानता सुनिश्चित करने पर भी ध्यान केंद्रित किया। समग्र प्रगति कार्ड पहल के तहत बुनियादी, प्रारंभिक और मध्य स्तरों के लिए व्यापक आकलन उपकरणों का विकास और प्रसार किया गया है, साथ ही माध्यमिक स्तर के लिए भी इसी प्रकार के उपकरण बनाने के लिए प्रयास जारी हैं, जिससे विद्यार्थियों के सीखने के अधिक गहन और योग्यता-आधारित आकलन की सुविधा मिल सके।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

वर्ष 2023–24 के दौरान, परिषद् ने स्कूल एवं अध्यापक शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) को बढ़ाने के लिए विभिन्न पहलें कीं। सी.आई.ई.टी. ने 'साइबर सुरक्षा, स्कूली शिक्षा के लिए डिजिटल गेम्स' पर एक व्यापक प्रशिक्षण पैकेज विकसित किया, जिसमें कक्षा 1 से 8 के लिए ओपन-सोर्स डिजिटल गेम, उर्दू में साइबर सुरक्षा दिशानिर्देश और सेवारत अध्यापकों के लिए एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम शामिल है। इसके अतिरिक्त, 'ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के विकास' पर एक व्यापक ओपन ऑनलाइन कोर्स (एम.ओ.ओ.सी.) का शुभारंभ किया गया और आई.सी.टी. की आधारभूत बातों को शामिल करने वाले एम.ओ.ओ.सी. पर काम शुरू हुआ। एन.ई.पी. 2020 के साथ तालमेल बिठाते हुए, सी.आई.ई.टी. ने विशेष रूप से कक्षा 6–12 के लिए विज्ञान और गणित हेतु संवर्धित वास्तविकता (ए.आर.), आभासी वास्तविकता (वी.आर.) और आभासी प्रयोगशालाओं जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके पाठ्यक्रम-आधारित सामग्री बनाने पर ध्यान केंद्रित किया। भारतीय सांकेतिक भाषा (आई.एस.एल.) को मानकीकृत करने के लिए एक परियोजना शुरू की गई, जिसके तहत कक्षा 1 से 6 के लिए 954 आई.एस.एल. वीडियो तैयार किए गए, जो दीक्षा और पी.एम. ई-विद्या डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों के माध्यम से उपलब्ध हैं।

शैक्षिक मीडिया कार्यक्रमों को समर्थन देने के लिए, सी.आई.ई.टी. ने 1,182 ऑडियो कार्यक्रम और 3,568 वीडियो कार्यक्रम तैयार किए तथा 1,089 लाइव सत्र आयोजित किए तथा 12 डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों और 230 रेडियो स्टेशनों के माध्यम से सामग्री प्रसारित की। मीडिया कार्यक्रमों में सांकेतिक भाषा ट्यूटोरियल, पाठ्यक्रम सहायता सामग्री और इमर्सिव ए.आर.-वी.आर. अनुभव शामिल थे। संस्थान ने 16 वेबसाइट और 9 मोबाइल ऐप भी प्रबंधित किए, जिससे नियमित अपडेट और बेहतर प्रयोक्ता अनुभव सुनिश्चित हुआ। साइबर सुरक्षा पर केंद्रित एक नई सी.आई.ई.टी. वेबसाइट आरंभ की गई, साथ ही एन.ई.पी. 2020 के तहत सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिताओं और क्विज जैसी विभिन्न राष्ट्रीय पहलों का भी आयोजन किया गया।

सी.आई.ई.टी. ने गुणवत्तापूर्ण ई-सामग्री निर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग में अखिल भारतीय बाल शैक्षिक ई-सामग्री प्रतियोगिता 2023–24 का आयोजन किया। इसने स्वयं प्लेटफॉर्म पर कक्षा 11 और 12 के लिए 28 ऑनलाइन पाठ्यक्रम पेश किए, जिसमें 48,000 से अधिक विद्यार्थी शामिल हुए। 1 अप्रैल, 2020 से सी.आई.ई.टी. ने दीक्षा पर 3.56 लाख से अधिक डिजिटल सामग्री को होस्ट करते हुए 6,881 से अधिक वीडियो कार्यक्रम और 4,247 आई.एस.एल. कार्यक्रम तैयार किए हैं, जिसने अध्यापकों के लिए 19,000 से अधिक क्षमता निर्माण पाठ्यक्रम भी प्रदान किए हैं। सी.आई.ई.टी. के प्रयासों का विस्तार प्रारंभिक कक्षाओं के लिए यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग (यू.डी.एल.) आधारित डिजिटल पाठ्यपुस्तकें विकसित करने और 'दीक्षा' के माध्यम से व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रम संचालित करने तक हुआ, जिससे 61,000 से अधिक शिक्षक लाभान्वित हुए। इसके अलावा, शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने में अध्यापकों के कौशल और क्षमता को बढ़ाने के लिए साइबर सुरक्षा, डिजिटल प्रौद्योगिकी उपयोग और ई-सामग्री विकास जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

व्यावसायिक शिक्षा

वर्ष 2023–24 के दौरान, पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) ने विकसित भारत अभियान के साथ जुड़ी विभिन्न पहलों के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया। संस्थान ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 में उल्लिखित व्यावसायिक शिक्षा विषयों के साथ-साथ बायोडीजल, इलेक्ट्रिक वाहन, ग्रीन हाइड्रोजन, परमाणु ऊर्जा और सौर ऊर्जा जैसे महत्वपूर्ण विषयों को कवर करने वाले मॉड्यूल विकसित किए। पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. को 25 नई कार्यभूमिकाओं के लिए अधिगम प्रतिफल-आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम बनाने का काम सौंपा गया और विमानन, कृषि और ऑटोमोटिव सहित 16 क्षेत्रों में पाठ्यक्रम विकास के लिए 14 कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।

व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. ने उभरते रुझानों पर चर्चा करने और पूर्वोत्तर क्षेत्र में एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन के लिए कार्य योजनाएँ विकसित करने के लिए राष्ट्रीय सम्मेलनों और क्षेत्रीय कार्यशालाओं की मेजबानी की। संस्थान ने व्यावसायिक अध्यापकों और विद्यार्थियों को लक्षित करके नवाचार, ऊष्मायन और उद्यमिता पर वेबिनार एवं सेमिनार भी आयोजित किए। व्यावसायिक शिक्षा की रूपरेखा को मजबूत करने के लिए प्रमुख पदाधिकारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम और व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. ने व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम में डिप्लोमा (डी.वी.ई.टी.) भी शुरू किया, मध्य स्तर के अध्यापकों के लिए छह क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए और लगभग 1,200 प्रतिभागियों के साथ दस व्यावसायिक अध्यापक प्रशिक्षण सत्रों की सुविधा प्रदान की। संस्थान ने आई.टी.आई., उद्योगों और गैर-सरकारी संगठनों सहित विभिन्न स्थानीय संस्थाओं के साथ कौशल प्रशिक्षण सहयोग बढ़ाने के लिए हब और स्पोक मॉडल के लिए दिशानिर्देश विकसित किए। पूर्व-व्यावसायिक और व्यावसायिक शिक्षा के लिए डिजिटल संसाधनों के पूरक निर्माण द्वारा सौर ऊर्जा और आई.ओ.टी. आधारित सिंचाई प्रणालियों जैसी संधारणीय प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने के लिए दो वर्षीय ग्रीन टेक्नोलॉजी पार्क परियोजना शुरू की गई।

अनुसंधान अध्ययन

रिपोर्ट के तहत वर्ष के दौरान, रा.शै.अ.प्र.प. ने स्कूल और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में कई शोध अध्ययन किए। इन अध्ययनों में अध्यापकों की बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों पर वैचारिक समझ पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें आँगनबाड़ी और कक्षा 1 व 2 के अध्यापकों के लिए संख्यात्मक कौशल पर बल दिया गया। अन्य शोध विषयों में माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा की शिक्षा में नवीन अभ्यास और वांछित अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने में उनकी प्रभावकारिता का आकलन, साथ ही स्कूलों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उचित समायोजन की प्रभावशीलता का मूल्यांकन शामिल था। रा.शै.अ.प्र.प. ने देशभर में स्कूली शिक्षा में सतत विकास लक्ष्य 4.7 (एस.डी.जी. 4.7) की नीतियों और अभ्यासों की स्थिति का भी पता लगाया, शैक्षणिक कार्यनीतियों के रूप में स्वदेशी खेलों और खेलों के समेकन की जाँच की और 2036 तक विद्यार्थी नामांकन में अनुमानित रुझान का आकलन किया। किए गए अध्ययनों में माध्यमिक स्तर पर सेवारत अध्यापकों के लिए तकनीकी-शिक्षणशास्त्र सामग्री एकीकरण की प्रभावशीलता की भी जाँच की गई और माध्यमिक विद्यार्थियों के बीच साइबर सुरक्षा और सुरक्षा जागरूकता का आकलन किया गया।

दीक्षा प्लेटफॉर्म पर ई-सामग्री की गुणवत्ता, इसके उपयोग पैटर्न और प्रयोक्ता व्यवहार का विश्लेषण किया गया, साथ ही देशभर में कक्षा 9 और 10 के लिए रा.शै.अ.प्र.प. माध्यमिक विज्ञान किट का मूल्यांकन किया गया।

चयनित कला उत्सव पुरस्कार विजेताओं के प्रकरणों का अध्ययन भी किया गया, साथ ही विज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकों में शामिल करने के लिए साहित्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) की पहचान करने के लिए शोध किया गया। परिषद् द्वारा त्रिपुरा में विद्यार्थियों की अंग्रेजी दक्षताओं, विशेष रूप से टी.टी.ए.ए.डी.सी. क्षेत्रों में, मेघालय में स्कूल के खराब प्रदर्शन में योगदान देने वाले कारकों और पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा पर कोविड-19 के प्रभाव पर अध्ययन किए गए। परिषद् के अन्य शोध क्षेत्रों में माध्यमिक विज्ञान में अनुभवात्मक शिक्षा की जाँच, आकांक्षी जिलों में समग्र शिक्षा के लिए एन.ए.एस. 2021 के बाद के हस्तक्षेप और अंग्रेजी, गणित एवं सामाजिक विज्ञान पढ़ाने के लिए सांकेतिक भाषा के उपयोग का दस्तावेजीकरण शामिल था।

रा.शै.अ.प्र.प. ने ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्यक्रम संबंधी लेन-देन और विद्यार्थी आकलन पर त्वरित सर्वेक्षण भी किए, ग्रामीण असम में शैक्षणिक नवाचारों की जाँच की और क्षेत्र में चाय बागान मजदूरों के बच्चों के बीच मनोसामाजिक और शैक्षिक मुद्दों का आकलन किया। परिषद् ने ब्लॉक स्तर पर स्कूल-स्तरीय हस्तक्षेपों को क्रियान्वित किया और मध्य प्रदेश में सी.एम.आर.आई.एस.ई. स्कूलों की ताकत, कमजोरियों, अवसरों और चुनौतियों का विश्लेषण किया। झारखंड में एकल-शिक्षक विद्यालयों में आधारभूत शिक्षा का मूल्यांकन किया गया, साथ ही उसी राज्य में उच्च प्राथमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफलों पर डिजिटल पहल के प्रभाव का भी मूल्यांकन किया गया। रा.शै.अ.प्र.प. ने विद्या प्रवेश कार्यक्रम और बुनियादी एवं प्रारंभिक स्तरों के लिए बस्ता रहित दिनों के कार्यान्वयन का भी आकलन किया।

परिषद् ने शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (ई.आर.आई.सी.) के माध्यम से शैक्षिक अनुसंधान को भी समर्थन दिया। वर्ष के दौरान, ई.आर.आई.सी. के वित्तीय समर्थन से 10 शोध परियोजनाएँ पूरी की गईं। परिषद् ने 'रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टरेट अध्येतावृत्ति' जारी रखी है, जिसके तहत शिक्षा के क्षेत्र में डॉक्टरेट शोध करने तथा शिक्षा से सीधे संबंधित विषयों पर काम करने के इच्छुक युवा अभ्यर्थियों को प्रत्येक वर्ष दस अध्येतावृत्ति प्रदान की जाती हैं। वर्ष 2022–23 में 25 उम्मीदवारों को डॉक्टरेट अध्येतावृत्ति प्राप्त हुई।

विकास गतिविधियाँ

वर्ष 2023–24 के दौरान अपनी विकास गतिविधियों के एक भाग के रूप में, परिषद् ने स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023) और बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) के अनुसार पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें विकसित कीं। उत्पादित प्रमुख सामग्रियों में बुनियादी स्तर के लिए सीखने और सिखाने के संसाधनों का संग्रह *जादुई पिटारा*, योग्यता-आधारित आकलन को बढ़ाने के लिए समग्र प्रगति कार्ड, *फिरकी बच्चों की* शीर्षक से संख्यात्मकता पर विषयगत सामग्री और कक्षा 1 व 2 की पाठ्यपुस्तकों के लिए शिक्षक हस्तपुस्तिका शामिल हैं। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' (ई.बी.एस.बी.) कार्यक्रम के भाग के रूप में, रा.शै.अ.प्र.प. ने ऑनलाइन भाषा पाठ्यक्रमों का हिंदी और 22 भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया, साथ ही पूरक पाठ्यपुस्तकों और सामग्रियों का हिंदी, उर्दू, संस्कृत तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद किया। अतिरिक्त संसाधनों में सांस्कृतिक शब्दों का एक चर्तुभाषी सचित्र शब्दकोश, भारत की समसामयिक उपलब्धियों पर मॉड्यूल और विभिन्न भाषाओं में सेतु पाठ्यक्रम शामिल हैं।

पूर्वोत्तर राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों में बुनियादी स्तर पर शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए, रा.शै.अ.प्र.प. ने स्वदेशी खिलौनों, खेलों और खेलों के उपयोग को प्रोत्साहित किया। *नारी शक्ति वंदन* जैसे मॉड्यूल महिलाओं को सशक्त बनाने पर तथा स्कूली शिक्षा प्रक्रियाओं में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के सरोकारों को शामिल करने हेतु कला-समेकित शिक्षा के लिए दिशानिर्देश, गणित के लिए अनुभवात्मक शिक्षण सामग्री और विज्ञान पाठ्यक्रम में सीखने के

प्रतिफल आधारित गतिविधियाँ विकसित की गईं। कक्षा 6–12 के लिए विज्ञान, गणित और पर्यावरण शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को एन.ई.पी. 2020 के अनुसार अद्यतन किया गया, जिसमें कक्षा 11 और 12 के लिए जैव प्रौद्योगिकी पाठ्यपुस्तक के हिंदी संस्करण का विमोचन भी शामिल है।

रा.शै.अ.प्र.प. ने 'कोहा' सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हुए ओपन-सोर्स लाइब्रेरी प्रबंधन प्रणाली अपनाई और एक संस्थागत संग्रह स्थापित किया। इस वर्ष पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र पर ई-सामग्री का विकास, बहुभाषी और बहु-कक्षीय सेटिंग्स के लिए शिक्षक पुस्तिका तथा मणिपुर के पारंपरिक खिलौनों और खेलों का दस्तावेजीकरण भी किया गया। हस्तशिल्प और कालीन क्षेत्र के लिए फ्लिपबुक, एक हरित प्रौद्योगिकी पार्क, ए.एम.एच.एफ. क्षेत्र के लिए एक वर्चुअल टूर और हब-एंड-स्पोक मॉडल को क्रियान्वित करने के लिए एक राज्य योजना भी विकसित की गई। स्कूल और अध्यापक शिक्षा के लिए ई-संसाधन, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) के लिए संस्थागत संग्रह और शैक्षिक मीडिया संसाधनों का प्रसार किया गया। वयस्क साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए, रा.शै.अ.प्र.प. ने उल्लास संक्षिप्त प्राइमर, कार्यपत्रक, आकलन आइटम, ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम और आपदा प्रबंधन से संबंधित संसाधनों को विकसित करने के लिए दिशानिर्देश बनाए। इन्हें दीक्षा पोर्टल पर 'सभी के लिए शिक्षा' वर्टिकल में एकीकृत किया गया।

क्षमता निर्माण कार्यक्रम

वर्ष 2023–24 के दौरान, रा.शै.अ.प्र.प. ने विभिन्न क्षेत्रों में अध्यापकों के लिए व्यापक क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए। इनमें मास्टर प्रशिक्षकों के लिए अभिमुखीकरण और प्रशिक्षण कार्यशालाएँ, संख्यात्मकता तथा साक्षरता में अध्यापकों के लिए अकादमिक सहायता एवं सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों के लिए समावेशी शिक्षा पहल शामिल थीं। एन.ई.पी. 2020 कार्यान्वयन, एन.सी.एफ.-एफ.एस., नई पाठ्यपुस्तकों, जादुई पिटारा, कला समेकित शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षा और शैक्षिक किटों के उपयोग पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। विशेष कार्यक्रमों में विज्ञान, गणित, व्यावसायिक शिक्षा और बहुभाषी-बहुसांस्कृतिक शिक्षा जैसे विषय शामिल थे। पाठ्यक्रम विकासकर्ताओं, स्कूल लाइब्रेरियन और मार्गदर्शन परामर्शदाताओं के लिए प्रशिक्षण भी आयोजित किया गया। मदरसों में प्रधानाचार्यों और प्रबंधकों की कार्यकुशलता बढ़ाने एवं शिक्षा में आई.सी.टी. को शामिल करने की पहल भी की गई। इस व्यापक प्रयास का उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना तथा देशभर में अध्यापकों और शिक्षाविदों के व्यावसायिक विकास को समर्थन देना था।

विस्तार गतिविधियाँ

वर्ष 2023–24 के दौरान, रा.शै.अ.प्र.प. ने विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम और पहलें आयोजित कीं। जी-20 के तहत गतिविधियों ने शिक्षा, सरकारी पहलों और तकनीक-सक्षम कार्यक्रमों में सर्वोत्तम अभ्यासों को प्रदर्शित किया। सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय में आयोजित जी-20 जनभागीदारी वेबिनार शृंखला और शिक्षा कार्य समूह (ई.डी.डब्ल्यू.जी.) की चौथी व अंतिम बैठक में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता तथा बहुभाषी शिक्षा में नीति, पाठ्यक्रम और अभ्यासों पर प्रकाश डाला गया, जिसका समापन विभिन्न राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के शैक्षिक अभ्यासों की एक भव्य प्रदर्शनी में हुआ। परिषद् ने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए, हिंदी पखवाड़ा और हिंदी दिवस समारोह आयोजित किए, हिंदी दिवस मनाया, कर्मचारियों के लिए वार्षिक प्रोत्साहन पुरस्कार योजना क्रियान्वित की और हिंदी में अधिकतम कार्य करने के लिए राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।

परिषद् ने विज्ञान और गणित के लोकप्रियकरण के लिए सेंटर फॉर पॉपुलरराइजेसन आफ साईंस, हर्बल गार्डन और विज्ञान पार्क को बनाए रखा है। प्रयास योजना का उद्देश्य युवा शोद्यार्थियों में शोध की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना

था। इसके अलावा, रा.शै.अ.प्र.प. ने विश्व पर्यावरण दिवस, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, अंगदान दिवस, स्वच्छता पखवाड़ा, राष्ट्रीय एकता दिवस, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस और अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया। व्यावसायिक शिक्षा में, रा.शै.अ.प्र.प. ने आदिवासी स्कूलों के लिए एक कार्ययोजना क्रियान्वित की, नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा दिया एवं क्षेत्रीय कार्यशालाएँ आयोजित कीं।

शिक्षा मंत्रालय की प्रमुख योजनाओं के अंतर्गत कार्यक्रम

परिषद् ने विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल (निष्ठा) जैसी प्रमुख योजनाओं के तहत राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम/परियोजनाएँ संचालित कीं। ई-भारतीय भाषा उत्सव, राज्य स्तरीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी (आर.एस.बी.वी.पी.), राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी 2023 (आर.बी.वी.पी. 2023), राष्ट्रीय अविष्कार सप्ताह (आर.ए.एस.) और कला उत्सव 2023 आदि परीक्षा पे चर्चा 2024 और पी.एम. ई-विद्या ने 200 डी.टी.एच. टी.वी. चैनल, रेडियो प्रसारण एवं पॉडकास्ट का प्रबंधन किया। दीक्षा ने एक एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराया है, जिसे 'वन नेशन, वन डिजिटल प्लेटफॉर्म' और राष्ट्रीय विद्या समीक्षा केंद्र (आर.वी.एस.के.) के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा, परिषद् ने अध्यापकों के लिए सतत व्यावसायिक विकास (सी.पी.डी.) पर ध्यान केंद्रित किया और कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय (के.जी.बी.वी. 2022–23) का राष्ट्रीय आकलन अध्ययन किया। 'किताब एक पढ़ें अनेक' पहल के माध्यम से यूनिवर्सल डिजाइन ऑफ लर्निंग (यू.डी.एल.) पर आधारित डिजिटल पाठ्यपुस्तकों की सुविधा प्रदान की गई। 25 कार्य-भूमिकाओं (जॉबरोल) के लिए पाठ्यक्रम और स्कूल में व्यावसायिक शिक्षा के नवाचारी मॉडल विकसित किए गए।

प्रकाशन

रा.शै.अ.प्र.प. विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों, कार्यपुस्तिकाओं, अनुपूरक पठनों, शिक्षक संदर्शिकाओं, प्रयोगशाला मैनुअल, आकलन संबंधी स्रोत पुस्तकों, गणित में प्रश्न प्रदर्शिकाओं, अनुसंधान रिपोर्टों, मोनोग्राफ और जर्नल प्रकाशित करती है। प्रकाशन प्रभाग में गैर-पाठ्य सामग्री के अलावा, प्रत्येक वर्ष कक्षा 1 से 12 तक की विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यपस्तुकें मुद्रित होती हैं। रा.शै.अ.प्र.प. के अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू में विभिन्न प्रकाशनों की पाँच करोड़ से अधिक प्रतियाँ, जिनमें पाठ्यपुस्तकें, पूरक पठन सामग्री, अध्यापकों की हस्त पुस्तिकाएँ, स्रोत पुस्तकें, शोध रिपोर्ट और छह शैक्षिक पत्रिकाएँ शामिल हैं, हर वर्ष निकाली जाती हैं। राज्यों द्वारा अपने राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तक कार्यक्रम के तहत रा.शै.अ.प्र.प. के पाठ्यक्रमों को स्वेच्छापूर्वक अपनाया गया है। इनका प्रयोग सी.बी.एस.ई., के.वी.एस., एन.वी.एस., तिब्बती विद्यालयों से संबद्ध स्कूलों और सभी राज्यों के अनेक पब्लिक स्कूलों में भी बड़े पैमाने पर किया जाता है। कई राज्यों ने रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यपुस्तकों के लिए कॉपीराइट प्राप्त किए हैं। परिषद् ने क्यू.आर. कोड का उपयोग करते हुए वेबसाइट से लिंक पाठ्यपुस्तकें तैयार की हैं।

वर्ष 2023–24 के दौरान, रा.शै.अ.प्र.प. ने कई महत्वपूर्ण प्रकाशन जारी किए हैं। इनमें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाएँ, विशेष रूप से बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) (अंग्रेजी संस्करण) और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 शामिल हैं जो ऑनलाइन उपलब्ध हैं। एन.सी.एफ.-एफ.एस. और एन.सी.एफ.-एस.ई. के हिंदी संस्करण अभी प्रक्रियाधीन हैं। परिषद् ने खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र पर हस्तपुस्तिका ऑनलाइन और *आनंद बालवाटिका के लिए गतिविधि पुस्तक* प्रकाशित की है। अन्य उल्लेखनीय प्रकाशनों में *नारी शक्ति* वंदन पर मॉड्यूल, *उन्मुख—बालवाटिका के लिए प्रशिक्षक पुस्तिका*, बुनियादी स्तर के लिए पाठ्यपुस्तकें, भाषा शिक्षण—अंग्रेजी खंड I, भाषा शिक्षण—अंग्रेजी खंड II और कक्षा 6, 7 और 8 के लिए कार्यपत्रक शामिल हैं। पूरक पठन सामग्री जैसे *वॉयसेज—एन ऍथोलॉजी ऑफ*

इंडियन वीमेन राइटर्स (मध्य स्तर के लिए अंग्रेजी में पूरक पठन) और *लिविंग विद होप*, *ऑप्टिमाइजिंग लर्निंग–पॉलिसीज एंड प्रैक्टिसेज* भी उपलब्ध कराए गए हैं।

रा.शै.अ.प्र.प. ने द *प्राइमरी टीचर* और *प्राथमिक शिक्षक*, *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू*, *एजुकेशनल ट्रेंड*, *भारतीय आधुनिक शिक्षा*, *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन* और ऑनलाइन जर्नल *वॉयसेज ऑफ टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स* (वी.टी.टी.ई.) नामक जर्नलों का प्रकाशन जारी रखा है। त्रैमासिक जर्नल *स्कूल साइंस* और अर्धवार्षिक जर्नल *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी* और *इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन* भी रा.शै.अ.प्र.प. के व्यापक प्रकाशन भंडार का हिस्सा हैं।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग और संबंध

परिषद् में स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग के महत्व को ध्यान में रखते हुए, विदेशी प्रतिनिधिमंडलों की मेजबानी की जाती है, उनकी रुचि और आवश्यकताओं के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों जैसे कि शैक्षिक नीतियाँ, पाठ्यक्रम रूपरेखा, सेवा-पूर्व और सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम, शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, आई.सी.टी. और ई.टी. से संबंधित विभिन्न विभागों और घटक इकाइयों के साथ उनकी बातचीत की सुविधा प्रदान की जाती है, तथा विदेशी संस्थानों के साथ हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों से संबंधित कार्यशालाएँ, सेमिनार और सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं।

स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए पारस्परिक लाभ हेतु विभिन्न देशों के साथ संरचित और सार्थक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए, रा.शै.अ.प्र.प. ने कोरियाई अध्ययन अकादमी (दक्षिण कोरिया), कर्टिन विश्वविद्यालय (ऑस्ट्रेलिया), मॉरीशस शिक्षा संस्थान (मॉरीशस), फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी में फ्लोरिडा सेंटर फॉर रीडिंग रिसर्च (एफ.सी.आर.आर.) और सेंट फ्रांसिस विश्वविद्यालय में शिक्षा महाविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इन समझौतों का उद्देश्य स्कूली शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में आपसी सहयोग को बढ़ावा देना है, जिससे निकट भविष्य में ठोस परिणाम मिल सकें। रा.शै.अ.प्र.प. मॉरीशस में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम अनुसंधान और विकास संस्थान (एन.आई.सी.आर.डी.) की स्थापना के लिए मॉरीशस शिक्षा संस्थान के साथ मिलकर काम कर रही है।

2. प्रमुख प्रकाशन

रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा अनेक प्रकार की शैक्षणिक सामग्रियाँ प्रकाशित की जाती हैं, जो पाठ्यक्रम और शैक्षणिक आवश्यकताओं को सहायता प्रदान करती है। इनमें स्कूल की पाठ्यपुस्तकें, कार्यपुस्तिकाएँ, पूरक पठन सामग्री, शिक्षक संदर्शिकाएँ, प्रयोगशाला मैनुअल, आकलन स्रोत पुस्तकें, गणित में प्रश्न प्रदर्शिकाएँ, अनुसंधान रिपोर्ट, मोनोग्राफ और जर्नल सम्मिलित हैं। हर वर्ष कक्षा 1 से 12 तक की पाठ्यपुस्तकें अनेक भाषाओं में मुद्रित की जाती हैं तथा रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशनों की पाँच करोड़ से अधिक प्रतियाँ वितरित की जाती हैं, जिनमें अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू में पाठ्यपुस्तकें, अनुपूरक सामग्री, अध्यापक पुस्तिकाएँ, स्रोत पुस्तकें, अनुसंधान रिपोर्ट और छह शैक्षिक पत्रिकाएँ सम्मिलित हैं। इसके अलावा, रा.शै.अ.प्र.प. ने डिजिटल शिक्षा को सुविधाजनक बनाने के लिए क्यू.आर. कोड के साथ एनर्जाइज्ड पाठ्यपुस्तकें भी शुरू की हैं। परिषद् विभिन्न जर्नलों और पत्रिकाओं का भी प्रकाशन करती है।

वर्ष 2023–24 के दौरान, रा.शै.अ.प्र.प. ने कई प्रमुख दस्तावेज प्रकाशित किए, जैसे– *नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क फॉर फाउंडेशनल स्टेज 2022*, *नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023*, *आनंद— एक्टीविटी बुक फॉर बालवाटिका*, *उन्मुख*— बालवाटिका हेतु प्रशिक्षक संदर्शिका (अंग्रेजी और हिंदी संस्करण), बुनियादी स्तर के लिए पाठ्यपुस्तकें, *लैंग्वेज पेडागॉजी*— अंग्रेजी (वॉल्यूम I और II), कक्षा 6, 7 और 8 के लिए अंग्रेजी में कार्यपत्रक, *वॉइसेज— एन एंथोलॉजी ऑफ इंडियन वीमेन राइटर्स* (मध्य स्तर के लिए पूरक पठन), *लिविंग विद होप*, *नारी शक्ति वंदन* पर मॉड्यूल, माध्यमिक शिक्षा के लिए कला समेकित शिक्षा पर दिशानिर्देश, *संगीत— तबला एवं पखावज (हमारे अवनद्ध वाद्य)* कक्षा 12 के लिए, हिंदुस्तानी संगीत— गायन एवं वादन, कक्षा 12 के लिए और *ऑप्टीमाइजिंग लर्निंग— पॉलिसीज एंड प्रैक्टिसेज*।

परिषद् के जर्नल और पत्रिकाएँ इसके प्रकाशन पोर्टफोलियो का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इनमें द *प्राइमरी टीचर*, *प्राथमिक शिक्षक*, *स्कूल साइंस* (त्रैमासिक पत्रिका), *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू*, *भारतीय आधुनिक शिक्षा*, *जर्नल ऑफ इंडियन एजूकेशन*, ऑनलाइन जर्नल *वॉइसेज ऑफ टीचर्स एंड टीचर्स एजूकेटर्स*, *इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन* (अर्धवार्षिक), *व्यावसायिक शिक्षा पर त्रैमासिक बुलेटिन*, *एजूकेशनल ट्रेंड*, *ऑनलाइन इंडियन जर्नल ऑफ एजूकेशनल टेक्नोलॉजी* और *वार्षिक रिपोर्ट 2022–23* सम्मिलित हैं।

आनंद– एक्टीविटी बुक फॉर बालवाटिका (आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-403-5)

बालवाटिका के बच्चों के लिए विकसित गतिविधि पुस्तक आनंद ने एन.ई.पी. 2020 के परिप्रेक्ष्य का ध्यान रखते हुए सरल, रोचक और आकर्षक तरीके से योग्यता-आधारित कार्यपत्रक प्रदान करने का प्रयास किया है। कला और शिल्प को अपने में समाए इस पुस्तक के माध्यम से अध्यापक बच्चों से बातचीत कर सकते हैं और

रा.शै.अ.प्र.प.
रा.शै.अ.प्र.प.

उन्हें इस तरह की गतिविधियों में निहित सौंदर्यबोध की पहचान करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। बालवाटिका के लिए आनंद गतिविधि पुस्तक में कुल 92 उदाहरण कार्यात्मक पत्रक दिए गए हैं। इन कार्यपत्रकों में बच्चों को अपनी दृश्य स्मृतियों को कक्षा में सीखी गई अवधारणाओं के साथ जोड़ने तथा अपने पूर्वानुभवों से जुड़ने के अवसर प्रदान किए गए हैं। इन कार्यपत्रकों में बच्चों को स्कूल में प्रवेश हेतु तैयार करने को बढ़ावा दिया जाता है तथा यह सुनिश्चित किया जाता है कि वे औपचारिक स्कूल प्रणाली में प्रवेश के लिए आवश्यक बुनियादी भाषा और संज्ञानात्मक कौशल से अवगत हों। ये कार्यपत्रक बच्चों को स्वस्थ और सुरक्षित आदतें विकसित करने और उनका अभ्यास करने, संवेदी धारणाओं को बढ़ाने, एक फिट और लचीले शरीर का निर्माण करने, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, तार्किक सोच और कला के माध्यम से अभिव्यक्ति विकसित करने में मदद करते हैं।

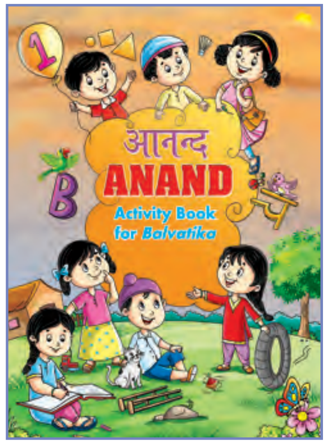

उन्मुख— बालवाटिका हेतु प्रशिक्षक संदर्शिका आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-493-6 (अंग्रेजी संस्करण) आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-493-3 (हिंदी संस्करण)

एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की संस्तुतियों के सफल कार्यान्वयन के लिए, प्रत्येक स्तर पर संसाधन व्यक्तियों के पास मार्गदर्शन के लिए कुछ तैयार संदर्भ सामग्री होना महत्वपूर्ण है। इस हेतु बालवाटिका (3 से 6 वर्ष) के लिए प्रशिक्षक संदर्शिका विकसित की गई है और यह हिंदी,अंग्रेजी और उर्दू तीनों भाषाओं में तैयार की गई है।

इस पुस्तिका के दो भाग हैं। भाग 1 में मूल बातें बताई गई हैं, जिनसे प्रतिभागी को एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के अनुसार बालवाटिका की समझ बनाने के लिए परिचित होना चाहिए। इसमें अवलोकन के माध्यम से अंतर्निहित आकलन के साथ बालवाटिका कार्यक्रम की आवश्यकता और महत्व, विधियों और सामग्रियों, योजना और कार्यान्वयन के बारे में बात की गई है। बालवाटिका कार्यक्रम को कहानियों, कविताओं, गीतों, खिलौनों आदि के माध्यम से आनंदपूर्ण, खेल और गतिविधि-आधारित शिक्षणशास्त्र का उपयोग करते हुए कार्यान्वित किया जाना चाहिए। पुस्तिका के भाग 2 में विभिन्न प्रकार की सुझावात्मक गतिविधियाँ सम्मिलित हैं, जिन्हें 3–4, 4–5 और 5–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के साथ सीधे संचालित किया जा सकता है। गतिविधियाँ प्रगतिशील और एकीकृत प्रकार की हैं, क्योंकि एक डोमेन में गतिविधियाँ संचालित करते समय, बच्चे अन्य डोमेन में भी दक्षता विकसित करने में सक्षम होंगे। कक्षाकक्ष सहित किसी भी अधिगम स्थल पर देखभाल कर्ताओं द्वारा उपयोग की जाने वाली गतिविधियों (जहाँ भी संभव हो) में विविधताओं का सुझाव देने का प्रयास किया गया है। सीखने की प्रगति और विकास संबंधी किसी विलंब (यदि कोई हो) को समझने के लिए गतिविधियों का संचालन करते समय ध्यान रखने योग्य बिंदुओं को भी प्रशिक्षक संदर्शिका में सुझाया गया है। बालवाटिका स्तर में किसी भी बच्चे का आकलन लिखित या मौखिक परीक्षा के माध्यम से नहीं किया जाना चाहिए।

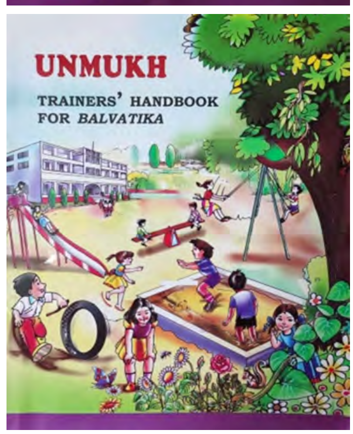

बुनियादी स्तर के लिए पाठ्यपुस्तकें

स्कूली शिक्षा के बुनियादी और आरंभिक स्तरों में निम्नलिखित विषयों के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें विकसित की गई हैं।

आवरण चित्र	पाठ्यपुस्तक का नाम	विषय	आई.एस.बी.एन. संख्या
	जॉयफुल मैथेमेटिक्स, कक्षा 1	गणित	978-93-5292-505-6
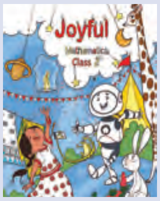	जॉयफुल मैथेमेटिक्स, कक्षा 2	गणित	978-93-5292-426-4
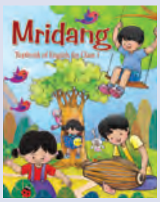	मृदंग, कक्षा 1	अंग्रेजी	987-93-5292-439-4
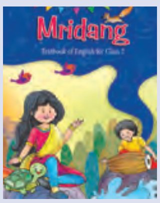	मृदंग, कक्षा 2	अंग्रेजी	978-93-5292-434-9
	सारंगी, कक्षा 1	हिंदी	978-93-5292-423-3
	सारंगी, कक्षा 2	हिंदी	978-93-5292-438-7
	आनंदमय गणित, कक्षा 1	गणित	978-93-5292-504-9

	आनंदमय गणित, कक्षा 2	गणित	978-93-5292-433-2
	दिलचस्प रियाज़ी, कक्षा 1	गणित	978-93-5292-420-2
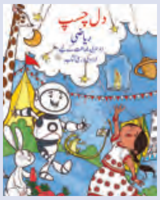	दिलचस्प रियाज़ी, कक्षा 2	गणित	978-93-5292-436-3

लैंग्वेज पेडागॉजी – अंग्रेजी वॉल्यूम I (आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-446-2) और वॉल्यूम II (आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-572-8)

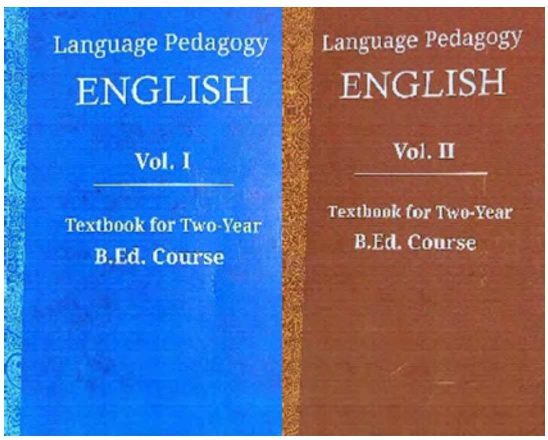

लैंग्वेज पेडागॉजी अंग्रेजी (दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यपुस्तक) को दो वॉल्यूम में विकसित किया गया है, जिसमें कुल 10 इकाइयाँ सम्मिलित हैं। इन पुस्तकों से विद्यार्थियों और अध्यापकों को पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों के बीच सहजीवन संबंध की जानकारी प्रदान की जाती है और उन्हें भाषा आकलन की प्रक्रिया को समग्र रूप से समझने में मदद मिलती है। इन खंडों से भाषा सीखने और सिखाने के संगत आयामों से परिचित होने और वर्तमान स्कूली परिपाटियों का विश्लेषण करने में दक्षता विकसित करने में मदद मिलती है। इसमें प्रायोगिक, परियोजना कार्य और स्कूली अभ्यास कार्यों के लिए विभिन्न सुझावात्मक गतिविधियाँ प्रदान की गई हैं।

कक्षा 6 के लिए वर्कशीट्स इन इंग्लिश (आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-652-7); कक्षा 7 (आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-809-5); कक्षा 8 (आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-572-8)

ये कार्यपत्रक भाषा विकास में योग्यता प्राप्त करने तथा इन गतिविधियों में निहित सौंदर्यबोध को विकसित करने के लिए मध्य स्तर हेतु विकसित किए गए हैं। ये कार्यपत्रक अपनी विषयवस्तु में समृद्ध हैं, जिनमें कला, संस्कृति, साहित्य, स्वच्छता, खेल, स्वास्थ्य, विरासत, परंपरा और भारतीय मूल जैसे विषयों के माध्यम से विविध अनुभव प्रदान किए गए हैं। विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन गतिविधियों को स्वयं करें, स्वयं सीखें तथा अपनी प्रगति का स्वतंत्र रूप से आकलन करें। भाषा सीखना तब सार्थक हो जाता है, जब यह विद्यार्थियों के तात्कालिक

परिवेश से जुड़ा होता है तथा कार्यपत्रकों में दी गई गतिविधियों में अनुभवात्मक अधिगम के लिए पर्याप्त गुंजाइश प्रदान की गई है।

वॉइसेज— एन एंथोलॉजी ऑफ इंडियन वीमेन राइटर्स (मध्य स्तर के लिए अंग्रेजी में पूरक पठन पुस्तक) (आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-729-6)

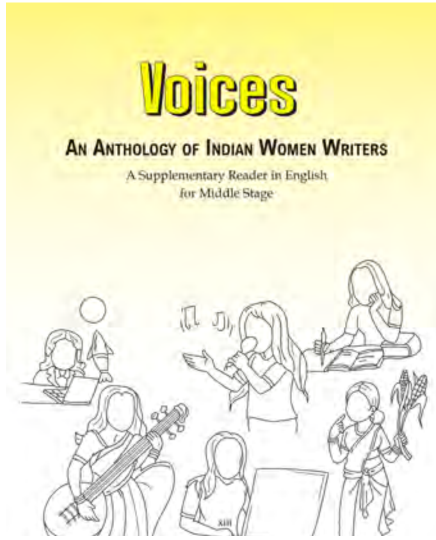

इस पूरक पठन पुस्तक में भारतीय महिला लेखकों की समृद्ध और गौरवशाली परंपरा का प्रतिनिधित्व करने वाली चुनिंदा साहित्यिक कृतियाँ सम्मिलित हैं, जिन्होंने भारतीयता में निहित रहते हुए साहित्यिक, सांस्कृतिक और भाषा संबंधी विविधता में योगदान दिया है। विद्वता (अध्येतावृत्ति) की इस श्रेणी में व्यक्तिगत और सामाजिक विषयों, उनके जीवन, उपलब्धियों, विचारों, कल्पनाओं, संघर्षों और इन उल्लेखनीय महिलाओं की जीत आदि विषयों को इस विस्तृत शृंखला को कवर किया गया है। महिलाओं का लेखन न केवल अभिव्यक्ति के एक रूप में बल्कि सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं, ज्ञान, स्वभाव और मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने के साधन के रूप में भी काम करता है। उनके लेखन में व्यक्त की गई भावनाएँ और उनके द्वारा संबोधित मुद्दे पाठकों को लेखकों के आशय की सराहना करने, संदर्भ को समझने, मूल सामग्री की पहचान करने, संभावित अर्थों की व्याख्या करने और सबसे महत्वपूर्ण रूप से जेंडर संवेदनशीलता को बढ़ावा देने में मदद करते हैं।

लिविंग विद होप (आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-851-4)

लिविंग विद होप में प्रकृति और मनुष्यों के बीच जटिल संबंधों पर प्रकाश डाला गया है, जो हमारे ग्रह के सामने आने वाली चुनौतियों को समझने और उनसे निपटने की चाह रखने वाले पाठकों के लिए आशा की किरण प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक दो भागों में विभाजित की गई है और इसमें पाठकों को प्राकृतिक दुनिया के साथ गहरे संबंध और सतत विकास की आशा की यात्रा पर आमंत्रित किया गया है। इसके अलावा पुस्तक में हल्के-फुल्के और हास्यपूर्ण ग्राफिक्स भी सम्मिलित किए गए हैं।

नारी शक्ति वंदन पर मॉड्यूल

विद्यालय शिक्षा के विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों के लिए 'नारी शक्ति वंदन' पर मॉड्यूल प्रकाशित किए गए हैं। विकसित किए गए मॉड्यूल हैं—

1. अन्नू की चतुराई
2. हम किसी से कम नहीं
3. महिलाओं सशक्तीकरण— प्रगति एवं विकास का मार्ग
4. समानता एवं विकास में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी

5. महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण
6. भारतीय कलाओं में महिलाओं का योगदान
7. समाज के विकास में महिलाओं का योगदान।

इन मॉड्यूल का उद्देश्य विद्यार्थियों और अध्यापकों को जेंडर संवेदनशीलता के साथ-साथ महिला सशक्तीकरण के विभिन्न पहलुओं, जैसे– सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और भारतीय कला में महिलाओं के योगदान के बारे में जागरूक करना है। ये मॉड्यूल जीवन के विभिन्न पहलुओं के साथ-साथ सामाजिक विकास के लिए महिलाओं को सशक्त बनाने हेतु विभिन्न पहलों पर भी प्रकाश डालते हैं। ये मॉड्यूल रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट (https://ncert.nic.in/pdf/module/Nari_Shakti/NSF2E.pdf) पर उपलब्ध हैं।

माध्यमिक स्तर की स्कूली शिक्षा के लिए कला समेकित शिक्षा पर दिशानिर्देश (आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-5148)

शिक्षा में हितधारकों को कला के माध्यम से आनंदमय और अनुभवात्मक शिक्षा की योजना बनाने, व्यवस्थित करने और उसे लागू करने में सुविधा प्रदान करने के लिए कला समेकित शिक्षा पर दिशानिर्देश प्रकाशित किए गए हैं। दस्तावेज में इस स्तर में संगत दक्षताओं और अधिगम प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न विषयों में अवधारणात्मक रूपरेखा, उदाहरण सम्मिलित किए गए हैं।

संगीत— तबला एवं पखावज (हमारे अवनद्ध वाद्य); कक्षा 12 (आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-511-7)

तबला एवं पखावज पर पहली बार एक पाठ्यपुस्तक विकसित की गई है। इसमें वेदों से लेकर अब तक के भारतीय संगीत के इतिहास, ताल वाद्यों के ऐतिहासिक विकास, उनके डिजाइन (निर्माण), लय के पैटर्न, कलाकारों के योगदान, हिंदुस्तानी और कर्नाटक ताल की स्वर प्रणाली, तबला एवं पखावज में बंदिशें और संगीत में ताल वाद्यों के महत्व से संबंधित सामग्री सम्मिलित है।

हिंदुस्तानी संगीत— गायन एवं वादन; कक्षा 12 (आई.एस.बी.एन. -978-93-5292-611-4)

हिंदुस्तानी संगीत पर पहली बार पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इसमें वैदिक काल से भारतीय संगीत का ऐतिहासिक विकास, संगीत रत्नाकर, संगीत पारिजात, संगीत मकरंद, प्राचीन ग्रंथों की सामग्री, भारतीय शास्त्रीय संगीत में संगीत रूपों की शब्दावली, राग वर्गीकरण, गायन और वादन में ताल वाद्यों की भूमिका, लयबद्ध पैटर्न या ताल, हिंदुस्तानी संगीत के विकास में कलाकारों का योगदान जैसे विषय-क्षेत्र सम्मिलित हैं।

ऑप्टिमाइजिंग लर्निंग— पॉलिसीज़ एंड प्रैक्टिसेज़ (आई.एस.बी.एन./आई.एस.एस.एन. 2348-3490)

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा आयोजित एक राष्ट्रव्यापी योग्यता-आधारित आकलन है जिसमें स्कूली विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफलों के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है। इन मूल्यांकनों का प्राथमिक लक्ष्य स्कूली शिक्षा की प्रभावशीलता का आकलन करना और नीति निर्माताओं एवं योजनाकारों

को उचित शैक्षिक सुधार उपायों को शुरू करने में मार्गदर्शन करना है। एन.ए.एस. 2021 सर्वेक्षण परिणामों की तुलना वर्ष 2017 के सर्वेक्षण परिणामों के साथ करने पर महामारी के कारण बच्चों की शिक्षा में हुआ व्यवधान स्पष्ट रूप से प्रकट होता है। दोनों सर्वेक्षणों के निष्कर्षों के अनुसार, कक्षा 3 और 5 के लिए 2017 एन.ए.एस. सर्वेक्षण की तुलना में एन.ए.एस. 2021 में सभी विषयों में औसत स्कोर कम हो गया। एन.ए.एस. 2021 के परिणामों में, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के निष्पादन में वृद्धि और कमी दोनों देखी गई, जिसमें कक्षा 3 और 5 के निष्पादन में कमी आई। इस प्रवृत्ति का विद्यार्थियों के निष्पादन को बेहतर बनाने के लिए डिजाइन और इस अध्ययन में उपयोग की गई गुणात्मक अनुसंधान विधि दोनों पर प्रभाव पड़ सकता है। अनुसंधान के लिए डेटा स्वयं विकसित "टीचर्स विलीफ एंड परसेप्शन रिगार्डिंग ग्रोथ एंड डिक्लाइन इन एन.ए.एस. 21 परफॉरमेंस क्वेश्चनायर" से एकत्र किया गया था। सर्वेक्षण में कुल नमूना आकार और प्रत्येक स्तर से नमूने तय करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया। द्वीपों को नौ अलग-अलग शैक्षणिक क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति के आधार पर नौ स्तरों में विभाजित किया गया। क्षेत्रीय प्रमुखों को उस विशेष शैक्षणिक क्षेत्र के नमूना आकार के आधार पर शिक्षकों को यादृच्छिक रूप से परीक्षण मद वितरित करने का काम सौंपा गया। प्रश्नावली द्विभाषी (अंग्रेजी और हिंदी) थी और उत्तर गूगल फॉर्म के माध्यम से एकत्र किए गए थे, जिसके लिए क्षेत्रीय प्रमुखों को लिंक उपलब्ध कराए गए थे।

जर्नल्स और पत्रिकाएँ

द प्राइमरी टीचर (आई.एस.एस.एन. 0970-9282) और प्राथमिक शिक्षक (आई.एस.एस.एन. 0970-9312)

दो पत्रिकाएँ, एक अंग्रेजी में द *प्राइमरी टीचर* और दूसरी हिंदी में *प्राथमिक शिक्षक* प्रकाशित हुई हैं। दोनों पत्रिकाएँ त्रैमासिक रूप से प्रकाशित होती हैं और शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों और अन्य पदाधिकारियों को अपने अनुभवों और नवाचारों को साझा करने और प्राथमिक शिक्षा के समकालीन मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से प्रकाशित की जाती हैं। द प्राइमरी टीचर का जनवरी 2022 अंक और *प्राथमिक शिक्षक* का जनवरी 2023 अंक प्रकाशित किया गया है।

इंडियन एजूकेशनल रिव्यू

रा.शै.अ.प्र.प. की अनुसंधान पत्रिका *इंडियन एजूकेशनल रिव्यू (आई.ई.आर.)* का उद्देश्य शिक्षा में अनुसंधान के सिद्धांत और व्यवहार को बढ़ाना है। पत्रिका में अंतर-अनुशासनात्मक परिपेक्ष्य से किए गए अध्ययनों सहित विभिन्न मुद्दों, रिपोर्टों, समीक्षाओं और अनुभवजन्य निष्कर्षों की एक विस्तृत शृंखला सम्मिलित है। यह पत्रिका जनवरी और जुलाई में अर्ध-वार्षिक रूप से प्रकाशित होती है। जुलाई 2020 का अंक प्रकाशित हो चुका है। जनवरी 2021 के अंक की पांडुलिपि प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशनाधीन है। आई.ई.आर. के संयुक्त अंक जुलाई 2021 और जनवरी 2022 के लेख प्रकाशनाधीन हैं और जुलाई 2022 और जनवरी 2023 के अंक के लेख समीक्षाधीन हैं।

जुलाई 2023 और जनवरी 2024 के लिए प्राप्त लेख भी समीक्षाधीन हैं। मई 2023 में विभिन्न भारतीय भाषाओं में लेखों के साथ आई.ई.आर. का एक विशेष अंक 'मन की बात' नामक लोकप्रिय कार्यक्रम के 100वें एपिसोड के उपलक्ष्य में जारी किया गया। 'मन की बात' एक लोकप्रिय कार्यक्रम है जिसमें भारत के प्रधानमंत्री विभिन्न विषयों के महत्व पर देश के लोगों से बात करते हैं।

भारतीय आधुनिक शिक्षा (आई.एस.एस.एन. 0972-5636)

अध्यापक शिक्षा विभाग त्रैमासिक (अप्रैल, जुलाई, अक्तूबर और जनवरी) पीयर रिव्यूड जर्नल *भारतीय आधुनिक शिक्षा* प्रकाशित करता है। हिंदी में यह पत्रिका यू.जी.सी. केयर सूची में सूचीबद्ध है। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा नियमित रूप से हिंदी में प्रकाशित यह त्रैमासिक पत्रिका और इसके प्रकाशित संस्करण रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट पर अपलोड किए जाते हैं। यह शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, अनुसंधानकर्ताओं, विद्यार्थियों और स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से जुड़े अन्य हितधारकों के लिए विचारों के प्रसार हेतु एक उपयोगी प्रकाशन साबित हुआ है। इसकी विषयवस्तु में विचारोद्दीपक लेख, अनुसंधान पत्र, आलोचनात्मक समीक्षा, सर्वोत्तम अभ्यास, नवाचार और प्रयोग, क्षेत्र के अनुभव और पुस्तक समीक्षा और अन्य फीचर सम्मिलित हैं। वर्ष 2023–24 के दौरान *भारतीय आधुनिक शिक्षा* के चार अंकों (अर्थात अप्रैल 2023, जुलाई 2023, अक्तूबर 2023 और जनवरी 2024) को अंतिम रूप दिया गया और प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली को प्रकाशन के लिए भेजा गया।

जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन (जे.आई.ई.) (आई.एस.एस.एन.: 0377-0435)

त्रैमासिक (मई, अगस्त, नवंबर और फरवरी) पीयर रिव्यूड *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन* को यू.जी.सी. केयर सूची में सूचीबद्ध किया गया है। यह पत्रिका रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा नियमित आधार पर प्रकाशित की जाती है और इसके प्रकाशित संस्करण रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाते हैं। यह शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, अनुसंधानकर्ताओं, विद्यार्थियों और स्कूली शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा से जुड़े अन्य हितधारकों हेतु विचारों के प्रसार के लिए एक उपयोगी प्रकाशन सिद्ध हुआ है। इसकी विषय-वस्तु में विचारों उद्दीपक लेख, अनुसंधान पत्र, आलोचनात्मक समीक्षा, सर्वोत्तम अभ्यास, नवाचार और प्रयोग, क्षेत्र अनुभव और पुस्तक समीक्षा तथा अन्य विशेषताएँ सम्मिलित हैं। वर्ष 2023–24 के दौरान *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन* के चार अंकों (मई 2023, अगस्त 2023, नवंबर 2023 और फरवरी 2024) को अंतिम रूप दिया गया और प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., प्रकाशन हेतु भेजा गया।

वॉयस ऑफ टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स (वी.टी.टी.ई) (ऑनलाइन जर्नल) (आई.एस.एस.एन.: 2455-1376)

अर्ध-वार्षिक, ऑनलाइन द्विभाषी जर्नल *वॉयस ऑफ टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स* (वी.टी.टी.ई) यू.जी.सी. केयर सूची में सूचीबद्ध है और विभाग द्वारा समन्वित की जाती है। शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक अपने अनुभव, विचार साझा करते हैं और अध्यापक शिक्षा से संबंधित अपने सरोकार व्यक्त करते हैं। इसकी विषयवस्तु में विचारों उद्दीपक लेख, अनुसंधान पत्र, आलोचनात्मक समीक्षा, सर्वोत्तम अभ्यास, नवाचार, प्रयोग, क्षेत्र-अनुभव और पुस्तक समीक्षाएँ सम्मिलित हैं।

स्कूल साइंस— त्रैमासिक जर्नल [आईएसएसएन 0036-679X (प्रिंट) 0972-5061 (ऑनलाइन)]

स्कूल साइंस, एक सह-समीक्षित (पीयर रिव्यूड) त्रैमासिक जर्नल है, जिसमें शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, अनुसंधानकर्ताओं और विद्यार्थियों को विज्ञान, गणित और पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रम, अध्यापन के नए और नवाचारी तरीकों, आकलन, शैक्षिक परिपाटियों आदि से संबंधित अपने विचारों, मतों, अनुभवों और

अनुसंधान के निष्कर्षों को प्रसारित करने के लिए एक मंच प्रदान किया जाता है, जिसमें प्राचीन ज्ञान, स्वदेशी पारंपरिक ज्ञान और हर्बल औषधीय पौधे सम्मिलित हैं। यह पत्रिका ऐसे सभी क्षेत्रों में नए वैश्विक रुझानों और विकास को साझा करने के लिए एक मंच के रूप में भी काम करती है।

इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी (आई.एस.एस.एन. 2581-8325)

सी.आई.ई.टी. अंग्रेजी में एक ऑनलाइन सह-समीक्षित जर्नल, *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी (आई.जे.ई.टी.)* निकालता है, जो उसकी वेबसाइट (http://ciet.nic.in/pages.phpid=journal&In=en) पर अर्ध-वार्षिक रूप से प्रकाशित होता है। यह यू.जी.सी. केयर सूची में सूचीबद्ध है। जर्नल का जुलाई 2023 और जनवरी 2024 अंक रा.शै.अ.प्र.प.और सी.आई.ई.टी. की वेबसाइट पर समय पर प्रकाशित किए गए।

इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन— अर्ध-वार्षिक जर्नल

इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन एक सह-समीक्षित (पीयर रिव्यूड) राष्ट्रीय जर्नल है, जो नीतियों और उनके अनुप्रयोगों पर आलोचनात्मक विचार-विमर्श के साथ-साथ संबंधित क्षेत्र में अवधारणात्मक और सैद्धांतिक विकास में योगदान देने वाली प्रस्तुतियों का स्वागत करता है। इसमें अनुभवजन्य अनुसंधान और विश्लेषण (मात्रात्मक, गुणात्मक और मिश्रित विधि) पर आधारित लेख सम्मिलित होते हैं और विभिन्न विषयों वाले एवं अंतरानुशासनिक और दृष्टिकोणों की एक विस्तृत शृंखला से प्रपत्रों का स्वागत किया जाता है। इस जर्नल का उद्देश्य शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, शैक्षिक योजनाकारों और प्रशासकों और अनुसंधानकर्ताओं को व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित लेख, अनुसंधान पत्र, पुस्तक समीक्षा और अनुसंधान-सार प्रस्तुत करने के लिए एक मंच प्रदान करना है। पत्रिका में व्यावसायिक और व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने की विधियों की व्यापक सेटिंग्स और तरीकों को समाहित किया गया है और इसलिए, शिक्षा और प्रशिक्षण की राष्ट्रीय प्रणालियों के संबंध में यह संस्थागत सीमाओं या संरचनाओं द्वारा प्रतिबंधित नहीं है। यह पाठ्यक्रम, शिक्षण और आकलन के अध्ययन के साथ-साथ समाज में व्यावसायिक और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण की भूमिका से संबंधित आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पहलुओं में रुचि रखता है। यह जर्नल यू.जी.सी. केयर सूची के अंतर्गत सूचीबद्ध है। इस वर्ष दो खंड प्रकाशित हुए हैं, जिनमें से एक जी-20 पर विशेष संस्करण है।

एजुकेशनल ट्रेंड (क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर का जर्नल)

संस्थान द्वारा शिक्षा क्षेत्र में अनुसंधान को प्रसारित करने, सुगमता प्रदान करने, साझा करने और दस्तावेजीकरण करने के लिए अपना *जर्नल एजुकेशनल* ट्रेंड प्रकाशित किया जा रहा है। यह राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के विभागों के अनुसंधानकर्ताओं को अपने अनुसंधान कार्यों को साझा करने और प्रकाशित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। जर्नल के खंड 2, अंक 1 और 2 का मसौदा कॉपीराइट और प्रकाशन के लिए तैयार है। जर्नल को आर.एन.आई. नंबर और आई.एस.एस.एन. आवंटित किया गया है और इसकी ऑनलाइन उपलब्धता के लिए यू.आर.एल. तैयार किया जा रहा है।

रा.शै.अ.प्र.प. की वार्षिक रिपोर्ट 2022–23

रा.शै.अ.प्र.प. की वार्षिक रिपोर्ट एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जिसे संसद में इसकी उपलब्धियों और गतिविधियों, लेखा विवरणों सहित एक व्यापक अवलोकन हेतु प्रस्तुत किया जाता है। स्कूली शिक्षा के शीर्ष निकाय रा.शै.अ.प्र.प. की वर्ष 2022–23 वर्ष की यात्रा पर प्रकाश डालते हुए, इस रिपोर्ट में उसके प्रकाशन, अनुसंधान अध्ययन, विकासात्मक गतिविधियाँ, क्षमता निर्माण कार्यक्रम और विस्तार गतिविधियों जैसी उपलब्धियों का विवरण दिया गया है। इसका उद्देश्य शिक्षा क्षेत्र में व्यापक शैक्षणिक समुदाय, नीति निर्माताओं, अध्यापकों और अभ्यासकर्ताओं के साथ सार्थक

संचार को बढ़ावा देना है। वर्ष 2022–23 के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की वार्षिक रिपोर्ट योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.) द्वारा तैयार की गई और रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित की गई।

भारत सरकार का शिक्षा मंत्रालय वर्तमान वर्ष के लिए वार्षिक रिपोर्ट तैयार करता है, जिसमें रा.शै.अ.प्र.प. से प्राप्त इनपुट भी प्रस्तुत किए जाते हैं। यह एक समयबद्ध गतिविधि है, जिसके लिए सावधानीपूर्वक योजना और तैयारी की आवश्यकता होती है। योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग रा.शै.अ.प्र.प. के सभी घटकों से सामग्री एकत्र करता है, जिसे संकलित करके समेकित रिपोर्ट शिक्षा मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट में सम्मिलित करने के लिए मंत्रालय को प्रस्तुत की जाती है।

3. अनुसंधान अध्ययन

रा.शै.अ.प्र.प. अपने प्रमुख कार्यों में से एक के रूप में विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न आयामों में अनुसंधान के संचालन, प्रचार और समन्वय में सक्रिय रूप से संलग्न है। रा.शै.अ.प्र.प. इन अनुसंधान अध्ययनों और नवाचारों के माध्यम से, शिक्षा प्रणाली को बढ़ाने के उद्देश्य से शैक्षिक नीतियों और कार्यक्रमों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वर्ष 2023–24 में रा.शै.अ.प्र.प. ने विद्यालय और अध्यापक शिक्षा के विविध क्षेत्रों में कई अनुसंधान अध्ययन किए। इन अध्ययनों में अध्यापकों की बुनियादी और प्रारंभिक स्तर पर वैचारिक समझ जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और कक्षा 1 और 2 के अध्यापकों के लिए संख्यात्मक कौशल पर विशेष बल दिया गया। माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा की शिक्षा में नवाचारी अभ्यासों की भी खोज की गई, जिससे वांछित अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने में उनकी प्रभावशीलता का आकलन किया गया। अन्य प्रमुख अनुसंधानों में विद्यालयों में दिव्यांग बच्चों के लिए उचित समायोजन की प्रभावशीलता की जाँच करना, त्रिपुरा में विद्यार्थियों के बीच अंग्रेजी भाषा दक्षताओं का अध्ययन करना, विशेष रूप से टी.टी.ए.ए.डी.सी. क्षेत्रों में और पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा पर कोविड-19 के प्रभाव की जाँच करना सम्मिलित था।

रा.शै.अ.प्र.प. ने 'दीक्षा' प्लेटफॉर्म पर ई-सामग्री की गुणवत्ता और उपयोग के पैटर्न के साथ-साथ प्रयोक्ता व्यवहार का भी मूल्यांकन किया। कक्षा 9 और 10 के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की माध्यमिक विज्ञान किट की उपयोगिता, चयनित कला उत्सव पुरस्कार विजेताओं के प्रकरण अध्ययन और विज्ञान एवं गणित की पाठ्यपुस्तकों में भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) को सम्मिलित करने पर अध्ययन किए गए। फोकस का एक अन्य क्षेत्र माध्यमिक स्तर पर विज्ञान में अनुभवात्मक शिक्षा था। अतिरिक्त अनुसंधान में आकांक्षी जिलों में समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एन.ए.एस. 2021 के बाद के हस्तक्षेप, अंग्रेजी, गणित और सामाजिक विज्ञान पढ़ाने के लिए सांकेतिक भाषा और ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्यचर्या संबंधी अध्ययन और शिक्षार्थी आकलनों पर एक सर्वेक्षण सम्मिलित था।

मेघालय में किए गए अनुसंधान में विद्यालयी शिक्षा के खराब प्रदर्शन में योगदान देने वाले कारकों, असम के ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षणिक नवाचारों, असम में चाय बागान मजदूरों के बच्चों के बीच मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक मुद्दों के बारे में जागरूकता और ब्लॉक स्तर पर लागू किए गए विद्यालय-स्तरीय हस्तक्षेपों पर भी गहनता से विचार किया गया। मध्य प्रदेश में सी.एम.आर.आई.एस.ई. विद्यालयों की ताकत, कमजोरियों, अवसरों और चुनौतियों का एक व्यापक अध्ययन भी किया गया। अन्य महत्वपूर्ण अध्ययनों में झारखंड के आकांक्षी जिलों में

रा.शै.अ.प्र.प.

एकल-अध्यापक विद्यालयों में बुनियादी शिक्षा, झारखंड में उच्च प्राथमिक स्तर पर अधिगम प्रतिफलों पर डिजिटल पहलों का प्रभाव, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में विद्या प्रवेश कार्यक्रम और कर्नाटक के डी.एम. स्कूल, आर.आई.ई. मैसूरु में बुनियादी और प्रारंभिक स्तर के लिए बैगरहित दिनों का कार्यान्वयन सम्मिलित था।

रा.शै.अ.प्र.प. ने शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (ई.आर.आई.सी.) के माध्यम से शैक्षिक अनुसंधान को भी समर्थन देना जारी रखा। परिषद् ने रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टरल अध्येतावृत्ति कार्यक्रम को भी जारी रखा, जिसमें शिक्षा और निकट से संबंधित क्षेत्रों में डॉक्टरेट अनुसंधान करने वाले युवा अध्येताओं को प्रत्येक वर्ष अध्येतावृत्ति प्रदान की जाती है।

प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

आँगनबाड़ियों सहित बुनियादी और आरंभिक स्तरों पर, संख्यात्मक कौशल पर कक्षा 1 और 2 के अध्यापन में अध्यापकों की संकल्पनात्मक समझ पर अध्ययन

अध्यापकों या आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और कक्षा 1 और 2 को पढ़ाने वाले अध्यापकों की वैचारिक समझ पर अनुसंधान किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य अध्यापकों की वैचारिक समझ को जानना और इस बुनियादी स्तर पर उपयोग किए जाने वाले सबसे प्रभावी अभ्यासों की पहचान करना था। नमूना विद्यालयों और केंद्रों को सोच समझकर देशभर के उन राज्यों से एकत्रित किया गया, जहाँ क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) स्थित हैं।

अध्ययन में कई विद्यालयों, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अवसंरचना की कमी को रेखांकित किया गया है, जो सीमित कक्षाओं के साथ संचालित होते हैं। इस अपर्याप्तता से प्रभावी एफ.एल.एन. शिक्षा वितरण में एक बड़ी बाधा उत्पन्न होती है। विद्यालय सुविधाओं में सुधार और गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देने के लिए संसाधन आबंटित करने के लिए नीति निर्माताओं और शैक्षिक हितधारकों की ओर से तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है।

भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)

माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा में नवाचारी अभ्यासों का अन्वेषणात्मक अध्ययन और वांछित अधिगम प्रतिफलों प्राप्त करने में उनकी प्रभावशीलता

अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में नवाचारी अभ्यासों की पहचान करना और उनका पता लगाना, हिंदी में अधिगम प्रतिफलों की खोज करना, हिंदी शिक्षण में नवाचारी अभ्यासों और वांछित अधिगम प्रतिफलों के बीच संबंध स्थापित करना, अधिगम प्रतिफलों की प्राप्ति में विभिन्न नवाचारी अभ्यासों की प्रभावकारिता का अध्ययन करना, वांछित अधिगम प्रतिफलों की उच्च और निम्न उपलब्धि के चरम मामलों की जाँच करना, यह पता लगाना कि विद्यार्थी हिंदी भाषा और कक्षा-कक्ष अधिगम वातावरण में अपनी शैक्षिक क्षमताओं के बारे में किस सीमा तक समझते हैं और नवाचारी अभ्यासों के आधार पर पाठ्यसामग्री और ई-सामग्री विकसित करना है।

अनुसंधान से संबंधित आँकड़ों की समीक्षा और अंतिम रूप देने के लिए राष्ट्रीय कार्यशाला

इसमें मात्रात्मक और गुणात्मक विधियों के साथ-साथ प्रश्नावली आधारित सर्वेक्षण विधियों का भी उपयोग किया गया। अध्ययन किए जा रहे संदर्भ में अध्यापकों की मान्यताओं को समझने के लिए बड़ी संख्या में प्रतिभागियों से नवाचारी अभ्यासों के बारे में आसानी से जानकारी प्राप्त करने के लिए मात्रात्मक सर्वेक्षण का उपयोग किया गया। इस अध्ययन में प्रकरण अध्ययन विधि का उपयोग किया गया।

अध्ययन के निष्कर्ष इस अनुसंधान को अन्य क्षेत्रों और विभिन्न प्रकार के विद्यालयों तक विस्तारित करने का सुझाव देते हैं। विशिष्ट नवाचारों पर सुविचारित अध्यापक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए और फिर उनके प्रयोक्ता और अधिगम प्रतिफलों पर प्रभावशीलता पर प्रयोगात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए। हिंदी की विभिन्न विधाओं में नवाचारों का उपयोग सुनिश्चित करके अध्यापक प्रशिक्षण आयोजित करने की आवश्यकता है। मातृभाषा और दूसरी भाषा के रूप में हिंदी से संबंधित नवाचारों पर एक अध्ययन आयोजित किया जाना चाहिए। विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर सूचना, संचार और प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग और अधिगम प्रतिफलों पर इसकी प्रभावशीलता के संबंध में और अधिक पता लगाया जाना चाहिए।

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

विद्यालयों में दिव्यांग बच्चों के लिए उचित आवास की प्रभावशीलता—एक अध्ययन

अनुसंधान परियोजना का उद्देश्य दिव्यांगता से प्रभावित अलग-अलग विद्यार्थी के लिए आवश्यक और विद्यालय द्वारा प्रदान किए जाने वाले आवास का स्वरूप और सीमा का पता लगाना और दिव्यांगता से प्रभावित विद्यार्थियों की सीखने की आवश्यकताओं के संबंध में विद्यालयों द्वारा प्रदान किए गए आवास और सहायता की प्रभावकारिता का विश्लेषण करना है। पाँच क्षेत्रों के पाँच राज्यों और पाँच जिलों और दो ब्लॉकों से दो मिडल विद्यालय चुने गए, जहाँ अलग-अलग दिव्यांगता वाले बच्चे पढ़ रहे हैं। कुल मिलाकर, 20 विद्यालयों, 40 सामान्य अध्यापकों, 20 विशेष अध्यापकों, 20 विद्यार्थियों और 40 अभिभावकों से डेटा प्राप्त किया गया और 40 कक्षा-कक्षों का अवलोकन किया गया। इस अनुसंधान के उपकरणों में विद्यालय सूचना और अवलोकन पत्रक, विद्यालयी विद्यार्थियों के लिए साक्षात्कार अनुसूची, कक्षा अवलोकन अनुसूची, विद्यालय अध्यापकों के लिए प्रश्नावली और गैर-अध्यापन कर्मचारियों और अभिभावकों के लिए साक्षात्कार अनुसूची सम्मिलित थी। निष्कर्षों से पता चला कि चयनित विद्यालयों में से किसी में भी दिव्यांग विद्यार्थियों (एस.डब्ल्यू.डी.) को उचित सहायता प्रदान नहीं की जा रही थी, जबकि अधिकांश विद्यालयों ने एस.डब्लू.डी. के लिए व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम तैयार किया था, जबकि फॉलोअप रिकॉर्ड अधूरे पाए गए। संसाधनों और सहायता सेवाओं की कमी प्रमुख चिंताएँ थीं। अध्ययन स्वरूप में खोजपूर्ण है। कक्षा में व्यवहार में कठिनाई, एस.डब्ल्यू.डी. का आकलन करना, सीमाओं के अंदर पाठ्यक्रम में अनुकूलन आदि की भी रिपोर्ट की गई। उनमें से अधिकांश ने पाठ्यक्रम अनुकूलन और विशेष रूप से विद्यार्थियों के आकलन के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता व्यक्त की थी। दिव्यांग और गैर-दिव्यांग विद्यार्थियों के माता-पिता और गैर-अध्यापन कर्मचारी एस.डब्ल्यू.डी. की शिक्षा में सहायक पाए गए।

जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)

जेंडर समानता और बाल यौन शोषण की रोकथाम के लिए भारत सरकार की चयनित पहलों का प्रभाव आकलन

यह अनुसंधान अध्ययन वर्ष 2021 में शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य लघु फिल्म ‘कमल’ के प्रसार और स्क्रीनिंग की समीक्षा करना, विद्यालय में सुरक्षा शपथ, यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पोक्सो) अधिनियम जागरूकता और बच्चों, अध्यापकों और अभिभावकों जैसे लाभार्थियों के लिए विद्यालयों में जेंडर संवेदनशीलता लाना था। द्वितीयक डेटा के संग्रह के लिए राज्यों को प्रारंभिक प्रश्नावली भेजी गई थी और द्वितीयक डेटा प्राप्त करने

के बाद, प्रत्येक क्षेत्र से दो राज्यों की पहचान की गई थी। अध्ययन करने के लिए जिन राज्यों को चुना गया था वे हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, गोवा, असम, मणिपुर, छत्तीसगढ़, ओडिशा, तेलंगाना और तमिलनाडु थे। गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तरह के उपकरण विकसित किए गए और विभिन्न हितधारकों, जैसे— कि प्रधानाचार्यों, अध्यापकों और विद्यार्थियों को दिए गए। अभिभावकों और अध्यापकों के साथ फोकस समूह चर्चाएँ (एफ.जी.डी.) आयोजित की गईं। टीम के सदस्यों द्वारा डेटा एकत्र, संकलित और विश्लेषित किया गया। डेटा से पता चलता है कि अधिकांश अभिभावकों को फिल्म स्क्रीनिंग में विशेष रूप से आमंत्रित नहीं किया गया था। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि अधिकांश विद्यार्थी, विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर, चाइल्डलाइन नंबर और पोक्सो अधिनियम के बारे में जानते थे, लेकिन स्कूल में सुरक्षा शपथ लेने और इसके महत्व के साथ-साथ किशोर न्याय अधिनियम (जे.जे. एक्ट) के बारे में उचित जागरूकता चिंता का विषय है। पोक्सो और किशोर न्याय अधिनियमों के बारे में अभिभावकों की जागरूकता भी बेहद खराब थी। शिकायत बॉक्स, जो विद्यार्थियों को अपनी चिंताओं को व्यक्त करने और गुमनाम रूप से मदद माँगने के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए डिजाइन किए गए थे, कुछ स्कूलों में उपलब्ध हैं, लेकिन उनका कम उपयोग किया जाता है।

शिमला के शामलाघाट में डेटा संग्रह के दौरान बुनियादी स्तर के विद्यार्थी

पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग (डी.सी.एस. एंड डी.)

विद्या प्रवेश कार्यक्रम का मूल्यांकन

विद्या प्रवेश कार्यक्रम का मूल्यांकन छह राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों, राजस्थान, महाराष्ट्र, पुदुच्चेरी, दिल्ली, अंडमान और निकोबार द्वीप और ओडिशा में आयोजित किया गया था। जिसका उद्देश्य कक्षा 1 में एन.ई.पी. 2020 द्वारा अनुशंसित विद्या प्रवेश कार्यक्रम के कार्यान्वयन की देखरेख करना था। इस अध्ययन से पता चला कि विद्या प्रवेश कार्यक्रम का कक्षा 1 के विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफलों और अध्यापकों की बुनियादी स्तर के शिक्षणशास्त्र के बारे में समझ पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

सैनिक विद्यालयों की कार्य निष्पादन समीक्षा

रक्षा मंत्रालय के निर्देश पर सैनिक विद्यालयों में पाठ्यक्रम और शैक्षणिक अभ्यासों की वर्तमान स्थिति और कैडेटों को एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले अवसरों की निगरानी के लिए 33 सैनिक विद्यालयों की कार्य निष्पादन समीक्षा की गई है। डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया जारी है।

कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग (डी.ई.ए.ए.)

कला उत्सव के चयनित पुरस्कार विजेताओं का प्रकरण अध्ययन

'कला उत्सव' के आयोजन को आरंभ किए हुए आठ वर्ष (2015–2022) बीत चुके हैं, जिसमें देशभर के माध्यमिक विद्यार्थी प्रत्येक वर्ष निर्धारित दिशानिर्देशों के अनुसार विभिन्न कला रूपों में भाग लेते हैं। यह महसूस किया गया कि स्कूलों में इसके प्रभाव का आकलन करने और कला उत्सव पुरस्कार विजेताओं के कला रूप के पोषण और अभ्यास के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए एक अध्ययन होना चाहिए। इस अध्ययन का उद्देश्य कला रूपों

को बनाए रखने, पोषित करने और विकसित करने के लिए पुरस्कार विजेताओं द्वारा किए गए प्रयासों और प्रक्रिया का पता लगाना, कला रूपों के आगे के अध्ययन के लिए कला उत्सव विजेताओं की समस्याओं और सरोकारों को समझना, यह मूल्यांकन करना कि क्या विद्यार्थियों का रोड मैप होने से हमारी अनोखी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और विकास में मदद मिलेगी और कला उत्सव के प्रारूप में बदलाव लाने पर विचार करना था। विद्यार्थियों, अध्यापकों और प्रधानाचार्यों के लिए एक विस्तृत प्रश्नावली के साथ उपकरण विकसित किए गए थे। ई-मेल, फोकस समूह चर्चा (एफ.जी.डी.) और निर्देशित साक्षात्कारों के माध्यम से पुरस्कार विजेताओं से फीडबैक लिया गया।

कला उत्सव पुरस्कार विजेताओं से एकत्रित प्रतिक्रिया से कला शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियों और अवसरों के बारे में मूल्यवान जानकारी प्राप्त की गई। कुछ प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे कि पुरस्कार विजेताओं के बीच कला की धारणा मुख्य रूप से एक प्रतियोगिता थी और कला में व्यापक महत्व और परिवर्तनकारी शक्ति के बिना पुरस्कार जीतना था। प्रतिभागियों ने कला उत्सव के बाद कला को एक व्यवहार्य करियर के रूप में देखने के लिए अवसर प्रदान करके करियर के अवसरों के प्रति उत्सुकता व्यक्त की, जिसमें कलात्मक विकास के लिए निरंतर समर्थन, व्यावसायिक विकास के लिए मंच, राष्ट्रीय, वैश्विक सहयोग और मान्यता को बढ़ावा देना, नि:शक्त विद्यार्थियों और कलाकारों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करना, सभी व्यक्तियों को उनकी कलात्मक आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए समर्थन और अवसर सुनिश्चित करना, वित्तीय बाधाओं को कम करना सम्मिलित है। इसमें विद्यालय के पाठ्यक्रम में कला और शिल्प, सांस्कृतिक मूल्यों, स्वदेशी परंपराओं के साथ संरेखित करना और कला के माध्यम से मूल्य शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल दिया गया था। इन सरोकारों और विचारों को संबोधित करके, कला उत्सव कलात्मक प्रतिभा को पोषित, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और विद्यार्थियों के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए एक अधिक समावेशी, सहायक और परिवर्तनकारी मंच के रूप में विकसित हो सकता है।

शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

देशभर में रा.शै.अ.प्र.प. माध्यमिक विज्ञान किट (एस.एस.के.) (कक्षा 9 और 10) की उपयोगिता का अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यालयों में रा.शै.अ.प्र.प. माध्यमिक विज्ञान किट (एस.एस.के.) की स्थिति का पता लगाना, विज्ञान अध्यापन अधिगम में इसकी वस्तुओं की उपयोगिता की जाँच करना, एस.एस.के. में आगे सुधार और संशोधन के लिए सुझाव एकत्र करना और किट एवं इसकी वस्तुओं का उपयोग करते समय प्रयोक्ताओं द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों का पता लगाना था।

विशेषज्ञों द्वारा डेटा एकत्र करने के लिए आंतरिक उपकरण विकसित किए गए थे और उपकरणों का सत्यापन किया गया था। एस.एस.के. की बिक्री के आँकड़ों का विश्लेषण करने के बाद, दो राज्यों हरियाणा और झारखंड का चयन किया गया क्योंकि उन्होंने पिछले कुछ वर्षों में क्रमशः 3261 और 2683 एस.एस.के. खरीदे थे। राज्य अधिकारियों के परामर्श से दोनों राज्यों से 18–18 विद्यालयों का चयन किया गया। अनुसंधान टीमों ने उपकरणों के प्रशासन के लिए कुल 36 विद्यालयों का दौरा किया। ये स्कूल दोनों राज्यों के 6 जिलों में फैले हुए थे। इस दौरे के दौरान टीम ने 60 से अधिक विज्ञान अध्यापकों से भी बातचीत की, जिसमें कक्षा 9 और 10 में लगभग 12,000 विद्यार्थी सम्मिलित थे।

अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार हैं— हरियाणा के सभी प्रतिदर्श विद्यालयों में एक से अधिक एस.एस.के. और झारखंड के प्रत्येक प्रतिदर्श विद्यालयों में एक एस.एस.के. उपलब्ध हैं। दोनों राज्यों में अध्यापक किट का उपयोग कर रहे हैं। दोनों राज्यों के प्रतिदर्श स्कूलों में 75 प्रतिशत से अधिक अध्यापक सप्ताह में एक बार किट

की वस्तुओं का उपयोग कर रहे हैं; 57 प्रतिशत से अधिक अध्यापकों का मानना है कि किट वस्तुओं के प्रभावी उपयोग के लिए उन्मुखीकरण या प्रशिक्षण की आवश्यकता है, जिससे उन्हें एस.एस.के. के उचित उपयोग में मदद मिल सकती है। अनेक अध्यापकों ने बातचीत के दौरान सुझाव दिया कि बच्चों को उचित व्यावहारिक अनुभव देने के लिए एस.एस.के. में कुछ वस्तुओं, जैसे— लिटमस पेपर, पी.एच. पेपर, ग्लास स्लाइड थर्मामीटर, प्रयोगशाला स्टैंड आदि की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए। कुल मिलाकर, यह पाया गया कि एस.एस.के. माध्यमिक स्तर पर विज्ञान अध्यापन अधिगम में बहुत उपयोगी है, लेकिन इन किटों के अनुकूल उपयोग के लिए अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की तत्काल आवश्यकता है। साथ ही, किट की कुछ वस्तुओं की मात्रा और आयामों की समीक्षा करने की आवश्यकता है।

शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग (डी.ई.आर.)

शैक्षणिक कार्यनीतियों के रूप में स्वदेशी खेलों के एकीकरण का एक खोजपूर्ण अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य देशभर में स्वदेशी खेलों का दस्तावेजीकरण करना; मौजूदा अध्यापन-अधिगम प्रक्रियाओं के तरीके का पता लगाना; शिक्षार्थियों के सभी पहलुओं और क्षमताओं को विकसित करने के लिए स्वदेशी खेलों का एकीकरण करना; शिक्षा को एन.ई.पी. 2020 में परिकल्पित शिक्षार्थियों के लिए अधिक समग्र, उपयोगी और संतुष्टिदायक बनाना; शैक्षणिक उपकरणों के रूप में स्वदेशी खेलों की सार्थकता की पहचान करना और विद्यालयी पाठ्यक्रम के विभिन्न स्तरों में विभिन्न विषयों के साथ उनकी सार्थकता का मानचित्रण करना; एक समर्थन कार्यक्रम आयोजित करना और हितधारकों के साथ अध्ययन के निष्कर्षों को साझा करना है। यह एक खोजपूर्ण अध्ययन है जिसमें बड़े पैमाने पर गुणात्मक अनुसंधान विधि को अपनाया गया है। इस अध्ययन के लिए प्रतिदर्श आर.आई.ई. के प्रत्येक अधिकार क्षेत्र से एक या दो राज्यों तक सीमित है, जो संबंधित राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्रों के परामर्श से किया गया है। इसके बाद, प्रत्येक राज्य से समुदायों (ब्लॉक या जिलों) का चयन किया जाएगा, जिसमें आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए चयनित सी.आर.सी., डी.आर.सी. और डी.आई.ई.टी. अधिकारियों को सम्मिलित किया जाएगा। पहले स्तर में विशेषज्ञ समिति की बैठक में गहन चर्चा के बाद राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों हेतु प्रश्नावली तैयार की गई। प्रश्नावली को अंतिम रूप दिए जाने के बाद, इसे संबंधित एस.सी.ई.आर.टी. प्रतिनिधियों को भेज दिया गया। लगभग 50 प्रतिशत राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों ने प्रश्नावली का जवाब दिया, जिसमें उनके संबंधित क्षेत्रों में प्रचलित स्वदेशी खेलों और उनके अनुशंसित आयु समूहों के बारे में जानकारी दी गई। राज्यों की प्रतिक्रिया पर एक प्रारूप रिपोर्ट तैयार की गई। अध्ययन वर्ष 2024–25 के दौरान जारी रहेगा।

रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टोरल अध्येतावृत्ति 2023–24

अध्येतावृत्ति की योजना के अनुसार, अध्येतावृत्ति की निरंतरता के लिए रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टोरल अध्येता की प्रगति रिपोर्ट की वार्षिक समीक्षा की जाती है। इस संबंध में, 17 डॉक्टोरल अध्येताओं की प्रगति की समीक्षा के लिए स्क्रीनिंग-सह-प्रगति निगरानी समिति (एस.पी.एम.सी.) की बैठक 8–9 फरवरी, 2024 को हाइब्रिड माध्यम से बुलाई गई थी। एस.पी.एम.सी. बैठक के विवरण के अनुसार उचित कार्रवाई की गई है।

एन.आई.ई., नई दिल्ली में 4–5 मार्च, 2024 को ई.आर.आई.सी. की स्क्रीनिंग-सह-प्रगति निगरानी समिति (एस.पी.एम.सी.) की दो दिवसीय बैठक आयोजित की गई। अध्येतावृत्ति के लिए नौ डॉक्टरेट अध्येता की अनुशंसा की गई। शैक्षणिक वर्ष 2023–24 के दौरान 17 अध्येता को अध्येतावृत्ति/आकस्मिकता जारी की गई है। छह अध्येताओं ने अपनी पी.एच.डी. पूरी कर ली है और अपना शोध प्रबंध प्रभाग को सौंप दिया है।

क्र. सं.	डॉक्टरल अध्येता का नाम	शोध प्रबंध का शीर्षक
1.	अनामिका सिंह	शिक्षा के संदर्भ में असुर जनजाति की संस्कृति, समाज और सतत विकास लक्ष्यों के बहुआयामी पहलुओं की खोज
2.	राज बल्लव पांडा	प्राथमिक स्तर पर भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 में परिकल्पित गणित शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करना
3.	शौकत अहमद डार	विद्यालय का परिवेश, समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि— विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों (दिव्यांग) का एक अध्ययन
4.	तानिया सरकार	उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के लिए स्व-निर्देशन ए.आई. जेंडर स्पेक्ट्रम मॉड्यूल का विकास
5.	स्नेहा झा	प्रतिकूल पारिवारिक परिवेश वाले युवा किशोरों में आत्मसम्मान, कथित तनाव और आक्रामकता— एक कला आधारित हस्तक्षेप।
6.	राजन पटेल	छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष शिक्षा विद्यालयों की स्थिति एवं कार्यप्रणाली का मूल्यांकन— एक अध्ययन
7.	इंदुचूडन आर.	गणित मॉडलिंग में अनिश्चितताओं का विकास और विश्लेषण
8.	सोनिया सागर	माध्यमिक स्तर पर द्वि-भाषी शिक्षण का विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, शैक्षिक समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन
9.	रजनी कर्णवाल	शाला पूर्व बच्चों के सुक्ष्म गत्यात्मक कौशल पर हस्तक्षेप ग्राफोमोटर कौशल का प्रभाव

ई.आर.आई.सी. गतिविधियों का आयोजन— एस.पी.एम.सी. और ई.आर.आई.सी. की आम सभा की बैठकें और अनुमोदित ई.आर.आई.सी. परियोजनाओं के लिए निधि जारी करना

संस्थागत नेटवर्किंग में शैक्षिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा परिषद् के अंदर और बाहर दोनों जगह अनुसंधानकर्ताओं के बीच शैक्षिक अनुसंधान में रुचि पैदा करने और उसे बनाए रखने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। वर्ष 1974 में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (ई.आर.आई.सी.) के रूप में जानी जाने वाली एक स्थायी समिति की स्थापना की गई थी। समिति की अध्यक्षता रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक करते हैं और परिषद् के संयुक्त निदेशक सह-अध्यक्ष होते हैं। रा.शै.अ.प्र.प. के माननीय अध्यक्ष (शिक्षा मंत्री, भारत सरकार) द्वारा आठ बाहरी विशेषज्ञों को नामित किया जाता है। इन ई.आर.आई.सी. सदस्यों में विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों से शिक्षा और संबद्ध विषयों के प्रख्यात अनुसंधानकर्ता और एस.आई.ई. और एस.सी.ई.आर.टी. के प्रतिनिधि सम्मिलित हैं। डी.ई.आर., ई.आर.आई.सी. का सचिवालय है, ई.आर.आई.सी. द्वारा अनुशंसित अनुसंधान परियोजनाओं को अकादमिक, प्रशासनिक और वित्तीय सहायता के माध्यम से समर्थन दिया जा रहा है।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ई.आर.आई.सी. के तहत वित्त पोषण के लिए प्राप्त नए अनुसंधान प्रस्तावों के मूल्यांकन के लिए सह-प्रगति निगरानी समिति स्क्रीनिंग (एस.पी.एम.सी.) की बैठक आयोजित करना; जारी ई.आर.आई.सी. अनुसंधान परियोजनाओं की प्रगति की निगरानी करना तथा उनकी प्रगति की निगरानी के साथ-साथ रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टरेट अध्येतावृत्ति के आवेदनों पर विचार करना; विभिन्न ई.आर.आई.सी. गतिविधियों की जाँच के लिए ई.आर.आई.सी. की आम सभा की बैठक आयोजित करना एवं अनुमोदित ई.आर.आई.सी. परियोजनाओं के लिए निधि जारी करना है।

एन.आई.ई., नई दिल्ली में 4–5 मार्च, 2024 को ई.आर.आई.सी. की सह-प्रगति निगरानी समिति स्क्रीनिंग (एस.पी.एम.सी.) की दो दिवसीय बैठक आयोजित की गई। पिछले पाँच वर्षों में ई.आर.आई.सी. योजना के सहयोग से 46 अनुसंधान परियोजनाएँ पूरी की गई हैं और वर्तमान में 16 अनुसंधान परियोजनाएँ प्रगति पर हैं। वर्तमान वर्ष में, प्रस्तुत ई.आर.आई.सी. अनुसंधान प्रस्तावों की समीक्षा के लिए एस.पी.एम.सी. की बैठक 8 और 9 फरवरी, 2024 को आयोजित की गईं। प्राप्त छह परियोजना प्रस्तावों में से केवल एक अनुसंधान प्रस्ताव को विशेषज्ञ समिति द्वारा वित्तीय निधिकरण के लिए अनुमोदित किया गया।

राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर किए गए अनुसंधान सारों का संकलन

रा.शै.अ.प्र.प. ने एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. द्वारा किए गए पूर्ण और अप्रकाशित अनुसंधान का सार तैयार करने का काम शुरू किया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. से अनुसंधान अध्ययनों के सार एकत्र करना, विभिन्न विषयों पर अनुसंधान सार को वर्गीकृत करना और व्यापक प्रसार के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट पर अनुसंधान अध्ययनों के सार को अपलोड करना है। रा.शै.अ.प्र.प. ने एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. द्वारा किए गए पूर्ण और अप्रकाशित अनुसंधान का सार तैयार करने का काम शुरू किया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. से अनुसंधान अध्ययनों के सार एकत्र करना, विभिन्न विषयों पर अनुसंधान सार को वर्गीकृत करना और व्यापक प्रसार के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट पर अनुसंधान अध्ययनों के सार को अपलोड करना है।

रा.शै.अ.प्र.प. रिसर्च एसोसिएटशिप (शिक्षाविद/अनुसंधानकर्ता पूल योजना)

यह योजना रा.शै.अ.प्र.प. में युवा शिक्षाविदों एवं शैक्षिक अनुसंधानकर्ताओं के अनुभव का उपयोग करने के लिए शुरू की गई है, जिन्होंने विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबंधित विषयों पर पी.एच.डी. की है।

इस कार्यक्रम के दो प्रमुख उद्देश्य हैं— युवा अनुसंधान प्रतिभाओं का दोहन करना और उन्हें कुछ समय के लिए रा.शै.अ.प्र.प. में काम करने का अवसर देकर विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार और अनुसंधान जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करना। इस तंत्र में एन.ई.पी. 2020, एन.सी.एफ.-एफ.एस. और एन.सी.एफ.-एस.ई. के अनुरूप प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर काम करने के लिए कुछ नई प्रतिभाओं और अध्येताओं को संलग्न करने में मदद मिलेगी। इससे युवा अनुसंधानकर्ताओं को विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबंधित अपने संगत क्षेत्रों में योगदान करने और अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया जाएगा।

शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

वर्ष 2036 तक विद्यालयी विद्यार्थियों के नामांकन के अनुमान और प्रवृत्ति का अध्ययन

'वर्ष 2036 तक विद्यालयी विद्यार्थियों के नामांकन के अनुमान और रुझान का अध्ययन' शीर्षक से अनुसंधान अध्ययन राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर विद्यालयी विद्यार्थियों के नामांकन के आँकड़ों का अनुमान लगाने के लिए किया गया है। इस अनुसंधान अध्ययन में जेंडर के साथ-साथ सामाजिक श्रेणी के आधार पर नामांकन के आँकड़ों का अनुमान लगाया जाता है। इस अनुमान को एन.ई.पी. 2020 द्वारा अनुशंसित नए शैक्षणिक और पाठ्यचर्या संरचना अर्थात 5+3+3+4 के अनुसार पूरा किया जाता है, जो विशेष रूप से बुनियादी, प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक शैक्षिक स्तरों में 3–18 वर्ष की आयु को कवर करता है। अध्ययन में प्राथमिक स्तर के लिए नामांकन का भी अनुमान लगाया गया है। इस अत्याधुनिक अनुसंधान में विभिन्न सांख्यिकीय प्रक्षेपण एल्गोरिदम का परिष्कृत उपयोग सम्मिलित है, जिसमें स्पष्ट प्रवेश दर, ड्रॉपआउट दर, पुनरावृत्ति दर का अनुमान लगाने के लिए डबल एक्सपोनेंशियल स्मूदिंग सम्मिलित है। पदोन्नति दर के अनुमान के लिए एकाधिक रेखीय प्रतिगमन का उपयोग किया

जाता है क्योंकि ड्रॉपआउट दर, पुनरावृत्ति दर और पदोन्नति दर का योग 100 के बराबर होना चाहिए। पुनर्निर्माण कोहोर्ट विधि का उपयोग वर्ष 2036 तक नामांकन के आँकड़ों के प्रक्षेपण के लिए किया जाता है, इस विधि में स्पष्ट प्रवेश दर, ड्रॉपआउट दर, पदोन्नति दर और पुनरावृत्ति दर के अनुमानित आँकड़ों को ध्यान में रखती है, इन अनुमानों के आधार पर नामांकन के आँकड़े वर्ष 2036 तक अनुमानित हैं। यह अनुसंधान अध्ययन शिक्षा क्षेत्र में भविष्य की नीति-निर्माण और संसाधन आबंटन के लिए एक ठोस आधार के रूप में काम करेगा। यह अध्ययन नामांकन के आँकड़ों पर आधारित है जो जनसंख्या के आँकड़ों से निकटता से जुड़े हैं। विद्यालय नामांकन का रुझान जनसंख्या के रुझान पर निर्भर करता है। प्राथमिक स्तर (बुनियादी स्तर कक्षा 1–2 तथा प्रारंभिक स्तर) में नामांकन वृद्धि वर्ष 2011 तक जारी रही। वर्ष 2011 के बाद नामांकन में गिरावट आई है तथा यह वर्ष 2036 तक जारी रहेगी तथा वर्ष 2036 के बाद भी जारी रह सकती है। मध्य स्तर नामांकन तथा माध्यमिक स्तर नामांकन क्रमशः वर्ष 2024–25 तथा वर्ष 2026–27 तक लगातार बढ़ता रहेगा।

योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

सतत विकास लक्ष्य (एस.डी.जी.) 4.7— विद्यालयी शिक्षा में नीतियाँ और अभ्यास

सतत विकास लक्ष्य (एस.डी.जी.) 4.7 में कहा गया है कि '2030 तक, सुनिश्चित करें कि सभी शिक्षार्थी सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करें, जिसमें अन्य बातों के अलावा, सतत विकास और सतत जीवन शैली, मानवाधिकार, जेंडर समानता, शांति और अहिंसा की संस्कृति को बढ़ावा देने, वैश्विक नागरिकता और सांस्कृतिक विविधता की सराहना और सतत विकास में संस्कृति के योगदान के लिए शिक्षा सम्मिलित है।' एस.डी.जी. लक्ष्य 4.7 में सतत विकास के लिए शिक्षा (ई.एस.डी.) और वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जी.सी.ई.डी.) सहित उभरती हुई अवधारणाएँ सम्मिलित हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि किस सीमा तक (i) वैश्विक नागरिकता और (ii) जेंडर समानता और मानवाधिकारों सहित सतत विकास के लिए शिक्षा, विद्यालयी शिक्षा में राष्ट्रीय या राज्य शिक्षा नीतियों और पाठ्यक्रमों में सभी स्तरों पर मुख्यधारा में लाई गई है और विद्यालयों में लागू जी.सी.ई.डी. एवं ई.एस.डी. से संबंधित पाठ्यचर्या अभ्यासों की जाँच की गई है। राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों की नीतियों, पाठ्यक्रम, अध्यापक शिक्षा और आकलन में ई.एस.डी. और जी.सी.ई.डी. के प्रतिबिंब का विश्लेषण किया गया है, ताकि लक्ष्य एस.डी.जी. 4.7 के संबंध में राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों की स्थिति को समझा जा सके।

31 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों से एस.डी.जी. 4.7 की स्थिति के बारे में जानकारी तथा उनके संबंधित राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों में क्रियान्वित उल्लेखनीय कार्यक्रमों और पाठ्यचर्या संबंधी अभ्यासों का विवरण एकत्र किया गया है। राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों में क्रियान्वित कुछ पाठ्यचर्या संबंधी अभ्यास इस प्रकार हैं— चंडीगढ़ में सक्रिय विद्यार्थी भागीदारी के लिए इको क्लब या किचन गार्डन, गोवा में नागरिक सहभागिता बढ़ाना (ई.सी.ई.), गुजरात में ग्रीन विद्यालय, हरियाणा में विद्यालय सौंदर्यीकरण कार्यक्रम, हिमाचल प्रदेश में ग्रीन विद्यालय कार्यक्रम (जी.एस.पी.) और वर्मी कम्पोस्ट पिट, कर्नाटक में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान और जैव विविधता मेले, पुदुच्चेरी में ग्रीन स्कूलिंग अवधारणा बटरफ्लाई गार्डन और जैव विविधता रजिस्टर, त्रिपुरा में बालिका मंच और सहर्ष, उत्तर प्रदेश में बाल सभा और मीना मंच आदि। इसके अतिरिक्त, चार राज्यों— आंध्र प्रदेश, असम, हिमाचल प्रदेश और केरल से एस.डी.जी. 4.7 से संबंधित पाठ्यचर्या संबंधी अभ्यासों पर प्रकरण अध्ययन एकत्र किए गए हैं। प्रकरण अध्ययन रिपोर्ट तैयार करने के लिए 500 से अधिक विद्यार्थियों और लगभग 200 अध्यापकों से प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किए गए आँकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है।

वर्ष 2018–2023 के दौरान अनुसंधान अध्ययनों की एनोटेटेड ग्रंथ सूची और 2019–2023 के दौरान रा.शै.अ.प्र.प. में आयोजित विकास गतिविधियों की एनोटेटेड ग्रंथ सूची

इस परियोजना की शुरुआत वर्ष 2018–2023 के दौरान रा.शै.अ.प्र.प. की घटक इकाइयों द्वारा किए गए अनुसंधान कार्यक्रमों और वर्ष 2019–2023 के दौरान रा.शै.अ.प्र.प. की घटक इकाइयों द्वारा किए गए विकास कार्यक्रमों के संक्षिप्त विवरण संकलित करने के उद्देश्य से की गई थी। एन.आई.ई., नई दिल्ली और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के विभिन्न विभागों को उनके द्वारा किए गए प्रत्येक अनुसंधान अध्ययन और विकास गतिविधि का विवरण प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था, जिसमें प्रमुख अन्वेषक, उद्देश्य, कार्यप्रणाली, निष्कर्ष, प्रतिक्रिया आदि विवरण सम्मिलित थे। इसके अलावा, सार तैयार करने के लिए एक प्रारूप तैयार करने और सम्मिलित किए जाने वाले विवरणों पर निर्णय लेने के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई थी। व्यापक कवरेज सुनिश्चित करने के लिए परियोजना दल ने क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) और केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) सहित विभिन्न शैक्षिक इकाइयों का दौरा किया, जहाँ उन्होंने अनुसंधानकर्ताओं के साथ बातचीत की और अनुसंधान आउटपुट की एक विस्तृत शृंखला एकत्र कर रिपोर्ट तैयार कर ली गई है।

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)

आई.सी.टी. के उपयोग और एकीकरण में माध्यमिक स्तर पर सेवाकालीन अध्यापकों की दक्षताओं पर तकनीकी-शिक्षणशास्त्र सामग्री एकीकरण (टी.पी.सी.आई.) पैकेज की प्रभावशीलता

आई.सी.टी. के ज्ञान, आई.सी.टी. के प्रति दृष्टिकोण और आई.सी.टी. के उपयोग में आत्मविश्वास पर टी.पी.सी.आई. पैकेज की प्रभावशीलता का अध्ययन करने के लिए अनुसंधान किया गया था, जिसमें वितरण की दो विधियों अर्थात ऑनलाइन और मिश्रित की तुलना की गई थी। यह अध्ययन एक अर्ध-प्रयोगात्मक दो-समूह पूर्व-पश्चात डिजाइन है। हस्तक्षेप पैकेज में प्रशिक्षण के दो स्तर सम्मिलित हैं। एक हस्तक्षेप पैकेज विकसित किया गया। पहला प्रशिक्षण 'आई.सी.टी. मूल बातें' पर है, जो आई.सी.टी. के उपयोग में दक्षताओं को विकसित करने पर केंद्रित है। दूसरा 'प्रशिक्षण अध्यापन-अधिगम और आकलन में तकनीकी-शिक्षणशास्त्र एकीकरण' पर है, जो आई.सी.टी. के एकीकरण पर केंद्रित है। हालाँकि सभी स्तरों पर दोनों समूहों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर था, लेकिन प्रशिक्षण पैकेज की समग्र प्रभावशीलता ऑनलाइन के बजाय मिश्रित दृष्टिकोण में लागू होने पर सकारात्मक पाई गई।

माध्यमिक विद्यार्थियों (कक्षा 9 से 12) के बीच साइबर सुरक्षा और संरक्षा के बारे में जागरूकता का अध्ययन

इस अध्ययन में तकनीकी, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक और कानूनी सहित साइबर सुरक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यार्थियों की जागरूकता के स्तर को समझने पर ध्यान केंद्रित किया गया। सभी छह डोमेन को कवर करने के लिए एक जागरूकता पैमाना विकसित किया गया और सर्वेक्षण विधि को लागू किया गया। दस हजार विद्यार्थियों से डेटा एकत्र किया गया और विश्लेषण से पता चला कि लगभग 73 प्रतिशत विद्यार्थियों में साइबर सुरक्षा के बारे में जागरूकता की कमी है। डोमेन-वार विश्लेषण से पता चलता है कि विद्यार्थियों में तकनीकी और कानूनी मुद्दों के बारे में जागरूकता की कमी है। इसके विपरीत उनकी शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और नैतिक जागरूकता तुलनात्मक रूप से बेहतर है।

दीक्षा पर ई-सामग्री की गुणवत्ता, इसके उपयोग पैटर्न और प्रयोक्ता व्यवहार का अध्ययन

इस अध्ययन में मध्य स्तर (कक्षा 6 से 8) से लेकर माध्यमिक स्तर (कक्षा 12 तक) तक के विद्यालयी अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच राष्ट्रीय ई-अधिगम प्लेटफॉर्म 'दीक्षा' के उपयोग पैटर्न की जाँच की गई है। अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए अलग-अलग डिजाइन किए गए एक संरचित ऑनलाइन सर्वेक्षण के माध्यम से मात्रात्मक और

गुणात्मक डेटा एकत्र किया गया। देश के विभिन्न हिस्सों में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों सहित सरकारी और निजी दोनों विद्यालयों के प्रतिभागियों को नमूने में सम्मिलित किया गया था। इस अध्ययन में अध्यापन और अधिगम के संदर्भ में प्रौद्योगिकी को अपनाने से जुड़े स्थापित मॉडल और पैमाने सम्मिलित थे। सर्वेक्षण और विश्लेषण में 'दीक्षा' के उपयोग की आवृत्ति, इसके उपयोग के पीछे के उद्देश्य और उत्तरदाताओं द्वारा प्लेटफॉर्म की कथित उपयोगिता पर ध्यान केंद्रित किया गया। वर्णनात्मक सांख्यिकी, मुख्य रूप से प्रतिशत और आवृत्ति वितरण और अनुमानित सांख्यिकी, विशेष रूप से टी-टेस्ट और एनोवा का उपयोग करते हुए उपयोग के रुझानों की पहचान की गई। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि अध्यापकों और विद्यार्थियों दोनों ने सकारात्मक उपयोग पैटर्न का प्रदर्शन किया, जो शिक्षा प्रणाली में प्लेटफॉर्म की भूमिका को रेखांकित करता है।

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), भोपाल

व्यावसायिक विषयों के अध्यापन और अधिगम में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) के एकीकरण पर एक अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य देशभर के विशिष्ट राज्यों में व्यावसायिक शिक्षा के अध्यापन और अधिगम की गुणवत्ता में सुधार करने में आई.सी.टी. की प्रभावशीलता की जाँच करना है। अनुसंधान मिश्रित विधि दृष्टिकोण के माध्यम से किया गया था, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तरह के डेटा संग्रह और विश्लेषण सम्मिलित था। व्यावसायिक शिक्षा में आई.सी.टी. का महत्व तेजी से विकसित हो रहे तकनीकी परिदृश्य के लिए विद्यार्थियों को आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करने की इसकी क्षमता में निहित है। इस अध्ययन के लिए अनुसंधान प्रश्न आई.सी.टी. एकीकरण की वर्तमान स्थिति, आई.सी.टी. का उपयोग करने के लाभ और चुनौतियों, अध्यापकों की धारणाओं और व्यावसायिक विषयों के अध्यापन और अधिगम में आई.सी.टी. एकीकरण के निहितार्थों की पहचान करने पर केंद्रित हैं।

अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि व्यावसायिक विषयों के अध्यापन और अधिगम में आई.सी.टी. के एकीकरण का विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफलों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह पाया गया कि मल्टीमीडिया, सिमुलेशन और अंत:क्रियात्मक सॉफ्टवेयर जैसे आई.सी.टी. उपकरणों का उपयोग विद्यार्थियों के बीच जुड़ाव और प्रेरणा को बढ़ावा देने में मदद करता है, जिससे बेहतर अधिगम प्रतिफल सामने आते हैं। इसके अतिरिक्त, आई.सी.टी. उपकरण विद्यार्थियों को स्व-निर्देशित अधिगम के अवसर प्रदान करते हैं, जिनकी सहायता से स्वतंत्र सीखने के कौशल को बढ़ावा देने में मदद मिलती है। अध्ययन के निष्कर्ष व्यावसायिक शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में शैक्षणिक संस्थानों और नीति निर्माताओं की सहायता कर सकते हैं। व्यावसायिक शिक्षा में आई.सी.टी. के उपयोग के लाभों और चुनौतियों की पहचान करके, नीति निर्माता व्यावसायिक शिक्षा में आई.सी.टी. के एकीकरण के बारे में सूचित निर्णय ले सकते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को बढ़ाने और उन्हें कार्यबल हेतु तैयार करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा में आई.सी.टी. के प्रभावी एकीकरण के लिए अनुशंसाएँ प्रदान करना भी है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

माध्यमिक स्तर पर विज्ञान में अनुभवात्मक अधिगम सक्षम करने वाली स्थितियों और अध्यापन अधिगम प्रक्रिया हस्तक्षेपों का अध्ययन

इस अध्ययन के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मिश्रित अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। अजमेर जिले के श्रीनगर शैक्षणिक खंड के सभी 42 माध्यमिक विद्यालयों को प्रतिदर्श विद्यालयों के रूप में चिह्नित किया गया है।

यह अध्ययन दो चरणों में किया जा रहा है। अध्ययन के प्रथम स्तर (2023–24) के दौरान नमूना विद्यालयों में विद्यमान अनुभवात्मक अधिगम सक्षम परिस्थितियों एवं अध्यापन अधिगम प्रक्रिया के आँकड़े एकत्रित किए गए हैं तथा उनका विश्लेषण किया जा रहा है। इस अध्ययन के द्वितीय चरण (2024–25) में अध्ययन के प्रथम चरण के निष्कर्षों के आधार पर अनुभवात्मक अधिगम सक्षम परिस्थितियों एवं अध्यापन अधिगम प्रक्रिया हस्तक्षेपों की जानकारी दी जाएगी।

अध्ययन के प्रथम स्तर के लिए नियोजित गतिविधियों के अनुसार, जिला शिक्षा अधिकारियों की सहायता से अजमेर जिले के श्रीनगर शैक्षिक खंड के सभी 42 विद्यालयों को प्रतिदर्श विद्यालयों के रूप में चिह्नित किया गया। प्रतिदर्श विद्यालयों में अनुभवात्मक अधिगम सक्षम करने वाली स्थितियों और अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए 21–25 अगस्त, 2023 के दौरान कार्यशाला विधि में प्रधानाचार्यों, विज्ञान अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए अनुसंधान उपकरण प्रश्नावली और कक्षा अवलोकन अनुसूची विकसित की गई। इन उपकरणों को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, राजगढ़ (अजमेर) में प्रशासित करके सत्यापित किया गया। सत्यापन के बाद, प्रतिदर्श विद्यालयों में अनुभवात्मक अधिगम सक्षम करने वाली स्थिति और अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए विकसित उपकरणों को प्रतिदर्श विद्यालयों में प्रशासित किया जा रहा है। वर्ष 2024–25 के दौरान अध्ययन के दूसरे स्तर में आवश्यक हस्तक्षेपों की योजना बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने के लिए एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है।

उत्तरी क्षेत्र के आकांक्षी जिले में समग्र शिक्षा के लिए एन.ए.एस. 2021 हस्तक्षेप के कार्यान्वयन हेतु एक अध्ययन

इस अनुसंधान अध्ययन का उद्देश्य समग्र शिक्षा को बढ़ाने के लिए सार्थक हस्तक्षेप विकसित करने के लिए आधार के रूप में एन.ए.एस. 2021 योग्यता-आधारित अंकों का उपयोग करना है। विशेष रूप से, यह उत्तरी क्षेत्र के एक महत्वाकांक्षी जिले में एन.ए.एस. 2021 के बाद के हस्तक्षेपों को लागू करने पर केंद्रित है। यह अध्ययन दो चरणों में संरचित है— चरण 1 (2023–24) में एन.ए.एस. 2021 आकांक्षी जिला रिपोर्ट कार्ड के आधार पर आवश्यकता वाले हस्तक्षेपों की पहचान करना सम्मिलित है, जबकि चरण 2 (2024–25) में समग्र शिक्षा प्रगति पर इन हस्तक्षेपों के विकास और प्रभावशीलता का आकलन किया जाएगा।

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा सबसे पिछड़े ब्लॉकों के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए 7 जनवरी, 2023 को आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम (ए.बी.पी.) के शुभारंभ को ध्यान में रखते हुए, उत्तरी क्षेत्र के छह आकांक्षी जिलों से छह आकांक्षी ब्लॉकों का चयन किया गया। इनमें हरियाणा के नूंह जिले के नूंह और पुन्हाना ब्लॉक, हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले के तिस्सा ब्लॉक, उत्तराखंड के हरिद्वार जिले के बहादराबाद ब्लॉक, पंजाब के फिरोजपुर जिले के मक्खू ब्लॉक, राजस्थान के सिरोही जिले के आबू रोड ब्लॉक और उत्तर प्रदेश के चंदौली जिले के चहनिया ब्लॉक सम्मिलित हैं। इस अध्ययन में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक स्तर में विद्यार्थियों और अध्यापकों को सम्मिलित किया गया है, जिसमें प्रत्येक ब्लॉक से 10 विद्यालयों का चयन किया गया है। अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार, एक अनुसंधान रूपरेखा विकसित की गई है। वर्ष 2023–24 में, सीखने की दक्षताओं की जाँच करने, विशिष्ट क्षेत्रों में कम निष्पानदन के संभावित कारणों की पहचान करने और समग्र विकास में सुधार के लिए अध्याापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और अभिभावकों की आवश्यकताओं को निर्धारित करने के लिए एन.ए.एस. 2021 आकांक्षी जिला रिपोर्ट कार्ड का विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन में कक्षाओं में योग्यता-आधारित समग्र शिक्षण वातावरण बनाने के लिए आवश्यक परिस्थितियों का भी आकलन किया गया, जिसमें संसाधन उपलब्धता, अधिगम-अध्यापन के परिवेश और यहाँ अपनाई गई शैक्षणिक प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया।

वर्ष 2024–25 में, चरण 1 में पहचाने गए आवश्यकता-आधारित एन.ए.एस. के बाद वाले हस्तक्षेपों को क्रियान्वित किया जाएगा और समग्र अधिगम प्रगति पर उनकी प्रभावशीलता का आकलन किया जाएगा।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

विद्यालय स्तर पर हस्तक्षेपों का क्रियान्वयन— एक ब्लॉक स्तरीय अनुसंधान परियोजना

इस अध्ययन के उद्देश्य हैं, चुने गए राजस्व खंड (आकलन) में विद्यालयी स्तर पर विद्यार्थियों के सीखने के स्तर का आकलन करना; विद्यालय स्तर पर एन.सी.एफ. 2005 द्वारा प्रचारित विचारों की किस सीमा तक पहुँच है और इनका क्रियान्वयन हो रहा है, इसका अध्ययन करना; अध्यापकों को उनके दैनिक विद्यालयी कार्य में आने वाली कठिनाइयों का पता लगाना; विद्यालय की गतिविधियों में अभिभावकों या समुदायों की भागीदारी के साथ-साथ विद्यालय के परिवेश का अध्ययन करना; अध्यापकों और शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए आवश्यकता-आधारित हस्तक्षेपों को विकसित या संशोधित करना। इसमें शिक्षार्थियों की उपलब्धि और पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों में उनकी भागीदारी, अध्यापकों की कठिनाइयों; विद्यालय के परिवेश और विद्यालय के कामकाज में अभिभावकों और समुदायों की भागीदारी पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा; हस्तक्षेपों को लागू करने में अध्यापकों और शिक्षक-प्रशिक्षकों की मदद करना; विद्यार्थियों के सीखने के स्तर, अध्यापकों के व्यवहार, विद्यालय के परिवेश आदि में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना; कक्षाओं को जीवंत बनाने के लिए कला, खेल, खिलौना शिक्षण और स्थानीय विशिष्ट गतिविधियों को सम्मिलित करना; एन.ई.पी. 2020 और नए एन.सी.एफ. 2022 के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनुभव और सिद्धांत द्वारा निर्देशित कुछ व्यावहारिक समाधान प्रदान करना।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष ये हैं कि कोविड-19 अवधि के दौरान आमने-सामने विधि में और बाद में ऑनलाइन विधि में कला एकीकृत अधिगम (ए.आई.एल.) अध्यापन पर अध्यापकों के उन्मुखीकरण का उनके कक्षा में अध्यापन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है, जिससे अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया गतिविधि-आधारित और आनंदमय हो जाती है; आर.आई.ई., भोपाल के संकाय सदस्यों द्वारा प्रदान की गई ऑन-साइट शैक्षणिक सहायता सराहनीय है; बातचीत से पता चला कि वे शिक्षार्थियों को प्रेरित करने के लिए अपनी अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया को सहभागी, गतिविधि-आधारित और आनंदमय बनाने के लिए कला एकीकृत अधिगम कार्यनीतियों का उपयोग करते हुए विषयों को पढ़ाते हैं; अधिकांश अध्यापक कला एकीकृत अधिगम और खिलौना-आधारित अध्यापन पर पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रमों में रुचि रखते हैं; शत-प्रतिशत विद्यार्थी विद्यालय के परिवेश और अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया से खुश हैं। विभिन्न शैक्षणिक सत्रों के दौरान अध्यापक प्रशिक्षण के रूप में प्रदान किए गए हस्तक्षेप अध्यापकों द्वारा काफी उपयोगी पाए गए और इसलिए समय-समय पर जारी रहना चाहिए; अध्यापकों को प्राथमिक स्तर पर ई.वी.एस. विषय में और उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान में प्रशिक्षण की आवश्यकता है। आगे की निगरानी को मजबूत करने की आवश्यकता है; चूँकि, यह पाया गया कि अध्यापकों और प्रधानाध्यापकों को 'प्रारंभिक स्तर पर अधिगम प्रतिफलों' पर रा.शै.अ.प्र.प. दस्तावेज के बारे में पूरी तरह से जानकारी नहीं थी इसलिए आर.आई.ई., भोपाल द्वारा इसके लिए उपयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना अनिवार्य है।

मध्य प्रदेश में सी.एम.आर.आई.एस.ई. विद्यालयों की मजबूती, कमजोरी, अवसर और चुनौतियों का अध्ययन

इस अध्ययन के उद्देश्य हैं— मध्य प्रदेश के मौजूदा सी.एम.आर.आई.एस.ई. विद्यालयों का विशेष संदर्भ में विश्लेषण करना; अवसंरचना और संसाधन (वित्तीय और मानव), डिजिटल संसाधन और शिक्षण संसाधन केंद्र / जगत; मध्य प्रदेश के मौजूदा सी.एम.आर.आई.एस.ई. विद्यालयों का विशेष संदर्भ में विश्लेषण करना; अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया का कार्यान्वयन, अध्यापक व्यावसायिक विकास, अध्यापक की इच्छा और दृष्टिकोण;

मध्य प्रदेश के सी.एम.आर.आई.एस.ई. विद्यालयों की मौजूदा निगरानी प्रणाली का विश्लेषण करना; मध्य प्रदेश के सी.एम.आर.आई.एस.ई. विद्यालयों के मौजूदा सामुदायिक स्वामित्व का विश्लेषण करना; मध्य प्रदेश के सी.एम.आर.आई.एस.ई. विद्यालयों की उत्कृष्टता बढ़ाने के लिए कार्यनीति विकसित करना। अनुसंधान के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि शिक्षा की गुणवत्ता, एन.ई.पी. 2020 के अनुसार बच्चों के समग्र विकास और अध्यापकों की उपलब्धता के मामले में सी.एम.आर.आई.एस.ई. विद्यालय मध्य प्रदेश के सामान्य सरकारी विद्यालयों से बेहतर पाए गए हैं।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

झारखंड के आकांक्षी जिलों के एकल अध्यापक विद्यालयों में विद्यार्थियों की बुनियादी शिक्षा— एक विश्लेषण

यह अध्ययन झारखंड के आकांक्षी जिलों के एकल अध्यापक विद्यालयों में विद्यार्थियों के बुनियादी अधिगम (एफ.एल.एस.) पर किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की साक्षरता और संख्यात्मकता में अधिगम प्रतिफलों, अध्यापकों द्वारा उपयोग की जाने वाली नवाचारी अभ्यासों का आकलन करना और झारखंड के आकांक्षी जिलों के एकल अध्यापक विद्यालयों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता को बढ़ाने में विद्यार्थियों और अध्यापकों दोनों के सामने आने वाली चुनौतियों का पता लगाना है। जाँचकर्ता ने विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफल, अध्यापक और कक्षा 3 के विद्यार्थियों द्वारा बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता बढ़ाने के लिए उपयोग किए जाने वाले नवाचारी अभ्यासों का आकलन करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान दृष्टिकोण और वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि दोनों का उपयोग किया। अध्ययन के निष्कर्ष प्रदर्शित करते हैं कि जब भी विद्यार्थी इस योग्यता से संबंधित प्रश्नों को हल करने का प्रयास करते हैं तो लगभग 14.16 प्रतिशत, 16.81 प्रतिशत, 15.93 प्रतिशत और 17.7 प्रतिशत विद्यार्थियों को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। शब्दों के चयन और बुनियादी साक्षरता की कल्पना के लिए क्रमशः सरल गीत, तुकबंदी और कविताओं को सुनते हैं और उनकी सराहना करते हैं। लगभग 29.2 प्रतिशत विद्यार्थियों को योग्यता से संबंधित समस्याओं को हल करने के समय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, अपने आप ही सरल गीत और कविताएँ बनाते हैं। लगभग 38.05 प्रतिशत विद्यार्थियों को समस्याओं को हल करने, धाराप्रवाह बातचीत करने और स्पष्ट कथानक और पात्रों के साथ एक छोटी कहानी सुनाकर सार्थक बातचीत करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। लगभग 11.5 प्रतिशत, 9.73 प्रतिशत, 15.04 प्रतिशत और 16.81 प्रतिशत विद्यार्थियों को क्रमशः कहानी पढ़ते समय, पात्रों, कथानक की पहचान करते समय और लेखक जो कहना चाहता है उसे समझते समय समस्याओं का समाधान करने में समस्या का सामना करना पड़ता है। लगभग 15 प्रतिशत विद्यार्थियों को तब भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जब वे दैनिक बातचीत को प्रभावी बनाने के लिए शब्दों का उपयोग करते हैं। लगभग 72.57 प्रतिशत और 74.34 प्रतिशत विद्यार्थियों को तब भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जब वे ध्वन्यात्मक जागरूकता, अक्षरों को शब्दों में बदलने, वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानने, हिंदी और अंग्रेजी शब्दों को पढ़ने और लिखने के लिए इस ज्ञान का उपयोग करने और बुनियादी विराम चिह्नों को पहचानने से संबंधित योग्यता से संबंधित प्रश्नों का प्रयास करते हैं। लगभग 62.83 प्रतिशत विद्यार्थियों को तब भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जब वे अपनी समझ और अनुभवों को व्यक्त करने हेतु पैराग्राफ लिखने से संबंधित योग्यता से संबंधित प्रश्नों को हल करने का प्रयास करते हैं।

झारखंड में उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफलों की प्राप्ति पर डिजिटल पहलों का प्रभाव

इस कार्यक्रम का उद्देश्य कोविड के दौरान विद्यार्थियों के समग्र विकास (संज्ञानात्मक, स्वास्थ्य और कल्याण, सामाजिक-व्यक्तिगत) में अंतराल का अध्ययन करना; कोविड के दौरान अध्यापन-अधिगम में अध्यापकों,

प्रधानाध्यापकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों और शिक्षाकर्मियों के सामने आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना; कोविड के दौरान शिक्षण जारी रखने के लिए अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों और शिक्षाकर्मिकों द्वारा किए गए नवाचारों का पता लगाना है। संज्ञानात्मक क्षेत्रों में सीखने के अंतराल का अध्ययन राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) 2017 और 2021 के अनुसार कक्षावार और अधिगम प्रतिफलों के अनुसार किया गया। समग्र क्षेत्रों में सीखने के अंतराल का अध्ययन एक जाँचसूची की मदद से किया गया, जिसे शिक्षार्थियों को दिया गया। अन्वेषक ने इस परियोजना के लिए मिश्रित अनुसंधान डिजाइन का उपयोग किया। कोविड के दौरान सीखने के अंतराल, चुनौतियों और नवाचारों के बारे में विद्यार्थियों और हितधारकों पर सर्वेक्षण किया गया। डेटा विश्लेषण के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों डेटा का उपयोग किया गया।

ई.वी.एस. अधिगम प्रतिफलों, जैसे कि परिवार के सदस्यों के साथ और उनके बीच संबंधों की पहचान करना; अवलोकन या अनुभवों को रिकॉर्ड करना और पैटर्न का पहले से अनुमान लगाना; सुपरसेंस और असामान्य विशेषताओं की व्याख्या करना; जानवरों, पौधों और मनुष्यों के बीच परस्पर निर्भरता का वर्णन करना; विभिन्न संस्थानों की भूमिका और कार्यों की व्याख्या करना; अतीत और वर्तमान के अभ्यासों, रीति-रिवाजों, तकनीकों में बदलाव का पता लगाना; संकेतों, दिशाओं, विभिन्न वस्तुओं के स्थानों की पहचान करना; स्वच्छता, स्वास्थ्य और अपशिष्ट प्रबंधन आदि के तरीके सुझाने में सीखने के अंतराल (एन.ए.एस. 2017 और 2021 में विद्यार्थियों के औसत प्रदर्शन के बीच अंतर) पाए जाते हैं। इसमें 62 प्रतिशत शिक्षार्थी प्रतिदिन स्नान करने में रुचि रखते हैं और 61 प्रतिशत शिक्षार्थी टी.वी. और मोबाइल देखकर समय बिताना पसंद करते हैं। 45 प्रतिशत शिक्षार्थी वीडियो गेम खेलना, माता-पिता या भाई-बहनों के साथ बातचीत करना पसंद करते हैं और 45 प्रतिशत शिक्षार्थी कोविड के बाद विद्यालय में अकेलापन महसूस करते हैं। अधिकांश प्रधानाध्यापकों ने कहा कि माता-पिता की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण विद्यार्थियों के पास डिजिटल डिवाइस नहीं हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में एक बड़ी समस्या नेटवर्क कनेक्टिविटी से संबंधित है। विद्यार्थी नेटवर्क आउटेज से परेशान थे और ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने में असमर्थ थे। मुख्य अध्यापकों का मानना था कि उन्हें ई-सामग्री डिजाइन, विकास और आदान-प्रदान के बारे में ज्ञान की कमी है और वे ई-सामग्री के लिए जिला और राज्य प्राधिकरणों जैसे ओडिशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण (ओ.एस.ई.पी.ए.) पर निर्भर हैं। जब उन्होंने ई-सामग्री बनाने का प्रयास किया तो उन्हें वीडियो रिकॉर्डिंग, भंडारण और संपादन के संबंध में कई समस्याओं का सामना करना पड़ा।

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में विद्या प्रवेश कार्यक्रम का कार्यक्रम मूल्यांकन

शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में कक्षा 1 में प्रवेश करने वाले बच्चों को प्राथमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम के साथ सीखने और समायोजन में सहायता करने के लिए, रा.शै.अ.प्र.प. ने विद्या प्रवेश नामक तीन महीने का खेल-आधारित विद्यालय तैयारी मॉड्यूल शुरू किया है। यह कार्य भारत सरकार के बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता पर राष्ट्रीय मिशन 'निपुण भारत' का एक अभिन्न अंग है और इसे तब तक एक अंतरिम उपाय के रूप में देखा जा सकता है जब तक कि गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख एवं शिक्षा का सार्वभौमिक प्रावधान इस लक्ष्य के साथ प्राप्त नहीं हो जाता है कि वर्ष 2030 तक कक्षा 1 में प्रवेश करने वाले सभी बच्चे विद्यालय जाने के लिए तैयार हों। यह अनुसंधान 2 स्तरों में किया जाता है। विभिन्न जिलों से डेटा एकत्र करने के लिए 32 वित्तीय संस्थान सम्मिलित हैं। मुख्य ध्यान विद्यालय सूचना अनुसूची, कक्षा अवलोकन अनुसूची के दस्तावेज एवं सामग्री विश्लेषण पर था।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु

डी.एम. स्कूल, आर.आई.ई., मैसूरु, कर्नाटक के बुनियादी और आरंभिक स्तरों (कक्षा 1 से 5) के लिए बस्तारहित दिवस का कार्यान्वयन

इस अनुसंधान का उद्देश्य बच्चों को पाठ्येतर गतिविधियों के माध्यम से अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना; बच्चों में सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक और सौंदर्यबोध की प्रशंसा को बढ़ावा देना; भारी बैग ढोने के बोझ के बिना पाठ्येत्तर और पाठ्येत्तर गतिविधियों में विद्यार्थियों की रुचि पैदा करना और विद्यार्थियों को किसी व्यापक प्रकार की व्यावहारिक गतिविधियों के बिना सीखने के लिए प्रेरित करना है, जो उन्हें दिनचर्या से एक मजेदार ब्रेक प्रदान करता है।

इस अध्ययन से पता चलता है कि अनुसंधान अध्ययन के निष्कर्षों से हस्त-प्रयोग गतिविधियों जैसे कि हथेली के छापे बनाना, मिट्टी की मॉडलिंग, पतंग, मुखौटा आदि बनाना आदि के महत्व को समझने में मदद मिलेगी; जिससे संग्रहालय, डाकघर के बारे में जानकारी मिलेगी, बगीचे या खेत में जाकर बच्चों के ज्ञान में वृद्धि होगी; प्राथमिक चिकित्सा मिलेगी; और यातायात के प्रतीकों, प्रकृति, जानवरों, पक्षियों आदि के बारे में जागरूकता आएगी। ये हस्त-प्रयोग और कौशल-आधारित गतिविधियाँ बच्चों को सामान्य शैक्षणिक विषयों से जुड़ने में मदद करेंगी, जिससे उन्हें उच्च कक्षाओं में बुनियादी कौशल आवश्यकताओं का पता लगाने के अवसर मिलेंगे।

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), उमियम

प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक में मेघालय राज्य में विद्यालयी शिक्षा के खराब निष्पादन में योगदान देने वाले कारकों का एक अध्ययन

यह अनुसंधान मेघालय राज्य में विद्यालयी शिक्षा के खराब प्रदर्शन में योगदान देने वाले कारकों का अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया था। इस अध्ययन के हिस्से के रूप में मेघालय के पी.जी.आई. स्कोर, एन.ए.एस. रिपोर्ट आदि के पिछले चार वर्षों (2017–18, 2018–19, 2019–20, 2020–21) का उपयोग विद्यार्थियों के खराब प्रदर्शन में योगदान देने वाले कारकों या डोमेन का विश्लेषण करने के लिए किया गया था। इसका उद्देश्य आर.टी.ई. मानदंडों के अनुसार विद्यार्थियों को पहुँच प्रदान करने में राज्य के सामने क्या चुनौतियाँ हैं, वंचित वर्गों जैसे लड़कियों और अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, सी.डब्ल्यू.एस.एन. श्रेणियों के बच्चों के लिए क्या विशेष प्रावधान किए गए हैं और पी.जी.आई. के विभिन्न डोमेन में मेघालय राज्य की विद्यालयी शिक्षा की स्थिति में सुधार के लिए कार्यनीतियाँ सुझाना था। राज्य के विभिन्न हितधारकों के साथ एक कार्यशाला आयोजित की गई, जहाँ मुख्य चर्चा मेघालय राज्य के पी.जी.आई. के उन क्षेत्रों या डोमेन की पहचान करने पर थी जो राज्य की विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में खराब हैं या जिनमें कमी है। यह निर्णय लिया गया कि अनुसंधान परियोजना को अधिगम प्रतिफल के क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो कि एन.ई.पी. 2020 के अनुसार शिक्षा की अध्यापन-अधिगम प्रक्रियाओं में एक आवश्यक घटक है। अधिगम प्रतिफल और कक्षा में इसके कार्यान्वयन के बारे में प्राथमिक अध्यापकों से उनकी जागरूकता के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए एक प्रायोगिक अध्ययन किया गया था। यह पाया गया कि अधिकांश अध्यापकों को अधिगम प्रतिफल के बारे में कोई जानकारी नहीं है। अध्यापन-अधिगम प्रक्रियाओं में अधिगम प्रतिफल के सुधार और व्यापक प्रसार के लिए विद्यार्थियों और अध्यापकों के बीच राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए एक मंच प्रदान करने और रा.शै.अ.प्र.प. के एन.सी.एफ.-एस.ई. द्वारा प्रदान किए गए उदाहरणों का उपयोग करते हुए कक्षा में अधिगम प्रतिफल कैसे प्राप्त करें, इस पर एक रूपरेखा प्रदान करने के उद्देश्य से एक वेब आधारित एप्लिकेशन विकसित की गई थी। यह वेब एप्लिकेशन विद्यालयी शिक्षा के सभी हितधारकों के लिए उपलब्ध कराई जाएगी।

अंग्रेजी में विद्यार्थियों की दक्षता और भाषा सीखने के संदर्भ का अध्ययन— टी.टी.ए.ए.डी.सी. क्षेत्रों के विशेष संदर्भ के साथ त्रिपुरा के पश्चिम त्रिपुरा, गोमती जिलों का प्रकरण अध्ययन

यह अनुसंधान पश्चिम त्रिपुरा और गोमती जिले के विद्यार्थियों द्वारा भाषा सीखने के संदर्भों और अंग्रेजी में प्राप्त दक्षताओं में अंतर को देखने के लिए किया गया था। त्रिपुरा में त्रिपुरा जनजातीय स्वायत्त जिला परिषद् (टी.टी.ए.ए.डी.सी.) प्राथमिक स्तर तक शिक्षा का ध्यान रखती है और इसे इन विद्यालयों में शिक्षा के माध्यम के रूप में कोकबोरोक को अपनाना चाहिए, जबकि पश्चिम त्रिपुरा में विद्यालय या तो अंग्रेजी माध्यम के हो सकते हैं या कोकबोरोक माध्यम के।

अध्ययन के नमूने में 70 विद्यालय सम्मिलित हैं, जिनमें से 38 गोमती जिले से और 32 पश्चिम त्रिपुरा से हैं। इसमें बंगाली माध्यम के विद्यालयों की संख्या 36 और अंग्रेजी माध्यम के 34 विद्यालय थे। अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं की कुल संख्या 635 विद्यार्थी थे, जिनमें से 299 और 336 क्रमशः पश्चिम त्रिपुरा और गोमती जिले से थे। 70 विद्यालयों से (अंग्रेजी माध्यम से 325 और बंगाली माध्यम के विद्यालयों से 310) लिए गए हैं। भाषा सीखने के संदर्भ में, यह पाया गया है कि अध्यापक मुख्य रूप से अंग्रेजी माध्यम (100 प्रतिशत) विद्यालयों में गतिविधियों को करने और अंग्रेजी में निर्देश देने में अंग्रेजी का उपयोग करते हैं, जबकि बंगाली माध्यम के विद्यालयों में अध्यापक शायद ही कभी निर्देश देने और गतिविधियों के संचालन के लिए अंग्रेजी का उपयोग करते हैं (गोमती जिले में 90 प्रतिशत अध्यापक बंगाली का उपयोग करते हैं)। लगभग सभी विद्यालय अतिरिक्त संसाधन के रूप में पुस्तकालय सुविधाओं का उपयोग नहीं करते हैं और विद्यार्थी अपनी विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों के अलावा अंग्रेजी में शायद ही कभी पढ़ते हैं। अध्यापन की विधि अभी भी मुख्य रूप से व्याकरण अनुवाद विधि है और कई विद्यालयों में मार्गदर्शक पुस्तक का उपयोग किया जाता है।

यह पता चला है कि पश्चिम त्रिपुरा (दोनों माध्यम) के विद्यार्थी अपने गोमती जिले के समकक्षों की तुलना में बेहतर स्थिति में हैं। बंगाली माध्यम के विद्यालय के विद्यार्थी व्याकरण आधारित प्रश्नों के उत्तर समझ और रचना प्रकार के प्रश्नों की तुलना में अधिक दे सकते हैं। दो जिलों में आयोजित परीक्षा का औसत स्कोर पश्चिम त्रिपुरा और गोमती जिले में क्रमशः 59.11 प्रतिशत और 49.75 प्रतिशत है। यह सुझाव दिया जाता है कि विद्यालय में अंग्रेजी के उपयोग पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए और विद्यालय में अंग्रेजी का उपयोग करने के अवसर दिए जाने चाहिए क्योंकि त्रिपुरा जनजातीय स्वायत्त जिला परिषद् (टी.टी.ए.ए.डी.सी.) क्षेत्रों में विद्यार्थियों का घर का परिवेश अंग्रेजी सीखने के लिए सहायक नहीं हैं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में कोविड के दौरान प्राथमिक शिक्षा में अधिगम की कमी, चुनौतियाँ और नवाचार

इस अनुसंधान का उद्देश्य कोविड के दौरान प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सीखने के अंतराल का पता लगाना और कोविड के दौरान अध्यापन-अधिगम में अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों और शैक्षिक कार्यकर्ताओं के सामने आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में मिश्रित अनुसंधान डिजाइन और सर्वेक्षण विधि का पालन किया गया। इस अध्ययन में कुल 70 प्राथमिक विद्यालय सम्मिलित थे, जिनमें से 5 ग्रामीण (आकांक्षी जिला) और 5 शहरी इलाके के प्रतिदर्श थे। इस अध्ययन में यादृच्छिक रूप से चुने गए विद्यालयों के सभी अध्यापक, प्रधानाध्यापक और विद्यार्थी (कक्षा 3 और 5) और प्रत्येक विद्यालय के उनके माता-पिता (5–10) भी नमूने के रूप में सम्मिलित थे। इन प्रतिदर्शों का चयन बहु-स्तरीय नमूनाकरण तकनीकों का उपयोग करके किया गया था।

उपयोग किए गए उपकरणों में विद्यार्थियों के लिए फोकस समूह चर्चा, विद्यार्थियों के लिए सूचना अनुसूची, अध्यापकों के लिए प्रश्नावली, अभिभावकों के लिए साक्षात्कार अनुसूची, विद्यालयों के प्रमुख के लिए साक्षात्कार

अनुसूची और शैक्षिक पदाधिकारियों के लिए प्रश्नावली थे। वर्तमान अध्ययन पूर्वोत्तर क्षेत्र के पाँच राज्यों में विभिन्न प्राथमिक विद्यालयों के बीच किया गया है। विद्यार्थियों, अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षा पदाधिकारियों और अभिभावकों से डेटा एकत्र किया गया। वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि इस अवधि के दौरान अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया को जारी रखने में कई कारक योगदान करते हैं, जिसमें विद्यार्थियों द्वारा उचित डिवाइसों और नेटवर्क तक पहुँच सम्मिलित है। ग्रामीण क्षेत्रों में अध्यापकों को भी इंटरनेट की समस्या का सामना करना पड़ता है। वित्तीय समस्याएँ सामने आती हैं जब माता-पिता अपने बच्चों को मोबाइल और लैपटॉप जैसे इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस नहीं दे सकते हैं, यह भी इस अवधि के दौरान अध्यापन-अधिगम को प्रभावित करने वाली समस्याओं में से एक है। फोकस समूह चर्चा के माध्यम से विद्यार्थियों ने बताया कि मुख्य चुनौतियाँ ऑनलाइन कक्षाएँ हैं क्योंकि वे स्मार्टफोन या लैपटॉप जैसे उपकरणों की कमी के कारण सीखना जारी नहीं रख पा रहे थे। विद्यार्थियों ने यह भी बताया कि अध्यापकों के साथ आमने-सामने संवाद ऑनलाइन कक्षाओं की तुलना में बहुत बेहतर है। शैक्षणिक अधिकारियों ने यह भी बताया कि कोविड काल में ऑनलाइन कक्षाओं को संचालित करने के लिए अध्यापकों को उचित प्रशिक्षण नहीं मिलने के कारण शिक्षण कार्य काफी प्रभावित हुआ है। इस अध्ययन से यह भी पता चलता है कि सरकार द्वारा शिक्षण कार्य जारी रखने के दिशानिर्देशों के बावजूद, खास तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों के कुछ विद्यालय, एक्सेस डिवाइस और नेटवर्क की कमी के कारण ऐसा नहीं कर पाए। अध्यापन अधिगम प्रक्रिया को जारी रखने के लिए बुनियादी सुविधाएँ भी सरकार द्वारा उपलब्ध नहीं कराई गईं। प्रधानाध्यापकों का मानना है कि इस अवधि के दौरान जो अन्य प्रमुख मुद्दे सामने आए हैं, उनमें अध्यापकों द्वारा डिवाइसों को संचालित करने और अध्यापन के मिश्रित तरीके का उपयोग करने में अक्षम कौशल सम्मिलित हैं। उम्र बढ़ने के साथ सूचना प्रौद्योगिकी का ज्ञान कम होता जा रहा है, जबकि युवा अध्यापक इससे अधिक सहज हैं। इसलिए, भविष्य में ऐसी स्थिति फिर से आने पर विद्यार्थियों को उचित अध्यापन अधिगम प्रदान करने के लिए निरंतर निगरानी और मूल्यांकन की आवश्यकता है। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि विद्यालयों को पारंपरिक अध्यापन विधि से ऑनलाइन विधि में जाने में संघर्ष करना पड़ा है। हालाँकि कोविड-19 ने प्राथमिक शिक्षा में शिक्षा प्रणाली को बाधित किया गया है, लेकिन हम इस क्षण को बदलाव के अवसर के रूप में देख सकते हैं। यह सुझाव दिया गया है कि शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में डिजिटल विभाजन की समस्या से निपटने और सीखने को बढ़ावा देने के लिए समावेशी ई-अधिगम प्रदान करने के लिए कदम उठाए जा सकते हैं। इन कठिन समय के दौरान अध्यापन-अधिगम प्रभावित न हो, यह सुनिश्चित करने के लिए शैक्षिक अवसंरचना को मजबूत करना आवश्यक है।

अंग्रेजी, गणित और सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए सांकेतिक भाषा पर दस्तावेजीकरण और अनुसंधान

पूर्वोत्तर क्षेत्र के आठ राज्यों में मानक भाषा संबंधी विधि का पालन करते हुए डेटा संग्रह किया गया। एकत्रित डेटा को सांकेतिक भाषा की दृश्य विशेषताओं को देखते हुए एक वेब-आधारित डेटाबेस में व्यवस्थित किया गया। डेटाबेस में सांकेतिक भाषा की कार्यक्षमता, व्याकरण और चयनित अंग्रेजी शब्दों के सांकेतिक भाषा निरूपण में राज्य-विशिष्ट विचलन की जानकारी सम्मिलित थी। यह रिपोर्ट सांकेतिक भाषा की विविधतापूर्ण प्रकृति पर प्रकाश डालती है, जिसमें विभिन्न राज्यों में समान अंग्रेजी शब्दों के लिए संकेतों में विसंगतियों को दर्शाया गया है। डेटाबेस में लगभग 10,000 शाब्दिक प्रविष्टियों को सम्मिलित करने के बावजूद, सांकेतिक भाषा भिन्नताओं के कारण संकेतों की वास्तविक संख्या इस अनुमान को पार कर सकती है। इस अनुसंधान दस्तावेज का परिणाम भारतीय सांकेतिक भाषा और शैक्षिक संसाधनों के डिजिटल डेटाबेस (डी.डी.आई.एस.एल.ई.आर.) के रूप में ज्ञात विकास है, जो एक नवाचारी वेब-आधारित प्लेटफॉर्म है जिसे आई.एस.एल. को संरक्षित और प्रदर्शित करने

के लिए डिजाइन किया गया है, जिसे भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में बधिर समुदाय द्वारा हस्ताक्षरित किया जाता है। सामान्य सांकेतिक भाषा संसाधनों के विपरीत, डी.डी.एस.एल.आर. (एन.ई.आर.आई.ई.-एन.सी.ई.आर.टी.आई. आई.एस.एल. (nesignlanguage.in)) इस क्षेत्र की अनोखी भाषा संबंधी और सांस्कृतिक बारीकियों के अनुरूप है, जिसमें संकेतों, शैक्षिक सामग्रियों और साहित्यिक कार्यों की एक व्यापक शब्दावली प्रदान की जाती है, जो सभी आई.एस.एल. में प्रस्तुत किए जाते हैं। यह संसाधन केवल अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए ही नहीं है, बल्कि अध्यापकों, अनुसंधानकर्ताओं और पूर्वोत्तर के संदर्भ में आई.एस.एल.को समझने या अध्ययन करने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए अमूल्य है। इसके अलावा, ऐप की वेब-आधारित प्रकृति इंटरनेट कनेक्शन वाले किसी भी डिवाइस से पहुँच सुनिश्चित करती है, जिससे यह व्यापक रूप से उपलब्ध और प्रयोक्ता के अनुकूल हो जाता है। डी.डी.एस.एल.आर. जैसी पहल का उद्देश्य संचार बाधाओं को तोड़ना और एक अधिक समावेशी समाज बनाना है, जहाँ बधिर व्यक्ति शिक्षा, साहित्य और दैनिक की बातचीत में पूरी तरह से भाग ले सकें।

ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों (उच्च प्राथमिक) में पाठ्यचर्या संचालन और शिक्षार्थी आकलन— त्वरित सर्वेक्षण से सबक

ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों (उच्च प्राथमिक) में पाठ्यचर्या संबंधी अध्ययन-अध्यापन और शिक्षार्थी आकलन— एक त्वरित सर्वेक्षण से सबक शीर्षक से एक छोटा संस्थागत अनुसंधान पाठ्यचर्या संबंधी अध्ययन-अध्यापन और शिक्षार्थी आकलन के प्रचलित अभ्यासों, वर्तमान शैक्षणिक अभ्यासों और आकलन के बारे में विद्यार्थियों की धारणा, अध्यापकों और प्रधानाध्यापकों की एन.ई.पी. 2020 के अनुसार पाठ्यचर्या संबंधी अध्ययन-अध्यापन और आकलन के लिए परिकल्पित मूलभूत परिवर्तनों के बारे में जागरूकता का अध्ययन करने के लिए आयोजित किया गया था। अनुसंधान में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। डेटा एकत्र करने के लिए कक्षा अवलोकन, फोकस समूह साक्षात्कार और अर्ध-संरचित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया था। इस अध्ययन से पता चलता है कि कुल मिलाकर, एन.ई.पी. 2020 द्वारा परिकल्पित पाठ्यचर्या संबंधी अध्ययन-अध्यापन और आकलन में बहुत अधिक बदलाव नहीं हुआ है। सामान्य आकलन अभ्यास सामान्य परीक्षाओं के अलावा पेन और पेंसिल परीक्षण, प्रश्न और उत्तर, अवलोकन, परियोजनाएँ, आकलन और कभी-कभी समूह कार्य पहले के समान ही बने हुए हैं। अध्यापकों को एन.ई.पी. 2020 और शिक्षण और आकलन के लिए इसके निहितार्थों पर बहुत अधिक कठोर अभिविन्यास प्राप्त करने की आवश्यकता है।

ग्रामीण असम के प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षणिक नवाचारों पर एक अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य थे— प्रारंभिक स्तर पर असम के ग्रामीण विद्यालयों में विद्यमान शैक्षणिक अभ्यासों का अध्ययन करना; पाठ्यचर्या संबंधी लेन-देन में अध्यापकों द्वारा नवाचारी शैक्षणिक अभ्यासों की पहचान करना; चुने गए मानदंडों, जैसे— कक्षा, विषय, लागत पर नवाचारी अभ्यासों का दस्तावेजीकरण करना। अनुसंधान प्रतिदर्शों में 10 प्राथमिक विद्यालय, ग्रामीण असम के कामरूप जिले के दो ब्लॉकों के 5 विद्यालय सम्मिलित थे। इनका चयन समग्र शिक्षा के प्राधिकरण के परामर्श से किया गया। उपयोग किए गए उपकरण थे, फोकस समूह चर्चा (एफ. जी.डी.) आयोजित की जाएगी जिसमें 100 विद्यार्थी, प्रत्येक विद्यालय से 10 विद्यार्थी सम्मिलित होंगे। प्रतिदर्श विद्यालयों में प्रारंभिक स्तर (40–50 संख्या) तक उपलब्ध सभी अध्यापकों के लिए कक्षा अवलोकन कार्यक्रम भी बनाए गए थे। डेटा विश्लेषण गुणात्मक रूप से किया गया था। विद्यालयों में शैक्षणिक नवाचारों में कलाक्षेत्र, विज्ञान संग्रहालय, चिड़ियाघर, सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रदर्शन, खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र आदि के माध्यम से अनुभवात्मक शिक्षा सम्मिलित थी। विभिन्न गतिविधियों के बाद विद्यार्थियों के अनुभव को लिखना बहुत प्रभावी

पाया गया, जिसे विद्यालय में प्रलेखित किया गया। विद्यालयों में विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए मॉडल और अध्यापन सहायक सामग्री का प्रदर्शन भी किया गया। खेलकूद गतिविधियाँ भी आयोजित की गईं, विशेष रूप से समस्या समाधान और निर्णय लेने के कौशल के विकास के लिए 'लूडो और शतरंज' का आयोजन किया गया। विद्यालयों में सामुदायिक स्वामित्व भी देखा गया और बायोगैस पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने, बागवानी, स्वच्छता अभियान आदि में सामुदायिक भागीदारी उल्लेखनीय है; जिससे विद्यालय में एक प्रेमपूर्ण परिवेश बनाया जा सके। कुछ विद्यालयों में एस.एम.सी. भी बहुत सक्रिय पाई गई। विद्यालयों में इको-क्लब गतिविधियाँ भी की गईं। विद्यार्थियों को उनकी अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया के एक भाग के रूप में सर्वेक्षण परियोजनाएँ दी गईं।

असम के चाय बागान मजदूरों के बच्चों के मनोसामाजिक और शैक्षिक मुद्दों के बारे में जागरूकता पर एक अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य असम के चाय बागान मजदूरों के बच्चों के मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक विकास के लिए प्रावधानों की खोज करना, इन मुद्दों पर विद्यार्थियों, अभिभावकों और चाय बागानों के कार्यकर्ताओं की जागरूकता और चाय बागान मजदूरों के बच्चों के स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए एक रूपरेखा विकसित करना था। वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया था, जिसमें ऊपरी असम के 2 जिलों से यादृच्छिक रूप से नमूना चुना गया था, जहाँ चाय बागान बहुतायत में पाए जाते हैं। मुख्य सूचनादाताओं में विद्यालय के किशोर (100), अध्यापक या प्रधानाध्यापक (20), माता-पिता या समुदाय के सदस्य (50) शामिल थे। विद्यालयों और मुख्य सूचनादाताओं के चयन में उद्देश्यपूर्ण या आकस्मिक नमूनाकरण तकनीकों का पालन किया गया। उपकरण और तकनीकों में प्रधानाध्यापकों या अध्यापकों, अभिभावकों के लिए साक्षात्कार कार्यक्रम और विद्यार्थी सूचनादाताओं के लिए फोकस समूह चर्चा सम्मिलित थी। गुणात्मक डेटा का विश्लेषण राय, घटनाओं और स्थितियों के विस्तृत विवरण की मदद से किया गया था। अनुसंधानकर्ताओं द्वारा प्रत्यक्ष अनुभवों और टिप्पणियों को दर्ज करने के लिए क्षेत्र-नोट्स का व्यापक रूप से उपयोग किया गया था।

निष्कर्षों से पता चला कि अधिकतर बच्चे पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी थे। वे विद्यालय में अनियमित हैं, और तनाव और अवसाद के शिकार हैं। देशी शराब की आसान उपलब्धता के कारण घर में शराबखोरी और उससे जुड़ी हिंसा एक बड़ी समस्या है। माता-पिता की देखभाल बहुत कम है। बच्चों की देखभाल और घर के काम विद्यालय से अनुपस्थित रहने और पढ़ाई छोड़ने का एक बड़ा कारण हैं।

त्वचा रोग और पेट दर्द, कम दृष्टि, बुखार, टी.बी., पीलिया, मिर्गी, कैंसर जैसी अन्य बीमारियों के मामले बहुत अधिक हैं। स्वच्छता का स्तर खराब है और कुपोषण बहुत अधिक है। कई मामलों में अचानक मृत्यु भी देखी जाती है। प्रत्येक कक्षा में 7–8 विद्यार्थी गुटखा खाते हैं। बच्चे बहुत कम भावुक होते हैं। विद्यालय में सैनिटरी पैड की उपलब्धता के कारण लड़कियाँ विद्यालय आती हैं। कक्षा 8 के आस-पास कई लड़कियाँ यौन गतिविधियों में सम्मिलित हो जाती हैं। अधिकांशत: कक्षा 10 तक कम उम्र में शादी कर देना भी समुदाय में प्रचलित है। अधिकतर लड़कियों की जिंदगी में कोई आकांक्षा नहीं थी। बहुत कम लड़कियाँ शिक्षिका या डॉक्टर बनना चाहती थीं। एक छात्रा चाहती थी कि मासिक धर्म स्वच्छता और यौन शिक्षा के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए। चाय बागान की तरफ से विद्यालय आने-जाने के लिए कोई बस नहीं है। कुछ विद्यार्थियों को विद्यालय पहुँचने के लिए 6 किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। विद्यार्थियों को पेशाब आदि के कारण विद्यालय से जल्दी निकलना पड़ता है। माता-पिता की कम मजदूरी के साथ, विद्यालय के खर्चों को पूरा करना मुश्किल है। एंड्रॉइड मोबाइल फोन की पहुँच और स्क्रीन टाइम का बहुत अधिक होना आम बात है। सभी मजदूर चाय बागान के स्थायी

कर्मचारी नहीं हैं। कुछ लोग केवल चाय तोड़ने के मौसम के लिए अस्थायी कर्मचारी (नामित) हैं (प्रति दिन 135 रुपए, प्रति सप्ताह 6 दिन अर्थात 810 रुपए)। कुछ माता-पिता चाहते थे कि उनके बच्चे कड़ी मेहनत से पढ़ाई करें और अपनी आजीविका कमाने के लिए बागान से बाहर निकलने की कोशिश करें।

चाय बागान मजदूरों के बच्चों की समस्या को समग्र रूप से संबोधित करने की आवश्यकता है। उनकी समस्याओं को स्वास्थ्य, पोषण, जागरूकता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति आदि के दृष्टिकोण से ठोस प्रयास की आवश्यकता है। सरकार को उनके कल्याण के लिए अधिक सक्रिय भूमिका निभाने की आवश्यकता है। उनकी बेहतरी के लिए शुरू की गई किसी भी योजना के लिए सरकार की निरंतर निगरानी और पर्यवेक्षण की आवश्यकता होती है। सामुदायिक सहभागिता भी चाय बागान मजदूरों के बच्चों की स्थिति को सुधारने के तरीकों में से एक हो सकती है।

4. विकास गतिविधियाँ

रा.शै.अ.प्र.प. में स्कूल और शिक्षक शिक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को उन्नत बनाने के लिए विभिन्न विकासात्मक कार्यक्रम चलाए जाते हैं। इन कार्यक्रमों में ऑडियो-विजुअल सामग्री, पाठ्यपुस्तकें, हस्तपुस्तिका, प्रशिक्षण पैकेज, मैनुअल, पूरक पाठ्यपुस्तक, किट और अन्य अनेक सामग्रियों का विकास करना शामिल है। परिषद् ने प्रतिवेदनाधीन वर्ष के दौरान, स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों में पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) के लिए दिशानिर्देश विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया। इसमें स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (एन.सी.एफ.-एस.ई.) और बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) के अनुरूप पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का निर्माण शामिल है, जिसमें *जादुई पिटारा* (भौतिक और डिजिटल दोनों संस्करण) – बुनियादी स्तर की शिक्षण-अधिगम सामग्री का एक संग्रह शामिल है। इसके अतिरिक्त, योग्यता आधारित मूल्यांकन के कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने के लिए समग्र प्रगति कार्ड विकसित किए गए, साथ ही बुनियादी स्तर के लिए संख्यात्मकता पर विषयगत संसाधन *फिरकी बच्चों की* और कक्षा 1 और 2 की पाठ्यपुस्तकों के लिए शिक्षक-पुस्तिका भी विकसित की गई।

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' (ई.बी.एस.बी.) पहल के अंतर्गत, रा.शै.अ.प्र.प. ने 22 भारतीय भाषाओं में ऑनलाइन भाषा पाठ्यक्रमों का हिंदी संस्करण विकसित किया तथा पाठ्यपुस्तकों और पूरक सामग्रियों का हिंदी, उर्दू, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया। हिंदी, संस्कृत, उर्दू और अंग्रेजी में पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें तैयार की गईं, साथ ही कई भाषाओं में ई-सामग्री भी तैयार की गई। 22 भाषाओं में सांस्कृतिक शब्दों का एक चतुर्भाषी सचित्र शब्दकोश, समझ का माध्यम और अतिरिक्त संसाधन भी तैयार किए गए।

परिषद् ने भारत की हाल में अर्जित की गई उपलब्धियों पर मॉड्यूल विकसित किए हैं, जिनमें महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए *नारी शक्ति वंदन*, ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के सरोकारों को स्कूल प्रक्रियाओं में समेकित करने के लिए एक प्रशिक्षण मॉड्यूल, अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए अनुभवात्मक शिक्षण सामग्री और कला समेकित अधिगम के लिए दिशानिर्देश शामिल हैं। बहुभाषीय और बहु-कक्षा व्यवस्था में भाषा शिक्षण पर एक शिक्षक-पुस्तिका, मणिपुर के पारंपरिक खिलौनों और खेलों का दस्तावेजीकरण, गणित के लिए अनुभवात्मक अधिगम सामग्री और विज्ञान विषयों में अधिगम के प्रतिफलों पर आधारित गतिविधियाँ भी विकसित की गईं। हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत में सेतु पाठ्यक्रम तैयार किए गए, साथ ही विज्ञान में खेल, खिलौने, मॉडल, वीडियो और कला एकीकरण पर आधारित संसाधन सामग्री भी तैयार की गई। विज्ञान शिक्षा के लिए ऑडियो-वीडियो

संसाधन और स्कूलों में सतत विकास के लिए शिक्षा (ई.एस.डी.) और वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जी.सी.ई.डी.) के पाठ्यक्रम एकीकरण और कार्यान्वयन के लिए दिशानिर्देश भी महत्वपूर्ण विकास कार्य थे।

परिषद् द्वारा विकसित संसाधनों में पाठ्यक्रम विकासकों के लिए कानूनी साक्षरता पुस्तिका, सामाजिक विज्ञान में खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र को बढ़ावा देने के लिए मॉडल, खेल और वीडियो, आयुष्मान भारत स्कूल स्वास्थ्य और कल्याण कार्यक्रम के लिए मॉड्यूल एवं राजनीति विज्ञान का एक त्रिभाषी शब्दकोश भी शामिल है। स्कूल और शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम के लिए ई-संसाधन विकसित किए गए, जिसमें खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र पर ई-सामग्री भी शामिल है। इन कार्यक्रमों पर नजर रखने के लिए एक गतिशील वेबसाइट, पूर्व-व्यावसायिक और व्यावसायिक शिक्षा के लिए डिजिटल संसाधन और वेब एप्लीकेशन भी बनाए गए। परिषद् ने हस्तशिल्प और कालीन क्षेत्र के लिए फ्लिपबुक और प्रचार सामग्री, एक हरित प्रौद्योगिकी पार्क, ए.एम.एच.एफ. क्षेत्र के लिए एक आभासी दौरा और हब-एंड-स्पोक मॉडल को कार्यान्वित करने के लिए एक राज्य योजना विकसित की।

रा.शै.अ.प्र.प. ने वयस्क साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए, उल्लास संक्षिप्त प्राइमर, स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए मार्गदर्शन, साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए अधिगम परिणाम और शैक्षणिक प्रक्रियाएँ तथा प्राइमर विकास के लिए दिशानिर्देश विकसित किए। 'दीक्षा' पोर्टल पर 'सभी के लिए शिक्षा' वर्टिकल के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता, मूल्यांकन सामग्री और पेपर, ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम और संसाधन विकसित किए गए। इनमें 'सभी के लिए शिक्षा' पर ग्राफिक स्टोरीबुक, एनिमेटेड वीडियो और प्रचार सामग्री शामिल थी। आपदा प्रबंधन संसाधनों को भी 'दीक्षा' पोर्टल पर 'सभी के लिए शिक्षा' वर्टिकल में एकीकृत किया गया।

प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

जादुई पिटारा (भौतिक, डिजिटल और ई-जादुई पिटारा)

जादुई पिटारा अध्यापन-अधिगम सामग्री का एक संग्रह है जिसे एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की सिफारिशों के आधार पर बुनियादी स्तर के लिए विकसित किया गया है। इस *जादुई पिटारा* में चित्र, पढ़ने के पोस्टर, खिलौने, गुड़िया, कठपुतलियाँ, गतिविधि कार्ड, प्रशिक्षक की हैंडबुक ग्रेडेड रीडिंग सीरीज *बरखा* और एक प्रयोक्ता पुस्तिका शामिल हैं। *जादुई पिटारा* में विकास के सभी पाँच क्षेत्रों के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) प्रदान की गई है। इसमें खिलौनों और खेलों के माध्यम से सीखने के खेल-तरीकों को एकीकृत करने के साथ-साथ कई अन्य गतिविधियों की सुविधा प्रदान की जाती है और इससे बच्चों में आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान क्षमताओं को विकसित करने में मदद मिलती है। *जादुई पिटारा* की प्रयोक्ता पुस्तिका में प्रयोक्ताओं को इस सामग्री, इसके उद्देश्यों और बच्चों के साथ इसका उपयोग करने की विधि के बारे में मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

जादुई पिटारा का डिजिटल संस्करण तैयार किया गया है। *जादुई पिटारा* की सभी डिजिटल सामग्री का 22 भाषाओं में अनुवाद किया गया है और उसे 'दीक्षा' पोर्टल पर अपलोड किया गया है। *जादुई पिटारा* में मौजूद सामग्री को दिखाने के लिए 'जादुई पिटारे में क्या है' पर लघु वीडियो बनाए गए हैं। बच्चों के साथ कक्षा में 'जादुई पिटारा में रखी सामग्री का उपयोग कैसे करें' पर वीडियो भी बनाई गई हैं और 'दीक्षा' पोर्टल पर अपलोड की गई हैं।

एक ई-*जादुई पिटारा* विकसित किया गया है, जिसे प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है। ई-*जादुई पिटारा* मूल रूप से शिक्षकों और अभिभावकों के लिए बनाया गया है। इसमें गतिविधियों, कहानियों, कविताओं, गीतों, पहेलियों, कार्डों, ऑडियो पुस्तकों, खेल-खिलौनों तथा चार्टों का भंडार है जिसका उपयोग माता-पिता और शिक्षक बुनियादी स्तर में बच्चों के लिए आयु के उपयुक्त गतिविधियाँ तैयार करने के लिए कर सकते हैं। इसमें ए.आई.

आधारित बॉट्स, कथा सखी, पैरेंट तारा और टीचर-तारा हैं जो एन.सी.एफ.-एफ.एस., एन.ई.पी. 2020, उन्मुख और अन्य दस्तावेजों के आधार पर पूछे गए किसी भी प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं।

पूरक पठन के लिए विशेष मॉड्यूल

स्कूली शिक्षा के बुनियादी और आरंभिक स्तरों के बच्चों के लिए समकालीन भारत की उपलब्धियों से उन्हें समृद्ध करने के लिए पूरक पठन सामग्री के रूप में विशेष मॉड्यूल विकसित किए गए हैं। ये मॉड्यूल विभिन्न विषयों पर विकसित किए गए हैं, जैसे— स्वच्छता (दो मॉड्यूल); नारी शक्ति वंदन; हमारा चंद्रयान; हरित भविष्य के लिए ऊर्जा बचाएँ; संधारणीय ऊर्जा संसाधन; जी20 – विकास का प्रतीक (हिंदी और अंग्रेजी); आओ जानें जी20 क्या है? (हिंदी और अंग्रेजी); बेहतर भविष्य के लिए अच्छी आदतों का समावेश।

फिरकी बच्चों की

फिरकी बच्चों की पत्रिका बुनियादी स्तर पर विशेष रूप से कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों के लिए बनाई गई है। यह 5 से 8 वर्ष की आयु वर्ग के पाठकों पर लक्षित की गई है। यह एक अर्द्ध-वार्षिक और द्विभाषी पत्रिका है जिसमें अंग्रेजी और हिंदी में लिखित रचनाएँ शामिल हैं। इसे बाल्यावस्था के शुरुआती वर्षों में पढ़ने और लिखने के कौशल को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विकसित किया गया है। इस पत्रिका में विभिन्न विधाएँ शामिल हैं। यह बच्चों को समृद्ध एवं विविध भाषाओं का अनुभव प्रदान करती है। यह पत्रिका बच्चों की जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें हिंदी और अंग्रेजी में संगत, रोचक पठन सामग्री प्रदान करती है। इस पत्रिका में भारत के विभिन्न हिस्सों के विद्यार्थियों द्वारा विकसित कविताएँ, कहानियाँ और चित्र भी शामिल हैं। इससे बच्चों को विषय-वस्तु के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित करने में मदद मिलेगी। सामग्री के चित्रण एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं क्योंकि वे पाठ को पढ़ने और समझने में सहायता प्रदान करते हैं। इससे बच्चों के लिए अर्थ निर्माण की प्रक्रिया में पूर्वानुमान लगाना और अनुमान लगाना संभव बनता है। गढ़चिरौली (आदिवासी क्षेत्र), महाराष्ट्र और गांधी नगर, गुजरात के स्कूलों के बच्चों (बुनियादी और प्रारंभिक स्तर पर) और लेखकों और चित्रकारों के साथ कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है, ताकि

विषय-वस्तु और चित्रण कौशल का विकास किया जा सके। पत्रिका के जून और दिसंबर 2023 के अंक प्रकाशित हो चुके हैं। ये विद्यार्थियों के बुनियादी साक्षरता कौशल को बढ़ाने के लिए उपयोगी हैं।

बुनियादी स्तर पर संख्यात्मकता पर विषयगत सामग्री

विषयगत पुस्तकें आकर्षक और संदर्भ-समृद्ध शिक्षण अनुभव प्रदान करके मूलभूत संख्यात्मक कौशल विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये कहानी सुनाने, खेल और गतिविधियों के माध्यम से संख्यात्मक अवधारणाओं

के बारे में निरंतर जानकारी प्रदान करती हैं, जिससे बुनियादी अंकगणित में संख्यात्मक प्रवाह और स्वचालन प्रणाली के विकास में सहायता मिलती है। इसमें संख्यात्मक अवधारणाओं को आकर्षक कहानियों, पात्रों और परिवेशों में सम्मिलित किया जाता है, ये बच्चों का ध्यान आकर्षित करती हैं और उन्हें मनोरंजक और संवादात्मक तरीके से गणितीय विचारों का अन्वेषण करने के लिए प्रेरित करती हैं।

रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान (एन.आई.डी.), अहमदाबाद और गांधी नगर के सहयोग से सार्वभौमिक अधिगम डिजाइन (यू.डी.एल.) सिद्धांतों के आधार पर बच्चों के सभी समूहों के लिए बहु-संवेदी विषय पुस्तकें विकसित की जा रही हैं। विषयगत सामग्री के विकास के लिए चुने गए विषयों में संख्याएँ, आकार, रंग, माप और पैटर्न शामिल थे। सामग्री को आपस में एक से एक की संगतता, वर्गीकरण, छँटाई, गिनती, द्विआयामी आकार (वृत्त, आयत, वर्ग, त्रिभुज), रंग (लाल, पीला, हरा, नीला), माप (लंबाई, वजन, समय, सप्ताह के दिन, भारतीय मुद्रा) और पैटर्न पहचान एवं निर्माण जैसे विषयों की जानकारी देने के लिए तैयार किया गया था।

कक्षा 1 और 2 की पाठ्यपुस्तकों के लिए शिक्षक पुस्तिका

कक्षा 1 और 2 के लिए गणित, हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू के लिए शिक्षक पुस्तिका विकसित की गई है। इस हस्त पाठ्यपुस्तिका में पुस्तक में दी गई सामग्री के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलू शामिल हैं। हस्त पुस्तिका में शिक्षकों को पाठ्यपुस्तकों में दी गई गतिविधियों के विस्तार और बच्चों के स्तर के अनुसार मूल्यांकन कार्य तैयार करने के लिए विचार सभी प्रस्तुत किए गए हैं।

आरंभिक स्तर के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का विकास

हिंदी, अंग्रेजी, गणित और उर्दू, द वर्ल्ड अराउंड अस (हमारे आस-पास की दुनिया), कला शिक्षा और शारीरिक शिक्षा और कल्याण के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का विकास किया जा रहा है।

भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' (ई.बी.एस.बी.) *हिंदी संस्करण का विकास — 22 भारतीय भाषाओं में ऑनलाइन भाषा पाठ्यक्रम*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 में नम्य भाषा-शिक्षा नीति, शैक्षणिक अभ्यासों और सभी भाषाओं में सामग्री सुनिश्चित करने के तहत स्कूली शिक्षा में सभी भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने का समर्थन और बल दिया गया है। भारत सरकार ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' (ई.बी.एस.बी.) के प्रमुख कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने और अपनी भाषाओं के माध्यम से एक साथ रहने की शिक्षा देने के साधन के रूप में स्कूलों में भाषा सीखने की पहल की है। स्कूली विद्यार्थियों और अन्य लोगों के लिए 22 भारतीय भाषाओं में ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित करने का कार्यक्रम शुरू किया गया ताकि वे भाषा सीख सकें और उसे बुनियादी स्तर पर समझ कर उसका इस्तेमाल कर सकें। पाठ्यक्रम विकसित करने का मुख्य उद्देश्य भारत की भाषा संबंधी विविधता की सराहना करना, भाषा संबंधी सद्भाव को बढ़ावा देना और भाषाओं, संस्कृति एवं कला के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना है। इससे विद्यार्थी भाषा या अनेक भाषाओं से परिचित हो सकेंगे और विभिन्न भाषाओं में बातचीत करने के लिए प्रारंभिक शब्द, वर्णमाला और भाषा के अंश सीख सकेंगे। पाठ्यक्रम स्कूल में विद्यार्थियों के लिए अन्य भाषाओं और संस्कृतियों को समझने, सामंजस्यपूर्ण और नागरिक बनने और उन्हें वैश्विक समझ विकसित करने में सक्षम बनाने के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम करेंगे। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची की 22 भारतीय भाषाओं (असमिया/बंगाली/बोडो/डोगरी/गुजराती/हिंदी/कन्नड़/कश्मीरी/कोंकणी/मैथिली/मलयालम/मणिपुरी/मराठी/नेपाली/ओडिया/पंजाबी/संस्कृत/संथाली/सिंधी/तमिल/तेलुगु/उर्दू) में ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के पाठ

मॉड्यूल अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में उच्च प्राथमिक से वरिष्ठ माध्यमिक स्तर तक के विद्यार्थियों के लिए विकसित किए गए हैं। इसमें लगभग दस मॉड्यूल हैं जिनके माध्यम से स्कूली विद्यार्थी पाठ्य मॉड्यूल और ऑडियो और वीडियो सामग्री के मिश्रित रूप के माध्यम से उस भाषा को सीख सकेंगे। पाठ्यक्रम 'मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स' (एम.ओ.ओ.सी.) या 'दीक्षा' जैसे उपयुक्त ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को अपनाता है।

हिंदी, उर्दू, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं में पाठ्यपुस्तकों एवं अन्य पूरक सामग्रियों का अनुवाद

यह कार्यक्रम रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विद्यार्थियों, शिक्षकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों और अन्य लोगों के लिए सहायक सामग्री तथा विकसित पाठ्यपुस्तकों एवं अनुपूरक सामग्रियों की पहचान करने और उन्हें आवश्यक भाषाओं में अनुवाद करने के लिए शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा में समानता सुनिश्चित करने के लिए भारतीय भाषाओं में स्कूल और शिक्षक शिक्षा में ज्ञान और अभ्यासों का प्रसार करना और भारतीय भाषाओं में सामग्री एवं विचारों के अनुवाद के माध्यम से शिक्षा में विचार-विमर्श करना है। इस कार्यक्रम में रा.शै.अ.प्र.प. और इसकी घटक इकाइयों के अंदर एक तंत्र के माध्यम से भारतीय भाषाओं में अनुवाद किए जाने के लिए आवश्यक पाठ्यपुस्तकों और सामग्रियों की पहचान की गई थी। भारतीय भाषाओं में सामग्री का अनुवाद करने के लिए भाषा विशेषज्ञों और विषय विशेषज्ञों के साथ कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। कार्यक्रमों में विषय-वस्तु और भाषा की गुणवत्ता तथा सटीकता सुनिश्चित करने के लिए एक अलग समूह द्वारा अनुवादित सामग्रियों का चयन एवं समीक्षा की गई और अंततः स्कूल प्रणाली, राज्य शैक्षिक एजेंसियों, विश्वविद्यालयों और शोधकर्ताओं द्वारा व्यापक उपयोग के लिए अनुवादित सामग्रियों को प्रकाशित और प्रसारित किया गया।

हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत में पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें

यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 और स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के दिशानिर्देशों के अनुसार हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत भाषाओं में पाठ्यपुस्तकें विकसित करने के लिए तैयार किया गया है। इसका उद्देश्य भाषा शिक्षा और सामग्री विकास में देशभर के विशेषज्ञों की पहचान करना और उनसे परामर्श करना था। इसका उद्देश्य पाठ्यपुस्तक विकास के लिए हिंदी, संस्कृत, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं में विषयों, पाठ्य और आख्यानों की पहचान करना तथा उनका चयन करना भी था। रा.शै.अ.प्र.प. और इसकी घटक इकाइयों के अंदर एक तंत्र के माध्यम से भारतीय भाषाओं में अनुवाद किए जाने के लिए बाहरी विषय विशेषज्ञों के सहयोग से आवश्यक पाठ्यपुस्तकों और सामग्रियों की पहचान की प्रक्रिया अपनाई गई।

रा.शै.अ.प्र.प. में 18 से 21 दिसंबर, 2023 तक भाषाओं पर सी.ए.जी. की बैठक आयोजित की गई

अंग्रेजी भाषा में पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के विकास के लिए सी.ए.जी. की बैठक

हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत भाषाओं में ई-सामग्री

भाषा में ई-सामग्री विकसित की गई है ताकि विद्यार्थियों को भाषा सीखने के लिए अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध कराए जा सकें और उन्हें सीखने के डिजिटल संसाधनों से परिचित कराया जा सके। इस कार्यक्रम में पाठ्यपुस्तकों में

क्यूआर कोड के लिए गतिविधियाँ विकसित की गईं। सी.आई.ई.टी. की सहायता से ई-सामग्री में विविधता लाने के लिए आई.सी.टी. के विभिन्न माध्यमों की खोज की गई। संकाय द्वारा 'स्वयं प्रभा' पर संवादात्मक चर्चाएँ एक अन्य संवादात्मक माध्यम है जिसमें स्कूल में प्रभावी भाषा शिक्षण-अधिगम का समर्थन करने के तरीके और साधनों पर प्रकाश डाला जाता है। उर्दू भाषा में कविताओं, कहानियों, नाटकों, आत्मकथाओं आदि पर 15 ऑडियो और 15 वीडियो स्क्रिप्ट विकसित की गई हैं।

भाषा संसाधन केंद्र

भाषा संसाधनों का दस्तावेजीकरण करने के लिए 'भाषा घर' नामक एक संसाधन केंद्र की स्थापना की गई है। इसका उद्देश्य राज्यों और अन्य हितधारकों को संसाधन एवं शैक्षणिक परिणाम प्रदान करना है। इसमें एन.ई.पी. 2020 में सुझाई गई गतिविधियों जैसे बहुभाषी या द्विभाषी पुस्तकें, भारतीय शास्त्रीय और विदेशी भाषाओं को बढ़ावा देने एवं 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के तहत गतिविधियों के लिए भाषा संसाधनों का प्रदर्शन और उपयोग किया गया। भाषाओं में मौजूदा संसाधनों को वर्गीकृत और व्यवस्थित किया गया है और यहाँ तक कि पाठ्यपुस्तकों सहित प्रिंट और गैर-प्रिंट प्रारूपों में नए संसाधनों को प्राप्त, वर्गीकृत और व्यवस्थित किया गया है। सभी संसाधनों की सूची तैयार की गई है।

चतुर्भाषी (उर्दू-उर्दू, हिंदी-अंग्रेजी-संस्कृत) सांस्कृतिक शब्दों का सचित्र शब्दकोश

स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के उद्देश्य से इस शब्दकोश को विकसित किया गया है। शब्दावली विकास भाषा सीखने का एक प्रमुख घटक है। हमारे बहुलवादी समाज की बहुभाषिकता को ध्यान में रखते हुए और हमारी समृद्ध और सांस्कृतिक तथा भाषाई विरासत के महत्व को समझते हुए एक चतुर्भाषी (उर्दू-उर्दू, हिंदी-अंग्रेजी-संस्कृत) सचित्र शब्दावली विकसित की गई है। यह हमारे मिश्रित सांस्कृतिक जीवन को बढ़ावा देने और संरक्षित करने में मदद करती है।

एन.ई.पी. 2020 के आलोक में (i) आधारभूत और आरंभिक (ii) मध्य और माध्यमिक स्तरों में उर्दू भाषा के विद्यार्थी-केंद्रित अधिगम पर आधारित गतिविधियों की पुस्तिका

यह कार्यक्रम उर्दू के शिक्षण और अधिगम के लिए गतिविधियों को विकसित करने हेतु शुरू किया गया है। इसका उद्देश्य उर्दू भाषा की दक्षताओं को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ प्रदान करके अनुभवात्मक शिक्षण को बढ़ावा देना है। ये गतिविधियाँ डिजिटल विभाजन को दूर करते हुए सीखने के अनुभव को अधिक रोचक और आकर्षक बनाने में मदद करती हैं।

बाईस भाषाओं में समझ का माध्यम

इस कार्यक्रम का उद्देश्य राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों और अन्य हितधारकों को बहुभाषावाद पर अकादमिक जानकारी प्रदान करना और सीखने के माध्यम के रूप में मातृभाषा के बारे में जागरूकता पैदा करना है। पुस्तक समझ का माध्यम का बाईस भाषाओं में अनुवाद किया गया है। यह अनुवादित संस्करण शिक्षकों, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं के लिए स्कूली शिक्षा में मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए एक संसाधन है। इससे भाषा कौशल, दक्षता, आलोचनात्मक विचार कौशल और चिंतनशील क्षमता को बढ़ाने में मदद मिलती है।

भारत की अभिनव अर्जित उपलब्धियों पर मॉड्यूल

शिक्षा मंत्रालय के निर्देश पर परिषद् ने विभिन्न क्षेत्रों में देश की हाल में अर्जित उपलब्धियों पर मॉड्यूल विकसित करने और उनका अनुवाद करने की महत्वपूर्ण पहल की है। भाषा शिक्षा विभाग ने मॉड्यूल को आधुनिक भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने का कार्यक्रम शुरू किया है। इस व्यापक अनुवाद कार्य में कुल 22 भाषाओं को शामिल

करने की योजना है। *भारत का चंद्रयान मिशन*, *भारत का अंतरिक्ष मिशन*, *चंद्रमा की ओर यात्रा*, *भारत के चंद्र मिशन की खोज* और *चंद्रमा की ओर और उससे आगे*, *नारी शक्ति* (महिला सशक्तिकरण) और जी20 जैसे शीर्षकों को शामिल करने वाले मॉड्यूल को कई क्षेत्रीय भाषाओं में सुलभ और सूचनात्मक सामग्री प्रदान करने के लिए तैयार किया गया है। यह पहल भारत में भाषा संबंधी स्पेक्ट्रम के पार विद्यार्थियों और व्यक्तियों के लिए शिक्षा को अधिक समावेशी और व्यापक रूप से सुलभ बनाने के लिए है।

हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत में सेतु पाठ्यक्रम (ऑनलाइन)

भाषा सीखना किसी व्यक्ति के विकास के लिए महत्वपूर्ण है जो विभिन्न चरणों में एक निरंतरता में होता है। इस प्रकार भाषा सीखने का उद्देश्य ज्ञान, उपयुक्त क्षमता, योग्यता और वांछनीय नैतिक और लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास करना है। हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत में सेतु पाठ्यक्रम को विभिन्न उद्देश्यों के साथ विकसित किया गया है जैसे कि विद्यार्थियों को अपने आस-पास की दुनिया को समझने में सक्षम बनाना, विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना, पढ़ने के कौशल विकसित करना, लेखन कौशल विकसित करना, संचार कौशल विकसित करना, संदर्भ में शब्दावली और व्याकरण विकसित करने में मदद करना, उन्हें रचनात्मक बनाने, गंभीर रूप से सोचने और भाषा का कुशलता से उपयोग करने में सक्षम बनाना, पढ़ने और सीखने की कक्षाओं को एक ही समय में रोचक और प्रेरक बनाना और अनुकूलित सीखने का अनुभव प्रदान करना।

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

पूर्वोत्तर राज्यों के जनजातीय क्षेत्रों में आधारभूत स्तर पर शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए स्वदेशी खिलौने, खेल और क्रीड़ा

भारतीय उपमहाद्वीप में कई जनजातियाँ दूरदराज के इलाकों में निवास करती हैं और प्रत्येक आदिवासी समूह की अपनी समृद्ध संस्कृति है। संस्कृति के भाग के रूप में, सभी आदिवासी समूहों में खिलौने बनाने और खेल-कूद का अभ्यास करने की अपनी स्वदेशी प्रक्रिया है। ये स्वदेशी खिलौने बनाने और खेल-कूद न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि लोकाचार, नैतिक मूल्यों, एकता, अनुशासन, नागरिक भावना, ज्ञान, जिम्मेदारी आदि को दर्शाने के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए, पूर्वोत्तर राज्यों के आदिवासी स्वदेशी खिलौनों और खेलों से संबंधित सामग्री का दस्तावेजीकरण करने के लिए बुनियादी और आरंभिक स्तरों में समावेशी कक्षा के लिए पूर्वोत्तर राज्यों के स्वदेशी खिलौनों, खेल और खेलों का दस्तावेजीकरण' नामक एक परियोजना शुरू की गई। तदनुसार, एक योजना बैठक आयोजित की गई और आदिवासी स्वदेशी खिलौनों, खेल-खेलों पर संसाधन एकत्र करने के लिए आकांक्षी जिले के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में स्कूलों का चयन किया गया। परिणामस्वरूप, असम के दरांग जिले, अरुणाचल प्रदेश के नामसाई, मेघालय के री-भोई, मिजोरम के ममित, नागालैंड के किफिरे, सिक्किम के पश्चिमी भाग और त्रिपुरा के धलाई जिले के आदिवासी केंद्रित क्षेत्रों में क्षेत्रीय दौरे किए गए और स्कूल और विभिन्न आदिवासी समूह से आवश्यक सामग्री एकत्र की गई। इसके बाद पाँच दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई और आदिवासी स्वदेशी खिलौनों और खेल-कूद से संबंधित एकत्रित सामग्रियों को अंतिम रूप दिया गया। इसके अलावा, सामग्रियों में संशोधन किया गया और खिलौनों और खेल-कूद दोनों को मिलाकर कुल 210 दस्तावेजों को अंतिम रूप दिया गया।

नारी शक्ति वंदन पर मॉड्यूल — महिला सशक्तीकरण

'*नारी शक्ति वंदन*' पर स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों के लिए दो विशेष मॉड्यूल विकसित किए गए हैं— '*महिला सशक्तीकरण — प्रगति एवं विकास का मार्ग*' तथा '*समानता एवं विकास में महिलाओं की*

राजनीतिक भागीदारी'। इन मॉड्यूलों का उद्देश्य विद्यार्थियों और शिक्षकों को जेंडर संवेदनशीलता के साथ-साथ महिला सशक्तीकरण के विभिन्न पहलुओं, जैसे— सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और भारतीय कला में महिलाओं के योगदान के बारे में जागरूक करना है। ये मॉड्यूल जीवन के विभिन्न पहलुओं में महिलाओं को सशक्त बनाने के साथ-साथ सामाजिक विकास के लिए विभिन्न पहलों पर भी प्रकाश डालते हैं। इन मॉड्यूल के डिजिटल संस्करण रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)

'स्कूली शिक्षा प्रक्रियाओं में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के सरोकारों का समेकन' पर प्रशिक्षण मॉड्यूल

'स्कूली शिक्षा प्रक्रियाओं में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के सरोकारों का समेकन' पर मसौदा प्रशिक्षण मॉड्यूल को स्कूल के पूरे परिवेश के साथ स्कूल शिक्षा प्रणाली में ट्रांसजेंडर को शामिल करने के सरोकारों को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया है और शिक्षकों, प्रधानाचार्यों, स्कूल के सहायक कर्मचारियों, अध्यापक प्रशिक्षकों के साथ-साथ अन्य हितधारकों को विविध जेंडर पहचान वाले विद्यार्थियों को एकीकृत करने के लिए संवेदनशील और सुसज्जित किया गया है। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एन.सी.पी.सी.आर.), राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय ट्रांसजेंडर व्यक्ति परिषद्, दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहर नवोदय विद्यालय और अन्य विभिन्न संगठनों के विशेषज्ञ और शिक्षाविद इस मॉड्यूल का प्रारूप तैयार करने में शामिल थे। ये मॉड्यूल 'ट्रांसजेंडर और कानूनी प्रावधान', 'स्कूलों में ट्रांसजेंडर के लिए समावेशी माहौल बनाना', 'चुनौतियाँ और संभावनाएँ' आदि जैसे विषयों पर केंद्रित हैं, जो विभिन्न हितधारकों के लिए रोजमर्रा की स्कूली शिक्षा अभ्यासों में ट्रांसजेंडर के सरोकारों को एकीकृत करने के लिए गतिविधियों और अभ्यासों की एक विस्तृत शृंखला प्रदान करता है। मॉड्यूल के मसौदे को टिप्पणियों और सुझावों के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट पर अपलोड किया गया है। प्राप्त प्रतिक्रिया के आधार पर आवश्यक सुझावों को शामिल किया गया है।

सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के अनुसार पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें

स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों हेतु पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें विकसित करने के लिए सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र और शारीरिक शिक्षा एवं कल्याण के लिए पाठ्यक्रम क्षेत्र समूह (सी.ए.जी.) का गठन किया गया है। वर्तमान में शैक्षणिक सत्र 2024–2025 के लिए कक्षा 6 की सामाजिक विज्ञान और शारीरिक शिक्षा एवं कल्याण की पाठ्यपुस्तकें विकसित की जा चुकी हैं। इसके अलावा, कक्षा 3 की पाठ्य सामग्री के विकास में सी.ए.जी. शारीरिक शिक्षा एवं कल्याण भी शामिल किए गए हैं।

पाठ्यक्रम विकासकर्ताओं के लिए कानूनी साक्षरता पुस्तिका

विधिक साक्षरता पर पुस्तिका इस उद्देश्य से तैयार की गई है कि विद्यार्थियों, शिक्षकों और हितधारकों को मौजूदा कानूनों के बारे में जागरूक किया जा सके, निवारण तंत्र के बारे में ज्ञान को बढ़ावा दिया जा सके, कानूनों को समझने के लिए रचनात्मक अभिव्यक्ति विकसित की जा सके और कानूनों को स्कूल पाठ्यक्रम से जोड़ने की व्यावहारिक कार्यनीतियों की पहचान की जा सके। समकालीन समय में, बच्चों के लिए कानूनों के बारे में जागरूकता महत्वपूर्ण है क्योंकि इस प्रकार वह एक ऐसा सुविज्ञ नागरिक बनता है जो दूसरों के अधिकारों का हनन किए बिना जिम्मेदार तरीके से अपने अधिकारों और कर्तव्यों का उपयोग करने में सक्षम है। सबसे बड़े लोकतंत्र का हिस्सा होने के नाते, कानूनों का ज्ञान पाठ्यक्रम विकासकर्ताओं सहित लोगों को शक्ति और आत्म-साक्षात्कार के उपकरण प्रदान करता है। स्वयं

को सशक्त बनाने के लिए कानूनी प्रणाली और कानूनी प्रक्रियाओं की समझ महत्वपूर्ण है। पुस्तिका में निम्नलिखित विषय शामिल हैं— कानूनी साक्षरता और समकालीन समय में इसकी सार्थकता, लोकतांत्रिक भागीदारी और चुनावी जागरूकता, भारत में किशोर न्याय प्रणाली, जेंडर न्याय — सामाजिक परिवर्तन के लिए एक माध्यम, यौन अपराधों से बच्चों की सुरक्षा, बच्चों और किशोरों के लिए सड़क सुरक्षा एक सुरक्षित भविष्य का मार्ग, सुरक्षित स्कूल वातावरण, कानूनों और नैतिक प्रथाओं की मदद से पर्यावरण संरक्षण, साइबर सुरक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी और मानवाधिकार, बाल अधिकार और समानता पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन। पुस्तिका में नया आपराधिक कानून, भारतीय न्याय संहिता 2023 भी शामिल किया गया है।

सामाजिक विज्ञान में खिलौना आधारित शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए मॉडल/खेल/वीडियो और स्टोरीबोर्ड

समग्र शिक्षा के अंतर्गत खिलौना हैकथॉन के एक भाग के रूप में सामाजिक विज्ञान में खिलौना आधारित शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए मॉडल, खेल, वीडियो और स्टोरीबोर्ड के विकास का कार्यक्रम शुरू किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों को सीखने के लिए अधिक आकर्षक और नवीन बनाना है। इससे बच्चे अपनी परंपराओं और संस्कृति से जुड़ने में भी सक्षम बनते हैं। इसके अतिरिक्त, इसके माध्यम से अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा मिलता है और अमूर्त अवधारणाओं को सरल बनाया जाता है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण-अधिगम सामग्री से मुख्य अवधारणाओं की पहचान की गई। इसके बाद खिलौनों, मॉडलों, खेलों, वीडियो स्टोरीबोर्ड आदि की प्रतिकृतियों का विकास किया गया, जिन्हें क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूरु के डी.एम.एस. स्कूल में आजमाया गया। कक्षाओं में इसके उपयोग से विविध पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को लाभ हुआ, क्योंकि इससे उनकी शिक्षा सुव्यवस्थित हुई और अमूर्त अवधारणा को समझने में सुविधा हुई। प्रत्येक खिलौने, मॉडल, खेल और वीडियो के साथ गतिविधियाँ और खेल संलग्न किए गए थे। यह देखा गया कि कक्षा में इसके उपयोग से अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा मिला। विद्यार्थियों ने कक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए, जिससे उनकी समस्या समाधान और आलोचनात्मक विचार कौशल में वृद्धि हुई। इसके अलावा, इससे देश की परंपरा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और राजनीति के बारे में उनकी समझ भी बढ़ी।

सेतु माह कार्यक्रम, कक्षा 6, सामाजिक विज्ञान

सामाजिक विज्ञान में सेतु कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को सामाजिक विज्ञान की खोजपूर्ण और आकर्षक शिक्षणशास्त्र से परिचित करवाना है, ताकि वे सामाजिक और मानवीय वातावरण के साथ सहजता से जुड़ सकें और कक्षा 6 में इससे परिचित हो सकें। इस सेतु कार्यक्रम का उद्देश्य सीखने में आने वाली बाधाओं को दूर करना और आसान बदलाव के लिए एक मजबूत आधार तैयार करना है। इसमें सरल से जटिल सामाजिक विज्ञान अवधारणाओं को दोहराकर और सुदृढ़ करके विद्यार्थियों की रुचि, प्रेरणा और क्षमता को समृद्ध बनाया जाएगा।

स्कूल स्वास्थ्य और कल्याण कार्यक्रम पर आयुष्मान भारत ई-पाठ्यक्रम के लिए मॉड्यूल

स्कूल जाने वाले बच्चों के स्वास्थ्य और कल्याण पर ई-पाठ्यक्रम के 11 मॉड्यूल विकसित किए गए हैं, जिनके नाम हैं— स्वस्थ विकास, भावनात्मक कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य, पारस्परिक संबंध, मूल्य और दायित्वपूर्ण नागरिकता, जेंडर समानता, पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता, स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहन, वस्तुओं के दुरुपयोग की रोकथाम और प्रबंधन, प्रजनन स्वास्थ्य और एच.आई.वी. की रोकथाम, हिंसा और चोटों के खिलाफ सुरक्षा, इंटरनेट और सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग को प्रोत्साहन।

स्कूलों के लिए राजनीति विज्ञान का त्रिभाषी शब्दकोश (अंग्रेजी-उर्दू संस्करण)

इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूली बच्चों के लिए राजनीति विज्ञान के शब्दकोश का अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू संस्करण तैयार करना था। चूँकि राजनीति विज्ञान में ऐसी अवधारणाएँ होती हैं जिन्हें समझना बच्चों के लिए अक्सर जटिल होता है, इसलिए अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू भाषाओं में शब्दकोश होने से विद्यार्थियों को अपनी पाठ्यपुस्तकों में अवधारणाओं को बेहतर तरीके से समझने में मदद मिलेगी और उन्हें विषय की बेहतर समझ हासिल करने में मदद मिलेगी। इस शब्दकोश में 332 प्रमुख अवधारणाएँ हैं जो कक्षा 6 से 8 की सामाजिक राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में निरंतर मौजूद रहती हैं।

भारत की हाल की उपलब्धियों पर विशेष मॉड्यूल

जी20 देशों के प्रति भारत के वसुधैव कुटुम्बकम्, भारत में ज्ञात और अल्प ज्ञात स्वतंत्रता सेनानी, गरीब कल्याण विषय के अंतर्गत प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना (पी.एम.जी.के.वाई.), जी20 वसुधैव कुटुम्बकम्, भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए पंच प्राण, स्वच्छता की सार्थकता पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, प्राचीन भारत में लोकतंत्र, भारत में लोकतंत्र— अतीत और वर्तमान, मतदान प्रणाली के माध्यम से लोकतंत्र— अतीत और वर्तमान, कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कल्याणकारी राज्य के विचार की खोज, महिला सशक्तीकरण — प्रगति एवं विकास का मार्ग और कोविड-19 प्रबंधन जैसे विषयों पर विशेष मॉड्यूल विकसित किए गए।

विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)

एन.ई.पी. 2020 के अनुसार माध्यमिक स्तर पर गणित की शिक्षक सक्षम कक्षा के लिए अनुभवात्मक अधिगम सामग्री

यह अनुभवात्मक अधिगम का पाठ योजना विकास कार्य है। इस परियोजना के सर्वेक्षण में एन.ई.पी. 2020 के लक्ष्यों के साथ संरेखित अनुभवात्मक अधिगम पर आधारित गणित पाठ योजनाओं की सफलता पर प्रकाश डाला गया है। शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों ने अपनी समग्र समझ को 'उत्कृष्ट' की श्रेणी में रखा, जो उच्च स्तर की सहभागिता और समझ को दर्शाता है। विद्यार्थियों ने पाया कि उदाहरण और अभ्यास पाठों के सबसे सहायक पहलू थे, इसके बाद स्पष्ट व्याख्याएँ और संवादात्मक गतिविधियाँ थीं, जिनके माध्यम से विभिन्न शिक्षण दृष्टिकोणों की प्रभावशीलता को प्रदर्शित किया गया। शिक्षण विधियाँ अत्यधिक आकर्षक थीं, कई विद्यार्थियों ने शीर्ष अंक दिए, जिससे यह दर्शाया जाता है कि उन्होंने पाठों का आनंद लिया और सक्रिय रूप से भाग लिया। विद्यार्थियों को गणित की कक्षाएँ दिलचस्प लगीं, क्योंकि किसी ने भी 'नहीं' का चयन नहीं किया, जो सकारात्मक और प्रभावी विद्यार्थी जुड़ाव को दर्शाता है। प्रतिक्रिया में पाठों और वास्तविक जीवन के अनुप्रयोगों के बीच एक मजबूत संबंध पर बल दिया गया, सैद्धांतिक अवधारणाओं को व्यावहारिक परिदृश्यों से जोड़ने में अनुभवात्मक अधिगम दृष्टिकोण को सत्यापित किया गया। इसके अतिरिक्त, आरेख और चार्ट जैसे दृश्य सहायक उपकरणों से विद्यार्थियों की समझ को काफी बढ़ावा दिया गया, जिससे शिक्षण में उनके महत्व पर प्रकाश डाला गया। निष्कर्ष के रूप में, पाठ योजनाओं में विद्यार्थियों को प्रभावी रूप से शामिल किया गया, समझ को बढ़ावा दिया गया और सैद्धांतिक अवधारणाओं को वास्तविक जीवन के अनुप्रयोगों से जोड़ा गया। विविध शिक्षण प्राथमिकताओं को संबोधित करने और अधिक परस्पर क्रिया तत्वों को शामिल करते हुए, भविष्य की पाठ योजनाएँ विद्यार्थियों की सहभागिता और सीखने के प्रतिफलों को और बेहतर बना सकती हैं।

माध्यमिक स्तर पर जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी और गणित में सीखने के प्रतिफलों आधारित गतिविधियाँ (स्तर 2)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के आलोक में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सभी सीखने के प्रतिफलों को शामिल करने वाले इंफोग्राफिक्स, बाइट-आकार के वीडियो और मूल्यांकन सामग्री जैसे सीखने के प्रतिफलों आधारित संसाधनों की समीक्षा, संशोधन और उन्हें अंतिम रूप दिया गया। इंफोग्राफिक्स और बाइट-आकार के वीडियो की विषयवार अंतिम संख्या 11वीं और 12वीं कक्षा में प्रत्येक के लिए भौतिकी-37, रसायन विज्ञान-40 और जीव विज्ञान-41 है। तीनों विषयों में, प्रत्येक सीखने के प्रतिफल के लिए लगभग 20 आकलन मदें (10 मध्यम स्तर पर और 10 उच्च स्तर पर) भी विकसित की गई थीं। इन सीखने के प्रतिफल आधारित मदों की समीक्षा की गई और कार्यशाला विधि में अंतिम रूप दिया गया, जिसमें विशेषज्ञों और अभ्यासरत शिक्षकों को शामिल किया गया। इसके अलावा, इंफोग्राफिक्स विकसित करते समय, विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों की अधिगम की आवश्यकताओं को ध्यान में रखा गया है।

यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षक, अध्यापक प्रशिक्षक और अन्य हितधारक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान इन सीखने के प्रतिफल आधारित संसाधनों का उपयोग विद्यार्थियों में वांछित योग्यताएँ विकसित करने के लिए कर सकते हैं। शिक्षक, अध्यापक प्रशिक्षक और अन्य हितधारक स्थिति, संदर्भ और संसाधनों की उपलब्धता के अनुसार उन्हें अनुकूलित या अपना सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विज्ञान और गणित में पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 का उद्देश्य सभी स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करना है और राष्ट्र की कई बढ़ती विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विज्ञान, गणित और कंप्यूटर आधारित सोच पर बल देना है। विज्ञान और गणित सहित विभिन्न विषय क्षेत्रों के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम क्षेत्र समूह (सी.ए.जी.) गठित किए गए थे। एन.ई.पी. 2020 और इसके अनुरूप पाठ्यक्रम अर्थात स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023) के निर्देशों के आधार पर, रा.शै.अ.प्र.प. ने विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम विकसित किए हैं। कक्षा 6 से 10 के लिए विकसित पाठ्यक्रम के आधार पर, विज्ञान और गणित में कक्षा 6 के लिए पाठ्यपुस्तकों के विकास का काम शुरू हुआ। पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का विकास विषय विशेषज्ञों और अभ्यासरत शिक्षकों के साथ परामर्श के बाद हुआ। कई बैठकों में गहन विचार-विमर्श हुआ, जिन्हें ऑनलाइन और व्यक्तिगत रूप से आयोजित किया गया। कक्षा 6 के लिए विज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकें विकसित की जा रही हैं।

कक्षा 11 और 12 के लिए जैव प्रौद्योगिकी पाठ्यपुस्तक का हिंदी संस्करण

रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा कक्षा 11 और 12 के लिए जैव प्रौद्योगिकी पाठ्यपुस्तकों को पहले ही एक विषय के रूप में विकसित किया गया था। हिंदी माध्यम में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कक्षा 11 और 12 के लिए जैव प्रौद्योगिकी पाठ्यपुस्तकों के हिंदी संस्करण विकसित किए जा रहे हैं। दोनों पाठ्यपुस्तकों का हिंदी में अनुवाद किया जा चुका है तथा समीक्षा के बाद कक्षा 11 और 12 के लिए जैव प्रौद्योगिकी पाठ्यपुस्तकों के हिंदी संस्करण की पांडुलिपियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

गणित प्रयोगशाला का संशोधन एवं विकास

गणित प्रयोगशाला पारंपरिक कक्षा व्यवस्था में एक मूल्यवान वर्धन है। यह विद्यार्थियों को गणितीय अवधारणाओं का पता लगाने और समस्या-समाधान कौशल विकसित करने के लिए एक व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है।

प्रयोगशाला गतिविधियों को मौजूदा पाठ्यक्रम को पूरक और बढ़ाने के लिए तैयार किया जा सकता है, जिससे यह विद्यार्थियों के लिए अधिक आकर्षक और दिलचस्प बन सके। इन गतिविधियों का उद्देश्य बच्चों को गणित का प्रयोग करना सिखाना है, न कि केवल निष्पादन के उद्देश्य से बल्कि ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों को कल्पनाशील बनाने और कारणों का पता लगाने में भी मदद करती हैं। वे अनुमान लगाने और उनका परीक्षण करने तथा देखे गए तरीकों को सामान्य बनाने के अवसर प्रदान करती हैं। इस कार्यक्रम में गणित के मध्य और माध्यमिक स्तर में लगभग 200 मॉडल तैयार किए गए हैं। निष्कर्ष रूप में, एन.ई.पी. 2020 के साथ गणित प्रयोगशालाओं को अद्यतित करने से विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और विश्लेषणात्मक कौशल को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

जीव विज्ञान एवं जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला का संशोधन एवं उन्नयन

जीव विज्ञान को गतिविधि आधारित बनाने के महत्व पर बल देते हुए जीव विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला में प्रयोग और गतिविधियों को समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए बाल-केंद्रित दृष्टिकोण के साथ तैयार किया गया है। इन प्रयोगों का उद्देश्य स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों में रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकों में प्रस्तुत जैविक और जैव प्रौद्योगिकी अवधारणाओं की समझ को पूरक बनाना है। इस कार्यक्रम के एक भाग के रूप में प्रयोगशाला के अनुरक्षण और रख-रखाव के लिए एक विवरणिका और सामान्य दिशानिर्देश विकसित किए गए हैं। विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के लिए मध्य स्तर के लिए लगभग 10 गतिविधियाँ और माध्यमिक स्तर के लिए 13 प्रयोग बनाए गए हैं।

रसायन विज्ञान प्रयोगशाला की देखभाल और रखरखाव

रसायन विज्ञान प्रयोगशाला अध्यापक प्रशिक्षण गतिविधियों और कार्यशालाओं के संचालन के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित है जहाँ शिक्षण और अधिगम के विद्यार्थी-केंद्रित तरीकों को अपनाने में मदद मिलेगी। रसायन विज्ञान प्रयोगशालाएँ विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक प्रयोग करने, अध्ययन करने और अन्वेषण के लिए महत्वपूर्ण स्थान हैं। विद्यार्थियों को प्रयोगशाला व्यवस्था में वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों में सैद्धांतिक ज्ञान को लागू करने के अवसर मिलते हैं, जो रासायनिक घटनाओं और सिद्धांतों की उनकी समझ को गहरा बनाते हैं। हालाँकि, रासायनिक प्रयोगशाला के कुशल संचालन के लिए उनका नियमित सुविधा अनुरक्षण और रख-रखाव उतना ही महत्वपूर्ण है। प्रयोगशाला गतिविधियों के अनुदेशात्मक मूल्य को अधिकतम करने, उपकरणों और संसाधनों को संरक्षित करने तथा विद्यार्थियों और शिक्षकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रयोगशाला की उचित देखभाल और रख-रखाव आवश्यक है। इसमें अपशिष्ट प्रबंधन, उपकरण रखरखाव, भंडारण तकनीक, सुरक्षा सावधानियाँ और स्वच्छता संबंधी आवश्यकताओं जैसे कई विषयों पर चर्चा की गई है। माध्यमिक स्तर के लिए एन.ई.पी. 2020 को ध्यान में रखते हुए विभिन्न नवीन गतिविधियों और प्रयोगों को शामिल किया गया है। इस कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, प्रयोगशाला अनुरक्षण और रखरखाव के लिए एक विवरणिका और दिशानिर्देश विकसित किए गए हैं।

खेल, खिलौने, मॉडल, वीडियो, स्टोरीबोर्ड और विज्ञान में कला रूपों के समेकन पर आधारित संसाधन सामग्री

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों के बीच महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता, निर्णय लेने, समस्या समाधान आदि जैसे विभिन्न कौशलों को बढ़ाने पर बल दिया जाता है। खिलौना, खेल और कला आधारित शिक्षणशास्त्र इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा, हमारी सांस्कृतिक विरासत जैसे— कला रूप, खेल और खिलौने जो विलुप्त होते जा रहे हैं, के संरक्षण के लिए तत्काल कार्य करने की आवश्यकता है।

इसे ध्यान में रखते हुए, माध्यमिक स्तर 1 (कक्षा 9 और 10) में विज्ञान की अवधारणाओं को विभिन्न गतिविधियों, जैसे— खेल, खिलौने और कला-एकीकृत गतिविधियों के साथ एकीकृत करने के लिए एक संसाधन सामग्री विकसित की गई है। इस सामग्री का उद्देश्य अनुभवात्मक, नवाचार, संवादात्मक और बाल-केंद्रित शिक्षा के माध्यम से विज्ञान सीखने को बढ़ावा देना है, जिससे विद्यार्थी अपनी परंपरा और संस्कृति से जुड़ सकें और पारंपरिक कला रूपों, खेलों और खिलौनों का संरक्षण हो सके, जो अन्यथा विलुप्त होते जा रहे हैं। संसाधन सामग्री को पुस्तक के रूप में प्रकाशन हेतु अंतिम रूप दिया जा रहा है, जिसका नाम है— 'साइंस: एक्सप्लोर एंड प्ले' तथा द्विभाषी पुस्तक जिसका नाम है—'फ्रॉम क्रिएटिव एक्सप्रेशंस टू साइंस'।

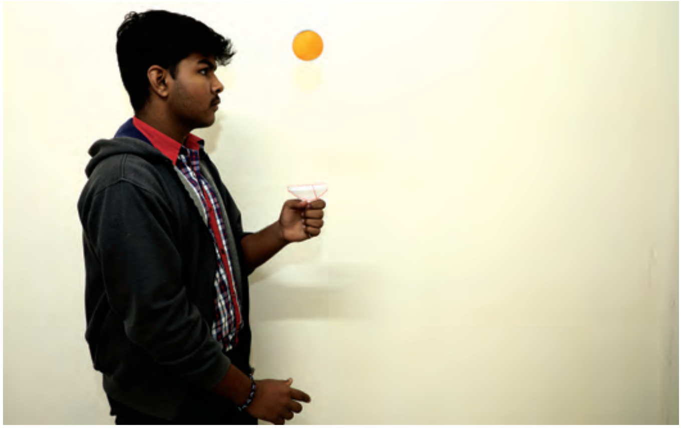

खिलौना आधारित गतिविधि का आनंद लेता विद्यार्थी

विद्यार्थी हाइड्रा के जीवन-चक्र पर छाया खेल का प्रदर्शन करते हुए

उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान में प्रयोगशाला मैनुअल पर आधारित ऑडियो-वीडियो संसाधन

कोविड-19 के दौरान ऑडियो-वीडियो संसाधनों की आवश्यकता बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। पिछले कुछ वर्षों में ऑडियो-वीडियो संसाधन समय की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रहे हैं। अब शिक्षकों, विद्यार्थियों और कई अन्य हितधारकों द्वारा इनका उपयोग काफी बढ़ गया है। ऑडियो-वीडियो सामग्री से विभिन्न शिक्षण शैलियों की विविध शिक्षण आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है और साथ ही अभ्यासरत शिक्षकों को आई.सी.टी. के एकीकरण के साथ-साथ व्यावहारिक दृष्टिकोणों को पूरक करते हुए प्रयोगात्मक कार्य करने में सुविधा प्रदान की जाती है। विज्ञान में प्रयोगशाला मैनुअल पर आधारित लगभग 50 स्क्रिप्ट विकसित की गई हैं। कुछ गतिविधियों को रिकॉर्ड और संपादित किया गया है। शेष ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम के निर्माण की प्रक्रिया प्रगति पर है।

माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान में ऑडियो-वीडियो संसाधन (स्तर–2)

माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान में रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यपुस्तक पर आधारित ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम एन.ई.पी. 2020 की सिफ़ारिशों के अनुसार कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान आने वाली आवश्यकताओं और कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए तैयार और विकसित किए गए थे। ये ऑडियो-वीडियो सामग्री विद्यार्थियों और अभ्यासरत शिक्षकों को प्रयोगात्मक कार्य करने में सुविधा प्रदान करती है, जो व्यावहारिक दृष्टिकोण को पूरक बनाती है और आई.सी.टी. को एकीकृत करती है। माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान में कई प्रयोग और गतिविधियाँ विकसित की गई हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए कुछ ऑडियो-वीडियो संसाधन भी विकसित किए गए हैं।

कृषि (प्राकृतिक खेती) में पाठ्यक्रम

प्राकृतिक खेती में पौधों का अन्य पौधों, पशुओं और प्रकृति के पाँच तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) के साथ समग्र संबंध माना जाता है ताकि भूमि पर जीवन को बनाए रखा जा सके। हरित क्रांति के दौरान कीटनाशकों और रसायनों के अत्यधिक उपयोग से कैंसर और विभिन्न स्वास्थ्य संकट जैसे हानिकारक परिणाम सामने आए हैं। इन चुनौतियों का सामना करते हुए, प्राकृतिक खेती एक स्थायी समाधान के रूप में उभरती है, जो मिट्टी और पर्यावरण दोनों के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देती है। प्राकृतिक खेती हाल के परिदृश्य में आवश्यक है, जो स्थिरता, स्वस्थ मिट्टी और समृद्ध जैव विविधता को बढ़ावा देती है। हानिकारक रसायनों को कम करने से जलवायु में लचीलापन बढ़ जाता है और खेती की लागत को कम करते हुए और आर्थिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करते हुए स्वस्थ भोजन पैदा किया जाता है। एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के अनुरूप स्कूली शिक्षा में प्राकृतिक खेती को एकीकृत करने से विद्यार्थियों को व्यावहारिक कौशल और पर्यावरण के प्रति गहरी चेतना मिलती है। यह दृष्टिकोण भारत की कृषि विरासत पर गौरव पैदा करता है और समग्र बाल विकास को बढ़ावा मिलता है, जिससे भावी पीढ़ियों को सतत और पारंपरिक दृष्टिकोण के साथ कृषि चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार किया जा सके। उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, स्कूली शिक्षा में पाठ्यक्रम में प्राकृतिक खेती को शामिल करने के लिए दिशानिर्देश विकसित किए गए हैं। स्कूल के पाठ्यक्रम में प्राकृतिक खेती को शामिल करने के लिए दिशानिर्देश विकसित करने के अलावा, रा.शै.अ.प्र.प. के परिसर में प्राकृतिक खेती के तरीकों को प्रदर्शित करने वाला एक मॉडल स्थापित किया गया। इस मॉडल का उद्देश्य पूरी स्कूल प्रणाली में प्रचार-प्रसार करना है, जिसमें प्राकृतिक खेती को प्रभावी तरीके से कैसे कार्यान्वित किया जा सकता है, इसके व्यावहारिक उदाहरण दिए गए हैं। इन दिशानिर्देशों में मिट्टी की तैयारी के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है, मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने के लिए जुताई और खाद जैसी पारंपरिक विधियों का उपयोग किया गया है। रोपण से पहले मिट्टी का मूल्यांकन, साथ ही सूखी भूमि के लिए पर्याप्त पानी देना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, खाद, फसल अवशेष और कवर फसलों को शामिल करने से मिट्टी का स्वास्थ्य समृद्ध होता है, जबकि फसल चक्रण से रोगों से सुरक्षा मिलती है और पोषक चक्र को बढ़ावा दिया जाता है। बीजामृत और जीवामृत जैसे प्राकृतिक पदार्थों के साथ-साथ नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र और अग्निअस्त्र जैसे कीटनाशकों का उपयोग करके कीटों पर नियंत्रण सुनिश्चित किया जाता है। मल्च का उपयोग करने के माध्यम से नमी को संरक्षित किया जाता है और खरपतवारों को दबा दिया जाता है, जिससे स्कूल के बगीचों में प्राकृतिक खेती के लिए आदर्श वातावरण बनता है। इसका उद्देश्य स्कूलों में प्राकृतिक खेती के मॉडल को स्थापित करना और उसका प्रसार करना था, जो एन.ई.पी. के साथ संरेखित हो। विद्यार्थी प्राकृतिक खेती के सिद्धांतों और कौशल के साथ-साथ अपशिष्ट प्रबंधन और मृदा स्वास्थ्य सुधार तकनीकों को सीखेंगे। इस मॉडल का उद्देश्य स्थायित्व और संसाधन अनुकूलन को बढ़ावा देते हुए बाहरी परिणाम पर निर्भरता को कम करना है। यह शिक्षा के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण है जो व्यावहारिक कौशल और पर्यावरण चेतना दोनों को पोषित करता है। रा.शै.अ.प्र.प. परिसर में प्राकृतिक कृषि मॉडल सफलतापूर्वक चल रहा है और 'पहले आओ-पहले पाओ' के आधार पर सब्जियाँ उपलब्ध करा रहा है।

पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग (डी.सी.एस. एंड डी.)

एन.सी.एफ.-एफ.एस. और एन.सी.एफ.-एस.ई. के अनुवर्ती के रूप में स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों में पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) के लिए दिशानिर्देश

स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के अनुवर्ती के रूप में, रा.शै.अ.प्र.प. में पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री के विकास की प्रक्रिया शुरू की गई है। इस प्रक्रिया को निर्देशित करने और आगे बढ़ाने

के लिए दो समितियों का गठन किया गया— पहली राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा निरीक्षण समिति (एन.ओ.सी.) और दूसरी राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)। एन.एस.टी.सी. के तहत 13 पाठ्यक्रम क्षेत्र समूह (सी.ए.जी.) गठित किए गए हैं, जिनमें तीन सी.ए.जी. शामिल हैं, अर्थात भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.), पर्यावरण शिक्षा और नवाचार शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) तथा क्रॉस-कटिंग क्षेत्र के रूप में शिक्षणशास्त्र। नवाचार शिक्षणशास्त्र और टी.एल.एम. तथा आई.के.एस. पर दिशानिर्देश लाए गए, जो सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, अनुभवात्मक शिक्षा, शिक्षण के नवाचार के तरीके, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 में समावेशन जैसे क्रॉस-कटिंग सरोकारों को एकीकृत करने का आधार प्रदान करते हैं।

बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा और स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के अनुवर्ती के रूप में विभिन्न स्तरों और विषयों में दक्षताओं और पाठ्यचर्या लक्ष्यों के साथ संरेखित करके सीखने के प्रतिफलों की समीक्षा

बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2022 और स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 लाई गई है। इसके अनुवर्ती के रूप में, विभिन्न विषय क्षेत्रों के लिए सीखने के प्रतिफलों को दक्षताओं और पाठ्यचर्या लक्ष्यों के साथ संरेखित करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

दक्षताओं और पाठ्यचर्या लक्ष्यों के साथ सीखने के प्रतिफलों की रूपरेखा तैयार करने के लिए पहली योजना बैठक (आंतरिक रूप से) 21 अगस्त, 2023 को आयोजित की गई थी। बाद में, अपने-अपने क्षेत्रों में इसे आगे बढ़ाने के लिए पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों का गठन किया गया। एन.सी.एफ.-एस.ई. में अनुशंसित प्रत्येक विषय क्षेत्र के लिए प्रत्येक पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह में पाठ्यक्रम को अंतिम रूप देने के बाद, सीखने के प्रतिफलों के संरेखण को अंतिम रूप दिया गया और विषयवार दस्तावेज तैयार किए जाएँगे। इस कार्यक्रम के तहत 33 सैनिक स्कूलों के प्रदर्शन की समीक्षा की गई है।

एन.सी.एफ. 2005 के अनुवर्तन के रूप में विकसित पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यसामग्री को अद्यतित करना

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य रा.शै.अ.प्र.प. और सी.बी.एस.ई. के विभिन्न विभागों को पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री के लिए सहायता प्रदान करना है, जिसमें रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न विभागों और इकाइयों द्वारा विकसित विभिन्न स्तरों और विषयों में पाठ्यपुस्तकों को अद्यतित करना शामिल है।

वर्ष 2023–24 में पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों को जारी रखने के परिषद् के निर्णय के मद्देनजर, सभी पाठ्यपुस्तकों को अद्यतित करने की आवश्यकता महसूस नहीं की गई। हालाँकि, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान की कुछ पुस्तकों के मामले में, पुस्तकों को और अद्यतन करने के लिए विशेषज्ञों के साथ समीक्षा बैठकें आयोजित की गईं। इस संबंध में शुद्धिपत्र/अद्यतन सामग्री रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट पर अपलोड कर दी गई है।

शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

नई किट के लिए नई आदर्श सामग्रियाँ और मौजूदा किट में सामग्रियों का संशोधन/प्रतिस्थापन

इस कार्यक्रम का उद्देश्य रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित पुरानी और मौजूदा शैक्षिक किट सामग्री की समीक्षा करना था, ताकि उन्हें अधिक प्रयोक्ता-अनुकूल, प्रभावी और समावेशी बनाया जा सके, नई किट वस्तुओं का विकास किया जा सके, कुछ वस्तुओं पर गुणवत्ता परीक्षण आयोजित करके प्रयुक्त सामग्री की गैर-विषाक्तता की जाँच की जा

सके और तदनुसार किटों को संशोधित किया जा सके। इस कार्यक्रम के अंतर्गत *जादुई पिटारा* बॉक्स को नए रूप में विकसित किया गया, साथ ही किट की कई सामग्रियों की कंप्यूटर आधारित चित्र (सी.ए.डी.) तैयार किए गए। किट की कुछ सामग्रियों के विवरणों में संशोधन किया गया है।

अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)

अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए 'एक्सपीरियनशियल लर्निंग–रूट्स टूबड्र्स रूट्स' पर सामग्री

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफ़ारिशों के आलोक में, अध्यापक शिक्षा विभाग में अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए 'एक्सपीरियंशियल लर्निंग–रूट्स टूवर्ड्स रूट्स' पर एक सामग्री विकसित करने पर काम किया जा रहा है। अनुभवात्मक शिक्षण सामग्री उस क्षेत्र को शामिल करती है जिसका उल्लेख एन.ई.पी. 2020 पैरा 4.6 में किया गया है— "... अनुभवात्मक शिक्षण को अपनाया जाएगा, जिसमें व्यावहारिक शिक्षण, कला-एकीकृत और खेल-एकीकृत शिक्षा, कहानी कहने पर आधारित शिक्षणशास्त्र, अन्य के अलावा, प्रत्येक विषय के अंदर मानक शिक्षणशास्त्र के रूप में और विभिन्न विषयों के बीच संबंधों की खोज शामिल होगी। सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धि में अंतर को कम करने के लिए, कक्षा में होने वाले कार्य, योग्यता-आधारित अधिगम और शिक्षा की ओर स्थानांतरित होंगे। यहाँ जड़ों की ओर जाने वाले मार्गों के बारे में परिभाषित किया गया है, जिसका अर्थ है— विद्यार्थियों द्वारा अपेक्षित सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के तरीके, जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणाली भी शामिल है। प्रस्तावित सामग्री की विषयवस्तु उपरोक्त एन.ई.पी. 2020 की अनुशंसा और उनकी खोजपूर्ण गतिविधियों पर केंद्रित होगी, ताकि विद्यार्थियों को सीखने और आजीवन सीखने के लिए अनुप्रयोग करने में सुविधा हो। प्रस्तावित सामग्री को भी शामिल किया जाएगा और नई शैक्षणिक और पाठ्यचर्या संरचना (5 + 3 + 3 + 4) के अनुसार प्रत्येक विषय के लिए मानक शिक्षणशास्त्र प्रस्तुत किया जाएगा। इसके अलावा, यह प्रस्तावित सामग्री विशेष रूप से अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों पर केंद्रित होगी। एन.ई.पी. 2020 में यह भी दर्शाया गया है कि "शिक्षक को शिक्षा प्रणाली में मूलभूत सुधारों के केंद्र में होना चाहिए।" इसे शिक्षकों को सशक्त बनाने और उन्हें अपना काम यथासंभव प्रभावी तरीके से करने में मदद करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। इस संदर्भ में, प्रस्तावित सामग्री से उन्हें अपनी भूमिका को प्रभावी तरीके से निभाने के लिए स्वयं को सशक्त बनाने में सहायता मिलेगी, जिसकी कल्पना एन.ई.पी. 2020 द्वारा की गई है।

भारतीय विचारकों अर्थात स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, गिजुभाई बधेका, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले, महर्षि अरबिंदो, डॉ. राधाकृष्णन, विनोबा भावे, दयानंद सरस्वती, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, पंडित दीन दयाल उपाध्याय और जिद्दू कृष्णमूर्ति पर मार्शल ड्राफ्ट शिक्षा और अनुभवात्मक शिक्षा पर चिंतन विकसित किया गया है।

शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

विभिन्न राज्य पदाधिकारियों के सहयोग से एन.ई.पी. 2020 में परिकल्पित परीक्षा सुधारों का संचालन (स्तर 3)

इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए एफ.एल.एन., आरंभिक, मध्य और माध्यमिक के लिए अनुकरणीय आकलन विकसित करना, अध्यापक प्रशिक्षकों, सेवारत शिक्षकों, सेवा-पूर्व शिक्षकों और संसाधन व्यक्तियों के उपयोग के लिए शिक्षण आकलन में वैचारिक सामग्री विकसित करना और बुनियादी स्तर, आरंभिक स्तर, मध्य स्तर और माध्यमिक स्तर के लिए स्कूल-आधारित आकलन प्रोटोकॉल विकसित करने और कार्यान्वित करने में राज्य स्तर के पदाधिकारियों के क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करना है।

बुनियादी, आरंभिक, मध्य और माध्यमिक स्तरों के लिए समग्र प्रगति कार्ड

परख के अंतर्गत योग्यता-आधारित आकलन रूपरेखा मॉडल के कार्यान्वयन को मजबूत करने के लिए बुनियादी, आरंभिक, मध्य और माध्यमिक स्तरों में समग्र प्रगति कार्ड विकसित किए हैं। योग्यता-आधारित शिक्षण-अधिगम के मूल्यांकन में सहायता के लिए 360 डिग्री समग्र प्रगति कार्ड विकसित किए गए हैं ताकि आकलन को अधिक व्यापक और समग्र बनाया जा सके।

अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)

विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए जी20 पठन सामग्री और वीडियो

जी20 और भारत की अध्यक्षता पर अंग्रेजी और हिंदी में दो पठन सामग्री और वीडियो तैयार किए गए हैं ताकि स्कूल और विश्वविद्यालय के विद्यार्थी जी20 के उद्देश्यों और भारत की अध्यक्षता के महत्व और लाभों को समझ सकें। इन सामग्रियों का उपयोग देशभर के विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों द्वारा किया गया है और ये ncert.nic.in पर उपलब्ध हैं।

पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)

एल.डी.डी., रा.शै.अ.प्र.प. में कोहा सॉफ्टवेयर का उपयोग करके ओपन-सोर्स लाइब्रेरी मैनेजमेंट सिस्टम में स्थानांतरण

'कोहा' सॉफ्टवेयर को सर्वर में स्थापित किया गया है और स्टाफ सदस्यों को लाइब्रेरी हाउसकीपिंग संचालन के कई मॉड्यूल जैसे एक्यूजीशन, कैटलॉगिंग, सर्कुलेशन और सीरियल के बारे में प्रशिक्षण दिया गया है। पहले चरण के डेटा का स्थानांतरण पूरा हो चुका है और सत्यापन का काम प्रगति पर है। पाठकों के लिए वेब ओपेक की सुविधा के साथ पुस्तकालय में सर्कुलेशन, कैटलॉगिंग मॉड्यूल पूरी तरह से कार्यान्वित हैं।

रा.शै.अ.प्र.प. का संस्थागत भंडार

रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशनों का डिजिटलीकरण और संरक्षण पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग द्वारा की जाने वाली एक सतत प्रक्रिया है। वर्तमान में, संस्थागत भंडार में 750 से अधिक रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशनों का संग्रह शामिल है, जिन्हें

रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा वर्ष 1975 और 1988, 2000 और 2005 में लाई गई विभिन्न राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाओं के अनुवर्ती के रूप में विकसित किया गया है। आई.आई.टी., खड़गपुर, आई.जी.एन.सी.ए., दिल्ली, आर.आई.ई., भोपाल आदि के विशेषज्ञों के साथ डीस्पेस सॉफ्टवेयर पर संस्थागत रिपोजिटरी की समीक्षा के लिए कार्यशाला 1 दिसंबर, 2023 को आयोजित की गई थी। इसमें आई.आर. के होमपेज, कम्यूनिटीज और सब-कम्यूनिटीज और क्लाउड सर्वर पर आई.आर. के बैकअप स्टोरेज और होस्टिंग जैसे विभिन्न पहलुओं की समीक्षा की गई थी। समीक्षा के बाद, संस्थागत रिपोजिटरी (आई.आर.) पाठकों के लाभ के लिए एल.डी.डी. की वेबसाइट http://45.127.197.188:8080/jspui/ के माध्यम से इंटरनेट पर उपलब्ध है। रा.शै.अ.प्र.प. पुस्तकालय के प्रयोक्ताओं द्वारा डिजिटलीकृत सामग्री की निरंतर माँग की जा रही है।

योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

रा.शै.अ.प्र.प. घटक इकाइयों के पी.ए.सी./पी.ए.बी. कार्यक्रमों के लिए प्रबंधन सूचना प्रणाली (एम.आई.एस.) – 'योजना'

रा.शै.अ.प्र.प. का योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग संगठन के शैक्षणिक कार्यक्रमों और गतिविधियों के लिए समाशोधन गृह के रूप में कार्य करता है। यह प्रभाग समय-समय पर पी.ए.सी./पी.ए.बी. अनुमोदित कार्यक्रमों के बारे में आवश्यक जानकारी एकत्र करने और शिक्षा मंत्रालय (एम.ओ.ई.) को रिपोर्ट करने के लिए जिम्मेदार है। योजना (ईयरली ऑनगोइंग ज्यूडिशियस एप्रेजल ऑफ एन.सी.ई.आर.टी. एक्टीविटीज) कार्यक्रम, रा.शै.अ.प्र.प. की घटक इकाइयों में पी.ए.सी./पी.ए.बी. अनुमोदित परियोजनाओं की प्रगति की निगरानी के लिए एम.आई.एस. विकसित करने के लिए शुरू किया गया था।

योजना में मोंगोडीबी सर्वर पर माई.एस.क्यू.एल. डेटाबेस का उपयोग किया जाता है। फ्रंटएंड एच.टी.एम.एल. 5, सी.एस.एस. 3 और जावास्क्रिप्ट ई.एस. 6 का उपयोग करके विकसित किया गया है, जबकि बैकएंड पर अजाक्स, जेक्वेरी और पी.एच.पी. का लाभ उठाया जाता है। वेब एप्लीकेशन का सुरक्षा ऑडिट किया गया है, जो एक वर्ष के लिए वैध है और इसे प्रयोक्ता पहुँच नियंत्रण कार्यान्वित किया गया है।

योजना एप्लीकेशन yojana.ncert.gov.in पर उपलब्ध है। सभी संस्थानों, विभागों, प्रभागों और प्रकोष्ठों से संकाय और प्रशासनिक कर्मचारियों का विवरण एकत्र किया जा रहा है और यूजर आईडी और पासवर्ड बनाया गया है, जिसे संबंधित व्यक्तियों को प्रदान किया गया है। सभी निर्देशों के साथ एक प्रयोक्ता पुस्तिका विकसित और प्रसारित की गई है। यह 'योजना' पोर्टल पर भी उपलब्ध है। वर्ष 2023–24 के लिए सभी पी.ए.सी./पी.ए.बी. कार्यक्रम विवरण अपलोड कर दिए गए हैं और संस्थानों, विभागों, प्रभागों और प्रकोष्ठों को समय-समय पर की गई गतिविधियों की गतिविधि पूर्णता रिपोर्ट अपलोड करने के लिए कहा गया है।

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी)

विद्यालय प्रणाली के लिए शिक्षा में आई.सी.टी. हेतु पाठ्यक्रम

कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, 'साइबर सुरक्षा और संरक्षा' पर एक प्रशिक्षण पैकेज और सेवारत शिक्षकों के लिए एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित किया गया है, साथ ही 'साइबरस्पेस में सुरक्षा' पर एक एम.ओ.ओ.सी. के लिए एक पाठ्यक्रम पांडुलिपि और संबंधित वीडियो स्क्रिप्ट भी विकसित की गई है। इसके अतिरिक्त, 'ऑनलाइन पाठ्यक्रमों का विकास' पर एक एम.ओ.ओ.सी. बनाया गया है और 'आई.सी.टी.— मूल बातें' पर एक एम.ओ.ओ.सी. वर्तमान में विकासाधीन है। प्रशिक्षण के लिए 'शैक्षणिक प्रौद्योगिकी की नींव' पर

‘निष्ठा ईटी - स्तर 1’ के लिए एक प्रशिक्षण मैनुअल का संचालन किया गया। इसके अलावा, ‘स्कूली शिक्षा के लिए डिजिटल गेम’ नामक एक संसाधन तैयार किया गया है, जिसमें ओपन-सोर्स डिजिटल गेम और कक्षा 1 से 8 के लिए सीखने के प्रतिफलों के साथ उनके संरेखण का विवरण दिया गया है। उर्दू में डिजिटल संसाधन, जैसे साइबर सुरक्षा युक्तियों पर पॉकेट बुक, साइबर दुनिया में सुरक्षा— शिक्षकों के लिए क्या करें और क्या न करें, साइबर दुनिया में सुरक्षा— विद्यार्थियों के लिए क्या करें और क्या न करें, माता-पिता के लिए साइबर और सुरक्षा दिशानिर्देश, स्कूलों के लिए साइबर और सुरक्षा दिशानिर्देश, साइबर सुरक्षा और संरक्षा की मूल बातें, सुरक्षित ऑनलाइन शिक्षा भी विकसित की गई है।

संवर्धित वास्तविकता (ए.आर.) और आभासी वास्तविकता (वी.आर.) सिमुलेशन पर पाठ्यक्रम आधारित सामग्री और स्कूली शिक्षा के लिए 3डी वीडियो

एन.ई.पी. 2020 के खंड 24.4 (डी) में सामग्री निर्माण, डिजिटल रिपोजिटरी और लर्निंग गेम्स और सिमुलेशन, संवर्धित वास्तविकता और आभासी वास्तविकता सामग्री के प्रसार की सिफारिश की गई है। एन.ई.पी. 2020 में सीखने के अनुभवों को बढ़ाने के लिए संवर्धित वास्तविकता (ए.आर.), आभासी वास्तविकता (वी.आर.) और आभासी प्रयोगशालाओं जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके पाठ्यक्रम-आधारित सामग्री के विकास पर भी बल दिया जाता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विज्ञान और गणित में कक्षा 6 से 12 के लिए ए.आर., वी.आर. और वर्चुअल लैब सामग्री विकसित करना, रा.शै.अ.प्र.प. के ‘पी.एम. ई-विद्या’ ए.आर. ऐप और ‘दीक्षा’ पोर्टल पर विकसित ए.आर., वी.आर. और वर्चुअल लैब सामग्री को क्यूरेट करना, एकीकृत करना, अनुवाद करना और स्थानांतरित करना है।

इस कार्यक्रम में ए.आर., वी.आर. और 3डी सिमुलेशन जैसी नई तकनीकों पर ध्यान केंद्रित किया गया। कुल मिलाकर, विज्ञान से कक्षा 9 और कक्षा 10 के लिए 60 स्टोरीबोर्ड और 20 वीडियो की समीक्षा की गई और ए.आर./वी.आर. सामग्री विकसित करने के लिए सी.आई.ई.टी. संकाय सदस्यों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

भारतीय सांकेतिक भाषा (आई.एस.एल.) का मानकीकरण

संस्थान ने राष्ट्रव्यापी स्तर पर, भाषाई विभाजन को पाटने और विविध समुदायों में समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए परियोजना शुरू की। प्रक्रियात्मक रूपरेखा में सार्वभौमिक अधिगम डिजाइन (यू.डी.एल.) के सिद्धांतों का पालन करते हुए आई.एस.एल. में शिक्षण सामग्री बनाने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण का उपयोग करने को समर्थन प्रदान किया गया। इसलिए रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित प्रत्येक वीडियो संसाधन में ऑडियो, टेक्स्ट और आई.एस.एल. है ताकि हर विद्यार्थी, आई.एस.एल. से परिचित होने के बावजूद, वीडियो संसाधन से जुड़ सके। कक्षा 1 से 6 के लिए लगभग 954 आई.एस.एल. वीडियो तैयार किए गए और उन्हें ‘दीक्षा’ और ‘पी.एम. ई-विद्या’ डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों के माध्यम से हितधारकों को उपलब्ध करवाया गया। इसके अलावा, 285 शैक्षणिक शब्दों के लिए नए संकेत भी विकसित किए गए और 6 मॉड्यूल वाला एक अल्पकालिक पाठ्यक्रम भी विकसित किया गया। 285 शैक्षणिक शब्दों के लिए पाठ्यक्रम और नए संकेत दोनों ही प्रक्रिया में हैं।

शैक्षिक मीडिया कार्यक्रमों का प्रसार

सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. को विद्यार्थियों, शिक्षकों और शिक्षाविदों की सहायता के लिए मीडिया और ई-सामग्री की संभावनाओं का पता लगाने का निर्देशित है। इसने प्रसारण और गैर-प्रसारण विधि के माध्यम से इन मीडिया कार्यक्रमों के प्रसार के लिए तंत्र स्थापित किए हैं। मीडिया समर्थन के प्रभाव को बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों

और विद्यार्थियों के पोषण और भागीदारी के साथ एक लक्षित प्रसारण आवश्यक है। इसके अलावा, विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, मीडिया कार्यक्रमों को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से उपलब्ध करवाया जा सकता है। इसके अलावा, सी.आई.ई.टी. द्वारा एन.ई.पी. 2020, शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आर.टी.ई.), समग्र शिक्षा द्वारा उठाई गई विभिन्न चिंताओं के कार्यान्वयन के लिए मीडिया सामग्री के उत्पादन और समर्थन के माध्यम से योजनाबद्ध मीडिया समर्थन पर काम किया गया है।

वर्तमान में सी.आई.ई.टी. भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के 'पी.एम. ई-विद्या' (एक कक्षा, एक चैनल), ई-पाठशाला, 'स्वयं' और 'दीक्षा' (एक राष्ट्र, एक डिजिटल प्लेटफॉर्म) के तहत सभी कक्षाओं के स्कूली विद्यार्थियों के लिए वीडियो और ऑडियो कार्यक्रम प्रसारित कर रहा है। डिजिटल सामग्री तक सुसंगत पहुँच के रूप में, सी.आई.ई.टी.द्वारा निर्मित कार्यक्रम 12 डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों और 230 रेडियो स्टेशनों के माध्यम से प्रसारित किए जाते हैं। सी.आई.ई.टी. अन्य प्लेटफॉर्म पर कार्यक्रमों के प्रसारण की संभावनाओं की भी तलाश कर रहा है। प्रसारण में मुख्य रूप से पूरे शैक्षणिक वर्ष में पाठ्यक्रम के विस्तार के साथ तालमेल बनाने वाला पाठ्यक्रम समर्थन शामिल होगा, जो अंततः स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर कौशल, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के विकास में योगदान दे सकेगा। वर्ष 2023–24 की अवधि के दौरान, 'पी.एम. ई-विद्या' सहित विभिन्न शैक्षिक पहलों का समर्थन करने के लिए वीडियो कार्यक्रमों की एक विविध शृंखला विकसित की गई। कुल 1182 ऑडियो कार्यक्रम, 3568 वीडियो कार्यक्रम तैयार किए गए और 1089 लाइव सत्र आयोजित किए गए। कार्यशाला विधि के माध्यम से हिंदी में 16, उर्दू के लिए 20 और अंग्रेजी के लिए 20 स्क्रिप्ट विकसित की गईं। साथ ही, एक कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया।

इन कार्यक्रमों में कई तरह के विषय शामिल थे, जिनमें सांकेतिक भाषा ट्यूटोरियल, शैक्षणिक शब्द सूचियाँ, विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यचर्या संबंधी सहायता सामग्री और पृथ्वी प्रक्रियाओं और खोजे गए प्रश्नों जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित करने वाले इमर्सिव ए.आर.-वी.आर. अनुभव शामिल थे। पहुँच और जुड़ाव को बढ़ाने के लिए लॉन्च वीडियो और वृत्तचित्र जैसी प्रचार सामग्री भी विकसित की गई थी।

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल

पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के लिए डिजिटल संसाधन

कक्षा 9 से12 के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्यभूमिकाओं के विभिन्न विषयों पर वीडियो फिल्मों और एनिमेशन सहित डिजिटल संसाधन विकसित किए गए हैं। व्यावसायिक शिक्षा में कक्षा 9 से 12 के लिए विभिन्न कार्यभूमिकाओं के लगभग 400 वीडियो विकसित किए गए और व्यावसायिक विषयों के शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की ऑनलाइन पहुँच के लिए वेबसाइट पर अपलोड किए गए। कृषि, एपेरल मेड-अप और होम फर्निशिंग, दूरसंचार, प्लंबिंग, खुदरा, इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोटिव और स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्यभूमिकाओं पर वीडियो फिल्में विकसित की गईं।

पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के वेब अनुप्रयोग, सोशल मीडिया और नेटवर्क इंफ्रास्ट्रक्चर

संस्थान की वेबसाइट की विषय-वस्तु को निरंतर अद्यतन करने के लिए संस्थान की वेबसाइट के वेब ऐप्लीकेशन, सोशल मीडिया और नेटवर्क इंफ्रास्ट्रक्चर के डिजाइन, विकास और रखरखाव के लिए कार्यक्रम शुरू किया गया है। वेब एप्लीकेशन के विकास के लिए व्यवहार्यता अध्ययन और आवश्यकता विश्लेषण किया गया और व्यवहार्यता और आवश्यकता विश्लेषण के आधार पर विकास के लिए संगत वेब एप्लीकेशन का चयन किया गया। फ्रंट-एंड डिज़ाइन और विकास कोडिंग के साथ-साथ इंटरफेस का उपयोग करके किया गया था। सभी विकसित एप्लीकेशन को पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया था। संस्थान की वेबसाइट नवीनतम वेब

एप्लीकेशनों के साथ एक परस्पर संवादात्मक वेबसाइट है। ये ऐप्लिकेशन संस्थान की गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं। यह सूचना के लिए एक क्लियरिंग हाउस, व्यावसायिक शिक्षा और ऑनलाइन संसाधनों पर विचार-विमर्श के लिए एक मंच के रूप में कार्य करती है।

हस्तशिल्प और कालीन क्षेत्र के लिए फ्लिपबुक और पॉपुलराइजेशन फोल्डर

हस्तशिल्प और कालीन क्षेत्र के लिए एक फ्लिपबुक और पॉपुलराइजेशन फोल्डर विकसित किया गया है जिसका उद्देश्य हस्तशिल्प और कालीन क्षेत्र के साथ-साथ इसके विभिन्न कार्यभूमिकाओं के बारे में जागरूकता और लोकप्रिय बनाना, इस क्षेत्र में व्यावसायिक शिक्षा के बेहतर कार्यान्वयन के लिए हस्तशिल्प तथा कालीन के क्षेत्र में नवीनतम तकनीकी प्रगति के बारे में व्यावसायिक शिक्षकों को अद्यतन करना, इस क्षेत्र के तहत विभिन्न नौकरियों के अवसरों के बारे में लक्षित समूह को संवेदनशील बनाना और हस्तशिल्प और कालीन क्षेत्र की विभिन्न कार्यभूमिकाओं की पाठ्यपुस्तकों में फ्लिपबुक का क्यू.आर. कोड देना और निम्नलिखित 5 कार्यभूमिकाओं के लिए लोकप्रियकरण फोल्डर, अर्थात जूट उत्पाद कारीगर, जूट हथकरघा बुनकर, जूट स्क्रीन प्रिंटर, पारंपरिक हाथ की कढ़ाई और हैंड ब्लॉक प्रिंटर इंफॉर्मेशन को विकसित करना है। फोल्डरों में इसके क्षेत्र, रोजगार के अवसरों, वर्टिकल मोबिलिटी, करियर पाठ्यक्रम सामग्री आदि से संबंधित कार्यभूमिकाएँ शामिल की गई हैं। यह हितधारकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों और विशेषज्ञों के बीच जागरूकता पैदा करने और विभिन्न व्यावसायिक विषयों (कार्यभूमिकाओं) को लोकप्रिय बनाने का एक प्रभावी साधन होगा। यह प्रिंट मीडिया जागरूकता और लोकप्रियकरण का एक साधन साबित होगा, जो सूचना को बहुत प्रभावी तरीके से संप्रेषित कर सकता है। लोकप्रियकरण सामग्री को नेशनल क्रेडिट फ्रेमवर्क के साथ संरेखित करके विकसित किया गया है।

भविष्य कौशल से जुड़ा हरित प्रौद्योगिकी पार्क

संस्थान ने भावी कौशलों सहित पर्यावरण के दृष्टिकोण से हरित प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए इस कौशल को शामिल करते हुए हरित प्रौद्योगिकी पार्क के विकास पर दो साल की परियोजना शुरू की है। कार्यक्रम का उद्देश्य सौर ऊर्जा उत्पादन, सौर पंप, सौर चार्जिंग स्टेशन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आई.ओ.टी.) पर आधारित इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी, रिमोट-नियंत्रित सिंचाई प्रणाली के कार्यशील मॉडल का उपयोग करके एक छोटा-सा हरित पार्क विकसित करना है। संस्थान ने सौर ऊर्जा उत्पादन प्रणाली, सौर सिंचाई पंप प्रणाली और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आई.ओ.टी.) पर आधारित 3डी प्रिंटर प्रणाली स्थापित की है। विकसित मॉडल का प्रदर्शन किया जाएगा और संबंधित व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों, प्रशिक्षकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। भविष्य की हरित प्रौद्योगिकी के महत्व को बेहतर तरीके से समझने के लिए विद्यार्थियों और प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इससे प्रशिक्षकों और विद्यार्थियों को प्रशिक्षण के साथ-साथ प्रौद्योगिकी के उपयोग और विकास का व्यावहारिक अनुभव भी मिलेगा। स्थापित हरित प्रौद्योगिकी पर संबंधित प्रशिक्षण मॉड्यूल भी विकसित किए जाएँगे।

गृह विज्ञान और आतिथ्य प्रबंधन विभाग के अंतर्गत ए.एम.एच.एफ. कार्यक्षेत्र के लिए वर्चुअल टूर

परिधान उद्योग और उद्योग में उत्पाद विकास के विभिन्न चरणों का समग्र दृष्टिकोण देने के लिए, सभी प्रचालनों सहित, ए.एम.एच.एफ. क्षेत्र के लिए एक वर्चुअल टूर विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य परिधान क्षेत्र के औजारों, उपकरणों, प्रक्रियाओं और प्रचालनों के प्रदर्शन के लिए एक दृश्य-श्रव्य मंच प्रदान करना, डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करके परिधान क्षेत्र की विभिन्न कार्यभूमिकाओं की पाठ्यक्रम सामग्री का ज्ञान और सूचना प्रदान करना, परिधान क्षेत्र के आभासी दौरे के माध्यम से एपेरल मेड-अप और होम फर्निशिंग क्षेत्र के साथ-साथ इसकी विभिन्न कार्यभूमिकाओं को लोकप्रिय बनाना, परिधान क्षेत्र से संबंधित विभिन्न कार्यभूमिकाओं को कार्यान्वित करने के लिए

राज्यों और स्कूलों को अपनी प्रयोगशालाएँ स्थापित करने का विचार देना और परिधान क्षेत्र के अंतर्गत शामिल की गई विभिन्न गतिविधियों के लिए व्यावहारिक अनुभव का विचार देना है। वर्चुअल टूर में लैब के औजारों, उपकरणों और सामग्रियों का प्रदर्शन शामिल है। यह लैब (औजार, उपकरण और संचालन) को ऑडियो-विजुअल तरीके से प्रस्तुत करता है, जिससे भाषा संबंधी बाधाओं को दूर करते हुए लक्षित समूह इसे आसानी से समझ सकेगा। इस टूर में वस्त्र और परिधान क्षेत्र के अंतर्गत वर्गीकृत विभिन्न कार्यभूमिकाओं के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल के लेन-देन के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं और प्रचालन को भी प्रदर्शित किया जाता है। यह वर्चुअल टूर विशेष रूप से महामारी के परिदृश्य में ज्ञान और कौशल को डिजिटल रूप से संप्रेषित करने का एक प्रभावी तरीका साबित होगा। यह दूरी और समय की बाधाओं के बावजूद हमारे व्यापक लक्षित समूह तक पहुँचने में भी सहायक होगा, जो इसे लक्षित समूह के लिए बहुत ही लागत प्रभावी और सुविधाजनक बनाता है।

परिधान निर्माण और होम फर्निशिंग क्षेत्र पर वर्चुअल टूर 'यार्न टू फैब्रिक' के चित्र

यह वर्चुअल टूर सभी शिक्षण शैलियों के लोगों के प्रशिक्षण के लिए उपयोगी होगा। यह व्यावसायिक शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से लाभदायक होगा।

हब और स्पोक मॉडल के कार्यान्वयन के लिए राज्य योजना

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों, पॉलिटेक्निक, स्थानीय व्यवसायों, उद्योगों, अस्पतालों, कृषि फार्मों, स्थानीय कारीगरों और गैर-सरकारी संगठनों के साथ सहयोग करके कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए हब और स्पोक मॉडल पर एक दिशानिर्देश विकसित किया गया है। इसके तहत स्कूलों में हब और स्पोक मॉडल के तहत कौशल प्रयोगशालाएँ स्थापित की जानी हैं ताकि अन्य स्कूल भी इस सुविधा का उपयोग कर सकें। संस्थान द्वारा यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की वी.ई.टी. के संबंध में सिफारिशों के मद्देनजर पूर्वोत्तर राज्यों में हब और स्पोक मॉडल के कार्यान्वयन के लिए राज्य-विशिष्ट कार्य योजनाएँ विकसित करने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। हब और स्पोक मॉडल पर दिशानिर्देश सहयोग और नेटवर्किंग के माध्यम से अधिक पहुँच और संसाधन साझाकरण सुनिश्चित करेंगे। यह ज्ञान साझा करने, वी.ई.टी. वितरण में तेजी लाने और प्रशिक्षण पर लागत कम करने में उपयोगी है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

स्कूल और अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या के लिए ई-संसाधन

आर.आई.ई., अजमेर में स्टूडियो ने 'पी.एम. ई-विद्या' डिजिटल शिक्षा पहल के तहत सफलतापूर्वक काम किया। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कुल 41 ऑडियो और वीडियो कार्यक्रम रिकॉर्ड किए गए और बनाए गए। स्टूडियो ने राज्यों के लिए संसाधन केंद्रों के रूप में भी काम किया, जिससे उन्हें ई-संसाधन बनाने में मदद मिली। विविध विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ई-सामग्री और ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम विकसित करने में

राज्य संसाधन समूहों की क्षमताओं के संवर्धन करने के लिए 28 नवंबर से 02 दिसंबर, 2023 के दौरान पाँच दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम के अंतर्गत प्रभावी डिजिटल सामग्री निर्माण के लिए शिक्षकों को कौशल से युक्त करने पर ध्यान केंद्रित किया गया था। मल्टीमीडिया उपयोग, स्क्रिप्टिंग, प्रक्रियात्मक पहलू, भाषा-विशिष्ट चुनौतियाँ, सहयोगात्मक विकास, मुद्दे और चुनौतियाँ, उपकरण चयन, अनुदेशात्मक डिजाइन और आई.सी.टी. की भूमिका जैसे विषयों को शामिल करते हुए, इन सत्रों में शिक्षकों को आकर्षक और प्रभावशाली ई-सामग्री बनाने के लिए सशक्त बनाया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा में प्रौद्योगिकी को सहजता से एकीकृत करना और एक गतिशील और प्रभावी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देना था। इसका उद्देश्य ई-संसाधन तैयार करने के लिए स्टूडियो का उपयोग करना था, जिसे 'दीक्षा' पोर्टल पर साझा किया जाना था। इस सुविधा ने संस्थान द्वारा विभिन्न चरणों में राज्य कार्मिकों के लिए आयोजित विभिन्न सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आर.आई.ई., अजमेर का संस्थागत भंडार

इंस्टीट्यूशनल रिपोजिटरी (आई.आर.) के लिए संस्थान के अनुसंधान आउटपुट की व्यापक पहुँच और दृश्यता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दस्तावेजों को संस्थान की वेबसाइट पर अपलोड किया गया है। संस्थान के शोध प्रबंध, किताबें, शोध रिपोर्ट, आई.क्यू.ए.सी. रिपोर्ट और कार्यक्रम रिपोर्ट जैसे दस्तावेज दीर्घकालिक पहुँच के लिए आई.आर. पर अपलोड किए गए हैं।

मेटाडेटा अपडेट और नया कीवर्ड	230 से अधिक दस्तावेज
शोध प्रबंध, पुस्तकें और अन्य अपलोडिंग	60 से अधिक दस्तावेज
अपलोड की गई रिपोर्ट	260 से अधिक दस्तावेज
ओ.सी.आर. रन	8000 पृष्ठ से अधिक (शोध प्रबंध, जर्नल, रा.शै.अ.प्र.प. पुस्तकें और रिपोर्ट, प्रश्न पत्र (बी.एड. I II, एम.एड. I II, बी.एससी. बी.एड. I II III IV, बी.ए. बी.एड. I, II, III IV, डी.सी.जी.सी. आदि)
संपादन	15000 पृष्ठ से अधिक (शोध प्रबंध, जर्नल, पुस्तकें , पुस्तक चालान, दान की गई पुस्तकों की आई.क्यू.ए.सी. रिपोर्टिंग सूची के लिए तकनीकी रिपोर्ट, मासिक प्रयोक्ता सांख्यिकी आदि)
स्कैनिंग	15000 पृष्ठ (शोध प्रबंध, पुस्तकें, पुस्तक चालान, दान की गई पुस्तकों की आई.क्यू.ए.सी. रिपोर्टिंग सूची के लिए तकनीकी रिपोर्ट, मासिक प्रयोक्ता सांख्यिकी)

स्कूली शिक्षा कार्यक्रम को मजबूत करने और पर्यावरण जागरूकता पैदा करने के लिए स्कूली बच्चों को संवेदनशील बनाने हेतु विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा थीम पार्क

जैव विविधता को बढ़ाने और पर्यावरण आधारित शिक्षा कार्यक्रमों को समर्थन देने के लिए एक पर्यावरण थीम पार्क विकसित किया गया है। पार्क में विभिन्न पारिस्थितिकी तंत्र, एक औषधीय वृक्ष संरक्षण केंद्र, गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के लिए एक केंद्र, एक ग्रीनहाउस, जल और मृदा संरक्षण पहल और जैविक खेती शामिल हैं। औषधीय पौधों, खट्टे फल वाले पौधों और अन्य तरह के फल देने वाले पेड़ों के लिए समर्पित क्षेत्र स्थापित किए गए हैं, साथ ही विज्ञान पार्क गतिविधियों की मेजबानी के लिए एक हॉल भी बनाया गया है। विज्ञान और गणित पार्क के लिए,

कार्यशालाओं में पर्यावरण विज्ञान से संबंधित कई मॉडलों की पहचान की गई है और उन्हें स्थापित करने के लिए विकसित किया गया है। इस कार्यक्रम में पर्यावरण से संबंधित गतिविधियों के विकास हेतु कार्यशाला एवं 'प्रकृति मेला' का आयोजन किया गया। मेले में संस्थान एवं अजमेर शहर के स्थानीय स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

डी.एम.एस., आर.आई.ई., अजमेर में कला-समेकित शिक्षा

कार्यक्रम के उद्देश्यों के अनुसार, संस्थान में 31 जुलाई से 4 अगस्त, 2023 तक डी.एम.एस. शिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में एप्लाइड थिएटर, खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र, कहानी सुनाना, एन.ई.पी. 2020 के अनुसार कला समेकन, विषय-विशिष्ट कला समेकन, आइस ब्रेकर, मंथन पर सत्र आयोजित किए गए ताकि प्रतिभागियों को विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए कला को समेकित करने में प्रशिक्षित किया जा सके। दृश्य कला और प्रदर्शन कला पर विभिन्न गतिविधियाँ की गईं। कक्षाओं में विभिन्न कला-समेकित गतिविधियाँ आयोजित की गईं। अखबार, सूखे पत्ते, ढली हुई मिट्टी आदि के साथ कला-एकीकृत गतिविधि का प्रदर्शन किया गया। 'हम होंगे कामयाब' गीत को विद्यार्थियों ने हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और तमिल में गाया। प्राथमिक अनुभाग के विद्यार्थियों के साथ जटिल उच्चारण वाले शब्दों (टंग ट्विस्टर) और प्राथमिक रंगों पर गतिविधियाँ की गईं। स्तर 1 में, कहानी सुनाने और ऊँचाई मापने की गतिविधियाँ की गईं।

दृश्य कला के लिए स्कूल के प्री-प्राइमरी भवन की दीवारों पर 3300 वर्ग फीट क्षेत्र में कला-समेकित शिक्षण संसाधन के रूप में चित्रकारी की गई है। इसमें सुबह के अभिवादन के शब्द (राजस्थान की भाषा), अच्छी आदतें, ऊँचाई मापने का पैमाना, पंचतंत्र की कहानियाँ (सारस और केकड़े की कहानी), बाह्य खेल (स्किपिंग, नाव बनाना, व्यर्थ की सामग्री से खेलना, रेत के महल आदि), अंग्रेजी और हिंदी वर्णमाला आदि की पेंटिंग की गई है। विद्यार्थियों ने कला को विभिन्न विषयों के साथ समेकित करके कला-एकीकृत परियोजनाएँ और मॉडल तैयार किए। 12 दिसंबर, 2023 को कला-समेकित प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसमें कक्षा 6 से 12 तक के सभी वर्गों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने मॉडल और प्रोजेक्ट तैयार करने के लिए सूखे पत्ते, टूथपिक, रूई, मिट्टी के बर्तन, घड़ा, रंगोली के रंग, अखबार, ढली हुई मिट्टी, व्यर्थ के कपड़ों आदि का इस्तेमाल किया। विद्यार्थियों ने इस सामग्री का उपयोग करके मांडना, वरली कला आदि की विभिन्न कलाकृतियाँ बनाईं। ऐक्रेलिक रंगों का उपयोग करके घड़े पर महाभारत और रामायण की कहानी दिखाई गई। अखबारों को पक्षियों, जानवरों, पेड़ों, फूलों आदि जैसे विभिन्न आकारों में काटा गया और फिर अलग-अलग शब्दों को प्रमुखता से दिखाया गया। साइबर धमकियों जैसे सामाजिक मुद्दों पर रंगोली, विभिन्न नृत्य कलाएँ आदि बनाई गईं।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

आर.आई.ई., भोपाल का संस्थागत भंडार

भोपाल में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) का संस्थागत संग्रह एक डिजिटल संग्रह है जिसे संस्थान के विद्वानों के काम को एकत्र करने, संरक्षित करने और प्रसारित करने के लिए तैयार किया गया है। इसमें संकाय और विद्यार्थियों द्वारा तैयार किए गए शोध पत्र, थीसिस, पी.ए.सी. रिपोर्ट, शोध प्रबंध, सम्मेलन की कार्यवाही और अन्य शैक्षणिक कार्य शामिल हैं। इस संग्रह का उद्देश्य आर.आई.ई., भोपाल के शोध योगदान की दृश्यता और पहुँच को बढ़ाना है, जिससे शैक्षिक विकास में सहायता मिलेगी। संग्रह को 600 शोध प्रबंध और पी.ए.सी. रिपोर्ट से समृद्ध किया गया है। ये दस्तावेज अब शैक्षणिक और शोध उद्देश्यों के लिए सुलभ हैं, जो विद्यार्थियों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं को मूल्यवान अंतर्दृष्टि और डेटा प्रदान करते हैं। अपने कोष का विस्तार करने के अलावा, आर.आई.ई., भोपाल ने पुस्तकालय वेबसाइट https://riebhopallibrary.joomla.com से जुड़ा एक अमेजन ए.डब्ल्यू.एस. सर्वर

स्थापित करके अपनी तकनीकी मूल संरचना को भी उन्नत किया है। यह सर्वर अपलोड किए गए शैक्षणिक कार्यों के कुशल भंडारण, प्रबंधन और प्रसार का समर्थन करता है, जिससे इन संसाधनों तक मजबूत और विश्वसनीय पहुँच सुनिश्चित होती है।

आर.आई.ई., भोपाल में कला और शिल्प के लिए संसाधन केंद्र

इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों, शिक्षकों, अध्यापक प्रशिक्षकों को कला और शिल्प की खोज, अनुभव और समझ के लिए अवसर और संसाधन उपलब्ध कराना; स्कूलों, अध्यापक शिक्षा संस्थानों में कला और संस्कृति को एकीकृत करना और सांस्कृतिक संस्थानों के माध्यम से कला में शिक्षा को एकीकृत करना; स्थानीय और क्षेत्रीय कला रूपों को औपचारिक शिक्षा प्रणाली में लाकर उन्हें बढ़ावा देना; देश के विभिन्न भागों में प्रचलित विभिन्न कला रूपों का दस्तावेजीकरण करना और विद्यार्थियों तक उनकी पहुँच बनाना है। इसका विशिष्ट उद्देश्य भारत के पश्चिमी क्षेत्र के विभिन्न कला रूपों के साथ कला संसाधन केंद्र विकसित करना था। इसमें भारत के पश्चिमी क्षेत्र के आदिवासी समुदायों गोंड, बैगा, भारिया, भील, कोरकू, कोल और बसदेवा से संबंधित नृत्य और पारंपरिक अनुष्ठानों के साथ 50 संगीत वाद्ययंत्रों का दस्तावेजीकरण किया गया।

एन.ई.पी. 2020 की अनुशंसा के आधार पर भाषा संसाधन केंद्र (एल.आर.सी.) और राज्य/जिला स्तर पर संचार प्रकोष्ठ/एल.आर.सी. स्थापित करने के लिए महाराष्ट्र के के.आर.पी. का प्रशिक्षण

इस कार्यक्रम का उद्देश्य एन.ई.पी. 2020 की अनुशंसा के अनुसार मौजूदा भाषा प्रयोगशाला को भाषा संसाधन केंद्र में विकसित करना; एल.आर.सी. के लिए शिक्षण प्रबंधन प्रणाली तैयार करना; विद्यार्थियों के लिए इसके उचित और प्रभावी उपयोग के लिए एल.आर.सी. के उपयोग की एक नियमावली तैयार करना; संस्थान के सभी पाठ्यक्रमों के पूर्व-सेवा शिक्षकों को एल.आर.सी. में प्रशिक्षण की सुविधा का विस्तार करना; राज्य/जिला स्तर पर संचार प्रकोष्ठ/एल.आर.सी. स्थापित करने के लिए महाराष्ट्र के के.आर.पी. को प्रशिक्षित करना है। भाषा शिक्षण को मजेदार, आकर्षक और प्रभावी बनाने के लिए एक पुस्तिका तैयार की गई है। इस पुस्तिका में विभिन्न प्रकार के भाषा खेलों की खोज की जाती है जिनका उपयोग कक्षाओं के अंदर और बाहर विद्यार्थियों को भाषा कौशल सीखने और अभ्यास करने में मदद करने के लिए किया जा सकता है।

एस.टी.ई.ए.एम. पार्क और मौसम स्टेशन

एस.टी.ई.ए.एम. (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, कला और गणित) पार्क का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, कला और गणित के बीच एकीकरण पर संबंध स्थापित करने में सक्षम बनाने के लिए एस.टी.ई.ए.एम. सीखने का माहौल प्रदान करना है। यह विद्यार्थियों को विभिन्न वैज्ञानिक अवधारणाओं को सीखने और उनसे परिचित होने के लिए एक प्राकृतिक और मुक्त वातावरण प्रदान करता है। आई.टी.आई. विशेषज्ञों की सहायता से एस.टी.ई.ए.एम. पार्क में छह नए मॉडल बनाए गए और उन्हें स्थापित किया गया। पिछले शैक्षणिक वर्ष में लगभग 200 विद्यार्थियों और 100 शिक्षकों ने एस.टी.ई.ए.एम. पार्क का दौरा किया। उन्होंने पाया कि यह जगह नवाचारी है जो शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच तैयार सोच को प्रभावी तरीके से बढ़ावा देती है। एस.टी.ई.ए.एम. पार्क की गतिविधियों के एक भाग के रूप में, हमने स्कूली विद्यार्थियों के लिए डिजाइन थिंकिंग कार्यशाला भी शुरू की है। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को समस्या समाधान दृष्टिकोण के रूप में डिजाइन थिंकिंग की अवधारणा से परिचित करवाना तथा समस्या समाधान और नवाचार में इसकी भूमिका से परिचित करवाना था। इस कार्यशाला में विभिन्न सरकारी स्कूलों के लगभग 250 विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर के सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के लिए शैक्षिक संसाधन केंद्र

विभिन्न शैक्षणिक चुनौतियों का समाधान करने तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री और प्रयोगों के माध्यम से सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन शिक्षकों में आलोचनात्मक सोच और निर्णय लेने के कौशल को बढ़ावा देने के लिए एक अद्वितीय संसाधन कक्ष विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य एक लचीला इंटरफेस प्रदान करके शिक्षण तकनीकों में नवाचार के लिए अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा देना है, जहाँ प्रतिभागी विभिन्न शिक्षण शैलियों और योग्यताओं वाले विद्यार्थियों को आकर्षित करने के लिए प्रदर्शन, मॉडल-निर्माण और प्रयोग डिजाइन कौशल विकसित कर सकते हैं। यह मनोवैज्ञानिक-शैक्षणिक एकीकरण मॉडल के उपयोग के साथ तालमेल में है, जहाँ विद्यार्थी सीखने के संसाधनों का चयन, संलग्नता, विश्लेषण और चिंतन कर सकते हैं। यह भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित, जीवन विज्ञान और भूगोल के क्षेत्रों में स्वदेशी शिक्षण-अधिगम चार्ट, मॉडल, नमूने, सामग्री, प्रोटोटाइप, सॉफ्टवेयर और उपकरणों का एक विविध संग्रह प्रदर्शित करता है, जिसे दर्शकों के बीच प्रयोगों से जुड़ने और वैज्ञानिक जाँच की भावना को बढ़ावा देने के लिए तैयार किया गया है। संसाधन कक्ष में रखे गए सभी उपकरण और सहायक उपकरण पेशेवर रूप से तैयार किए गए हैं, नैतिक और सुरक्षा नियमों को ध्यान में रखते हुए। यह मंच विभिन्न विषयों के शिक्षकों को संभावित अंतःविषय परियोजनाओं पर चर्चा और सहयोग करने के अवसर भी प्रदान करता है जो विद्यार्थियों को विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर का संस्थागत भंडार (आई.आर.)

संस्थागत भंडार (आई.आर.) किसी संस्थान के बौद्धिक उत्पादन की डिजिटल प्रतियों को एकत्रित करने, संरक्षित करने और प्रसारित करने के लिए एक ऑनलाइन संग्रह है। कार्यक्रम का उद्देश्य संस्थान के बौद्धिक उत्पादन जैसे संस्थान की पी.ए.सी. रिपोर्ट, ई.आर.आई.सी. रिपोर्ट, छात्र शोध प्रबंध, थीसिस, संकाय प्रकाशन, सम्मेलन कार्यवाही, विश्वविद्यालय प्रश्न पत्र आदि को व्यापक और दीर्घकालिक पहुँच के लिए संरक्षित करना है। संस्थागत रिपोजिटरी परियोजना का विकास वर्ष 2019 में शुरू किया गया था, जिसे पर्याप्त हार्डवेयर और मानव संसाधनों द्वारा समर्थित डीस्पेस सॉफ्टवेयर का उपयोग करके विकसित किया गया था। वर्तमान सत्र में, स्कैनिंग, ओ.सी.आर. जाँच, मेटाडेटा निर्माण आदि की प्रक्रिया द्वारा लगभग 247 नए दस्तावेज आई.आर. में अपलोड किए गए थे और अब तक 1220 से अधिक दस्तावेज रिपोजिटरी पर अपलोड किए जा चुके हैं। संस्थागत रिपोजिटरी को संस्थान के इंट्रानेट से जोड़ा गया है और कैंपस के अंदर प्रयोक्ताओं के लिए लैन नेटवर्क के माध्यम से सुलभ बनाया गया है। प्रयोक्ता http://172.30.6.169:8080/jspui/ लिंक के माध्यम से संस्थागत रिपोजिटरी (आई.आर.) तक पहुँच सकते हैं और पुस्तकालय की वेबसाइट https://library.riebbs.ac.in के माध्यम से भी पहुँच सकते हैं।

डी.एम.एस. पुस्तकालय, आर.आई.ई., भुवनेश्वर का स्वचालन

इस कार्यक्रम का उद्देश्य डी.एम.एस. पुस्तकालय के संसाधनों और सेवाओं को स्वचालित करके इसे उन्नत करना है, जिसमें बुनियादी पुस्तकालय प्रक्रियाओं का स्वचालन, इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस, ओ.पी.एसी. का निर्माण और रा.शै.अ.प्र.प. के सभी पुस्तकालयों को आपस में जोड़ने के संदर्भ में रा.शै.अ.प्र.प. की यूनियन कैटलॉग तैयार करने के लिए पुस्तकों के ग्रंथसूची डेटा को साझा करना शामिल है। इसके अंतर्गत आवश्यक हार्डवेयर खरीदा गया और पुस्तकालय में स्थापित किया गया, जिसमें 4 डेस्कटॉप कंप्यूटर शामिल हैं जिनमें हाई-एंड कंप्यूटर शामिल है जिसे सर्वर के रूप में उपयोग किया जा सकता है और एक कियोस्क ओ.पी.एसी. के लिए है। इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस कोहा

ओपन-सोर्स एकीकृत पुस्तकालय सॉफ्टवेयर का उपयोग करके बनाया गया है और अब तक, लगभग 20,000 पुस्तकों की ग्रंथसूची को डेटाबेस में दर्ज किया गया है जो अब ओ.पी.ए.सी. के माध्यम से सुलभ है।

संग्रह विकास द्वारा पुस्तकालय को सुदृढ़ बनाना

वर्ष 2023-24 की अवधि के दौरान पुस्तकालय के संग्रह में कुल 398 नई पुस्तकें जोड़ी गईं, जिनमें से 308 खरीदी गईं और 90 उपहार में दी गईं। उपहार में दी गई पुस्तकें अधिकतर आर.आई.ई., भुवनेश्वर के पूर्व छात्र संघ और रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशन द्वारा दी गईं। इस अवधि के दौरान कुल 60 शोध या वैज्ञानिक पत्रिकाओं की सदस्यता ली गई। ई-संसाधनों तक पहुँच के लिए इनफ्लिबनेट और डेलनेट की एन-लिस्ट परियोजना की सदस्यता का नवीनीकरण किया गया। गुणवत्तापूर्ण शोध प्रकाशनों की सुविधा के लिए साहित्यिक चोरी की जाँच के लिए टर्निटिन सिमिलरिटी सॉफ्टवेयर की सदस्यता ली गई।

आर.आई.ई., भुवनेश्वर द्वारा चयनित विषयों और उप-विषयों पर मॉड्यूल लेखन, निम्नलिखित चार मॉड्यूलों का लेखन

बुनियादी स्तर के बच्चों के लिए 'स्वच्छता' थीम के अंतर्गत 'स्वच्छ और हरित — हर तरह से अपशिष्ट पृथक्करण सीखना' शीर्षक से मॉड्यूल विकसित किया गया है। यह मॉड्यूल बच्चों के मन को स्वच्छता से परिचित करवाता है। यह कचरे के विभिन्न प्रकारों के बारे में विस्तार से बताता है— जैविक (खाद्य अवशेष, पत्ते आदि), पुनर्चक्रणीय (कागज़, प्लास्टिक, काँच आदि) और गैर-पुनर्चक्रणीय (ए स्किट: वासु, द स्वच्छता विजार्ड) 3 आर-न्यूनतम उपयोग (रिड्यूस), पुन: उपयोग (रीयूज) और पुनर्चक्रण (रिसाइकिल) की अवधारणा को पेश किया गया और इसमें दादी और पोती की बातचीत से यह समझाने का प्रयास किया गया कि पुनर्चक्रण से पहले संभव हो तो न्यूनतम उपयोग और पुन: उपयोग के माध्यम से कचरे को कम किया जाए। अंत में, बहुविकल्पीय प्रश्नों (एम.सी.क्यू.) और गेम आधारित आकलन का उपयोग करके मूल्यांकन किया जाता है।

माध्यमिक स्तर 1 के विद्याथियों के लिए मॉड्यूल 'जी 20 हमारा अतीत — आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने वाला मार्ग' में आत्मनिर्भरता की अवधारणा का परिचय दिया गया है और प्रमुख नेतृत्वकर्ताओं के उपाख्यानों और प्रकरण अध्ययन के माध्यम से आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता और महत्व को स्थापित किया जाता है। यह मॉड्यूल विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए तैयार किया गया है जो आत्मनिर्भर होने का महत्व समझकर आत्मनिर्भर बनना चाहते हैं। मॉड्यूल में चिंतनशील कार्य और गतिविधि-आधारित मूल्यांकन शामिल हैं जो किसी को आत्मनिर्भरता के साथ-साथ अन्योन्याश्रय कौशल से परिचित होने में सहायता करता है।

माध्यमिक स्तर 2 के विद्यार्थियों के लिए 'एन.ई.पी. 2020' थीम के अंतर्गत एन.ई.पी. 2020 में भाषा शिक्षा को समझने पर एक मॉड्यूल है, जो 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) की परिवर्तनकारी शक्ति को प्रकट करता है, जिसमें भारत में शिक्षा के परिदृश्य को नया आकार देने के लिए एक रूपरेखा तैयार की गई है। इस प्रभावशाली दस्तावेज में एन.ई.पी. 2020, इसकी महत्वाकांक्षाएँ, उत्पत्ति और विद्यार्थियों व शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र पर गहरा प्रभाव, शास्त्रीय भाषाओं और उनके महत्व की जाँच करके भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और शैक्षिक व्यवस्था, भारत की अनूठी भाषा संबंधी परंपरा और जैविक बहुलवाद की अवधारणा, जहाँ भाषाएँ मिश्रित होती हैं, एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं और देश की विविध संस्कृति और विरासत को प्रतिबिंबित करती हैं, को मॉड्यूल में शामिल किया गया है। मातृभाषा में शिक्षा का महत्व और त्रिभाषा फार्मूले की ऐतिहासिक प्रगति यह दर्शाती है कि कैसे एन.ई.पी. 2020 में भारत की भाषा संबंधी विविधता और समृद्ध विरासत का सम्मान करने के लिए भाषा शिक्षा को नया रूप दिया जा रहा है।

‘एन.ई.पी. 2020’ थीम के तहत समानता और समावेशिता की ओर एक यात्रा पर मॉड्यूल बुनियादी स्तर के बच्चों के लिए तैयार किया गया है। यह लेख उन बच्चों के बारे में है जो अपनी सीखने की क्षमता, बोली जाने वाली भाषा, रहने के स्थान और अन्य स्थितियों के संदर्भ में भिन्न हैं, जो उनके लिए समाज में उत्पादक गतिविधियों में शामिल होना मुश्किल बनाते हैं। यह विविधता, स्कूलों और कक्षाओं में उनकी चुनौतियों और विभिन्न स्थितियों में उनकी विशेष आवश्यकताओं को समझने के लिए लिखा गया है। चित्रात्मक प्रदर्शन, कविताएँ, लघु कथाएँ, वार्तालाप, प्रकरण चित्रण और गतिविधियाँ पाठक को हमारे देश में कुछ बच्चों की दुर्दशा और उनके लिए समान अवसर प्रदान करने के तरीकों को जानने में मदद करने के लिए शामिल की गई हैं। समावेशिता का समर्थन करने के लिए समान अवसर प्रदान करने हेतु सरकार की नीतियाँ और योजनाएँ दी गई हैं।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु

शैक्षिक मीडिया संसाधन

इस परियोजना की शुरुआत डिजिटल संसाधनों, परस्पर क्रिया मल्टीमीडिया ग्राफिक्स, एनिमेशन आदि सहित वीडियो कार्यक्रमों के लिए सहायक संसाधनों को विकसित करने, सी.आई.ई.टी और अन्य शैक्षिक एजेंसियों के साथ उत्पादित मीडिया संसाधनों की समीक्षा करने, पी.एम. ई-विद्या, पॉडकास्ट, आई रेडियो, वेब पोर्टल (दीक्षा), यूट्यूब, मोबाइल ऐप, सामुदायिक रेडियो, ज्ञानवाणी, आकाशवाणी आदि के तहत उपलब्ध डी.टी.एच. चैनलों के सहयोग से प्रसारण के माध्यम से इन ऑडियो/वीडियो संसाधनों का प्रसार करने और शैक्षिक ऑडियो/वीडियो संसाधनों के विकास और प्रसार के माध्यम से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने में सहायता करने के उद्देश्यों के साथ की गई थी। लक्षित समूह में स्कूल शिक्षक, विद्यार्थी, अध्यापक प्रशिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षु, अभिभावक, शैक्षिक प्रशासक, सी.डब्ल्यू.एस.एन., समुदाय के सदस्य आदि शामिल थे। कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, 23 से 25 नवंबर, 2023 तक वीडियो कार्यक्रमों के लिए सहायक संसाधन विकसित करने के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई थी। उत्पादित मीडिया को मौजूदा डी.टी.एच. चैनलों के माध्यम से प्रसारित किया जाता है और रा.शै.अ.प्र.प. के आधिकारिक यूट्यूब चैनलों के साथ-साथ एन.आर.ओ.ई.आर. रिपोजिटरी का भी उपयोग किया जाता है। निर्मित संसाधनों को सत्यापन के बाद एन.आर.ओ.ई.आर. और ई-पाठशाला पर उपलब्ध कराया जाता है।

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), उमियम

पूर्वोत्तर क्षेत्र के खिलौना-आधारित शिक्षण पर ई-सामग्री

इस विकास कार्यक्रम का उद्देश्य डिजिटल प्रारूप में पूर्वोत्तर क्षेत्र के खिलौना-आधारित शिक्षण को प्रलेखित करना; खिलौना-आधारित शिक्षण के माध्यम से शिक्षण-अधिगम में अनुदेशात्मक सामग्री के रूप में दृश्य-श्रव्य और आई.सी.टी. उपकरणों को एकीकृत करना; स्कूली शिक्षा में पूर्वोत्तर राज्यों के स्वदेशी खिलौनों और खेलों की शिक्षा को सुदृढ़ और सुविधाजनक बनाना और शिक्षकों को कक्षा में खिलौना-आधारित शिक्षण लागू करने में सहायता करना है। सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग सभी आठ पूर्वोत्तर राज्यों से स्वदेशी खिलौनों और खेलों के संग्रह के लिए किया गया था। फिर ई-सामग्री के लिए स्क्रिप्ट के विकास (संदर्भीकरण) पर कार्यशाला आयोजित की गई। पूर्वोत्तर क्षेत्र के संदर्भ में खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र पर स्क्रिप्ट की समीक्षा और अंतिम रूप देने पर कार्यशाला आयोजित की गई। डिजिटल प्रारूप में पूर्वोत्तर क्षेत्र के खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र का दस्तावेजीकरण किया गया। ई-सामग्री की समीक्षा और अंतिम रूप देने की कार्यशाला आयोजित की गई। ई-सामग्री के लिए जो स्क्रिप्ट

विकसित की गई हैं, वे हैं— (क) वन-लेग्ड रेस – यह खेल बच्चों को शरीर और शारीरिक गति को संतुलित करने, एकल पेशीय कौशल विकसित करने में सहायता प्रदान करता है। खेल में इसके साथ, हमने अंत में एक प्रश्न जोड़ा, जिससे बच्चे फलों और आकृतियों को पहचानना सीख सकते हैं। उन्हें नाम दें और उनकी वर्तनी लिखें। इस खेल के माध्यम से शिक्षक अपने विषय को एक ही समय में रोचक और गतिशील बना सकते हैं। (ख) खेल के माध्यम से विभिन्न प्रकार की ध्वनियों को सीखना – इस खेल के माध्यम से, बच्चे एक ही तरह के वाद्ययंत्रों के विभिन्न नामों के बारे में जानते हैं जो पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न राज्यों में उपयोग किए जाते हैं। बच्चे संगीत वाद्ययंत्र बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली प्राकृतिक वस्तुओं जैसे लकड़ी, बाँस आदि की सराहना करना भी सीखते हैं। (ग) संतुलन का खेल – इस खेल को बच्चों के शारीरिक-पेशीय विकास को बढ़ाने के लिए आनंददायक खेल के माध्यम से तैयार किया गया है, साथ ही दोस्तों के साथ खेलने का आनंद भी प्रदान किया गया है। इस खेल के माध्यम से हमने सीखा कि कक्षा में बच्चों को पढ़ाने के बजाय, हम एक ऐसा खेल भी बना सकते हैं जिसमें बच्चे खेल-खेल में ही विभिन्न कौशल विकसित कर सकें। (घ) हॉपस्कॉच और मार्बल – इन दो खेलों के माध्यम से शारीरिक योग्यता बढ़ेगी। बच्चे संख्याएँ और अलग-अलग रंग आदि भी सीख रहे होते हैं। पेशीय विकास जिसमें सकल पेशीय कौशल और उपयुक्त पेशीय कौशल शामिल हैं, विद्यार्थियों के बीच भी विकसित किया जाएगा। (ङ) माव प्वाइंट/स्टैकिंग स्टोन्स – यह खेल बच्चों को उनके पेशीय कौशल विकास, शारीरिक विकास, सामाजिक कौशल, सामूहिक कार्य, दृढ़ता, समन्वय के साथ-साथ सहयोग में सुधार करने में सहायता करता है। (च) शब्द तोड़ो – इस खेल में शिक्षक ने एक शब्द दिया और बच्चों को उस शब्द से कई शब्द बनाने थे। इसलिए प्रत्येक समूह को शब्द तोड़ने और शब्द के अंदर के अक्षरों का उपयोग करके किसी फल या पौधे का नाम बनाने का अवसर मिला। यह खेल बच्चों की तुरंत सोचने की क्षमता और निर्णय लेने की शक्ति को बढ़ाने के लिए है। इससे समूह में काम करने की भावना बढ़ती है और उन्हें नए शब्द और उनकी वर्तनी सीखने में सहायता मिलती है, साथ ही पूर्वोत्तर के अलग-अलग परिधानों की समझ भी विकसित होती है। (छ) फलों और बाँस की छड़ियों को छाँटना – इस खेल का मुख्य उद्देश्य वस्तुओं को एक ही श्रेणी में छाँटना है। यहाँ बच्चों को पूर्वोत्तर क्षेत्र के स्वदेशी फलों की पहचान करने और उनके बारे में जानने के लिए स्थानीय फल दिए गए और साथ ही अलग-अलग आकार की बाँस की छड़ियाँ भी दी गईं। लेकिन इस खेल को दोस्तों के साथ खेलने का आनंद लेने के साथ-साथ सीखने का अनुभव करने के लिए तैयार किया गया है। इसलिए इस खेल में बच्चों ने पूर्वोत्तर के विभिन्न प्रकार के स्वदेशी फलों के बारे में जाना और उन्होंने विभिन्न आकारों के बारे में भी जाना। इस खेल के माध्यम से हम आशा करते हैं कि बच्चे मौसमी फलों को खाएँगे और विभिन्न प्रकार के स्वाद और बनावट का अनुभव करेंगे। (ज) थोह शिथि शा इ परलोक – इस खेल में सभी बच्चों को एक गोले में बैठना होता है। फिर उनमें से एक को रूमाल लेकर सबके पीछे गोलाकार में चलना होता है और फिर उसे चुपचाप किसी एक बच्चे के पीछे रूमाल रखना होता है। यदि उस बच्चे को यह पता चल जाता है कि रूमाल उसके पीछे है और यदि वह उस व्यक्ति का पीछा कर सकता है और उसे थपथपा सकता है तो वह अभी भी खेल में रह सकता है लेकिन यदि बच्चे को यह पता नहीं चलता है कि रूमाल उसके पीछे है और वह बच्चा गोले का एक चक्कर लगाता है और उस व्यक्ति तक पहुँचता है और उसकी पीठ पर थपथपाता है तो वह खेल से बाहर हो जाएगा। लेकिन यदि वह खेल से बाहर होने के बाद भी खेल में बने रहना चाहता है तो उसे शिक्षक द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर देना होगा। यदि वह सही उत्तर देता है तो वह खेल में बना रहेगा, अन्यथा वह बाहर हो जाएगा। यह खेल बच्चों को उनके पेशीय कौशल, एकाग्रता विकसित करने और उनकी सतर्कता में सुधार करने में सहायता करेगा और इस खेल में शिक्षक द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों से वे वर्तनी, गणित आदि सीख सकते हैं।

बहुभाषी और बहु-कक्षीय व्यवस्था में भाषा निर्देश शिक्षण पर शिक्षक हस्तपुस्तिका का विकास

यह कार्यक्रम त्रिपुरा की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किया गया था, जिसमें देशभर के शिक्षकों की विशेषज्ञता का उपयोग किया गया था। पुस्तिका में शिक्षा और बहुभाषावाद के माध्यम से मातृभाषा की मूलभूत अवधारणाओं को शामिल करने वाले छह खंड शामिल हैं। यह पुस्तिका प्रथम भाषा (स्तर 1) शिक्षणशास्त्र के लिए शिक्षण सामग्री और संसाधन बनाने पर मार्गदर्शन भी प्रदान करती है। इसमें 'त्रिपुरा टॉक्स' बहुभाषी हब जैसे तकनीकी उपकरण भी शामिल हैं, जो एक ऐप प्रोटोटाइप है। यह दर्शाता है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म बहुभाषी समर्थन को कैसे मजबूत कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, पुस्तिका में शिक्षकों के लिए तैयार की गई नमूना व्यावहारिक गतिविधियाँ शामिल हैं। प्रशिक्षुओं से प्राप्त प्रतिक्रिया से पता चलता है कि उन्होंने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान पुस्तिका का सक्रिय रूप से उपयोग किया है।

स्कूली विषयों को पढ़ाने में उपयोग के लिए मणिपुर के पारंपरिक खिलौनों और खेलों का दस्तावेजीकरण

स्कूल के विषयों को पढ़ाने में उपयोग के लिए मणिपुर के पारंपरिक खिलौनों और खेलों का दस्तावेजीकरण तीन चरणों में विकसित किया गया था। इस कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य मणिपुर के पारंपरिक खिलौनों और खेलों की पहचान करना, निर्माण या खेल में खिलौनों और खेलों से जुड़ी शैक्षिक अवधारणाओं का मानचित्रण करना और स्कूली विषयों को पढ़ाने में खिलौनों और खेलों का उपयोग करना था। पहली कार्यशाला 21 से 25 अगस्त, 2023 तक पाँच दिनों के लिए मणिपुर सरकार के एस.सी.ई.आर.टी., इंफाल में आयोजित की गई थी। कार्यशाला में पारंपरिक खिलौना निर्माता, अध्यापक प्रशिक्षक, विषय विशेषज्ञ आदि सहित 18 विशेषज्ञ शामिल हुए। कार्यशाला में 21 पारंपरिक खिलौनों और 18 खेलों की पहचान की गई और आठ खिलौनों के लिए अवधारणा मानचित्रण किया गया। शेष खिलौनों और खेलों में शामिल शैक्षिक अवधारणाओं का मानचित्रण और शैक्षणिक दृष्टिकोण का विवरण लिखने का काम दूसरी कार्यशाला में किया गया, जो 29 जनवरी से 2 फरवरी, 2024 तक पाँच दिनों के लिए एन.ई.आर.आई.ई. में आयोजित की गई थी। कार्यशाला में कुल 14 संसाधन व्यक्ति शामिल थे। दस्तावेजों को अंतिम रूप देने के लिए तीसरी कार्यशाला 9 से 11 मार्च, 2024 तक तीन दिनों के लिए आयोजित की गई थी। कार्यशाला में केवल तीन संसाधन व्यक्तियों ने भाग लिया, जिसके दौरान मणिपुर के चुने गए खिलौनों और खेलों के उपयोग के साथ शैक्षणिक दृष्टिकोणों का लेखन किया गया और दस्तावेज का एक मसौदा तैयार किया गया। पहचाने गए खिलौनों में से कुछ हैं— लाईफाडिबी, खुंग, नुंगशिट-मापी, नाओरी, नंथाबिगरी और पोकलाओबी, जबकि कुछ खेल हैं— चेइटेक्कोटपी, मरुमकोनबी, लाईधीशन्नाबी, चाक-थोंगबिशन्नाबा, हिडिंग लालोनबी, केई-येन, उराओबी, फूर-कोइबी, अमंगबी आदि। अधिकांश खिलौने और खेल भाषा, विज्ञान और गणित जैसे स्कूल विषयों के शिक्षण में उपयोगी पाए गए हैं, जबकि कुछ खिलौने और खेल सामाजिक विज्ञान के शिक्षण से जुड़े हो सकते हैं और अधिकांश खेल सामाजिक मूल्यों को प्रदान करने में प्रभावी पाए गए हैं।

कार्यक्रमों की ट्रैकिंग और उनका डेटाबेस बनाने तथा उनके साझाकरण एवं प्रतिक्रिया तंत्र के लिए गतिशील वेबसाइट

इसका उद्देश्य रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा संचालित सभी कार्यक्रमों पर नजर रखने के लिए एक तंत्र बनाना; सभी हितधारकों के लिए एक कार्यक्रम के बारे में साझाकरण और प्रतिक्रिया तंत्र बनाना; रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा संचालित कार्यक्रमों का ई-डेटाबेस बनाना; राज्यों द्वारा संचालित कार्यक्रमों का विवरण अपलोड करने के लिए राज्यों को एक मंच प्रदान करना और वेबसाइट का रखरखाव और संचालन करना था। गतिशील वेबसाइट एन.ई.आर.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा संचालित कार्यक्रमों पर नजर रखने में मदद कर रही है। वेब एप्लीकेशन का प्रभावी तरीके से उपयोग करने के लिए एक मैनुअल भी तैयार किया गया है।

5. क्षमता निर्माण कार्यक्रम

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा पाठ्यक्रम संबंधी घोषणाओं और वास्तविक दुनिया के शैक्षिक अभ्यासों के बीच के अंतराल को मिटाने हेतु शैक्षिक हितधारकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। परिषद् ने 'निष्ठा' कार्यक्रम का आयोजन किया, जो प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों और स्कूल प्रमुखों की क्षमता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से की गई एक व्यापक ऑनलाइन पहल है। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों को बढ़ाने के लिए शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षणशास्त्र पर बल दिया गया। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा निष्ठा के साथ-साथ स्कूल और शिक्षक शिक्षा के सभी स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए मास्टर प्रशिक्षकों और प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण और अभिविन्यास सत्र भी आयोजित किए।

परिषद् ने वर्ष 2023–24 में विभिन्न प्रक्षेत्रों में शिक्षकों के लिए विभिन्न तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए। इनमें मास्टर प्रशिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यशाला, साक्षरता और संख्यात्मकता में शिक्षकों के लिए सहायता और सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों को लक्षित करने वाली समावेशी शिक्षा पहलें शामिल हैं। प्रशिक्षण में एन.ई.पी. 2020, एन.सी.एफ.–एफ.एस. और *जादुई पिटारा* जैसी नई शैक्षिक सामग्री के कार्यान्वयन के साथ-साथ कला-एकीकृत और अनुभवात्मक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया। कार्यशालाओं में शैक्षिक किट, व्यावसायिक शिक्षा, विज्ञान, गणित और बहुभाषी-बहुसांस्कृतिक शिक्षा के उपयोग को भी शामिल किया गया। रा.शै.अ.प्र.प. ने पाठ्यक्रम निर्माणकर्ता, स्कूल के लाइब्रेरियन और मार्गदर्शन परामर्शदाताओं के लिए विशेष प्रशिक्षण भी प्रदान किया। मदरसों में प्रधानाचार्य के प्रबंधकीय कौशल को बढ़ाने और शिक्षा में आई.सी.टी. के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए भी पहलें की गईं। इस व्यापक प्रयास का उद्देश्य देशभर के शिक्षकों और प्रशिक्षकों के व्यावसायिक विकास का समर्थन करते हुए शिक्षा की गुणवत्ता को ऊपर उठाना था।

प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

बुनियादी स्तर पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए अभिविन्यास सह-प्रशिक्षण कार्यशाला

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020, बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एन.सी.एफ.–एफ.एस.) और स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एन.सी.एफ.–एस.ई.) इस बात का समर्थन करती है कि बुनियादी स्तर और प्रारंभिक स्तर पर शिक्षण खेल आधारित, गतिविधि आधारित, खोज आधारित होना चाहिए, जिससे बच्चों के समग्र विकास के लिए कला, संगीत, नृत्य, रंग, पेंटिग आदि का उपयोग करके अनुभवात्मक सीखने की गुंजाइश हो।

2023–2024

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एन.सी.एफ.–एफ.एस. और एन.सी.एफ.–एस.ई. की सिफारिशों को पूरा करने के लिए बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के लिए नई पाठ्यसामग्री विकसित की गई और *जादुई पिटारा* शिक्षण सामग्री का संकलन रा.शै.अ.प्र.प. और एम.ओ.ई. द्वारा प्रारंभ किया गया, जिसके आधार पर अभिविन्यास सह-प्रशिक्षण कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।

बुनियादी स्तर पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए अभिविन्यास सह-प्रशिक्षण कार्यशाला

राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को कवर करते हुए संबंधित आर.आई.ई. में पाँच प्रशिक्षण कार्यशालाएँ आयोजित की गईं और के.वी.एस. और सी.बी.एस.ई. के लिए एक-एक कार्यशाला आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य प्रतिभागियों को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के लिए बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.), 2022 के तहत बुनियादी स्तर, प्रबलन और नए क्षेत्रों से संबंधित एन.ई.पी. 2020 के प्रावधानों से परिचित कराना था। संसाधन संकाय रा.शै.अ.प्र.प. के एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग पाठ्यक्रम अध्ययन और विकास विभाग से थे। *जादुई पिटारा* के विकास के बाद इसका प्रदर्शन भी कार्यक्रम में शामिल किया गया। राज्यों ने इन कार्यक्रमों के लिए एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. से संकाय नियुक्त किए।

ऑनलाइन विधि के माध्यम से एन.सी.एफ.–एफ.एस., 'जादुई पिटारा' और नई पाठ्यपुस्तकों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा *जादुई पिटारा* पर पाँच ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम; कक्षा 1 और 2 के लिए विकसित नई पाठ्यपुस्तकों को प्रस्तुत करने के लिए सात ऑनलाइन कार्यक्रम एवं एन.सी.एफ.–एफ.एस. एवं *जादुई पिटारा* पर ए.टी.एफ., डी.टी.एफ., मास्टर प्रशिक्षकों, एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. संकाय, के.वी. और सी.बी.एस.ई. स्कूल संरक्षक को उन्मुख करने के लिए आमने-सामने की विधि में सात कार्यक्रम आयोजित किए गए। देश के पाँच क्षेत्रों और के.वी. और सी.बी.एस.ई. स्कूलों के लिए एक-एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के लिए संख्यात्मकता और साक्षरता पर शिक्षकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों का शैक्षणिक समर्थन और क्षमता निर्माण

अनेक राज्यों में चार-चार दिन की चार कार्यशालाएँ आयोजित की गईं, जिनका उद्देश्य बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के लिए साक्षरता और संख्यात्मकता में शिक्षकों और अध्यापक प्रशिक्षकों की क्षमता निर्माण पर केंद्रित था। इस प्रशिक्षण पहल में महाराष्ट्र, जम्मू और कश्मीर, चंडीगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और पुदुच्चेरी के 350 प्रमुख संसाधन व्यक्तियों, एस.आर.जी., ए.टी.एफ. और मास्टर प्रशिक्षकों ने राज्य एस.सी.ई.आर.टी. के सहयोग से भाग लिया।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	बुनियादी स्तर पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए अभिविन्यास-सह-प्रशिक्षण कार्यशालाएँ	आर.आई.ई., भोपाल, 24–25 मई 2023
		आर.आई.ई., अजमेर, 30–31 मई 2023
		आर.आई.ई., मैसूरु, 27–28 जून 2023
		एन.ई.आर., आई.ई., शिलांग, 12–13 जुलाई 2023
		सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. 3–4 जुलाई 2023
		सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. 5–6 जुलाई 2023
		आर.आई.ई., भुवनेश्वर, 27–28 जुलाई 2023

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
2.	बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के लिए संख्यात्मकता और साक्षरता पर अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों का शैक्षणिक समर्थन और क्षमता निर्माण	एस.सी.ई.आर.टी., महाराष्ट्र, 05–08 सितंबर 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., जम्मू एवं कश्मीर, जम्मू प्रभाग, 12–15 सितंबर 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., चंडीगढ़, 12–15 दिसंबर 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., केरल 04–07 मार्च 2024
3.	'जादुई पिटारा' पर सतत व्यावसायिक विकास (सी.पी.डी.) कार्यक्रम (ऑनलाइन)	एस.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम 27 फरवरी 2023
		डी.आई.ई.टी. के संकाय सदस्यों के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम 28 फरवरी 2023
		डी.आई.ई.टी. के संकाय सदस्यों के लिए ऑनलाइन 1 मार्च, 2023
		के.वी. के बालवाटिका शिक्षकों और अधिकारियों के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम 2 मार्च 2023
		सी.बी.एस.ई. की ओर से शिक्षकों के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम 3 मार्च 2023
4.	कक्षा 1 और 2 के लिए नई रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यपुस्तकों पर अभिविन्यास कार्यक्रम ('जादुई पिटारा' पर एक सत्र आयोजित किया गया)	आर.आई.ई.-रा.शै.अ.प्र.प. और के.वी. के डी.एम. स्कूलों के शिक्षकों के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम 17 जुलाई 2023
		सी.बी.एस.ई. से संबद्ध स्कूलों के शिक्षकों के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम 18 जुलाई 2023
		उत्तरी क्षेत्र के एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई., डी.आई.ई.टी., बी.आई.ई.टी., सी.आर.सी.सी., बी.आर.सी.सी. के शिक्षकों और प्रशिक्षकों के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम 19 जुलाई 2023
		दक्षिणी क्षेत्र के एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई./डी.आई.ई.टी., बी.आई.ई.टी., सी.आर.सी.सी., बी.आर.सी.सी. के शिक्षकों और प्रशिक्षकों के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम 20 जुलाई 2023
		पश्चिमी क्षेत्र के एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई., डी.आई.ई.टी., बी.आई.ई.टी., सी.आर.सी.सी., बी.आर.सी.सी. के शिक्षकों और प्रशिक्षकों के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम 21 जुलाई 2023
		पूर्वी क्षेत्र के एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई., डी.आई.ई.टी., बी.आई.ई.टी., सी.आर.सी.सी., बी.आर.सी.सी. के शिक्षकों और प्रशिक्षकों के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम 24 जुलाई 2023

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों, विशेष रूप से अनुसूचित जाति के बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा और जेंडर संबंधी सरोकारों पर ज्ञानोदय विद्यालय (मध्य प्रदेश) के माध्यमिक अध्यापकों का क्षमता निर्माण

मध्य प्रदेश के भोपाल स्थित प्रशासनिक अकादमी में ज्ञानोदय विद्यालय के माध्यमिक शिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य एन.ई.पी. 2020 के आलोक में अध्यापकों को जेंडर और समावेशी शिक्षा पर संवेदनशील बनाना, उन्हें अनुसूचित जाति के बच्चों के मुद्दों और सरोकारों के बारे में जागरूक करना तथा उन्हें जेंडर अनुकूल एवं समावेशी शैक्षणिक प्रक्रियाओं के बारे में बताना था। होशंगाबाद और भोपाल के ज्ञानोदय विद्यालयों में जाकर उपकरणों की सहायता से शिक्षकों की आवश्यकता और मूल्यांकन किया गया। शिक्षकों की आवश्यकता के आकलन और प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्यों के आधार पर इसके लिए विषयों की पहचान की गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन के बाद प्रतिभागियों से कार्यक्रम के आयोजन, संसाधन व्यक्तियों की योग्यता और प्रतिभागियों द्वारा अपने कार्यक्षेत्र में प्रशिक्षण के उपयोग तथा कार्यक्रम में आगे और सुधार लाने के लिए सुझावों के बारे में प्रतिक्रिया ली गई। माध्यमिक शिक्षकों के लिए निष्ठा ऑनलाइन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए लिंक के साथ-साथ अन्य मुद्रित सामग्री की सॉफ्ट-कॉपी जैसे— समावेशी स्कूलों के लिए सूचकांक, जेंडर समानता और सशक्तीकरण पर अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण सामग्री खंड 1, 2 और 3, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संवर्धन के लिए मॉड्यूल— मुद्दे, चुनौतियाँ और अनुसूचित जाति के सरोकारो से संबंधित एक प्रशिक्षण पैकेज दिया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रदान की गई सामग्री पर प्रतिभागियों के साथ चर्चा की गई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में समतामूलक और समावेशी शिक्षा पर गुजरात राज्य के मास्टर प्रशिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में समतामूलक और समावेशी शिक्षा पर गुजरात राज्य के मास्टर प्रशिक्षकों के लिए बाल अनुसंधान विश्वविद्यालय, गुजरात के सहयोग से पाँच दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम 11 से 15 दिसंबर 2023 तक आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक दोनों क्षेत्रों में एस.ई.डी.जी. के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए समावेशन और समानता के प्रमुख पहलुओं में मास्टर प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करना था। इसमें एन.ई.पी. 2020 के आलोक में समतामूलक और समावेशी शिक्षा के तहत प्रमुख विषयों को शामिल किया गया, जिसमें गुजरात भर के 33 जिलों के आई.ई.डी., बी.आर.सी. संसाधन शिक्षकों और विशेष शिक्षकों ने भाग लिया।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में वृद्धि के लिए मदरसों (वैकल्पिक विद्यालयों) में अध्यापन करने वाले प्रबंधकों या प्रधान अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संवर्धन के लिए मदरसों (वैकल्पिक विद्यालयों) में अध्यापन करने वाले प्रबंधकों या प्रधान अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसका उद्देश्य वैकल्पिक विद्यालयों (मदरसों) में अध्यापन करने वाले प्रबंधकों या प्रधान अध्यापकों के प्रबंधकीय कौशल को बढ़ाना था, ताकि वे विद्यालय के विषय में नवीन शिक्षण पद्धति के साथ अपना स्वयं का विद्यालय बना सकें तथा प्रबंधकों या प्रधान अध्यापकों को बाल अधिकारों, समावेशी शिक्षा, सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता, जेंडर और वैकल्पिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं के बारे में संवेदनशील बनाया जा सके। आर.आई.ई. के स्थानीय समन्वयकों के माध्यम से कुल पाँच क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए। ये क्रमश: 6–11 नवंबर 2023 तक आर.आई.ई. अजमेर, 16–20 अक्तूबर 2023 तक आर.आई.ई. मैसूरु, 18–22 दिसंबर 2023 तक आर.आई.ई. भोपाल, 4–8

दिसंबर 2023 तक आर.आई.ई. भुवनेश्वर, 12–16 फरवरी तक एन.ई.आर.आई.ई., उमियम, एस.सी.ई.आर.टी., त्रिपुरा में कुल 200 प्रतिभागियों ने इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों, विशेषकर अनुसूचित जाति के बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा और जेंडर संबंधी सरोकारों पर ज्ञानोदय विद्यालय (मध्य प्रदेश) के माध्यमिक शिक्षकों का क्षमता निर्माण	प्रशासनिक अकादमी, भोपाल, मध्य प्रदेश 9–23 जून 2023
2.	समतामूलक एवं समावेशी शिक्षा पर गुजरात राज्य के मास्टर प्रशिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद 11–15 दिसंबर 2023
3.	गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में वृद्धि के लिए मदरसों (वैकल्पिक विद्यालयों) में अध्यापन करने वाले प्रबंधकों या प्रधान अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 4–8 दिसंबर 2023
4.	गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में वृद्धि के लिए मदरसों (वैकल्पिक विद्यालयों) में अध्यापन करने वाले प्रबंधकों या प्रधान अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., मैसूरु 16–20 अक्तूबर 2023
5.	गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में वृद्धि के लिए मदरसों (वैकल्पिक विद्यालयों) में अध्यापन करने वाले प्रबंधकों या प्रधान अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., भोपाल 18–22 दिसंबर 2023
6.	गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में वृद्धि के लिए मदरसों (वैकल्पिक विद्यालयों) में अध्यापन करने वाले प्रबंधकों या प्रधान अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., अजमेर 6–11 नवंबर 2023
7.	गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में वृद्धि के लिए मदरसों (वैकल्पिक विद्यालयों) में अध्यापन करने वाले प्रबंधकों या प्रधान अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग एस.सी.ई.आर.टी., त्रिपुरा 12–16 फरवरी 2024

सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 से 12) पर अर्थशास्त्र किट के उपयोग पर अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति बहुलता वाले क्षेत्रों से प्रमुख संसाधन व्यक्तियों (के.आर.पी.) का अभिविन्यास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में, शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए कक्षा 9 से 12 तक माध्यमिक स्तर पर मैनुअल के साथ-साथ शैक्षिक किट-अंतर्विषयक और समावेशी 'अर्थ मंजूषा' विकसित की गई है। एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखंड के सहयोग से देहरादून में उत्तराखंड राज्य के 48 के.आर.पी. का अभिविन्यास किया गया।

सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें और अन्य पाठ्यसामग्री विकसित करने पर छह महीने का प्रमाणपत्र कार्यक्रम

इस कार्यक्रम में, 20 क्रेडिट वाले चार पाठ्यक्रम अर्थात (i) स्कूल सामाजिक विज्ञान शिक्षा— परिप्रेक्ष्य निर्माण (5 क्रेडिट); (ii) ज्ञान मीमांसा और सामाजिक विज्ञान (5 क्रेडिट); (iii) पाठ्यचर्या संबंधी संसाधनों और शैक्षणिक सरोकारों का विकास (5 क्रेडिट); और (iv) आकलन एवं अधिगम (5 क्रेडिट) विकसित किए गए हैं। क्रेडिट की संख्या राष्ट्रीय क्रेडिट रूपरेखा 2023 के आधार पर तय की गई।

यह प्रमाणपत्र कार्यक्रम मिश्रित मोड में पेश किया गया था जिसमें पाठ्यक्रम प्रतिभागियों ने नियमित रूप से तीन स्तरों में कार्यक्रम में भाग लिया। तीन चरणों की अवधि इस प्रकार थी—

चरण 1— 21.08.2023 से 10.09.2023 (ऑनलाइन)

चरण 2— 30.10.2023 से 19.11.2023 (आमने-सामने)

चरण 3— 27.01.2024 से 16.02.2024 (ऑनलाइन)

संसाधन व्यक्तियों में विभाग के संकाय सदस्य, सलाहकार समिति के सदस्य, रा.शै.अ.प्र.प. के अन्य घटकों और अन्य विश्वविद्यालयों के संकाय सदस्य सम्मिलित हैं। इस पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले राज्य और संघ राज्य क्षेत्र (आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, दादरा और नगर हवेली, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, मेघालय, नागालैंड, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और पश्चिम बंगाल) से थे।

'आयुष्मान भारत' स्कूल स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम के अंतर्गत राज्य संसाधन व्यक्तियों (एस.आर.पी.) के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

'आयुष्मान भारत' स्कूल स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम के अंतर्गत, स्वास्थ्य एवं कल्याण संबंधी सरोकारों के बारे में जागरूकता फैलाने करने तथा स्वास्थ्य एवं कल्याण पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों में संसाधन व्यक्ति या मास्टर प्रशिक्षक के रूप में कार्य करने की क्षमता विकसित करने के लिए राज्य संसाधन व्यक्तियों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में स्वस्थ विकास, भावनात्मक कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य, पारस्परिक संबंध, नैतिकता और ज़िम्मेदार नागरिकता, जेंडर समानता, पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता, स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देना, मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम और प्रबंधन, प्रजनन स्वास्थ्य और एच.आई.वी. की रोकथाम, हिंसा और चोटों से सुरक्षा, इंटरनेट, गैजेट्स और मीडिया के सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा देने से संबंधित मुद्दों और सरोकारों पर सामग्री शामिल थी।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 से 12) पर अर्थशास्त्र किट के उपयोग पर अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति केंद्रित क्षेत्रों से प्रमुख संसाधन व्यक्तियों (के.आर.पी.) का उन्मुखीकरण	देहरादून, उत्तराखंड 22–24 फरवरी 2024
2.	कश्मीर प्रभाग, जम्मू और कश्मीर	श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर 4–7 अक्तूबर 2023,
3.	आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, गोवा, पुदुच्चेरी, लक्षद्वीप, तेलंगाना और तमिलनाडु	बेंगलुरु, कर्नाटक 28-31 अक्तूबर 2023
4.	बिहार और उत्तर प्रदेश	गया, बिहार 26-29 नवंबर 2023,
5.	असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा और सिक्किम	गुवाहाटी, असम 10–13 दिसंबर 2023
6.	राजस्थान और गुजरात	उदयपुर, राजस्थान 17-20 दिसंबर 2023

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

मध्य स्तर पर विज्ञान शिक्षण का ऑनलाइन पाठ्यक्रम

शिक्षकों के लिए मध्य स्तर पर विज्ञान पढ़ाने के लिए एक ऑनलाइन कोर्स विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य बड़ी संख्या में ऐसे शिक्षकों को सशक्त बनाना है, जिन्हें अपनी विषयवस्तु के साथ-साथ शैक्षणिक ज्ञान को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। 'ओपन एडएक्स' का उपयोग करते हुए एक एम.ओ.ओ.सी. प्लेटफॉर्म (http://www.ncertx.in) स्थापित किया गया है। 'स्वयं' में हाइलाइट किए गए चार चतुर्थांशों को इस पाठ्यक्रम में समेकित तरीके

से पूरी तरह से सम्मिलित किया गया है। वर्ष 2022–23 में, देशभर से लगभग 342 प्रतिभागियों ने नामांकन किया और नवंबर 2023–24 के महीने में सफलतापूर्वक पाठ्यक्रम पूरा किया। इससे संबंधित अधिक जानकारी https://www.ncertx.in/ पर उपलब्ध है।

पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग (डी.सी.एस. एंड डी.)

पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र पर विशेष ध्यान देने के साथ अनुभवात्मक शिक्षा के एकीकरण पर पाठ्यक्रम विकासकों का क्षमता निर्माण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 द्वारा स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों में शैक्षणिक अभ्यास के रूप में अनुभवात्मक शिक्षण दृष्टिकोण का सुझाव दिया गया है। विभिन्न स्तरों में और पाठ्यक्रम क्षेत्रों में कक्षा में प्रभावी शैक्षणिक उपकरण के रूप में स्वदेशी खिलौनों का उपयोग करना अनुभवात्मक दृष्टिकोण को कार्यान्वित करने के तरीकों में से एक है। इस दृष्टिकोण के बारे में देशभर के पाठ्यक्रम निर्माणकर्ताओं को समर्थन और उन्मुख करने के लिए विभाग द्वारा जून से नवंबर 2023 के दौरान दो क्षमता निर्माण कार्यक्रम ऑनलाइन आयोजित किए गए। इस क्षमता निर्माण कार्यक्रम का उद्देश्य उन्हें एक शैक्षणिक उपकरण के रूप में खिलौनों के महत्व के बारे में बताना और कुछ आदर्श खिलौने प्रदान करना था, ताकि इन खिलौनों को उपयोग कक्षा में किया जा सके, पाठ्यक्रम निर्माणकर्ता पाठ्यक्रम विकसित करते समय उन्हें एकीकृत करने में सक्षम हों। क्षमता निर्माण कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों या संघ राज्य क्षेत्रों के पाठ्यक्रम निर्माणकर्ता और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों, रा.शै.अ.प्र.प. के शिक्षकों ने भाग लिया।

एन.ई.पी. 2020 के परिप्रेक्ष्य और कार्यान्वयन पर नौसेना स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षकों का क्षमता निर्माण

इस कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न स्तरों में नौसेना स्कूलों के शिक्षकों और देशभर के प्रधानाचार्यों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा और स्कूली शिक्षा के अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं के परिप्रेक्ष्य में उन्मुख करना था। इसका उद्देश्य उन्हें एन.ई.पी. 2020 की सिफारिशों के आधार पर विभिन्न गतिविधियों या कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में प्रेरित करना भी था। इस कार्यक्रम में ऑनलाइन मोड के माध्यम से 100 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के चार चरण जून 2023 से नवंबर 2023 तक आयोजित किए गए। रा.शै.अ.प्र.प. की संबंधित घटक इकाइयों के संसाधन व्यक्तियों ने एन.ई.पी. 2020, एन.सी.एफ., शैक्षणिक दृष्टिकोण आदि पर सत्र लिए।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	एन.ई.पी. 2020 के परिप्रेक्ष्य और कार्यान्वयन पर नौसेना स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षकों का क्षमता निर्माण	जून 2023–नवंबर 2023 (चार चरण) ऑनलाइन
2.	पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र पर विशेष ध्यान देने के साथ अनुभवात्मक शिक्षा के एकीकरण पर पाठ्यक्रम निर्माणकर्ताओं का क्षमता निर्माण	10–12 अक्तूबर 2023
3.	पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र पर विशेष ध्यान देने के साथ अनुभवात्मक शिक्षा के एकीकरण पर पाठ्यक्रम निर्माणकर्ताओं का क्षमता निर्माण	20–22 नवंबर 2023

शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

शैक्षिक किटों पर राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्रों के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों, आर.आई.ई. संकाय और डी.एम.एस. शिक्षकों का अभिविन्यास

इस कार्यक्रम का उद्देश्य, क्षेत्रीय शैक्षिक संस्थानों के संकाय, डी.एम.एस. के शिक्षकों, सेवा-पूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं और राज्य संसाधन व्यक्तियों को रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित शैक्षिक किटों के उपयोग के बारे में जानकारी देना, तथा राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के संसाधन व्यक्तियों के माध्यम से डी.एम.एस. और राज्यों द्वारा संचालित स्कूलों में अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ाने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के शैक्षिक किटों के उपयोग को बढ़ावा देना है।

राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्रों के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों, आर.आई.ई. संकाय और डी.एम.एस. शिक्षकों का शैक्षिक किटों पर अभिविन्यास

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, चंडीगढ़, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड और हरियाणा	आर.आई.ई., अजमेर, राजस्थान 18–22 सितंबर 2023
2.	अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, असम, मेघालय, नागालैंड और मिजोरम	एन.ई.आर..आई.ई., शिलांग 4–8 दिसंबर 2023
3.	आंध्र प्रदेश, पुदुच्चेरी, लक्षद्वीप, कर्नाटक और तमिलनाडु	आर.आई.ई., मैसूरु 14–16 फरवरी 2024
4.	गोवा, दमन, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश	आर.आई.ई., भोपाल 29 फरवरी से 2 मार्च 2024
5.	पश्चिम बंगाल, ओडिशा, झारखंड, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, बिहार	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 4–6 मार्च 2024

शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)

पाठ्यक्रम मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने लगभग चार दशकों तक स्कूलों और शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में मार्गदर्शन और परामर्श में प्रशिक्षित कार्मिकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श में नियमित नौ महीने का स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया था। डी.ई.पी.एफ.ई., रा.शै.अ.प्र.प. ने वर्ष 2002–03, 2002 से 2008 के दौरान भारत सहित एशियाई और अफ्रीकी देशों के शिक्षकों और अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श (आमने-सामने की विधि के माध्यम से) में छह महीने का अंतरराष्ट्रीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

दूरस्थ और मुक्त शिक्षण प्रणालियों के रूप में उपलब्ध अधिक लचीले दृष्टिकोणों और बड़ी संख्या में लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग को ध्यान में रखते हुए दूरस्थ या ऑनलाइन माध्यम से मार्गदर्शन एवं परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम तैयार किया गया और कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग (सी.ओ.एल.), कनाडा के सहयोग से स्व-शिक्षण मॉड्यूल विकसित किए गए। आमने-सामने के माध्यम से प्रस्तुत किए जाने वाले मार्गदर्शन एवं परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम को दूरस्थ शिक्षा, गहन आमने-सामने की विधि के अभ्यास और इंटर्नशिप के घटकों को जोड़कर फिर से डिजाइन किया गया था।

यह पाठ्यक्रम डी.ई.पी.एफ.ई., एन.आई.ई., नई दिल्ली और पाँच क्षेत्रीय केंद्रों अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूरु और शिलांग में प्रस्तावित किया जा रहा है, ताकि शिक्षकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों, शैक्षिक और मार्गदर्शन कार्मिकों को स्कूलों में परामर्शदाता के रूप में कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सके।

मार्गदर्शन एवं परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम 2023, जनवरी 2023 में प्रारंभ हुआ। इस पाठ्यक्रम में तीन चरण सम्मिलित हैं— (i) दूरस्थ शिक्षा चरण (जनवरी 2023 से जून 2023) (ii) संपर्क चरण (जुलाई 2023 से सितंबर 2023) और (iii) इंटर्नशिप (अक्तूबर 2023 से दिसंबर 2023)। कुल 34 विद्यार्थियों ने एन.आई.ई., दिल्ली में सफलतापूर्वक पाठ्यक्रम पूरा किया। मार्गदर्शन एवं परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम जनवरी 2024 में शुरू हुआ है। जनवरी 2024 से प्रत्येक महीने ट्यूटोरियल ग्रेड का आयोजन किया गया है। सत्रों में विशेष व्याख्यानों सहित डी.सी.जी.सी. मॉड्यूल और असाइनमेंट पर चर्चा शामिल है।

शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग (डी.ई.आर.)

अनुसंधान पद्धति में क्षमता निर्माण कार्यक्रम

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डी.आई.ई.टी.) और एस.सी.ई.आर.टी. संकाय के लिए एस.सी.ई.आर.टी. के सहयोग से अनुसंधान पद्धति पाठ्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को अनुसंधान पद्धति के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा के अतिरिक्त, अनुसंधान में कंप्यूटर का उपयोग करने का व्यावहारिक अनुभव भी प्रदान किया जाता है। प्रत्येक प्रतिभागी एक अनुसंधान प्रस्ताव तैयार करता है, जिसे पाठ्यक्रम में प्रस्तुत किया जाता है और इस पर चर्चा की जाती है। इस कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य हैं— कार्यक्रम में उपयोग के लिए विकसित प्रशिक्षण सामग्री को अद्यतन करना; शैक्षिक अनुसंधान के महत्व के बारे में अध्यापक प्रशिक्षकों के बीच समझ विकसित करना; उन्हें गुणात्मक और मात्रात्मक शैक्षिक अनुसंधान की प्रक्रिया के बारे में उन्मुख करना; और प्रतिभागियों को उनके संदर्भों से संबंधित विषय पर अनुसंधान प्रस्तावों के विकास में सहायता करना।

अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)

एस.सी.ई.आर.टी., आई.ए.एस.ई., सी.टी.ई. के अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण

अध्यापक प्रशिक्षक न केवल सेवा-पूर्व चरण में, बल्कि सेवाकालीन चरण में भी शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षकों और अध्यापक प्रशिक्षकों की गुणवत्ता के बीच बहुत अधिक पत्राचार है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों को तैयार करने के लिए सिस्टम को पेशेवर अध्यापक प्रशिक्षकों की आवश्यकता होती है जो शैक्षिक पहलों के संबंध में जागरूक रहते हैं। अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में सुधार के लिए स्कूली शिक्षा से संबंधित सरोकारों पर अध्यापक प्रशिक्षकों की सहायता और क्षमता निर्माण की आवश्यकता है। हालाँकि पी.एम.एम.एम.एन.एम.टी.टी. और संस्थागत गतिविधियों के तहत अध्यापक प्रशिक्षकों के क्षमता निर्माण के लिए प्रावधान हैं, लेकिन अक्सर पाया जाता है कि इन कार्यक्रमों में स्कूल पाठ्यक्रम और शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम से संबंधित मुद्दों पर शायद ही चर्चा की जाती है। इसके अलावा, एन.ई.पी. 2020 के सरोकारों को ध्यान में

रखते हुए, एन.ई.पी. 2020 के सुचारू कार्यान्वयन के लिए स्कूली शिक्षा, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम आदि के क्षेत्र में की गई पहलों पर चर्चा करने की आवश्यकता है। यह कार्यक्रम अनुभवात्मक शिक्षा के क्षेत्र में एन.ई.पी. 2020 की अनुशंसा पर आधारित है। अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा, पाठ्यक्रम और समावेशी शिक्षा, अधिगम परिणाम और मूल्यांकन विकसित किए जाने की आवश्यकता है। विभाग ने सैनिक स्कूलों, शिक्षकों के लिए एन.ई.पी. 2020 के विभिन्न पहलुओं पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम भी आयोजित किए।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. के अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण	एन.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 18–20 अक्तूबर 2023
2.	एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. के अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु 06–08 नवंबर 2023
3.	एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. के अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल 13–15 दिसंबर 2023
4.	एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. के अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर 22–24 जनवरी 2024
5.	पूर्वी क्षेत्र के डी.आई.ई.टी. और एस.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर 6–8 मार्च 2024
6.	एन.ई.पी. 2020 को समझने के लिए सैनिक स्कूल के संकाय के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	डी.टी.ई., रा.शै.अ.प्र.प. 21–24 नवंबर 2023
7.	एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. के अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण	एन.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 18–20, अक्तूबर 2023
8.	एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. के अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु 06–08, नवंबर 2023
9.	एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. के अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल 13–15 दिसंबर 2023
10.	एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. के अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर 22–24 जनवरी 2024
11.	पूर्वी क्षेत्र के डी.आई.ई.टी. और एस.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर 6–8 मार्च 2024
12.	एन.ई.पी. 2020 को समझने के लिए सैनिक स्कूल के संकाय के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	डी.टी.ई., रा.शै.अ.प्र.प. 21–24 नवंबर 2023

शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर के साथ डेटा विश्लेषण पद्धति पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

मात्रात्मक अनुसंधान अध्ययन में डेटा विश्लेषण एक बहुत ही महत्वपूर्ण गतिविधि है। अनुसंधान डेटा के सांख्यिकीय विश्लेषण की योजना बनाना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि अनुसंधान अध्ययन को डिजाइन करना और संचालित करना। अध्ययन के संचालन के लिए उचित योजना के साथ, सटीक सांख्यिकीय प्रक्रियाओं, तकनीकों और सांख्यिकीय परीक्षणों की पहचान भी महत्वपूर्ण है। इस स्तर पर, डेटा का सटीक विश्लेषण करने से अध्ययन के बारे में सही निष्कर्ष निकालने में मदद मिलती है। इस क्षमता के साथ, अनुसंधानकर्ता हजारों चर वाली बड़ी डेटा फाइलों का विश्लेषण करने के लिए सॉफ्टवेयर पैकेज का उपयोग कर सकता है। इस क्षेत्र में शिक्षा और प्रशिक्षण

की आवश्यकता को देखते हुए ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोग करके डेटा के सांख्यिकीय विश्लेषण पर एक पाठ्यक्रम की योजना बनाई गई है।

आजकल ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर (ओ.एस.एस.) प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग बहुत तेजी से बढ़ रहा है। ओ.एस.एस. का मुख्य लाभ यह है कि कोई भी व्यक्ति एक पैसा भी चुकाए बिना सॉफ्टवेयर डाउनलोड कर सकता है और इसके सोर्स कोड में सुधार और संशोधन कर सकता है। इस विशेषता से ओ.एस.एस. अब ओ.एस.एस. समुदाय नामक समूह के रूप में सॉफ्टवेयर के विकास में स्वेच्छा से योगदान करने के लिए कई योगदानकर्ताओं को आकर्षित करने में सक्षम बन गया है। लोकप्रिय रूप से उपयोग में आने वाले कुछ अच्छे ओ.एस.एस.आर, पायथन, साइलैब, जी.एन.यू.पी.एस.पी.पी., स्टेटफ्री, एनालिस्ट, जामोवी, जे.ए.एस.पी, आदि विश्लेषणात्मक सॉफ्टवेयर हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करके ऑनलाइन शिक्षा और शिक्षकों की उच्च गुणवत्ता वाली क्षमता निर्माण पर भी बल दिया गया है। यह कार्यक्रम अनुसंधानकर्ताओं, संकाय सदस्यों, शिक्षकों और अन्य लोगों को ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोग करके डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया को समझने के लिए एक मंच प्रदान करेगा।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर के साथ डेटा विश्लेषण पद्धति पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	ऑनलाइन मोड 09–13 अक्तूबर 2023. डी.आई.ई.टी., वाराणसी, उत्तर प्रदेश 28 नवंबर – 02 दिसंबर 2023. डी.आई.ई.टी., उज्जैन, मध्य प्रदेश 15–19 जनवरी 2024.

अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)

सी.बी.एस.ई. से संबद्ध स्कूलों में स्कूल स्वास्थ्य और कल्याण कार्यक्रम शुरू करने के लिए संभावित संसाधन व्यक्तियों के प्रशिक्षण का यूनेस्को कार्यक्रम

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) से संबद्ध स्कूलों में स्कूल स्वास्थ्य और कल्याण कार्यक्रम शुरू करने के लिए सी.बी.एस.ई. मास्टर प्रशिक्षकों के लिए यूनेस्को प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) और रा.शै.अ.प्र.प. के अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग द्वारा संयुक्त रूप से 5 से 9 फरवरी 2024 तक किया गया था। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य सी.बी.एस.ई. स्कूलों में स्कूल स्वास्थ्य और कल्याण के राजदूत या समन्वयक पहल के कार्यान्वयन को सुदृढ़ करना और सी.बी.एस.ई. उत्कृष्टता केंद्र द्वारा पहचाने गए 89 मास्टर प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करना था। इस प्रशिक्षण में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, पुदुच्चेरी, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, केरल और लक्षद्वीप के दक्षिणी राज्यों के प्रधानाचार्यों और वरिष्ठ शिक्षकों ने भाग लिया। समूहों को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के प्रमुख सिद्धांतों और स्वास्थ्य एवं कल्याण पर इसके दृष्टिकोण, स्कूल में बच्चों के स्वस्थ जीवन की योजना बनाने और उसे बढ़ावा देने के लिए कार्यनीतियों एवं गतिविधियों के बारे में बताया गया। भाग लेने वाले प्रधानाचार्यों और शिक्षकों द्वारा व्यावहारिक गतिविधियाँ और परियोजना कार्य भी किए गए।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	सी.बी.एस.ई. से संबद्ध स्कूलों में स्कूल स्वास्थ्य और कल्याण कार्यक्रम शुरू करने के लिए संभावित संसाधन व्यक्तियों के प्रशिक्षण का यूनेस्को कार्यक्रम	सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली 05–09 फरवरी 2024

योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

शिक्षा परियोजना नियोजन , कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन में डी.आई.ई.टी. संकाय का प्रशिक्षण

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य परियोजना नियोजन के क्षेत्र में डी.आई.ई.टी. संकाय की क्षमता का निर्माण करना, कार्यक्रमों के उद्देश्यों के अनुसार परियोजनाओं को कार्यान्वन करने के लिए कार्यनीति विकसित करने में इनपुट प्रदान करना और डी.आई.ई.टी. संकाय को परियोजना मूल्यांकन तकनीकों से परिचित कराना है। 'शैक्षणिक परियोजना नियोजन, कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन' शीर्षक वाले प्रशिक्षण पैकेज को अद्यतन करने के लिए 4 से 6 दिसंबर 2023 तक एन.आई.ई., नई दिल्ली में तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम 29 जनवरी से 2 फरवरी 2024 तक एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय) में आयोजित किया गया। पूर्वोत्तर राज्यों मेघालय, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मिजोरम, असम, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के अनुसूचित जनजाति बहुल क्षेत्रों में कार्यरत डी.आई.ई.टी. संकाय ने कार्यक्रम में भाग लिया।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	शिक्षा परियोजना नियोजन, कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन में डी.आई.ई.टी. संकाय का प्रशिक्षण	एन.ई.आर.आई.ई. उमियम, मेघालय 29 जनवरी – 2 फरवरी 2024

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)

शिक्षकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और स्कूली शिक्षा के विभिन्न हितधारकों की क्षमता निर्माण के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी और आई.सी.टी. के क्षेत्रों में क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए। ई-सामग्री विकास, विघटनकारी प्रौद्योगिकियों, एन.ई.पी. 2020 की अनुशंसा और तकनीकी-शिक्षणशास्त्र एकीकरण के क्षेत्रों में आमने-सामने, ऑनलाइन और मिश्रित मोड में विभिन्न तरीकों से प्रशिक्षण दिया गया।

सी.आई.ई.टी. ने अपने प्रशिक्षण अधिदेश के तहत, सभी राज्यों या संघ राज्य क्षेत्रों के राज्य संसाधन समूहों को परिचित कराने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक शृंखला आयोजित की। प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण नीचे दी गई तालिका में दिया गया है—

वर्ष 2023–24 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना	एल.बी.एस.एन.ए.ए., मसूरी 6 अप्रैल 2023
2.	डिजिटल स्पेस में सुरक्षा और संरक्षण	ऑनलाइन 05–09 जून 2023
3.	शैक्षिक प्रौद्योगिकी में उभरते रुझान	ऑनलाइन 12–16 जून 2023
4.	ई-सामग्री का विकास – ऑडियो संसाधन	ऑनलाइन 26–30 जून 2023
5.	सुरक्षित ऑनलाइन संचार	ऑनलाइन 03–07 जुलाई 2023
6.	'दीक्षा' पर आभासी प्रयोगशालाओं का शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य	ऑनलाइन 10–14 जुलाई 2023

7.	ऑनलाइन वित्तीय सुरक्षा	ऑनलाइन 31 जुलाई–4 अगस्त 2023
8.	नए दीक्षा समन्वयकों को दीक्षा और इसके उपयोग के बारे में जानकारी दी गई	ऑनलाइन मोड 17–18 अगस्त 2023
9.	एस.सी.ई.आर.टी. नागालैंड 'दीक्षा' और इसके उपयोग का पाँच दिवसीय अभिविन्यास	सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. 21–25 अगस्त 2023
10.	ई-सामग्री का विकास— अंत:क्रियात्मक संसाधन	ऑनलाइन 24–28 जुलाई 2023
11.	स्कूल और शिक्षक शिक्षा के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना	ऑनलाइन 07–11 अगस्त 2023
12.	गणित के शिक्षण-अधिगम के लिए ई-सामग्री का विकास	ऑनलाइन 21–25 अगस्त 2023
13.	इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स (आई.ओ.टी.) और मोबाइल सुरक्षा	ऑनलाइन 4–8 सितंबर
14.	मिश्रित शिक्षा	ऑनलाइन 11–15 सितंबर 2023
15.	चंडीगढ़ के प्राथमिक शिक्षकों के लिए ई-सामग्री का विकास	ऑनलाइन 21–26 सितंबर 2023
16.	विज्ञान के शिक्षण और सीखने के लिए ई-सामग्री विकसित करना	ऑनलाइन 25–29 सितंबर 2023
17.	डिजिटल वेलनेस	ऑनलाइन 02–06 अक्तूबर 2023
18.	ई-सामग्री का विकास— वीडियो संसाधन	ऑनलाइन 16–20 अक्तूबर 2023
19.	विशिष्ट अधिगम दिव्यांगता को समझना	ऑनलाइन 16–20 अक्तूबर 2023
20.	'दीक्षा' अध्यापक प्रशिक्षकों का तीन दिवसीय क्षमता निर्माण या जिला सशक्तीकरण कार्यक्रम	एस.सी.ई.आर.टी., सोलन, हिमाचल प्रदेश 25–27 अक्तूबर 2023
21.	ई-सामग्री विकास पर राज्य के संसाधन समूह का चार स्तरों में अभिविन्यास	
	चरण 1 (बिहार, छत्तीसगढ़, गोवा, झारखंड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और संघ राज्य क्षेत्र दादर नगर हवेली, दमन और दीव)	ऑनलाइन 9–13 अक्तूबर 2023
	चरण 2 (आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना और संघ राज्य क्षेत्र पुदुच्चेरी, लद्दाख, लक्षद्वीप और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह)	ऑनलाइन 16–20 अक्तूबर 2023
	चरण 3 (असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा)	ऑनलाइन 30 अक्तूबर–03 नवंबर 2023
	चरण 4 (हरियाणा, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली तथा संघ राज्य क्षेत्र चंडीगढ़, जम्मू और कश्मीर)	ऑनलाइन 06–10 नवंबर 2023
22.	ई-सामग्री के विकास हेतु ऑनलाइन प्रशिक्षण— ऑडियो संसाधन	ऑनलाइन 20–24 नवंबर 2023

23.	राज्यों या संघ राज्य क्षेत्रों और स्वायत्त संगठनों के मास्टर प्रशिक्षकों के लिए साइबर सुरक्षा और संरक्षण— चरण 1	ऑनलाइन 20–22, नवंबर 2023
24.	राज्यों या संघ राज्य क्षेत्रों और स्वायत्त संगठनों के मास्टर प्रशिक्षकों के लिए साइबर सुरक्षा और संरक्षण— चरण 2	ऑनलाइन 28–30, नवंबर 2023
25.	राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों और स्वायत्त संगठनों के राज्य समूह संसाधन (एस.आर.जी.)/मास्टर प्रशिक्षकों के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रम का विकास	ऑनलाइन 04–08 दिसंबर 2024
26.	'दीक्षा' पर वर्चुअल लैब्स का शिक्षाशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य	ऑनलाइन 11–15 दिसंबर 2023
27.	ई-सामग्री का विकास— अंत:क्रियात्मक संसाधन	ऑनलाइन 25–29 दिसंबर 2023
28.	साइबर स्वच्छता	ऑनलाइन 01–05 जनवरी 2024
29.	शैक्षिक प्रौद्योगिकी में उभरते रुझान	ऑनलाइन 08–12 जनवरी 2024
30.	शिक्षण-अधिगम में वर्चुअल लैब का एकीकरण	ऑनलाइन 15–19 जनवरी 2024
31.	उभरती प्रौद्योगिकियों में साइबर सुरक्षा संबंधी चिंताएँ	ऑनलाइन 05–09 फरवरी 2024
32.	'विज्ञान के शिक्षण-अधिगम के लिए ई-सामग्री का विकास' पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	ऑनलाइन 22–26 जनवरी 2024
33.	'मिश्रित अधिगम' पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	ऑनलाइन 12–16 फरवरी 2024
34.	निष्ठा स्तर 1 — चरण 1	सी.आई.ई.टी., नई दिल्ली, 19–23 फरवरी 2024
35.	गणित के शिक्षण और अधिगम के लिए ई-सामग्री का विकास	ऑनलाइन, 26 फरवरी–1 मार्च 2024
36.	निष्ठा स्तर 1 — चरण 2	सी.आई.ई.टी., नई दिल्ली, 26 फरवरी–01 मार्च 2024
37.	साइबर क्लब	ऑनलाइन 04–08 मार्च 2024
38.	'विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी' पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	ऑनलाइन 11–15 मार्च 2024
39.	ई-सामग्री के विकास पर ऑनलाइन प्रशिक्षण— वीडियो संसाधन	ऑनलाइन 26–30 मार्च 2024
40.	'निष्ठा' स्तर 1— चरण 3	सी.आई.ई.टी., नई दिल्ली 04–08 मार्च 2024
41.	'निष्ठा' स्तर 1— चरण 4	सी.आई.ई.टी., नई दिल्ली 11–15 मार्च 2024
42.	'दीक्षा' और इसके उपयोग पर झारखंड के जिला शिक्षा अधिकारियों या अध्यापक प्रशिक्षकों अथवा शिक्षकों का तीन दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम	जे.सी.ई.आर.टी., झारखंड 15–17 मार्च 2023

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), भोपाल

संस्थान ने एन.ई.पी. 2020 के आलोक में राज्यों या संघ राज्य क्षेत्रों के स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा को सुदृढ़ करने पर प्रमुख पदाधिकारियों के लिए नौ अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के प्रमुख पदाधिकारियों सहित विभिन्न राज्यों या संघ राज्य क्षेत्रों के लगभग 550 प्रमुख पदाधिकारियों ने भाग लिया। संस्थान ने व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों को विकसित करने के लिए नौ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को उन्नत शैक्षणिक तकनीकों से सशक्त बनाना था जो व्यावसायिक शिक्षा वितरण की गुणवत्ता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकते हैं। पाँच दिवसीय कार्यक्रम प्रतिभागियों को नवीन शिक्षण कार्यनीतियों से युक्त करने के लिए सावधानीपूर्वक डिजाइन किया गया था, जो रचनात्मकता, जुड़ाव और प्रभावी अधिगम परिणामों को बढ़ावा देने वाले वातावरण को प्रोत्साहित करता है। संस्थान ने मध्य स्तर (कक्षा 6 से 8 तक) पर शिक्षा के व्यवसायीकरण पर शिक्षकों के लिए छह क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को मूल्यवान प्रशिक्षण और अंतर्दृष्टि प्रदान करना था अर्थात विद्यार्थियों को अनुभवात्मक शिक्षण अनुभव प्रदान करने के लिए वे अपने शिक्षण विधियों में पूर्व-व्यावसायिक गतिविधियों को कैसे सम्मिलित करें। इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त, संस्थान ने कृषि, परिधान और मेड अप्स, ऑटोमोबाइल, रिटेल, बी.एफ.एस.आई., यात्रा और पर्यटन, आई.टी. और आई.टी.ई.एस., सुरक्षा, स्वास्थ्य और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रों में विभिन्न जॉब रोल पर 10 व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए। उपरोक्त सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विभिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के लगभग 1200 शिक्षकों और प्रमुख पदाधिकारियों ने भाग लिया।

मध्य स्तर पर शिक्षा के व्यावसायीकरण पर शिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम (कक्षा 6 से 8 तक)

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	गोवा, केरल, मणिपुर और मिजोरम राज्यों के लिए एन.ई.पी. के आलोक में व्यावसायिक शिक्षा को सुदृढ़ करने के लिए प्रमुख पदाधिकारियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 28–30 नवंबर 2023
2.	उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, दिल्ली और हरियाणा राज्यों के लिए एन.ई.पी. के आलोक में व्यावसायिक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रमुख पदाधिकारियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 16–18 अगस्त 2023
3.	आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और तमिलनाडु राज्यों के लिए एन.ई.पी. के आलोक में व्यावसायिक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रमुख पदाधिकारियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 19–21 जुलाई 2023
4.	पंजाब, हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ राज्यों के लिए एन.ई.पी. के आलोक में व्यावसायिक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रमुख पदाधिकारियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 28–30 अगस्त 2023

5.	जम्मू और कश्मीर, अंडमान एवं निकोबार, बिहार और नागालैंड राज्यों के लिए एन.ई.पी. के आलोक में व्यावसायिक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रमुख पदाधिकारियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 25–27 सितंबर 2023
6.	गुजरात, दमन और दीव तथा दादर और नगर हवेली राज्यों के लिए एन.ई.पी. के आलोक में व्यावसायिक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रमुख पदाधिकारियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 16–18 अगस्त 2023
7.	मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और महाराष्ट्र राज्यों के लिए एन.ई.पी. के आलोक में व्यावसायिक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रमुख पदाधिकारियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 28–30 अगस्त 2023
8.	अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षकों एवं प्रमुख पदाधिकारियों का प्रशिक्षण	11–20 अक्तूबर 2023 पोर्टब्लेयर, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह और पी.एस.एस.सी. आई.वी.ई. (मिश्रित विधि)
9.	उत्तरी क्षेत्र के लिए मध्य स्तर (कक्षा 6 से 8 तक) में शिक्षा के व्यावसायीकरण पर शिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 05–07 मार्च 2024
10.	पश्चिमी क्षेत्र के लिए मध्य स्तर (कक्षा 6 से 8 तक) में शिक्षा के व्यवसायीकरण पर शिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	भुज, गुजरात 29 फरवरी–02 मार्च 2024
11.	पूर्वी क्षेत्र के लिए मध्य स्तर (कक्षा 6 से 8 तक) में शिक्षा के व्यावसायीकरण पर शिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 11–15 मार्च 2024
12.	मध्य क्षेत्र के लिए मध्य स्तर (कक्षा 6 से 8 तक) में शिक्षा के व्यावसायीकरण पर शिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 05–07 मार्च 2024
13.	दक्षिणी क्षेत्र के लिए मध्य स्तर (कक्षा 6 से 8 तक) में शिक्षा के व्यावसायीकरण पर शिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 21–25 अगस्त 2023
14.	पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए मध्य स्तर (कक्षा 6 से 8 तक) में शिक्षा के व्यावसायीकरण पर शिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 21–25 अगस्त 2023
15.	गोवा, केरल, मणिपुर और मिजोरम के लिए व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 26 फरवरी–01 मार्च 2024
16.	उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, दिल्ली और हरियाणा राज्यों के लिए व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षक तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 04–08 सितंबर 2023
17.	आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और तमिलनाडु के व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 31 जुलाई–04 अगस्त 2023
18.	त्रिपुरा, असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय और पुदुच्चेरी राज्यों के लिए व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 18–22 सितंबर 2023
19.	पंजाब, हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ राज्यों के लिए व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 11–15 सितंबर 2023
20.	जम्मू और कश्मीर, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, बिहार, लक्षद्वीप और नागालैंड राज्यों के लिए व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 07–11 अगस्त 2023

21.	गुजरात, दमन और दीव तथा दादरा और नगर हवेली राज्यों के लिए व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 04–08 सितंबर 2023
22.	मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और महाराष्ट्र राज्यों के लिए व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों के विकास हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 11–15 सितंबर 2023
23.	सुरक्षा क्षेत्र में विभिन्न जॉब रोल के लिए व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 06–10 नवंबर 2023
24.	कृषि क्षेत्र में विभिन्न जॉब रोल के लिए व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 20–24 नवंबर 2023
25.	रिटेल क्षेत्र में विभिन्न जॉब रोल के लिए व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 03–07 अक्तूबर 2023
26.	बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं और बीमा क्षेत्र में विभिन्न जॉब रोल के लिए व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 30 अक्तूबर–03 नवंबर 2023
27.	यात्रा, पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र में विभिन्न जॉब रोल के लिए व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 20–24 नवंबर 2023
28.	ऑटोमोबाइल क्षेत्र में विभिन्न जॉब रोल के लिए व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 27 नवंबर–01 दिसंबर 2023
29.	स्वास्थ्य क्षेत्र में विभिन्न जॉब रोल के लिए व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 30 अक्तूबर–05 नवंबर 2023
30.	परिधान निर्माण और गृह सज्जा क्षेत्र में विभिन्न जॉब रोल के लिए व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 7–11 अगस्त 2023
31.	खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में विभिन्न जॉब रोल के लिए व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 13–17 नवंबर 2023
32.	आई.टी.-आई.टी.ई.एस. में विभिन्न जॉब रोल के लिए व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 08–12 जनवरी 2024

ओडिशा के व्यावसायिक शिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा निदेशालय (डी.एच.एस.ई.), ओडिशा के सहयोग से, स्टार्स कार्यक्रम के अंतर्गत 174 सरकारी व्यावसायिक उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों (जी.वी.एच.एस.एस.) को राष्ट्रीय कौशल योग्यता रूपरेखा (एन.एस.क्यू.एफ.) के अनुरूप बनाने के लिए भुवनेश्वर में सी.एस.एस.–वी.एस.ई. के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल के संकाय सदस्यों ने ज्ञान और कौशल को अद्यतन करने, विद्यार्थियों के बीच शैक्षिक और रोज़गार के अवसरों की उपलब्धता के बारे में जानकारी का प्रसार करने, राज्य में व्यावसायिक कार्यक्रम की मौजूदा योजना को समझने, वर्तमान व्यावसायिक कार्यक्रम से एन.एस.क्यू.एफ. संरेखित पाठ्यक्रमों में परिवर्तन की रूपरेखा तैयार करने और शिक्षकों को व्यावसायिक शिक्षा में करियर की संभावनाओं के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यक्रम में ओडिशा के सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के व्यावसायिक शिक्षा के कुल 193 कनिष्ठ व्याख्याताओं ने भाग लिया।

पश्चिम बंगाल के व्यावसायिक शिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण

पश्चिम बंगाल के व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण निदेशालय (डी.वी.ई.टी.) के सहयोग से, कलकत्ता तकनीकी स्कूल, एस्प्लेनेड, कोलकाता में सी.एस.एस.–वी.एस.ई. के तहत व्यावसायिक शिक्षकों के लिए सेवाकालीन

प्रशिक्षण का आयोजन पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. द्वारा किया गया। पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल के हावड़ा, उत्तर 24 परगना, दक्षिण 24 परगना और कोलकाता से 330 व्यावसायिक प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

संस्थान देश के उत्तरी क्षेत्र के राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुसार, संस्थान चुने गए विषयों पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करता है। वर्ष 2023–24 के लिए, अनुभवात्मक शिक्षा, आई.सी.टी.-एकीकृत शिक्षणशास्त्र, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अनुसंधान पद्धति और पुस्तकालय सेवाओं के आधुनिकीकरण पर विभिन्न हितधारकों के लिए छह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रशिक्षित व्यक्तियों का उपयोग संबंधित राज्यों द्वारा राज्य संसाधन समूह या मास्टर प्रशिक्षकों के रूप में किया जाता है।

क्र. सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	एन.ई.पी. 2020 के संदर्भ में माध्यमिक स्तर पर विज्ञान में अनुभवात्मक शिक्षा पर एस.आर.जी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., अजमेर 18–22 दिसंबर 2023
2.	माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान और भाषा में अनुभवात्मक शिक्षण कार्यनीतियों पर एस.आर.जी. का क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., अजमेर 11–15 मार्च 2024
3.	माध्यमिक स्तर पर आई.सी.टी. एकीकृत शिक्षणशास्त्र के माध्यम से अधिगम परिणामों की प्राप्ति पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., अजमेर 11–15 दिसंबर 2023
4.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर एस.आर.जी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., अजमेर 15–19 जनवरी 2024
5.	अनुसंधान को स्कूलों में लाने के लिए अनुसंधान पद्धति पर एस.आर.जी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., अजमेर 30 अक्तूबर से 3 नवंबर 2023
6.	पुस्तकालय सेवाओं के आधुनिकीकरण पर के.आर.पी. का क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., अजमेर 6–10 नवंबर 2023

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

गुजरात, दादरा और नगर हवेली तथा दमन एवं दीव के माध्यमिक स्तर के भूगोल शिक्षकों के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम

गुजरात, दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव के माध्यमिक स्तर के भूगोल शिक्षकों के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल में 20 से 24 नवंबर 2023 तक भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी का प्रारंभ, इसके अनुप्रयोग, भू-स्थानिक डेटा, स्कूल में भूगोल शिक्षण में भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी का एकीकरण, मानचित्र निर्माण का इतिहास, दूरी और दिशा, पैमाना और प्रकार, मानचित्रों के प्रकार, जियोइड और ग्लोब, हवाई तस्वीरें, गूगल से क्यू.जी.आई.एस. सॉफ्टवेयर डाउनलोड करने और इंस्टॉलेशन पर सत्र आयोजित किए गए। प्रशिक्षण सत्र का दूसरा भाग प्रयोगशाला कार्य के लिए समर्पित था, जिसमें जी.आई.एस. में वेक्टर डेटा, भू-स्थानिक विश्लेषण, क्यू.जी.आई.एस. में भू-प्रसंस्करण उपकरण, स्कूल के नाम प्रदर्शित करना, पृष्ठभूमि इमेज के रूप में ओ.एस.एम. मानचित्र प्रदर्शित करना, भू-भाग विश्लेषण, डिजिटल उन्नयन मॉडल (डी.ई.एम.), ओपन-सोर्स प्लेटफॉर्म से डी.ई.एम. प्राप्त करना, डी.ई.एम. से आयाम उत्पन्न करना आदि सम्मिलित थे।

स्कूल लाइब्रेरियनशिप में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूल पुस्तकालयाध्यक्षों को सतत व्यावसायिक विकास (सी.पी.डी.) प्रशिक्षण प्रदान करना और स्कूल लाइब्रेरियन को सक्षम बनाना और एन.ई.पी. 2020 में स्थापित बुनियादी विचारों के आलोक में

स्कूल लाइब्रेरी को सुदृढ़ करना था। इस पाठ्यक्रम में पुस्तकालय संगठन, कैटलॉगिंग, वर्गीकरण प्रणाली, डिजिटल पुस्तकालय और सूचना पुनर्प्राप्ति जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है। प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होता है, जो उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में पुस्तकालयों में भूमिकाओं के लिए तैयार करता है। यह कार्यक्रम पारंपरिक और डिजिटल दोनों वातावरणों में कुशल पुस्तकालय पेशेवरों की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है। इस प्रशिक्षण से पुस्तकालय सेवाओं में उल्लेखनीय सुधार किया गया है और स्कूलों में अधिक आकर्षक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा दिया गया है।

मध्य प्रदेश के इतिहास पर पी.जी.टी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

इस कार्यक्रम का उद्देश्य इतिहास के शिक्षकों के विषय ज्ञान को समृद्ध करना था, ताकि इतिहास पढ़ाने में परिवर्तनकारी शिक्षणशास्त्र पर चर्चा की जा सके और उपरोक्त उद्देश्यों को संबोधित करने के लिए एक इतिहास पैकेज विकसित किया जा सके। पुरातत्वविदों के तरीकों पर एक व्यावहारिक कार्यशाला आयोजित की गई, जहाँ शिक्षकों ने प्रागैतिहासिक उपकरण भी बनाए। प्रागैतिहासिक और आद्य-ऐतिहासिक स्थलों का दौरा किया गया, जिससे शिक्षकों को प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ। राज्य संग्रहालय के दौरे से उन्हें आइकनोग्राफी, मुद्राशास्त्र और पुरालेखशास्त्र के बारे में गहरी समझ मिली। मानव संग्रहालय के दौरे से उन्हें भारतीय ज्ञान प्रणाली की विविध संस्कृतियों और पारंपरिक अभ्यासों को समझने में सहायता मिली। कक्षाओं में चर्चा, वाद-विवाद, कला-एकीकरण, आई.सी.टी. का उपयोग और ई-सामग्री का विकास, परियोजना आधारित और अनुसंधान-आधारित शिक्षा जैसे परिवर्तनकारी शिक्षण को सम्मिलित करने पर सत्र भी आयोजित किए गए।

महाराष्ट्र, गोवा और गुजरात के के.आर.पी. को रंगमंच शिक्षणशास्त्र पर प्रशिक्षण

इस कार्यक्रम का उद्देश्य के.आर.पी. को रंगमंच शिक्षणशास्त्र से परिचित कराना; संगठन या संस्थानों में रंगमंच से संबंधित विभिन्न गतिविधियों के आयोजन पर के.आर.पी. को प्रशिक्षित करना; रंगमंच शिक्षणशास्त्र के माध्यम से व्यक्तित्व के विकास के लिए समग्र शिक्षा पर के.आर.पी. का अभिविन्यास करना; रंगमंच शिक्षणशास्त्र के माध्यम से व्यक्तिगत विकास पर के.आर.पी. को प्रशिक्षित करना; रंगमंच गतिविधियों के बुनियादी सिद्धांतों पर के.आर.पी. को प्रशिक्षित करना; व्यक्तित्व विकास, वाक्-चिकित्सा, मनोवैज्ञानिक अवलोकन, दर्शकों के सामने होने वाले डर को दूर करने आदि से संबंधित अभ्यासों के साथ के.आर.पी. को प्रशिक्षित करना। कार्यशाला के परिणामस्वरूप एक नाटक तैयार किया जाएगा और उसके माध्यम से प्रदर्शन किया जाएगा, जिससे सेवारत शिक्षक को आधुनिक भारतीय रंगमंच का वास्तविक अनुभव मिलेगा।

पश्चिमी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय स्तर के के.आर.पी. को बहुभाषी-बहुसांस्कृतिक शिक्षा पर प्रशिक्षण

इस कार्यक्रम का उद्देश्य बहुभाषी-बहुसांस्कृतिक शिक्षा में सामग्री विकसित करने के लिए स्थान की पहचान करने हेतु विषयवस्तु का विश्लेषण करना; बहुभाषी-बहुसांस्कृतिक शिक्षा पर पश्चिमी क्षेत्र के के.आर.पी. को प्रशिक्षण प्रदान करना; बहुभाषी-बहुसांस्कृतिक शिक्षा को ध्यान में रखते हुए एन.ई.पी. 2020 के संदर्भ में नवीन अभ्यासों को अपनाना; बहुभाषी-बहुसांस्कृतिक शिक्षा के क्षेत्र में पश्चिमी क्षेत्र की स्कूली शिक्षा का समर्थन प्रदान करना है।

एन.ई.पी. 2020 के संदर्भ में स्वदेशी खेलों पर पश्चिमी क्षेत्र के के.आर.पी. का प्रशिक्षण

इस कार्यक्रम को एन.ई.पी. 2020 के अनुसार डिजाइन किया गया है। इस कार्यक्रम के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करने की उम्मीद है जिसमें स्वदेशी खेल, शारीरिक शिक्षा शिक्षक, शारीरिक प्रशिक्षण प्रशिक्षक और योग शिक्षक सम्मिलित हैं। शारीरिक शिक्षा, योग और स्वदेशी खेल कार्यक्रम का महत्व यह है कि इनसे विद्यार्थियों को कौशल की एक विस्तृत शृंखला विकसित करने में सहायता मिलती है और साथ ही उन्हें घर और स्कूल दोनों स्थानों में सफलतापूर्वक प्रदर्शन करने के लिए युक्तियाँ, कार्यनीति और नए विचारों का उपयोग

करने की क्षमता प्रदान की जाती है। एन.ई.पी. 2020 में पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में खेल की परिकल्पना की जाती है और खेल को एकीकृत शिक्षा के साथ-साथ जीवनशैली के रूप में अपनाने पर बल दिया जाता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्कूलों में सभी स्तरों पर खेल को अनिवार्य विषय बनाया जाना चाहिए।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आई.सी.टी. के एकीकरण पर डी.आई.ई.टी. के के.आर.पी. का प्रशिक्षण

इस कार्यक्रम का उद्देश्य; शिक्षा में आई.सी.टी. का उपयोग करने के लिए डी.आई.ई.टी. के के.आर.पी. के बीच ज्ञान और कौशल का विकास करना; शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आई.सी.टी. के एकीकरण के लिए वेब 2.0 उपकरणों के उपयोग में डी.आई.ई.टी. के के.आर.पी. को परिचित कराना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई; 1. शिक्षण-अधिगम के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.); 2. वेब 2.0 प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षण प्रौद्योगिकी एकीकरण; 3. ऑनलाइन शिक्षा संसाधन; 4. अधिगम प्रबंधन प्रणाली— गूगल क्लासरूम; 5. ई-सामग्री का विकास; 6. ई-पोर्टफोलियो की अवधारणा और निर्माण; 7. शिक्षा में सहायक प्रौद्योगिकी; 8. एच5पी संलेखन उपकरण; 9. वीडियो-आधारित विश्लेषण फ्रीवेयर: ट्रैकर; 10. गणित में आई.सी.टी.; 11. भाषा और सामाजिक विज्ञान के लिए आई.सी.टी.; 12. स्कूली भूगोल पढ़ाने में भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी; 13. वीडियो और ऑडियो एडिटिंग टूल; 14. गूगल फॉर्म कैसे बनाएँ और उसका विश्लेषण करें; 15. ऑनलाइन असेसमेंट टूल; 16. गूगल कोलेबोरेटिव टूल।

मार्गदर्शन एवं परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (दूरस्थ या ऑनलाइन और आमने-सामने के माध्यम से)

इस पाठ्यक्रम में मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रक्रियाओं और कार्यप्रणालियों के मुख्य घटक, मानव समायोजन और करियर विकास के प्रमुख सिद्धांत और परामर्श में उनका अनुप्रयोग, मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन और आकलन तथा मार्गदर्शन एवं परामर्श अभ्यासों में करियर संबंधी जानकारी का उपयोग सम्मिलित है। इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों के विशेष समूहों, संकट की स्थितियों और बहुसांस्कृतिक शक्तियों, वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण आदि से उत्पन्न होने वाले अन्य मुद्दों के लिए परामर्श भी सम्मिलित है, जिनका मार्गदर्शन एवं परामर्श अभ्यासों पर प्रभाव पड़ता है। पाठ्यक्रम में सैद्धांतिक घटकों के साथ एकीकृत व्यावहारिक कार्य में गहन प्रशिक्षण सम्मिलित है, जिसका संचालन और पर्यवेक्षण आगे चलकर स्कूलों में किया जाता है। व्यावहारिक प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण विशेषताएँ संवर्धन व्याख्यान, गोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ, प्रदर्शन, स्व-अध्ययन और विचार मंथन सत्र भी हैं। मार्गदर्शन संस्थानों और पेशेवरों के साथ काम करने का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करने के लिए उम्मीदवारों को फील्ड विजिट और भ्रमण पर जाने की भी व्यवस्था की जाती है। इंटर्नशिप— इंटर्नशिप या 'ऑन-द-जॉब अनुभव' इस पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण घटक है। प्रशिक्षु सिद्धांत और व्यवहार से प्राप्त समझ एवं कौशल को और अधिक निखारने के लिए वास्तविक कार्य व्यवस्था में इंटर्नशिप करते हैं।

एन.ई.पी. 2020 के अनुसार दमन और दीव तथा दादरा और नगर हवेली के लिए इक्कीसवीं सदी के कौशल हेतु वैश्विक नागरिकता शिक्षा पर प्रमुख संसाधन व्यक्तियों (के.आर.पी.) का प्रशिक्षण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के आलोक में, वैश्विक नागरिकता शिक्षा पर प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्देश्य शिक्षार्थियों में इक्कीसवीं सदी के कौशल विकसित करना है। इनमें सहयोग और टीमवर्क, रचनात्मकता, कल्पना, आलोचनात्मक चिंतन और समस्या समाधान जैसे कौशल सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त लचीलापन और अनुकूलनशीलता, पहल और नेतृत्व एवं निर्णय लेने की क्षमता भी सम्मिलित है। हम परिवर्तनकारी शैक्षणिक प्रक्रियाओं के माध्यम से शिक्षार्थियों में इन कौशलों को विकसित कर सकते हैं। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में जी.सी.ई.डी. को शामिल करने से शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए आवश्यक संदर्भ उपलब्ध होगा। इस प्रकार उन्हें इक्कीसवीं सदी के कौशल विकसित करने के लिए शिक्षार्थियों के बीच शिक्षा प्रदान करने के लिए तैयार

किया जाएगा। जी.सी.ई.डी. प्रशिक्षण में एन.सी.एफ. 2005 और यूनेस्को द्वारा परिकल्पित उपरोक्त क्षेत्रों पर सामग्री सम्मिलित की गई है। वैश्विक नागरिकता शिक्षा प्रशिक्षण का प्राथमिक उद्देश्य शिक्षकों को आम मानवता से जुड़ाव की भावना विकसित करने के लिए प्रशिक्षित करना है। जी.सी.ई.डी. प्रशिक्षण से शिक्षकों को इक्कीसवीं सदी के कौशल और मुख्य दक्षताओं को सीखने और आत्मसात करने और शिक्षार्थियों को सक्रिय और ज़िम्मेदार वैश्विक नागरिक बनने के लिए तैयार करने में मदद मिलने की उम्मीद है।

एन.ई.पी. 2020 के आलोक में पश्चिमी क्षेत्र के के.आर.पी. के लिए विज्ञान शिक्षा में आई.सी.टी. के एकीकरण पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम

विज्ञान शिक्षा में आई.सी.टी. के एकीकरण पर यह क्षमता निर्माण कार्यक्रम, एन.ई.पी. 2020 के दायरे में संदर्भित है, जो इस डिजिटल प्रतिमान बदलाव को प्रभावी तरीके से संचालित करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और उपकरणों के साथ शिक्षकों को सशक्त बनाने के लिए एक ठोस प्रयास का प्रतिनिधित्व करता है। आई.सी.टी. उपकरणों और संसाधनों का लाभ उठाकर शिक्षक विद्यार्थियों के बीच आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और वैज्ञानिक जाँच को बढ़ावा देने वाले लंबे और आकर्षक शिक्षण अनुभव बना सकते हैं।

गुजरात राज्य के आदर्श निवासी शाला के माध्यमिक शिक्षकों का विज्ञान विषय में क्षमता निर्माण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और एन.ई.पी. 2020 में विज्ञान शिक्षा के महत्व पर बल दिया गया है, इन शब्दों में, "विज्ञान शिक्षा को सुदृढ़ किया जाएगा, ताकि बच्चे में अच्छी तरह से परिभाषित क्षमताओं और मूल्यों जैसे कि जाँच की भावना, रचनात्मकता, निष्पक्षता, प्रश्न पूछने का साहस और सौंदर्य संवेदनशीलता विकसित हो सके।" यह बढ़ी हुई जिम्मेदारी तभी पर्याप्त रूप से निभाई जा सकती है जब विज्ञान शिक्षकों को आवश्यक वैज्ञानिक दक्षताओं से युक्त किया जाए। स्कूल शिक्षा और विशेष रूप से विज्ञान शिक्षा में व्यावहारिक कौशल के महत्व को ध्यान में रखते हुए, माध्यमिक स्तर को सोच विचारकर चुना गया था, क्योंकि यह अनुभव किया गया था कि यह शिक्षार्थियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्तर है जहाँ शिक्षार्थी को प्रारंभिक स्तर पर प्राप्त ज्ञान को सुदृढ़ करना होता है और साथ ही भविष्य के जीवन के लिए सही दृष्टिकोण का निर्माण करना होता है, जो शिक्षार्थी को जीवन के सभी क्षेत्रों में एक सफल और आत्मविश्वासी व्यक्ति बना सकता है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाओं और विद्यार्थियों में प्रयुक्त व्यावहारिक कौशल के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियाँ प्रदान की जाती हैं, जिनका उपयोग समूह-कार्य में और वैयक्तिक शिक्षकों और शिक्षार्थियों द्वारा स्वतंत्र अध्ययन के लिए किया जा सकता है।

पश्चिमी क्षेत्र के लिए विज्ञान शिक्षा में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (डी.पी.एस.ई. 2023–24) (दूरस्थ या ऑनलाइन और आमने-सामने की विधि)

इस कार्यक्रम का उद्देश्य सेवारत विज्ञान शिक्षकों (प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित दोनों), महत्वाकांक्षी शिक्षकों, विज्ञान अध्यापक प्रशिक्षकों, विज्ञान शिक्षा अनुसंधानकर्ताओं को उनकी व्यावसायिक क्षमताओं के संवर्धन के साथ-साथ उनके शैक्षणिक करियर को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षित करना है। यह एक मिश्रित विधि कार्यक्रम है जिसमें प्रशिक्षुओं को ऑनलाइन और आमने-सामने बातचीत दोनों प्रदान की गई थी। कार्यक्रम की अवधि एक वर्ष थी जिसमें दो सेमेस्टर थे और दो चरण (निर्देशित स्व-शिक्षण और असाइनमेंट, व्यावहारिक, आकलन और मूल्यांकन) थे।

अनुसंधान विधि और डेटा विश्लेषण पर पश्चिमी क्षेत्र के अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण

ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डी.आई.ई.टी. या सी.टी.ई. संकाय देश में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने में एक महान भूमिका निभाते हैं। वे देश के भावी शिक्षकों को तैयार करते हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि शिक्षकों या

डी.आई.ई.टी. अथवा सी.टी.ई. संकायों को स्थिति की आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रकार के अनुसंधान करने में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह प्रशिक्षण कार्यक्रम दो स्तरों में आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षण का पहला चरण गोवा, गुजरात, महाराष्ट्र राज्यों और दमन एवं दीव तथा दादरा और नगर हवेली के संघ राज्य क्षेत्रों के लिए आयोजित किया गया था।

गोवा राज्य के लिए रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित गणित किट के उपयोग पर के.आर.पी. का प्रशिक्षण

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने गणित शिक्षण को प्रभावी और आनंददायक बनाने के लिए गणित किट विकसित की है। राज्य भी इन किटों को खरीदते हैं, लेकिन अधिकांश शिक्षकों को इनके समुचित उपयोग में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा इसका उद्देश्य, के.आर.पी. को विकसित गणित किट के उपयोग के बारे में जानकारी देना; गणित शिक्षण को जीवंत बनाने के लिए गणित की विभिन्न नवीन शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना; गणित सीखने को आनंदमय बनाने के लिए विभिन्न कम लागत वाली शिक्षण सहायक सामग्री तैयार करने; और उपयोग करने के लिए के.आर.पी. को प्रशिक्षित करना और कक्षा शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए उन्हें विभिन्न गणितीय सॉफ्टवेयर, जैसे— जिओ-जेब्रा, रोबो कम्पास, कैम स्टूडियो, मैथमेटिका आदि से अवगत कराना है।

क्र. सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	मध्य प्रदेश के एकलव्य एवं अन्य विद्यालयों के टी.जी.टी. (अंग्रेजी) का प्रशिक्षण	आर.आई.ई., भोपाल 12–15 दिसंबर 2023
2.	मध्य प्रदेश के एकलव्य एवं अन्य विद्यालयों के टी.जी.टी. (अंग्रेजी) का प्रशिक्षण	आर.आई.ई., भोपाल 4–8 दिसंबर 2023
3.	भाषा प्रयोगशाला या भाषा संसाधन केंद्र के उपयोग में महाराष्ट्र के के.आर.पी. का प्रशिक्षण	आर.आई.ई., भोपाल 11–15 मार्च 2024
4.	मध्य प्रदेश के विज्ञान और गणित पर प्रयोगशाला सहायकों के मास्टर प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण.	आर.आई.ई., भोपाल 1–5 जून 2024
5.	मध्य प्रदेश के रसायन विज्ञान उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए ई.एम.आर.एस. प्रशिक्षण	आर.आई.ई., भोपाल 8–11 दिसंबर 2023
6.	मध्य प्रदेश के सी.एम. राइज विद्यालयों के राज्य स्रोत समूह हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिंदी विषयक शिक्षक-प्रशिक्षण	8–12 अप्रैल 2024
7.	गुजरात, दादरा और नगर हवेली तथा दमन एवं दीव के माध्यमिक स्तर के भूगोल शिक्षकों के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम	20–24 नवंबर 2023
8.	स्कूल लाइब्रेरियनशिप में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	18–22 मार्च 2024
9.	मध्य प्रदेश के इतिहास पर पी.जी.टी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	5–9 फरवरी 2024
10.	महाराष्ट्र, गोवा और गुजरात के के.आर.पी. के लिए रंगमंच शिक्षाशास्त्र पर प्रशिक्षण	19–23 फरवरी 2024
11.	पश्चिमी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय स्तर के के.आर.पी. को बहुभाषी-बहुसांस्कृतिक शिक्षा पर प्रशिक्षण	3–7 फरवरी 2024

12.	एन.ई.पी. 2020 के संदर्भ में स्वदेशी खेलों पर पश्चिमी क्षेत्र के के.आर.पी. का प्रशिक्षण	30 नवंबर 2023–14 दिसंबर 2023 (चरण 1) 10–14 फरवरी 2024 (चरण 2)
13.	आर.आई.ई., भोपाल के सेवा-पूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए रंगमंच कार्यशाला एवं प्रदर्शन	2–11 जुलाई 2023 (चरण 1) 20–29 दिसंबर 2023 (चरण 2)
14.	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आई.सी.टी. के एकीकरण पर डी.आई.ई.टी. के के.आर.पी. का प्रशिक्षण	15–19 जनवरी 2024 (चरण 1) 19–23 फरवरी 2024 (चरण 2)
15.	मार्गदर्शन एवं परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (दूरस्थ या ऑनलाइन एवं आमने-सामने विधि)	आर.आई.ई., भोपाल 1 जुलाई–30 सितंबर 2024
16.	एन.ई.पी. 2020 के अनुसार दमन और दीव तथा दादरा और नगर हवेली के लिए इक्कीसवीं सदी के कौशल हेतु वैश्विक नागरिकता शिक्षा पर प्रमुख संसाधन व्यक्तियों (के.आर.पी.) का प्रशिक्षण	आर.आई.ई., भोपाल 1–5 जनवरी 2024
17.	एन.ई.पी. 2020 के आलोक में पश्चिमी क्षेत्र के के.आर.पी. के लिए विज्ञान शिक्षा में आई.सी.टी. के एकीकरण पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम	एस.सी.ई.आर.टी., गोवा 8–12 जनवरी 2024
18.	गुजरात राज्य के आदर्श निवासी शालाओं के माध्यमिक शिक्षकों का विज्ञान विषय में क्षमता निर्माण	आर.आई.ई., भोपाल 9 –13 अक्तूबर 2023
19.	पश्चिमी क्षेत्र के लिए विज्ञान शिक्षा में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (डी.पी.एस.ई. 2023–2024) (दूरस्थ या ऑनलाइन और आमने-सामने विधि)	आर.आई.ई., भोपाल 7–11 अगस्त 2023 (ऑनलाइन) 27 सितंबर–1 अक्तूबर 2023 (आमने-सामने)
20.	अनुसंधान पद्धति और डेटा विश्लेषण पर पश्चिमी क्षेत्र के अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण	आर.आई.ई., भोपाल 4 – 8 मार्च 2024 (चरण – 1) 11–15 मार्च 2024 (चरण – 2)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

माध्यमिक स्तर पर विज्ञान प्रयोगशाला के प्रभावी उपयोग पर ओडिशा और बिहार के आकांक्षी जिलों के के.आर.पी. का क्षमता निर्माण

ओडिशा और बिहार के आकांक्षी जिलों को सशक्त करने की आवश्यकता को समझते हुए 11 से 15 दिसंबर 2023 तक आर.आई.ई., भुवनेश्वर में क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्कूल में मौजूद प्रयोगशाला सुविधा का सर्वोत्तम उपयोग करना आवश्यक हो जाता है। हालाँकि, ओडिशा और बिहार के कई स्कूलों में विज्ञान विषयों में उचित विज्ञान प्रयोगशाला की व्यवस्था नहीं है। परिणामस्वरूप, माध्यमिक स्तर पर अधिकांश शिक्षार्थी शिक्षण और कौशल विकास में बहुत अधिक पारंगत नहीं हैं। इसे देखते हुए, प्रयोगशाला अभ्यासों के माध्यम से के.आर.पी. की योग्यता बढ़ाने के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम के उद्देश्य से संसाधन सामग्री विकसित की गई। कार्यक्रम के दौरान के.आर.पी. द्वारा आर.आई.ई., भुवनेश्वर की सभी प्रयोगशालाओं का उपयोग किया गया। कार्यक्रम की प्रभावशीलता के बारे में सभी के.आर.पी. से प्रतिक्रिया भी प्राप्त की गई। इस तरह के क्षमता निर्माण कार्यक्रम ओडिशा और बिहार के आकांक्षी जिलों में हमारी स्कूली शिक्षा को भारत की विविध राष्ट्रीय और वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करेंगे।

सामाजिक विज्ञान में अधिगम प्रतिफलों पर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

इस कार्यक्रम का उद्देश्य सामाजिक विज्ञान के अधिगम परिणामों की अवधारणा और महत्व पर समझ विकसित करना तथा अधिगम परिणामों से संबंधित सीखने के संसाधनों, शिक्षण पद्धति और मूल्यांकन कार्यनीति को डिजाइन और उपयोग करने की क्षमता और कौशल विकसित करना है। यह कार्यक्रम 4 –8 दिसंबर 2023 तक स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन (एस.आई.ई.) पोर्ट ब्लेयर में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में कुल 29 माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक और सात संसाधन व्यक्ति शामिल हुए। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षण की कार्यनीति के रूप में सहभागिता पद्धति, चर्चा पद्धति, समूह कार्य, सहकर्मी शिक्षण और क्षेत्र कार्य का पालन किया गया। सभी प्रतिभागियों ने छोटे-छोटे समूहों में काम किया और सामाजिक विज्ञान के अधिगम परिणामों के आधार पर सीखने और मूल्यांकन की कार्यनीति विकसित की। रा.शै.अ.प्र.प. और एन.सी.एफ.एस.ई. 2023 द्वारा विकसित अधिगम परिणाम दस्तावेज को प्रशिक्षण संसाधनों के रूप में उपयोग किया गया था।

ई-सामग्री के विकास पर ओडिशा के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों के बीच स्क्रिप्ट डिजाइन करने, गुणवत्तापूर्ण ई-सामग्री तैयार करने और उत्पादन में बुनियादी कौशल विकसित करना था। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित ई-सामग्री विकास दिशानिर्देशों का उपयोग शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के संदर्भ के रूप में किया गया था। क्षमता निर्माण कार्यक्रम 9–13 अक्तूबर 2023 तक आर.आई.ई., भुवनेश्वर में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में ओडिशा और झारखंड के विभिन्न जिलों से कुल 49 प्रतिभागी और सात संसाधन व्यक्तियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को सी.आई.ई.टी. और आई.सी.टी. स्टूडियो, आर.आई.ई., भुवनेश्वर द्वारा विकसित सर्वोत्तम ई-सामग्री से अवगत कराया गया, जिसके बाद स्क्रिप्ट विकसित करने की प्रक्रिया, उत्पादन के तौर-तरीके, समीक्षा प्रक्रिया आदि पर चर्चा हुई।

अनुसंधान पद्धति पर बिहार और ओडिशा के अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण

इसका मुख्य उद्देश्य शैक्षिक अनुसंधान प्रक्रिया पर सैद्धांतिक समझ विकसित करना, शैक्षिक अनुसंधान की योजना बनाने और उसे कार्यान्वित करने के कौशल विकसित करना तथा अध्यापक प्रशिक्षकों में शैक्षिक अनुसंधान को शिक्षण और नीति से जोड़ने में दक्षता विकसित करना है। यह कार्यक्रम दो स्तरों में आयोजित किया गया; शैक्षिक अनुसंधान में संसाधन सामग्री का विकास और प्रशिक्षण कार्यक्रम। एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 16–20 जनवरी 2024 तक आर.आई.ई., भुवनेश्वर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में शैक्षिक अनुसंधान के महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की गई— अनुसंधान प्रस्ताव तैयार करना, उपकरण विकास, सांख्यिकीय तकनीक और रिपोर्टिंग। प्रतिभागियों को एक साथ काम करने और प्रस्ताव विकसित करने के लिए पर्याप्त समय दिया गया। गूगल फॉर्म की सहायता से प्रतिक्रिया ली गई।

एन.ई.पी. 2020 में परिकल्पित समावेशी शिक्षा पर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह और बिहार के के.आर.पी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

प्रमुख संसाधन व्यक्तियों (के.आर.पी.) के लिए क्षमता निर्माण का यह शैक्षणिक प्रयास बिहार राज्य एवं अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के लिए एक राज्य या संघ राज्य क्षेत्र अनुरोध कार्यक्रम था। इसका उद्देश्य बिहार और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के शिक्षकों या विशेष शिक्षकों अथवा के.आर.पी. को एन.ई.पी. 2020 द्वारा परिकल्पित समावेशी शिक्षा पर सशक्त बनाना था, ताकि उनके संदर्भ में आगे के कार्यान्वयन के लिए इसे कार्यान्वित किया जा सके। इस कार्यक्रम को चरणबद्ध तरीके से कार्यान्वित किया गया, जैसे कि संगत आवश्यकताओं की पहचान करने और उन्हें पूरा करने के लिए आवश्यकता मूल्यांकन, 18 से 22 जनवरी 2024 के दौरान बिहार के

लिए अध्ययन-अध्यापन के लिए मॉड्यूल के विकास और अंतिम रूप देने के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला और 12 से 16 फरवरी 2024 तक संघ राज्य क्षेत्र अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के लिए पाँच दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम। स्कूलों में समान और समावेशी शिक्षा प्रदान करने के लिए एन.ई.पी. 2020 के दृष्टिकोण को सम्मिलित किया गया। प्रतिभागियों को यथार्थवादी और व्यावहारिक अनुभव देने के लिए समावेशी स्कूल और विशेष स्कूलों का एक फील्ड दौरा भी इसमें सम्मिलित किया गया।

माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी में सीखने के परिणाम पर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के के.आर.पी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के के.आर.पी. के लिए माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी में सीखने के परिणाम पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम 20 से 24 जनवरी 2024 तक द्वीप समूह के शैक्षिक प्राधिकरण के अनुरोध के जवाब में आयोजित किया गया था। अंग्रेजी में सीखने के परिणाम पर ध्यान केंद्रित करते हुए भाषा विज्ञान और अंग्रेजी भाषा शिक्षण के विभिन्न आयामों को शामिल किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ई.एल.टी. के नवीनतम विकास के साथ प्रतिभागियों को भाषा शिक्षण एवं अधिगम में अवधारणाओं की समझ एवं अनुप्रयोग के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित करना, संचार कौशल का महत्व तथा भाषा संबंधी कौशलों को बढ़ाना था।

स्कूल लाइब्रेरी के प्रबंधन और आधुनिकीकरण के लिए अंडमान एवं निकोबार द्वीप के के.आर.पी. का क्षमता निर्माण कार्यक्रम

स्कूल लाइब्रेरी के प्रबंधन और आधुनिकीकरण के लिए के.आर.पी. या स्कूल लाइब्रेरियन की क्षमता निर्माण पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 11–15 दिसंबर 2023 के दौरान स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान एवं निकोबार द्वीप में आयोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य प्रयोक्ताओं की आसान और प्रभावी पहुँच के लिए अपने पुस्तकालयों के प्रबंधन और स्वचालन में स्कूल लाइब्रेरियन की क्षमता विकसित करना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम से पहले, लक्ष्य समूह की आवश्यकता का आकलन किया गया और उस आवश्यकता के आधार पर प्रशिक्षण मॉड्यूल और सामग्री विकसित की गई।

एन.ई.पी. 2020 के संदर्भ में नवीन शिक्षण पद्धति पर ओडिशा के के.आर.पी. का क्षमता निर्माण कार्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में नवीन शिक्षणशास्त्र पर ओडिशा के के.आर.पी. के लिए पाँच दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम 12 से 16 फरवरी 2024 तक आर.आई.ई., भुवनेश्वर में आयोजित किया गया, जिसमें ओडिशा के विभिन्न डी.आई.ई.टी. के 56 के.आर.पी. ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के विषय थे— एन.ई.पी. 2020 में परिकल्पित नवीन शिक्षणशास्त्र, एन.सी.एफ.एस.ई. 2023 और नवीन शिक्षणशास्त्र, नवीन शिक्षणशास्त्र के लिए आई.सी.टी. एकीकरण, खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र, कला एकीकृत शिक्षण, स्वदेशी शिक्षण, फ्लिप्ड लर्निंग, कहानी कहने का शिक्षण, अनुभवात्मक शिक्षण, मल्टीमोडल शिक्षण, खेल एकीकृत शिक्षण, नवीन अभ्यास और अवधारणा मानचित्रण।

माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षा में डिप्लोमा कार्यक्रम (डी.पी.एस.ई.)

माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षा में डिप्लोमा कार्यक्रम (डी.पी.एस.ई.) सत्र 2023–24 के लिए आयोजित किया गया था। 27 जुलाई 2023 को आयोजित ऑनलाइन प्रवेश परीक्षा के बाद 19 प्रतिभागियों का चयन किया गया। चार चरणों में चार संपर्क कार्यक्रम आयोजित किए गए, चरण 1 : 21–28 अगस्त 2023, चरण 2 : 26–30 अक्तूबर 2023, चरण 3 : 23–27 दिसंबर 2023 और चरण 4 : 05 –10 मार्च 2024 थे। संपर्क कार्यक्रम के दूसरे और तीसरे चरण के दौरान सेमेस्टर अंत की परीक्षाएँ आयोजित की गई। परिणाम मई 2024 में प्रकाशित किए गए।

आयोजित किए गए प्रत्येक प्रशिक्षण या अभिविन्यास या क्षमता निर्माण कार्यक्रम अथवा पाठ्यक्रम का विवरण

क्र. सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	ओडिशा के माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान प्रयोगशाला के प्रभावी उपयोग पर ओडिशा के आकांक्षी जिलों के के.आर.पी. का क्षमता निर्माण	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 11–15 दिसंबर 2023
2.	सामाजिक विज्ञान में अधिगम परिणामों पर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के के.आर.पी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	एस.आई.ई., पोर्ट ब्लेयर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह 4–8 दिसंबर 2023
3.	एन.ई.पी. 2020 में परिकल्पित समावेशी शिक्षा पर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह और बिहार के के.आर.पी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	बिहार, 18–25 जनवरी 2024 एस.आई.ई., पोर्ट ब्लेयर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह 4–8 दिसंबर 2023
4.	स्कूल लाइब्रेरी के प्रबंधन और आधुनिकीकरण के लिए अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के के.आर.पी. का क्षमता निर्माण	एस.आई.ई., पोर्ट ब्लेयर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह 11–15 दिसंबर 2023
5.	माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी में अधिगम परिणाम पर अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के के.आर.पी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	एस.आई.ई., पोर्ट ब्लेयर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह 20–24 दिसंबर 2023
6.	माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षा में डिप्लोमा कार्यक्रम (डी.पी.एस.ई.)	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 26–30 अक्तूबर 2023 आर.आई.ई., भुवनेश्वर 23–27 दिसंबर 2023 आर.आई.ई., भुवनेश्वर 5–10 मार्च 2024
7.	ई-सामग्री के विकास पर ओडिशा के के.आर.पी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 9–13 अक्तूबर 2023
8.	अनुसंधान पद्धति पर बिहार और ओडिशा के अध्यापक प्रशिक्षकों की क्षमता निर्माण	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 16–20 जनवरी 2024
9.	एन.ई.पी. 2020 के संदर्भ में नवीन शिक्षणशास्त्र पर ओडिशा के के.आर.पी. का क्षमता निर्माण	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 12–16 फरवरी 2024

आर.आई.ई., मैसूरु

क्र. सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के के.आर.पी. (डी.आई.ई.टी., एस.सी.ई.आर.टी., एस.आई.ई.एम.ए.टी. के संकाय) के लिए समग्र प्रगति कार्ड के विकास पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम	ए.वी. हॉल, आर.आई.ई., मैसूरु 2–24 जनवरी 2024
2.	विज्ञान प्रयोगशालाओं के संगठन और प्रबंधन पर आंध्र प्रदेश के के.आर.पी. का प्रशिक्षण	तारका केंद्र, आर.आई.ई., मैसूरु 8–10 जनवरी 2024

3.	पुदुच्चेरी और तमिलनाडु के के.आर.पी. के लिए अनुभवात्मक शिक्षा पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम	टी4 और आई.सी.टी. लैब, आर.आई.ई., मैसूरु 29–31 जनवरी 2024
4.	कर्नाटक और तेलंगाना के माध्यमिक स्तर के के.आर.पी. के लिए पाँच दिवसीय जीवन कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम	ए.वी. हॉल, आर.आई.ई., मैसूरु 18–22 दिसंबर 2023
5.	माध्यमिक शिक्षकों के लिए गणित शिक्षण में आई.सी.टी. के उपयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम (कर्नाटक/लक्षद्वीप)।	ए.वी. हॉल, आर.आई.ई., मैसूरु 12–16 दिसंबर 2023
6.	पुस्तकालय रखरखाव में मध्य और माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का पाँच दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम	ए.वी. हॉल, आर.आई.ई., मैसूरु 29 जनवरी–2 फरवरी 2024
7.	कर्नाटक के बुनियादी, प्रारंभिक और माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए कक्षा पुस्तकालय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम	ए.वी. हॉल, आर.आई.ई., मैसूरु 16–20 जनवरी 2024
8.	तेलंगाना (बी.आई.ई.), तमिलनाडु, लक्षद्वीप और केरल राज्यों के बुनियादी, प्रारंभिक और मध्य स्तरों के शिक्षकों के लिए अंग्रेजी भाषा कौशल और संचार कौशल बढ़ाने पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम	ए.वी. हॉल, आर.आई.ई., मैसूरु 4–8 सितंबर 2023
9.	कर्नाटक, केरल और लक्षद्वीप के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों (के.आर.पी.) के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श पर पाँच दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम	तारका केंद्र, आर.आई.ई., मैसूरु 13–17 नवंबर 2023
10	कला एकीकृत शिक्षा पर के.आर.पी. के लिए शिक्षक प्रशिक्षण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	ए.वी. हॉल, आर.आई.ई., मैसूरु 28 नवंबर – 2 दिसंबर 2023
11.	कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में प्रारंभिक और मध्य स्तरों में के.आर.पी. के लिए खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम	असेंबली हॉल, आर.आई.ई., मैसूरु 5–9 फरवरी 2024.
12.	कर्नाटक और केरल राज्यों के लिए समावेशी शिक्षा में डी.आई.ई.टी. संकाय के लिए चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम	ए.वी. हॉल, आर.आई.ई., मैसूरु 15–18 नवंबर 2023

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), उमियम

स्कूल प्रणाली में व्यावसायिक शिक्षा के समेकन पर मणिपुर के के.आर.पी. के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

इसका मुख्य उद्देश्य एन.ई.पी. 2020 में व्यावसायिक शिक्षा के लिए अनुशंसाओं के बारे में लोगों को जागरूक करना, कार्यान्वयन के लिए कार्ययोजना से परिचित कराना और उचित कार्यनीतियों को अपनाकर स्कूल प्रणाली में व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण में विभिन्न हितधारकों की भूमिका से परिचित कराना था। इस कार्यक्रम में 51 के.आर.पी. ने भाग लिया जिसमें अध्यापक प्रशिक्षक, व्यावसायिक शिक्षक, स्कूल प्रधानाचार्य, समग्र शिक्षा, मणिपुर के राज्य संसाधन व्यक्ति सम्मिलित थे। इस अभिविन्यास कार्यक्रम में सम्मिलित प्रमुख बल देने वाले क्षेत्र हैं— भारत में शिक्षा के व्यावसायीकरण का अवलोकन और वीडियो के माध्यम से एन.ई.पी. 2020 में व्यावसायिक शिक्षा के स्थान पर स्पष्टीकरण; कम उम्र में व्यावसायिक प्रदर्शन के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के लिए कार्ययोजना और मध्य और माध्यमिक स्तर पर विशिष्ट और गुणवत्ता वाले व्यावसायिक कौशल और उच्च संस्थान तक सुचारू क्रमिक परिवर्तन; आनंद आधारित शिक्षण गतिविधियों, जैसे— प्रभावी दृष्टिकोण, 10 बैग रहित दिन; छात्र सहायता प्रणाली, करियर परामर्श, पूर्व शिक्षा की मान्यता; अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम और उपलब्ध अनुदेशात्मक संसाधन शिक्षक तैयारी जिसमें व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र और नई शिक्षण विधियों,

आकलन और मूल्यांकन, भारतीय मानक और अंतरराष्ट्रीय मानक का संरेखण वार्षिक कार्ययोजना का विकास आदि पर ध्यान केंद्रित किया गया।

एफ.एल.एन. में मणिपुर, मेघालय और सिक्किम के के.आर.पी. या मास्टर प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण कार्यक्रम

चरण 1 (मणिपुर)— पूर्वोत्तर राज्यों के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों (के.आर.पी.) के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) पर क्षमता निर्माण का आयोजन 2 से 6 जनवरी 2024 तक एस.सी.ई.आर.टी., मणिपुर में एन.ई.आर.आई.ई. द्वारा किया गया। कार्यक्रम में समग्र शिक्षा मणिपुर के 37 संसाधन व्यक्तियों ने भाग लिया। संसाधन व्यक्तियों में के. दिनेश कुमार सिंह, डी.एम. कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन; ए. टिकेन सिंह, एन.ई.एच.यू., शिलांग; अरुणा सैखोम, डी.आई.ई.टी. सेनापति, मणिपुर; पी.एच. ब्रजयंती देवी और एन.ई.आर.आई.ई. से सरजुबाला देवी शामिल थे। प्रतिभागियों को एफ.एल.एन. की मूल बातें, एफ.एल.एन. को बेहतर बनाने के लिए ध्यान केंद्रित करने के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में मणिपुर के संदर्भ में विकसित प्रशिक्षण मॉड्यूल और रेनड्रॉप गतिविधि किट के आधार पर कई गतिविधियाँ भी आयोजित की गई।

चरण 2 (मेघालय)— बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता पर मेघालय के के.आर.पी. के लिए क्षमता निर्माण का आयोजन 8 से 12 जनवरी 2024 तक ऑनलाइन किया गया। इसका उद्देश्य प्रारंभिक स्तर (प्री और प्राइमरी ग्रेड) में प्रवेश से पहले बच्चों के लिए साक्षरता और संख्यात्मकता के महत्व पर के.आर.पी. को उन्मुख करना था। इसमें एफ.एल.एन. की मूल बातें, *विद्या प्रवेश,* योग्यता आधारित शिक्षा, *जादुई पिटारा,* कला एकीकृत आधारित शिक्षा, शिक्षणशास्त्र एवं साक्षरता और संख्यात्मकता का मूल्यांकन, साथ ही उल्लिखित योग्यताएँ प्राप्त करने के लिए सक्षम बनाने हेतु गतिविधियाँ, स्वास्थ्य एवं कल्याण, समावेशी कक्षा वातावरण का निर्माण और सभी हितधारकों की भूमिका सम्मिलित थी।

चरण 3 (सिक्किम)— सिक्किम के मास्टर प्रशिक्षकों या के.आर.पी. के बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता में एफ.एल.एन. के क्षमता निर्माण के लिए पी.ए.सी. कार्यक्रम 4 से 8 मार्च 2024 तक एस.सी.ई.आर.टी. गंगटोक में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जो वरिष्ठ प्राथमिक शिक्षक, डी.आई.ई.टी. और एस.सी.ई.आर.टी. संकाय थे। कार्यक्रम के उद्देश्य— प्रारंभिक स्तर में प्रवेश से पहले बच्चों के लिए साक्षरता और संख्यात्मकता के महत्व पर के.आर.पी. को उन्मुख करना, साक्षरता और संख्यात्मकता को बढ़ाने के लिए गतिविधियाँ और कार्यनीतियाँ संचालित करना और एफ.एल.एन. मिशन के महत्व पर के.आर.पी. का अद्यतन करना। एफ.एल.एन. का लक्ष्य बच्चे के एकीकृत और समग्र विकास के इर्द-गिर्द घूमता है जिसके तहत तीन विकासात्मक लक्ष्यों की पहचान की गई है। इसके तीन लक्ष्य हैं— बच्चों का स्वास्थ्य और कल्याण, बच्चों को प्रभावी संचारक बनाना और बच्चों को अपने पर्यावरण से जोड़ना। कार्यक्रम में प्रयोग की गई कार्यप्रणाली व्याख्यान सह चर्चा, समूह कार्य और प्रस्तुतियों में आई.सी.टी. का उपयोग थीं। इस कार्यक्रम का उद्घाटन एस.सी.ई.आर.टी., गंगटोक के निदेशक राबिन छेत्री ने किया और एस.सी.ई.आर.टी. के अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इसमें शामिल हुए। कार्यक्रम समन्वयक श्रीमती शतरूपा पालित ने कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण दिया। कार्यक्रम के लिए आमंत्रित संसाधन व्यक्ति उड़ीसा और मेघालय के शिक्षक शिक्षा संस्थानों से आए थे। इस कार्यक्रम के दौरान आयोजित गतिविधियों से प्रतिभागियों को बहुत लाभ हुआ, जिन्होंने कक्षाओं में आयोजित की जाने वाली गतिविधियों को स्वयं ही डिजाइन किया।

एन.ई.पी. 2020 के अनुसार आकलन और समग्र प्रगति कार्ड पर नागालैंड और सिक्किम के के.आर.पी. पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार आकलन और समग्र प्रगति कार्ड पर नागालैंड और सिक्किम के के.आर.पी. पर क्षमता निर्माण का आयोजन 26 फरवरी से 1 मार्च 2024 तक एन.ई.आर.आई.ई., उमियम, शिलांग में किया गया। इस कार्यक्रम में नागालैंड और सिक्किम से कुल 34 प्रतिभागियों ने भाग लिया। एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग, आर.आई.ई. और एन.आई.ई. के 10 संसाधन व्यक्तियों ने ई.एस.डी., रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली द्वारा तैयार किए गए आकलन और एच.पी.सी. के विभिन्न पहलुओं पर सत्र लिए।

मदरसों के प्रधान अध्यापकों या प्रबंधकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम (अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के अंतर्गत)

मदरसों के प्रधान अध्यापकों या प्रबंधकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम 12 से 16 फरवरी 2024 तक एस.सी.ई.आर.टी., अगरतला में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 37 प्रतिभागियों ने भाग लिया। 14 संसाधन व्यक्तियों ने एन.ई.पी. 2020, एफ.एल.एन., निपुण भारत, डिजिटल पहल, *जादुई पिटारा*, अल्पसंख्यक शिक्षा, खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र, समावेशी शिक्षा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भाषा, व्यावसायिक शिक्षा आदि के शिक्षण पर सत्र आयोजित किए।

***असम और मेघालय के स्कूल शिक्षकों के लिए मादक द्रव्यों के सेवन पर अध्यापकों का प्रशिक्षण* (एन.पी.ई.पी. के अंतर्गत)**

इसका उद्देश्य शिक्षकों को मादक द्रव्यों के सेवन में लिप्त विद्यार्थियों की पहचान करने में सक्षम बनाना, मादक द्रव्यों के सेवन में लिप्त अपने किशोर विद्यार्थियों से निपटने के लिए शिक्षकों को तैयार करना और मादक द्रव्यों के सेवन से निपटने में शिक्षकों की भूमिका के बारे में जागरूकता पैदा करना था। ग्राहक समूह में डी.आई.ई.टी. के संकाय सदस्य और कुछ स्कूल शिक्षक शामिल थे और 16 शिक्षकों को विद्यार्थियों द्वारा मादक द्रव्यों के सेवन से निपटने के लिए प्रशिक्षित किया गया था।

समतामूलक एवं समावेशी शिक्षा (निष्ठा)

शिक्षकों के लिए समतामूलक और समावेशी शिक्षा पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम, 19 से 23 फरवरी 2024 तक शिलांग के पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.) में आयोजित किया गया, जो शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार और भारतीय पुनर्वास परिषद् द्वारा समर्थित एक महत्वपूर्ण पहल थी। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने में शिक्षकों के कौशल को बढ़ाना था।

इस कार्यक्रम में केंद्रीय विद्यालय, जवाहर नवोदय विद्यालय, कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय और पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्य और केंद्र सरकार के स्कूलों सहित विभिन्न स्कूलों का प्रतिनिधित्व करने वाले लगभग 93 शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन चेन्नई स्थित राष्ट्रीय बहु-दिव्यांगजन सशक्तीकरण संस्थान (एन.आई.ई.पी.एम.डी.) के निदेशक हिमांशु दास ने किया। उन्होने समावेशी शिक्षा के महत्व पर बल दिया और सभी विद्यार्थियों के लिए अनुकूल शिक्षण वातावरण बनाने के लिए प्रेरक कहानियाँ और अंतर्दृष्टि भी साझा की।

पाँच दिनों के दौरान, कार्यक्रम में प्रोफेसर अमिताव मिश्रा, प्रोफेसर टी. रेवती, डॉ. राम शकल साहनी और अन्य प्रतिष्ठित संसाधन व्यक्तियों द्वारा संचालित सत्र सम्मिलित थे। समावेशी कक्षा में विविधताओं को समझने से लेकर पाठ्यक्रम में कला, नृत्य और नाटक को एकीकृत करने तक के विषय सम्मिलित थे। अनुकूलित शारीरिक शिक्षा,

आई.सी.टी. एकीकरण और व्यवहार संबंधी मुद्दों को संबोधित करने सहित व्यावहारिक पहलुओं पर भी व्यापक रूप से दृष्टि डाली गई। दिनवार सत्रों में समावेशी शिक्षा के विविध पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया, जैसे कि विभिन्न नि:शक्त के लिए सीखने के निहितार्थ, पाठ्यक्रम अनुकूलन, शिक्षण पद्धतियाँ और व्यवहार संबंधी मुद्दों का समाधान आदि। प्रतिभागियों ने समूह गतिविधियों, चर्चाओं, क्षेत्र भ्रमण की यात्राओं में भाग लिया और चर्चा की गई अवधारणाओं की अपनी समझ और अनुप्रयोग को बढ़ाने के लिए असाइनमेंट प्राप्त किए।

अंतिम दिन समावेशी कक्षाओं में गणित और विज्ञान पढ़ाने पर सत्र आयोजित किए गए, जिसमें नवीन शिक्षण पद्धतियों और डिजिटल प्रौद्योगिकी एकीकरण पर बल दिया गया। कार्यक्रम का समापन शिक्षकों के विचारों, चर्चाओं और प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया के साथ हुआ, जिसमें कार्यक्रम की प्रभावशीलता और सार्थकता पर प्रकाश डाला गया।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	अनुसंधान पद्धति पर अरुणाचल प्रदेश के एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. संकाय सदस्यों का क्षमता निर्माण कार्यक्रम	एस.सी.ई.आर.टी., अरुणाचल प्रदेश 10–14 जुलाई 2023
2.	क्रियात्मक अनुसंधान पर मेघालय के डी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. संकाय सदस्यों का क्षमता निर्माण कार्यक्रम	एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग 15–19 जनवरी 2024
3.	अरुणाचल प्रदेश और असम के लिए ई.सी.सी.ई. पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम	एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग 11–15 दिसंबर 2023,
4.	एफ.एल.एन. में मणिपुर, मेघालय और सिक्किम के के.आर.पी. या मास्टर प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण कार्यक्रम	चरण 1— एस.सी.ई.आर.टी., मणिपुर 2–6 जनवरी 2024 को।
5.	एफ.एल.एन. में मणिपुर, मेघालय और सिक्किम के के.आर.पी. या मास्टर प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण कार्यक्रम	चरण 2— एन.ई.आर.आई.ई., मेघालय 8–12 जनवरी 2024
6.	एफ.एल.एन. में मणिपुर, मेघालय और सिक्किम के के.आर.पी. या मास्टर प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण कार्यक्रम	चरण 3— एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम 4–8 मार्च 2024
7.	बहुभाषी शिक्षा में मास्टर प्रशिक्षकों या के.आर.पी. का क्षमता निर्माण कार्यक्रम	एस.सी.ई.आर.टी., त्रिपुरा 12–16 फरवरी 2024
8.	एन.ई.पी. 2020 के अनुसार मूल्यांकन और समग्र प्रगति कार्ड पर नागालैंड और सिक्किम के के.आर.पी. का क्षमता निर्माण कार्यक्रम	एन.ई.आर..आई.ई., शिलांग 26 फरवरी–1 मार्च 2024
9.	सिक्किम राज्य के लिए भूगोल में रिमोट सेंसिंग (दूरस्थ संवेदनशीलता) और जी.आई.एस. अनुप्रयोगों में के.आर.पी. का क्षमता निर्माण कार्यक्रम	एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम 19–23 फरवरी 2024
10.	स्कूल प्रणाली में व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण पर मणिपुर के के.आर.पी. के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	एस.सी.ई.आर.टी., इम्फाल 11–15 सितंबर 2023
11.	शिक्षकों के लिए समतामूलक और समावेशी शिक्षा पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम (निष्ठा)	एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग 19–23 फरवरी 2024
12.	असम और मेघालय के स्कूल शिक्षकों के लिए मादक द्रव्यों के सेवन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम (एन.पी.ई.पी. के तहत)	एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग 27–29 फरवरी 2024.

6. विस्तार गतिविधियाँ

रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा संगोष्ठियों, प्रतियोगिताओं, सम्मेलनों, कार्यशालाओं और शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से देशभर में हितधारकों को सम्मिलित करने के लिए अनेक विस्तार गतिविधियाँ चलाई जाती हैं। वर्ष के दौरान, रा.शै.अ.प्र.प. ने जी20 रूपरेखा के तहत अनेक पहलों का आयोजन किया, शिक्षा में सर्वोत्तम अभ्यासों को दर्शाया और सरकारी कार्यक्रमों को प्रमुखता से प्रकट किया। इनमें जी20 जन भागीदारी वेबिनार शृंखला और शिक्षा कार्य समूह (एड.डब्ल्यू.जी.) की बैठक उल्लेखनीय है, जिसमें बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) और बहुभाषी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसका समापन राज्य और संघ राज्य क्षेत्र के शैक्षिक अभ्यासों की एक प्रदर्शनी में हुआ। इसके अतिरिक्त, रा.शै.अ.प्र.प. ने हिंदी पखवाड़ा, हिंदी दिवस और अन्य गतिविधियों के माध्यम से हिंदी भाषा को बढ़ावा दिया और आधिकारिक कामकाज में हिंदी के अनुकरणीय उपयोग के लिए राजभाषा शील्ड सम्मान प्रदान किया।

परिषद् ने प्रयास योजना के तहत विद्यार्थियों में अनुसंधान दृष्टिकोण को प्रोत्साहन देते हुए विज्ञान के लोकप्रियकरण हेतु सेंटर फॉर पॉपुलराइजेशन ऑफ साइंस, हर्बल गार्डन और साइंस पार्क के माध्यम से विज्ञान और गणित को भी बढ़ावा दिया। प्रमुख राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दिवसों के समारोह नवाचार और उद्यमशीलता पर केंद्रित व्यावसायिक शिक्षा पहलों के साथ आयोजित किए गए, जैसे— विश्व पर्यावरण दिवस, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस और राष्ट्रीय शिक्षा दिवस। रा.शै.अ.प्र.प. ने सेवा-पूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के साथ भी काम किया और पर्यावरण और समावेशी शिक्षा पर सेमिनार आयोजित किए, जिससे देशभर में शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के समग्र विकास में योगदान मिला।

प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

बुनियादी और प्रारंभिक स्तर पर खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र पर क्षेत्रीय सम्मेलन

वर्ष 2021–22 के दौरान राष्ट्रीय वेबिनार के अनुवर्तन के रूप में खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र पर क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किए गए थे। यह परियोजना प्रारंभिक कक्षाओं के कक्षा-कक्षों में खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र को समेकित करने के लिए राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के साथ अधिक गहन विचार-विमर्श पर केंद्रित है। वर्ष 2022–23 के दौरान तीन सम्मेलन आयोजित किए गए और वर्ष 2023–24 के दौरान दो सम्मेलन आयोजित किए गए। वर्ष 2023–24 के दौरान, पश्चिमी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के लिए पहला सम्मेलन आर.आई.ई., भोपाल में आयोजित किया गया था। इसका उद्‌घाटन झाबुआ, मध्य प्रदेश के पद्‌मश्री रमेश परमार और पद्‌मश्री शांता

परमार ने किया, जिन्होंने स्थानीय सामग्री के साथ कम लागत वाली स्थानीय गुड़िया बनाने पर प्रतिभागियों के साथ गतिविधिपरक कार्यशालाएँ भी आयोजित की। भोपाल के एक स्थानीय कारीगर धर्मेंद्र ने बाँस से खिलौना बनाने पर एक और कार्यशाला का आयोजन किया। गतिविधिपरक कार्यशाला का आयोजन करने की इस तरह की गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के समग्र विकास पर एक संदेश भेजा गया। सभी दक्षिणी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के प्रतिभागियों के लिए आर.आई.ई., मैसूरु में एक और सम्मेलन आयोजित किया गया। वहाँ दो गतिविधिपरक कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया, जिनमें से एक मुखौटा बनाने और अनुपयोगी लकड़ी से कलाकृतियाँ बनाने पर थी। प्रत्येक राज्य के स्थानीय खिलौनों की प्रदर्शनी का आर.आई.ई. के संकायों और दोनों आर.आई.ई. में प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल के शिक्षकों व बच्चों ने दौरा किया।

भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)

संवाद — भाषा, संस्कृति, समाज और भाषा शिक्षण पर व्याख्यान शृंखला

इस कार्यक्रम के माध्यम से भाषा दिवस का आयोजन करने और स्कूलों में मातृभाषा आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करने का बीड़ा उठाया गया है क्योंकि मातृभाषा किसी की पहचान, संस्कृति और सामंजस्यपूर्ण संज्ञानात्मक विकास का प्रतीक है। इसका उद्देश्य एक संसाधन के रूप में भाषा संबंधी विविधता की विशेषताओं और भारतीय संदर्भ में भाषा और भाषा शिक्षा से संबंधित मुद्दों पर प्रख्यात विद्वानों और कलाकारों द्वारा छह व्याख्यान, कार्यशालाएँ और प्रदर्शनों की एक शृंखला आयोजित करना है। कार्यक्रम इन विषयों पर केंद्रित थे— i) अधिगम के संसाधन के रूप में बच्चे की अपनी भाषा, ii) एक नीति और शिक्षणशास्त्र के रूप में बहुभाषावाद, iii) कला के साथ समेकित भाषा अधिगम, iv) साहित्य, समाज, विरासत, पर्यावरण, जेंडर आदि तथा v) भाषा और विशिष्ट शिक्षा कार्यक्रम तहत पैनल चर्चा, व्याख्यान, कला प्रदर्शन, कविता पाठ और कहानी— जिसके पाठ जैसी अनेक गतिविधियाँ आयोजित की गईं।

भारतीय भाषा उत्सव

भाषा शिक्षा विभाग ने 'भारतीय भाषा उत्सव' नाम से एक भाषा महोत्सव मनाया। यह उत्सव 28 सितंबर 2023 को शुरू हुआ और 75 दिनों तक चला तथा 11 दिसंबर 2023 को समाप्त हुआ। गतिविधियों को सुविधाजनक बनाने के लिए विभिन्न सामग्रियाँ, दिशानिर्देश और संसाधन तैयार किए गए। देशभर के स्कूलों ने इस 75 दिवसीय कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया, संयुक्त गतिविधियों के लिए राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के साथ सहयोग किया और विविध कार्यक्रमों को साझा किया।

भारतीय भाषा दिवस

रा.शै.अ.प्र.प. में 11 दिसंबर 2023 को महाकवि सुब्रमण्यम भारती की जयंती को भारतीय भाषा दिवस के रूप में मनाया गया। सुब्रमण्यम भारती भारतीय चेतना के कवि थे जिन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय परंपरा, इतिहास, संस्कृति, आध्यात्मिकता और देशभक्ति के दृष्टिकोण के विविध प्रतिनिधित्व पर बल दिया। उन्हें हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और तमिल भाषा का व्यापक ज्ञान था जिसका उपयोग उन्होंने रचनात्मक रूप से राष्ट्रीय चेतना को मजबूत करने के लिए किया। इस दिन को मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्य इस दिन उन्हें याद करना और भाषा बंधन को मजबूत करना है। इस अवसर को चिह्नित करने के लिए, नेशनल बुक ट्रस्ट के सहयोग से एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सी.आई.ई.टी. द्वारा विकसित एक फिल्म भी दिखाई गई। इस फिल्म में सुब्रमण्यम भारती के साहित्यिक और सामाजिक योगदान को प्रदर्शित किया गया और उनकी प्रभावशाली विरासत का व्यापक चित्रण प्रस्तुत किया गया।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का उत्सव, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 21 फरवरी, 2024 को मनाया गया। यह भाषाई और सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषावाद के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए मनाया गया। कार्यक्रम भौतिक और वर्चुअल दोनों विधियों में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के लिए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान ऑनलाइन जुड़े हुए थे। इस वर्ष के अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का विषय था— बहुभाषी शिक्षा जो सीखने और अंतर-पीढ़ीगत शिक्षा का एक स्तंभ है कार्यक्रम की अध्यक्षता रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली के निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी ने की। इस अवसर के मुख्य अतिथि और वक्ता निवास वरखेड़ी, *कुलपति*, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली और धूर्जजति शर्मा, *सहायक प्रोफेसर*, आधुनिक भारतीय भाषा और साहित्यिक अध्ययन विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी थे।

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ की बैठक

वर्ष के लिए अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ की पहली बैठक 3 अगस्त 2023 को रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली में आयोजित की गई। बैठक में कुल 14 सदस्यों ने भाग लिया। निदेशक द्वारा अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ की बैठक के कार्यवृत्त को अंतिम रूप दिया गया और अनुमोदित किया गया। दूसरी बैठक 24 फरवरी 2024 को एन.ई.आर.आई.ई., उमियम में *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक के कार्यवृत्त में कुल 9 सदस्य उपस्थित हुए। बैठकों के कार्यवृत्त को अंतिम रूप दे दिया गया है। बैठक के दौरान अल्पसंख्यक शिक्षा पर अकादमिक चर्चा हुई और सुझाई गई गतिविधियाँ अगले वर्ष पी.ए.सी. कार्यक्रम में शुरू की जाएँगी।

सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

राष्ट्रीय परियोजना प्रगति समीक्षा (पी.पी.आर.) राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.) की कार्यशालाएँ

परियोजना प्रगति समीक्षा बैठक 9–12 मार्च, 2024 तक रामेश्वरम में आयोजित की गई। इस बैठक में 34 राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों और पाँच आर.आई.ई., एस.सी.ई.आर.टी. के निदेशकों और 69 परियोजना अधिकारियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन गौरी श्रीवास्तव, *डीन (समन्वयन) परियोजना समन्वयक*, रा.शै.अ.प्र.प. और एन. लता, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., चेन्नई ने किया। समापन समारोह में श्रीधर श्रीवास्तव, *संयुक्त निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. ने 2023–24 के लिए गतिविधियों की समीक्षा की और प्रतिभागियों को एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 की वर्तमान नीतियों के आधार पर 2024–25 के लिए नई कार्ययोजना तैयार करने की सलाह दी।

राष्ट्रीय भूमिका निर्वहन एवं लोकनृत्य प्रतियोगिता

राष्ट्रीय भूमिका निर्वहन और लोकनृत्य प्रतियोगिता का आयोजन 33 राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों और आर.आई.ई. के चार प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालयों का प्रतिनिधित्व करते हुए किया गया। प्रारंभ में भूमिका निर्वहन प्रतियोगिता देश के

लगभग 454 जिलों में और लोकनृत्य प्रतियोगिता लगभग 482 जिलों में आयोजित की गई। आर.आई.ई., भुवनेश्वर में राष्ट्रीय स्तर पर भूमिका निर्वहन और लोकनृत्य प्रतियोगिता 3 से 6 जनवरी 2024 के बीच आयोजित की गई। इस विशाल आयोजन में कुल 29 राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों और आर.आई.ई. के तीन प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालयों ने भाग लिया। कुल 312 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें 52 लड़के और 260 लड़कियाँ सम्मिलित थीं। भूमिका निर्वहन में 145 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें 39 लड़के और 106 लड़कियाँ सम्मिलित थीं। लोकनृत्य में 167 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें 13 लड़के और 154 लड़कियाँ सम्मिलित थीं। इस आयोजन का उद्देश्य भूमिका निर्वहन और लोकनृत्य प्रतियोगिता के माध्यम से बड़े होते बच्चों की चुनौतियों का समाधान करने के लिए उन्हें जीवन-कौशल प्रदान करना था। इसमें शामिल विषय थे— लड़कों और लड़कियों के लिए समान अवसर; कन्या भ्रूण हत्या को समाप्त करना; बड़ों का सम्मान और देखभाल; पर्यावरण सुरक्षा; नशीली दवाओं/मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम; किशोरों के आकर्षण और चुनौतियाँ; स्वस्थ रूप से होकर बड़ा होना; पौष्टिक भोजन और कल्याण, व्यक्तिगत सुरक्षा; इंटरनेट, गैजेट्स और मीडिया साक्षरता का सुरक्षित उपयोग; तथा मादक द्रव्यों का सेवन— कारण और रोकथाम। समापन समारोह की शोभा पद्म पुरस्कार विजेता अरुणा मोहंती, *सचिव*, संगीत अकादमी, ओडिशा ने निभाई।

राष्ट्रीय योग ओलंपियाड

राष्ट्रीय योग ओलंपियाड 2023 का उद्घाटन 18 जून 2023 को पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. और आर.आई.ई., भोपाल में मध्य प्रदेश के माननीय राज्यपाल मंगूभाई सी. पटेल द्वारा किया गया। माननीय राज्यपाल ने योग की परिवर्तनकारी शक्ति और एक स्वस्थ और सामंजस्यपूर्ण समाज के निर्माण में इसकी भूमिका पर बल दिया। उन्होंने युवा पीढ़ी की स्वस्थ खान-पान की आदतों पर भी बल दिया और इस तथ्य को दोहराया कि एक स्वस्थ शरीर हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन पर निर्भर करता है, इसलिए युवाओं को शारीरिक रूप से फिट रहने के लिए खाने की अच्छी आदतें विकसित करनी चाहिए। दिनेश प्रसाद सकलानी, *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. ने 'वसुधैव कुटुंबकम' के लिए योग विषय के तहत राष्ट्रीय योग ओलंपियाड 2023 के उत्सव और पाठ्यक्रम में योग को सम्मिलित करने और विद्यार्थियों के बीच इसके लाभों को बढ़ावा देने के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने बच्चों के मानसिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक विकास के लिए दैनिक के जीवन में योग के महत्व को बताया। इसमें कुल 587 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिसमें 20 राज्यों, 4 संघ राज्य क्षेत्रों, 5 राष्ट्रीय एजेंसियों और आर.आई.ई. के 4 प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालयों से मध्य स्तर के 122 लड़के और 122 लड़कियाँ, माध्यमिक स्तर के 125 लड़के और 128 लड़कियाँ सम्मिलित थीं।

राष्ट्रीय योग ओलंपियाड के समापन और पुरस्कार वितरण समारोह के बाद वृक्षारोपण किया गया, जो 20 जून, 2023, को आयोजित किया गया था। मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री, शिवराज सिंह चौहान और स्कूल शिक्षा मंत्री, मध्य प्रदेश सरकार, इंदर सिंह परमार इस अवसर पर उपस्थित थे।

विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम)

वेबिनार शृंखला— सीखने के लिए सुनना

अनेक पी.एम. ई-विद्या चैनलों के साथ-साथ रा.शै.अ.प्र.प. के यूट्यूब चैनल 'एन.सी.ई.आर.टी. ऑफिशियल' पर किए जाने वाले इस लाइव प्रसारण कार्यक्रम का उद्देश्य 14 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, गणित, पर्यावरण और इनसे जुड़े कुछ विषयों से संबंधित मुद्दों से अवगत कराना है। यह कार्यक्रम वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सी.एस.आई.आर.) और भारत सरकार के प्रवासी भारतीय शैक्षणिक और वैज्ञानिक संपर्क (प्रभास) कार्यक्रम के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। यह अगस्त 2021 में शुरू हुआ और मार्च 2024

तक इसमें 75 सत्र आयोजित किए गए हैं। चालू वर्ष के दौरान, 23 सत्र आयोजित किए गए हैं। इनमें स्वास्थ्य और पोषण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऊर्जा, खगोल विज्ञान और खगोल भौतिकी, अंतरिक्ष विज्ञान, वन्य जीवन, नोबेल पुरस्कार, रत्न, कंप्यूटर और इंटरनेट, मिट्टी और पानी, नई सामग्रियों का विकास, एयरोस्पेस और विमानन, भू-भौतिकी, जैव सुरक्षा, बायोमिमिक्री, इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन, अंग दान आदि से संबंधित मुद्दों पर चर्चा सम्मिलित है। सभी सत्रों की प्लेलिस्ट रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट पर अपलोड की गई है और https://youtube.com/playlist?list=PLUgLcpnv1YifsVIYiNsbEBF7vPg9YdEnm पर उपलब्ध है।

विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए केंद्र — उपलब्धियाँ और कीर्तिमान

प्रोजेक्ट 'सेंटर फॉर पॉपुलराइजेशन ऑफ साइंस' एक पहल है जिसका उद्देश्य विज्ञान को आम जनता के लिए सुलभ बनाना है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के बीच वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना और वैज्ञानिक जागरूकता विकसित करना है, ताकि उनमें तार्किक सोच का विकास हो सके। इसे विज्ञान को अधिक रोचक, आसानी से समझने योग्य तथा दैनंदिन जीवन-अनुभवों से जोड़कर देखने के तरीके से प्राप्त किया जा सकता है। यह वैज्ञानिक समुदाय और आम जनता के बीच एक सेतु का काम करता है। यह एक व्यापक परियोजना है जिसमें अनेक गतिविधियाँ, मॉडल, प्रदर्शन, सम्मेलन आदि सम्मिलित हैं। परियोजना के तहत की गई कुछ पहलें निम्नलिखित हैं—

- **नक्षत्र वाटिका**— रा.शै.अ.प्र.प. परिसर में एक 'नक्षत्र वाटिका' विकसित की गई है जहाँ प्रत्येक नक्षत्र से संबंधित पौधे लगाए गए हैं। इस मॉडल को स्कूलों, आर.आई.ई. और अन्य संस्थानों में संशोधनों के साथ दोहराया या कार्यान्वित किया जा सकता है। नक्षत्र वाटिका के विकास हेतु दिशानिर्देश विकसित किए गए हैं।
- **साइंस पार्क**— रा.शै.अ.प्र.प. परिसर में एक साइंस पार्क स्थापित किया गया है जहाँ विभिन्न वैज्ञानिक मॉडल दिखाए गए हैं ताकि बच्चे अधिक मजेदार और आकर्षक तरीके से विज्ञान सीख सकें। बच्चे इन मॉडलों के साथ खेलकर व्यावहारिक रूप से सीखने का अनुभव लेने के लिए इस पार्क में जा सकते हैं और साथ ही साथ वैज्ञानिक अवधारणाओं और दैनिक जीवन में उनके अनुप्रयोगों की समझ विकसित कर सकते हैं। दर्शकों के संदर्भ के लिए एक मैनुअल भी विकसित किया जा रहा है जिसमें प्रदर्शनी के पीछे के विज्ञान के कामकाजी सिद्धांतों को समझाया गया है।
- **हर्बल गार्डन**— परिसर में हर्बल गार्डन भी स्थापित किए गए हैं जहाँ औषधीय और पारंपरिक महत्व के पौधे, सौंदर्यगत मूल्य वाले पौधे और पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण पौधे अधिक व्यवस्थितगत तरीके से पाए जा सकते हैं। इन पौधों का वर्णन करने वाली एक पुस्तिका भी प्रक्रियाधीन है जिसमें सरल तरीके से इससे संबंधित समग्र और व्यापक ज्ञान प्रस्तुत किया जाएगा ताकि पाठक इसे समझ सकें।
- **स्वदेशी बाजरा और एथनोमेडिसिन के संरक्षण पर अंत:क्रियात्मक बैठक**— रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली में 28 फरवरी से 1 मार्च 2024 के दौरान बाजरा और एथनोमेडिसिन के महत्व, खेती, संरक्षण कार्यनीतियों आदि पर चर्चा करने के लिए एक बैठक आयोजित की गई। लहरी बाई, जिन्हें भारत की श्रीअन्न (मोटा अनाज) राजदूत भी कहा जाता है और महाराष्ट्र के वन भूषण पुरस्कार प्राप्तकर्ता चैतराम पवार, जो अत्यंत दुर्लभ किस्मों के मोटे अनाजों का संरक्षण कर रहे हैं, इस कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र थे। यह देशभर के आई.सी.ए.आर. के वैज्ञानिकों, किसानों, हितधारकों, इस क्षेत्र में काम करने वाले उद्यमियों, शिक्षकों, विद्वानों और विद्यार्थियों सहित वैज्ञानिक पृष्ठभूमि के लोगों के साथ एक परस्पर विचार-विमर्श की बैठक थी।

विज्ञान और गणित शिक्षा संसाधन केंद्र

विज्ञान और गणित शिक्षा संसाधन केंद्र (आर.सी.एस.एम.ई.) में शोधकर्ताओं, पाठ्यक्रम डिजाइनरों, सामग्री विकासकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, शिक्षकों और विज्ञान और गणित शिक्षा में अन्य सभी हितधारकों को एक ही

स्थान पर विज्ञान और गणित शिक्षा से संबंधित विभिन्न संसाधन (किताबें, पत्रिकाएँ, मॉडल, किट इत्यादि) प्रदान किए जाते हैं। संसाधनों का रख-रखाव किया जा रहा है और पठन सामग्री के प्रसार, उसके लिए रिकॉर्ड बनाए रखने और संदर्भ/रेफरल सेवाओं में सहायता प्रदान करने से संबंधित कार्य भी नियमित रूप से किए गए।

किशोरों और महत्वाकांक्षी विद्यार्थियों में अनुसंधान दृष्टिकोण को प्रोत्साहन देने हेतु योजना (प्रयास) 2023–24 के दिशानिर्देशों पर स्कूली बच्चों के लिए रिपोर्ट

युवा और महत्वाकांक्षी विद्यार्थियों में अनुसंधान दृष्टिकोण को प्रोत्साहन देना (प्रयास) योजना 2023–24, का उद्देश्य स्कूली विद्यार्थियों के बीच अनुसंधान दृष्टिकोण विकसित करना है। यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप है, जो एस.टी.ई.ए.एम. (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी, कला और गणित) शिक्षा का उपयोग करके मूलभूत चिंतन, रचनात्मकता और समस्या-समाधान की आवश्यकता पर बल देती है। कार्यक्रम का उद्देश्य युवा मन का पोषण करना, उन्हें सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने और नए ज्ञान क्षेत्रों के निर्माण में योगदान करने में सक्षम बनाना है। प्रयास का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को वैज्ञानिक अनुसंधान और जाँच में उन्मुख करना; वैज्ञानिक स्वभाव और साक्ष्य आधारित सोच उत्पन्न करना; वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करके सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए एक मंच प्रदान करना और अनुकूलित अधिगम के लिए स्कूली शिक्षा को उच्च शिक्षा से जोड़ना है।

प्रयास 2023–24 के लिए चयन प्रक्रिया को वास्तविक प्रतिभाओं की पहचान सुनिश्चित करने के लिए सावधानीपूर्वक डिजाइन किया गया था। चयन के मानदंडों में अनुसंधान प्रस्ताव की मौलिकता (20 प्रतिशत), इसमें सम्मिलित वैज्ञानिक विचार या सिद्धांत (10 प्रतिशत), पालन की जाने वाली वैज्ञानिक पद्धति (10 प्रतिशत), स्थानीय समस्याओं को हल करने या वैज्ञानिक ज्ञान परिणाम उत्पन्न करने में अनुसंधान की सार्थकता (20 प्रतिशत), पर्यावरणीय प्रभावकारिता तथा स्थिरता (20 प्रतिशत) और अनुसंधान परियोजना प्रस्ताव एवं लेख की व्याख्या व स्पष्टता (20 प्रतिशत) सम्मिलित है। फिर इन सूचीबद्ध किए गए विद्यार्थियों को ऑनलाइन साक्षात्कार प्रारूप में अपने प्रोजेक्ट के प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया। प्रयास योजना के तहत उत्प्रेरक अनुदान जारी करने के लिए ग्रामीण और शहरी क्षेत्र (सरकारी, गैर-सरकारी स्कूलों के बीच समान रूप से विभाजित) से 10–10 करके कुल 20 प्रस्तुति-सह-अनुसंधान प्रस्तावों का चयन किया गया है।

प्रयास 2023–24 एक अनूठा कार्यक्रम है जो विद्यार्थियों को वैज्ञानिक अनुसंधान में संलग्न होने के लिए एक मंच प्रदान करता है। प्रयास के तहत स्कूली शिक्षा को उच्च शिक्षा से जोड़कर, समग्र विकास और अनुभवपूरक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाता है तथा युवा मन को सामाजिक समस्या-समाधान और नए ज्ञान के निर्माण में योगदान करने के लिए सशक्त बनाया जाता है।

शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ़.ई.)

राष्ट्रीय शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण पुस्तकालय (एन.एल.ई.पी.टी.)

राष्ट्रीय शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण पुस्तकालय (एन.एल.ई.पी.टी.) 1978 में इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी की अनुशंसाओं के बाद अस्तित्व में आया। इसे पहले राष्ट्रीय परीक्षण विकास पुस्तकालय (एन.टी.डी.एल.) के नाम से जाना जाता था। सन 1978 से, यह विभाग का एक निरंतर चल रहा कार्यक्रम है और शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक ग्रंथों का एक संसाधन पूल बनाने के उद्देश्य से प्रयोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नए पाठों को जोड़कर इसका लगातार विस्तार किया जा रहा है।

एन.एल.ई.पी.टी. में उपलब्ध परीक्षणों की सूची अद्यतन की गई थी। भारतीय और विदेशी मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का विपणन करने वाले प्रकाशकों और स्टॉकिस्टों से संपर्क किया गया। नए परीक्षणों की पहचान करने के

लिए नवीनतम कैटलॉग खरीदे गए। पुस्तकालय के लिए रुचि, बुद्धिमत्ता, मार्गदर्शन और परामर्श, व्यक्तित्व, करियर, निर्णय लेने, तनाव और आत्मसम्मान के क्षेत्रों में बीस नए परीक्षण खरीदे गए।

अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)

एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. के निदेशकों का सम्मेलन

एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. के निदेशकों का सम्मेलन विभाग की नियमित विशेषता है। इस वर्ष चर्चा का विषय था— एन.ई.पी. 2000 का कार्यान्वयन और इस दौरान सामने आए अनुभव एवं चुनौतियाँ। इसके अलावा, स्कूल और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में आपसी हित के विभिन्न मुद्दों तथा सरोकारों पर भी विचार-विमर्श किया गया। 30 प्रतिभागियों ने चर्चा में सक्रिय रूप से योगदान दिया, जिनमें एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. के निदेशक या उनके नामांकित व्यक्ति सम्मिलित थे।

स्कूल और अध्यापक शिक्षा संस्थानों के लिए शिक्षा में नवीन अभ्यासों और प्रयोगों को बढ़ावा देना

अप्रैल 2023 से वर्ष 2023–2024 के लिए स्कूल शिक्षकों और अध्यापक प्रशिक्षकों से परियोजना प्रस्ताव आमंत्रित किए गए। आर.आई.ई. स्तर पर परियोजना प्रस्ताव प्राप्त करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2023 तक थी। कुल 35 (11 अजमेर, 3 भुवनेश्वर, 18 मैसूरु, 2 भोपाल और 1 एन.ई.आर.आई.ई. उमियम) परियोजना प्रस्तावों का डी.टी.ई., रा.शै.अ.प्र.प. स्तर पर चयन किया गया और परियोजना समन्वयकों को इसके बारे में सूचित किया गया तथा उनका चयन कर नवाचारों को आगे बढ़ाने को कहा गया। शैक्षणिक मार्गदर्शन प्रदान किया गया और मौके पर ही अवलोकन एवं मार्गदर्शन के लिए शैक्षणिक दौरों की योजना बनाई गई। समन्वयकों को मार्च 2024 तक डी.टी.ई., रा.शै.अ.प्र.प. को प्रगति और अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा गया। चयनित शिक्षकों और अध्यापक प्रशिक्षकों को मई–जून 2024 के दौरान नियोजित राष्ट्रीय सेमिनार में रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया जाएगा। 10,000 रुपए की बीजवृत्ति देने हेतु अंतिम चयन परियोजना रिपोर्ट की संयुक्त रेटिंग और राष्ट्रीय सेमिनार में इसकी प्रस्तुति पर आधारित होगा।

चयनित प्रतिभागियों की सूची

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम	विषय
1.	हिमांशु त्रिपाठी	सामाजिक विज्ञान सामग्री और लक्षित भाषा का एकीकरण— एक इनवर्टेड सी.एल.आई.एल. दृष्टिकोण
2.	अमित कुमार तिवारी	अध्यापन-अधिगम के उपकरण के रूप में एनिमेशन
3.	पूनम कपिल	अध्यापन-अधिगम के उपकरण के रूप में एनिमेशन
4.	शिल्पा रघुवंशी चौहान	जेनेटिक्स फॉर 'जेन जेड' (जेमिफिकेशन ऑफ जेनेटिक्स)
5.	सतीश कुमार शर्मा	बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के कार्यान्वयन में पर्यवेक्षण की व्यावसायिक संवेदनशीलता
6.	विधि ओबेरॉय	प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की प्रतिभाओं का पोषण— कार्यनीतियाँ और दृष्टिकोण— कक्षा 9 में नवाचारी शिक्षण दृष्टिकोण
7.	मोनिका सिंघल	ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में व्यावहारिक जीवन-कौशल की भावना का विकास
8.	सुशील कुमार	प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को शब्द सिखाने में अध्यापक-अधिगम की सामग्री और गतिविधियों का उपयोग करके भाषा संबंधी प्रवीणता का विकास

9.	अतुल बमरा	देशी खेलों का उपयोग करके प्रारंभिक स्तर पर गणना कौशल का विकास
10.	अंजू वर्मा	अंग्रेजी भाषा के शब्दकोश में वृद्धि
11.	श्वेता दीक्षित	प्राथमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा— कौशल विकास कार्यक्रम
12.	गार्गी मित्रा	बुनियादी वर्ष के शिक्षार्थियों के लिए संख्यात्मकता में अधिगम प्रतिफल को आकलित करने के लिए देशी खिलौने और खेल आधारित शिक्षण विधि
13.	विनी सेबेस्टियन	गणित में कला समेकित दृष्टिकोण के माध्यम से सार्वभौमिक अधिगम डिजाइन (यू.डी.एल.) के अधिगम मापदंडों को बढ़ाना
14.	आशुतोष प्रभाकर	अनुभव-भाषा-चित्र-प्रतीक-प्रयोग (एल.पी.एस.ए.) रूपरेखा पर आधारित गणित-उन्नत वैन हिले मॉडल (वी.एच.एम.) शिक्षण गतिविधियों का प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की गणित में संलग्नता पर स्थानिक तर्क का प्रभाव
15.	तरुण कुमार त्यागी	माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की गणितीय सृजनात्मकता पर एस.टी.ई.ए.एम. आधारित शिक्षण का प्रभाव
16.	प्रज्ञा गुप्ता	माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की गणितीय सृजनात्मकता पर एस.टी.ई.ए.एम. आधारित शिक्षण का प्रभाव
17.	रविंद्र कुमार	माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन कौशल पर सामाजिक-संज्ञानात्मक दृष्टिकोण आधारित गतिविधियों का प्रभाव
18.	रवि कांत	माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन कौशल पर सामाजिक-संज्ञानात्मक दृष्टिकोण आधारित गतिविधियों का प्रभाव
19.	ए. गुरु प्रसाद	स्कूली हर्बल गार्डन के माध्यम से विज्ञान अवधारणाओं के लिए नवाचारी शिक्षण विधियाँ— एक नया दृष्टिकोण
20.	हरीप्रसाद जी. वी	स्कूल अकादमिक सहायक कार्यकर्ता विकास पहल— एस.ए.डी.आई. कार्य अनुसंधान के माध्यम से स्कूल सहायक कार्यकर्ताओं का सुदृढ़ीकरण
21.	एस. राजकुमार	कहानी सुनाने के माध्यम से शिक्षण कौशल और नैतिक मूल्यों का आत्मसातीकरण
22.	थानुजा के. एस	गणित की सुविधा में डी.एल.एड. के शिक्षक प्रशिक्षुओं के गणितीय सामग्री ज्ञान की प्रभावशीलता
23.	के.एच. ममता	आर.वी. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, बेंगलुरु में डी.एल.एड. के शिक्षक प्रशिक्षुओं द्वारा कम लागत और बिना लागत की सामग्री से शिक्षण संसाधनों को तैयार करके विज्ञान की खोज
24.	संध्या जी. वैद्य	धारवाड़ जिले के डी.एल.एड विद्यार्थियों में बोलने के कौशल की कमी को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन
25.	जैस्मीन आर. बी. मोरास	प्रथम वर्ष के डी.एल.एड विद्यार्थियों के लिए गणित सीखने में चार मूलभूत कार्यों के शिक्षण में नवाचारी शिक्षण संसाधनों/विधियों के उपयोग की सुविधा पर अध्ययन
26.	चंद्रु एम.	बिना लागत के खेल उपकरणों के साथ खेलना और करना
27.	आर. पोर्सेलवी	स्क्रैच 3.0 का उपयोग करके विद्यार्थियों को दक्ष बनाने के लिए 21वीं सदी के कौशलों की प्राप्ति हेतु एक नवाचारी दृष्टिकोण— सृजन हेतु सीखना

28.	एस. साबरीनाथन	स्क्रैच 3.0 का उपयोग करके विद्यार्थियों को दक्ष बनाने के लिए 21वीं सदी के कौशलों की प्राप्ति हेतु एक नवाचारी दृष्टिकोण— सृजन हेतु सीखना
29.	आर. निथिया	अंग्रेजी साक्षरता कौशलों के साथ सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा का समेकन
30.	ए. शर्मिला बेगम	शिक्षणशास्त्र के लक्ष्यों के माध्यम से समय मापन का अध्ययन
31.	पी. सरन्या	गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में कंप्यूटर साक्षरता कौशलों का विकास
32.	सी.सी. कुरियन	एल.ए.सी. दृष्टिकोण में आई.डी.ई.ए. विधि का उपयोग करने के लिए बी.एड. प्रशिक्षुओं का सशक्तीकरण
33.	जॉनसन मैथ्यू	एल.ए.सी. दृष्टिकोण में आई.डी.ई.ए. विधि का उपयोग करने के लिए बी.एड. प्रशिक्षुओं का सशक्तीकरण
34.	वी. ईश्वरन	प्रज्ञा— गणित के माध्यम से विश्लेषणात्मक चिंतन को उद्दीपित करने पर एक स्कूल कार्यक्रम
35.	के.पी. कन्नन	माई इंड-एडुगा (माय इंडिजीनस एजुकेशनल गेम्स फॉर अंडरस्टैंडिंग साइंस एंड मैथमेटिक्स ऑफ स्कूल करिकुलम)
36.	डी.एस. प्रसोभ माधवन	माई इंड-एडुगा (माय इंडिजीनस एजुकेशनल गेम्स फॉर अंडरस्टैंडिंग साइंस एंड मैथमेटिक्स ऑफ स्कूल करिकुलम)
37.	एस.आर. शीलावनतार	ए.डी.एच.डी. विद्यार्थियों का सशक्तीकरण— शैक्षिक और व्यवहारिक सुधार के लिए प्रभावी शिक्षक कार्यनीतियाँ
38.	बृंदा. डी.	नवाचारी गतिविधि के माध्यम से लेखक, कवि और विद्यार्थियों को कवि बनाना
39.	शिवांगी मिश्रा	कक्षा 9 विद्यार्थियों की जैविक अवधारणाओं के आकलन हेतु सीखने के उपकरण के रूप में शैक्षिक खेलों की प्रभावशीलता

अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)

जी20 गतिविधियाँ

यह भारत के लिए एक महत्वपूर्ण वर्ष रहा है क्योंकि भारत की जी20 अध्यक्षता में देशभर में हर क्षेत्र में ढेर सारे कार्यक्रम देखे गए। जी20 के शिक्षा कार्य समूह ने अपने संस्थानों, गैर-सरकारी संगठनों, स्कूल प्रणालियों, स्कूलों, विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों के साथ देशभर में अनेक गतिविधियाँ कीं। रा.शै.अ.प्र.प. और उसके घटक— केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.), पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), अजमेर, भुवनेश्वर, भोपाल, मैसूरु, उमियम स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के प्रायोगिक बहुद्देशीय स्कूलों में कार्यक्रम, सेमिनार एवं सम्मेलन, सांस्कृतिक तथा अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए।

बैठकों, गोष्ठियों और सम्मेलनों की एक शृंखला आयोजित की गई और शिक्षा में सर्वोत्तम अभ्यासों, भारत सरकार की पहलों और राज्य सरकारों एवं स्कूल प्रणालियों और स्कूलों की पहलों की प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईं। तकनीक-सक्षम पहल, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 पहल, विद्या समीक्षा केंद्र, निष्ठा, दीक्षा जैसी डिजिटल पहल, एस.टी.ई.एम., बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.), पी.एम. ई-विद्या, स्वयं प्रभा, स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) और व्यावसायिक शिक्षा आदि का

आयोजन किया गया। जी20 जन भागीदारी वेबिनार शृंखला 5 से 9 जून 2023 तक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों और प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूलों में आयोजित की गई। चौथी और अंतिम शिक्षा कार्य समूह (एड.डब्ल्यू.जी.) की बैठक सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे में 17–21 जून, 2023 को आयोजित की गई, जिसमें जी20 देशों के सदस्यों ने बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता तथा बहुभाषी शिक्षा में अपनी नीतियों, पाठ्यक्रम और अभ्यासों को प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भारत में शैक्षिक अभ्यासों की एक भव्य प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

रा.शै.अ.प्र.प. की 61वीं कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) की बैठक

कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.), परिषद् की सर्वोच्च शैक्षणिक संस्था है, जिस पर सभी योजनाओं, कार्यक्रमों, अनुसंधान प्रस्तावों आदि पर विचार करने और परिषद् के काम के शैक्षणिक पहलुओं की जाँच करना और कार्यक्रमों के विकास के लिए एक समन्वित दृष्टिकोण सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी है। ए.सी./एम.सी. के अनुमोदन के बाद घटक इकाइयों द्वारा प्रस्तुत सभी कार्यक्रम प्रस्ताव अनुमोदन के लिए पी.ए.सी. के समक्ष रखे जाते हैं। कार्यक्रम के प्रस्ताव को मंजूरी के लिए पी.ए.सी. में रखने से पहले इसकी जाँच आई.ए.बी./डी.ए.बी. और एम.सी./ए.सी. द्वारा की जाती है। पी.ए.सी. में पाँच बाहरी विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. के पाँच निदेशक, सी.आई.ई.टी. और पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल के संयुक्त निदेशक, आर.आई.ई. के प्रधानाचार्य और डीन ऑफ इंस्ट्रक्शन, एन.आई.ई. विभागों/प्रभागों/प्रकोष्ठों के प्रमुख और प्रत्येक एन.आई.ई. विभाग/प्रभाग/प्रकोष्ठ, सी.आई.ई.टी., पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल और एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय) से एक संकाय सदस्य सम्मिलित हैं। वर्ष 2024–25 के लिए कार्यक्रमों को मंजूरी देने के लिए 61वीं पी.ए.सी. बैठक 21–22 मार्च 2024 को मिश्रित मोड में दिनेश प्रसाद सकलानी, *निदेशक* और *अध्यक्ष* पी.ए.सी., रा.शै.अ.प्र.प., की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक की शुरुआत दिनेश कुमार, *अध्यक्ष,* पी.एम.डी. और *डीन (अनुसंधान*) के स्वागत भाषण से हुई। श्रीधर श्रीवास्तव, *संयुक्त निदेशक* और *उपाध्यक्ष* पी.ए.सी. ने वर्ष 2023–24 के लिए परिषद् की उपलब्धियाँ प्रस्तुत कीं। बैठक के दौरान मनोनीत बाहरी सदस्यों ने बहुमूल्य सुझाव दिए, जिससे देश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा लाने के लिए संगत शैक्षणिक कार्यक्रम तैयार करने और अनुमोदित करने में मदद मिली।

वित्तीय-सह-प्रशासनिक स्वीकृतियों का प्रसंस्करण

योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग पी.ए.सी. अनुमोदित कार्यक्रमों के संचालन के लिए विभिन्न संस्थानों और विभागों/प्रभागों/प्रकोष्ठों/समूहों को धन आवंटित करता है। सी.आई.ई.टी. और पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के संयुक्त निदेशक और आर.आई.ई. के प्रधानाचार्य संबंधित संस्थानों की निधि के व्यय के लिए नियंत्रण प्राधिकारी हैं। हालाँकि, एन.आई.ई. विभागों/प्रभागों/प्रकोष्ठ द्वारा संचालित कार्यक्रमों के मामले में, वित्तीय-सह-प्रशासनिक मंजूरी जारी करने से पहले संबंधित इकाइयों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम प्रस्तावों की पी.एम.डी. द्वारा जाँच की जाती है। पी.ए.सी. द्वारा अनुमोदित कार्यक्रमों के अलावा, घटक इकाइयाँ शिक्षा मंत्रालय के पी.ए.बी. द्वारा अनुमोदित समग्र शिक्षा के तहत भी कार्यक्रम चलाती हैं। योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग एन.आई.ई. के विभागों/प्रभागों/प्रकोष्ठों द्वारा संचालित कार्यक्रमों के प्रस्तावों की भी जाँच करता है और गतिविधियों/कार्यक्रमों के लिए मंजूरी प्रदान करता है। वर्ष में, विभिन्न कार्यक्रमों के संचालन के लिए पी.एम.डी. द्वारा 500 से अधिक स्वीकृतियाँ प्रदान की गईं।

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन समिति (क्यू.ए.सी.) की पहली बैठक

रा.शै.अ.प्र.प. के संयुक्त निदेशक की अध्यक्षता में सक्षम प्राधिकारी द्वारा एक आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन समिति (आई.क्यू.ए.सी.) का गठन किया गया है। इसका उद्देश्य वर्ष 2022–23 से रा.शै.अ.प्र.प. के पी.ए.सी. कार्यक्रमों से निकलने वाली पाठ्यपुस्तकों के अलावा सभी सामग्रियों के लिए एक पारदर्शी मूल्यांकन प्रणाली सुनिश्चित करना है, जिसे रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशनों के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। समिति ने अपनी विभिन्न बैठकों में परियोजना समन्वयकों द्वारा प्रस्तुत परियोजना रिपोर्टों का मूल्यांकन किया और प्रकाशन के लिए कुछ रिपोर्टों की अनुशंसा की।

प्रकाशन प्रभाग (पी.डी.)

रा.शै.अ.प्र.प. ने स्कूली पाठ्यपुस्तकों, कार्यपुस्तिकाओं, पूरक पठन पुस्तकों, शिक्षक संदर्शिकाओं, प्रयोगशाला मैनुअल, आकलन स्रोत पुस्तकें, गणित प्रश्न प्रदर्शिकाएँ, शोध रिपोर्ट, मोनोग्राफ और जर्नल सहित शैक्षिक सामग्रियों की एक विस्तृत शृंखला प्रकाशित करना जारी रखा है। राज्य और संघ राज्य क्षेत्र राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तक कार्यक्रम के तहत इन पुस्तकों को अपनाने, अनुकूलित करने या अनुवाद करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. से कॉपीराइट की अनुमति पाने का अनुरोध कर सकते हैं। इन सामग्रियों का व्यापक रूप से केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध स्कूलों, केंद्रीय विद्यालयों, जवाहर नवोदय विद्यालयों, तिब्बती स्कूलों और भारत व विदेशों में अनेक सार्वजनिक स्कूलों में उपयोग किया जाता है।

विभिन्न राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों के लिए अभिग्रहण/अनुकूलन/अनुवाद के लिए कॉपीराइट प्रदान करना

रा.शै.अ.प्र.प. ने वर्ष 2023–24 के लिए अभिग्रहण/अनुकूलन/अनुवाद के लिए निम्नलिखित राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों को उनके अनुरोध के आधार पर अपनी पाठ्यपुस्तकों का कॉपीराइट प्रदान किया—

क्र.सं.	राज्य	एजेंसी	कक्षाएँ जिनके लिए कॉपीराइट दिया गया
1.	मध्यप्रदेश	राज्य शिक्षा केंद्र पुस्तक भवन, बी-विंग, अरेरा हिल्स भोपाल	1–12 (256 पुस्तकें)
2.	पंजाब	पंजाब स्कूल एजुकेशन बोर्ड, एस.ए.एस. नगर, मोहाली	8–12 (60 पुस्तकें) और व्यावसायिक पुस्तकें
3.	आंध्र प्रदेश	एस.सी.ई.आर.टी., आंध्र प्रदेश	6–9
4.	कर्नाटक	कर्नाटक टेक्स्ट बुक सोसायटी, बेंगलुरु	1–10
		कर्नाटक टेक्स्ट बुक सोसायटी, प्री-यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु	11–12
5.	मिजोरम	एस.सी.ई.आर.टी. मिजोरम, स्कूल शिक्षा विभाग	1–8
6.	मणिपुर	माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, मणिपुर, बाबुपारा, इंफाल, मणिपुर	1–8
7.	नागालैंड	नागालैंड स्कूल शिक्षा बोर्ड, बायवटी हिल, कोहिमा, नागालैंड	9–10
8.	दिल्ली	सचिव, दिल्ली ब्यूरो ऑफ टेक्स्टबुक्स, नई दिल्ली	1–8
9.	उत्तराखंड	माध्यमिक शिक्षा उत्तराखंड, ननूरखेड़ा, देहरादून, उत्तराखंड	1–12 (234 पुस्तकें)
			9, 10, 11 व्यावसायिक पुस्तकें (29 पुस्तकें)

10.	गुजरात	गुजरात राज्य स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड	1–12 (205 पुस्तकें)
11.	राजस्थान	राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल	1–12
12.	पंचकुला, हरियाणा	निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा हरियाणा, पंचकुला	1–8
13.	असम	उच्चतर माध्यमिक शिक्षा परिषद्	11–12
14.	उत्तर प्रदेश	माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश	9–12 (70 पुस्तकें)
15.	झारखंड	जे.सी.ई.आर.टी., झारखंड	9–12 (84 पुस्तकें)
16.	गोवा	गोवा माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा	9–12 (47 पुस्तकें)
17.	एस.सी.ई.आर.टी., गोवा	एस.सी.ई.आर.टी., गोवा	1–8 (75 पुस्तकें)
18.	एस.सी.ई.आर.टी., केरल	एस.सी.ई.आर.टी., पूजापुरा तिरुवनंतपुरम, केरल	11–12 (44 पुस्तकें)
19.	मध्य प्रदेश	समग्र शिक्षा अभियान, मध्य प्रदेश, भोपाल	9–12 व्यावसायिक पुस्तकें (27 पुस्तकें)
20.	आंध्र प्रदेश	आंध्र प्रदेश सरकारी पाठ्यपुस्तक प्रेस, गुंटूर	9–12 (15 पुस्तकें) व्यावसायिक पुस्तकें
21.	हिमाचल प्रदेश	हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला	1–12 (106 पुस्तकें)
22.	गोवा	गोवा समग्र शिक्षा	विद्या प्रवेश मॉड्यूल
23.	नागालैंड	नागालैंड स्कूल शिक्षा बोर्ड, कोहिमा	9–10 (4 पुस्तकें)

वर्ष 2023–24 में कुल 23 राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों ने रा.शै.अ.प्र.प. से कॉपीराइट की अनुमति प्राप्त की।

प्रत्येक वर्ष, रा.शै.अ.प्र.प. गैर-पाठ्य सामग्री के अलावा, कक्षा 1–12 के लिए पाठ्यपुस्तकें मुद्रित करता है। पाठ्यपुस्तकों सहित अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू में विभिन्न रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशनों की लगभग छह करोड़ प्रतियाँ हर वर्ष तैयार की जाती हैं। इन प्रकाशनों का व्यापक रूप से सी.बी.एस.ई. से संबद्ध स्कूलों में उपयोग किया जाता है, जिनमें केंद्रीय विद्यालय, जवाहर नवोदय विद्यालय, तिब्बती बच्चों के लिए केंद्रीय विद्यालय और सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के अनेक निजी स्कूल सम्मिलित हैं। अनेक राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों ने रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यपुस्तकों के लिए कॉपीराइट प्राप्त कर लिया है। इसके अतिरिक्त, रा.शै.अ.प्र.प. अपनी पाठ्यपुस्तकों में क्यू.आर. कोड को समेकित करता है।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग ने अपने प्रकाशनों की व्यापक उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए, देशभर में 995 समर्पित पुस्तक विक्रेताओं को विक्रेताओं के रूप में सूचीबद्ध किया है। उर्दू प्रकाशन उर्दू अकादमी, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के माध्यम से वितरित किए जाते हैं।

प्रकाशन प्रभाग स्कूलों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यपुस्तकों के लिए ऑनलाइन ऑर्डर देने हेतु एक स्वतंत्र वेब पोर्टल प्रदान करता है। स्कूल अपनी सुविधा के आधार पर अपनी पाठ्यपुस्तकें या तो किसी सूचीबद्ध विक्रेता से या सीधे रा.शै.अ.प्र.प. से प्राप्त कर सकते हैं। वेब पोर्टल व्यक्तियों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और संस्थानों द्वारा रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशनों के ऑनलाइन ऑर्डर की सुविधा भी देता है, जिसकी प्रदायगी ग्राहक को किसी अतिरिक्त लागत के बिना पंजीकृत बुक पोस्ट के माध्यम से की जाती है।

प्रकाशन प्रभाग विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों और सरकारी एजेंसियों को सीधे पाठ्यपुस्तकों की आपूर्ति भी करता है, जिसमें नवोदय विद्यालय समिति, विभिन्न राज्यों में मॉडल स्कूल और अरुणाचल प्रदेश सरकार, सिक्किम, गुजरात, असम, एस.सी.ई.आर.टी. त्रिपुरा, नागालैंड बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन, टेक्स्टबुक ब्यूरो ऑफ अंडमान और निकोबार, झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद्, पांडिचेरी सरकार, शिक्षा विभाग लक्षद्वीप, दमन और दीव, चंडीगढ़ प्रशासन, एन.डी.एम.सी., गोवा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, म.प्र. पाठ्यपुस्तक निगम (उर्दू) और जम्मू और कश्मीर में स्कूल शिक्षा निदेशालय जैसे अन्य संगठन सम्मिलित हैं।

रा.शै.अ.प्र.प. देश के क्रमशः पूर्वी, दक्षिणी, पश्चिमी और पूर्वोत्तर हिस्सों की जरूरतों को पूरा करने के लिए कोलकाता, बेंगलुरु, अहमदाबाद और गुवाहाटी में स्थित चार क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र (आर.पी.डी.सी.) संचालित करता है। दिल्ली मुख्यालय उत्तरी क्षेत्र में कार्य करता है।

व्यक्तियों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और स्कूलों के लिए रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशनों तक आसान पहुँच सुनिश्चित करने के लिए चार आर.पी.डी.सी., पाँच क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान और दिल्ली मुख्यालय में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा संचालित कुल 10 बिक्री काउंटर हैं, जो साल भर काम करते हैं। रिपोर्टिंग वर्ष के दौरान, 587 प्रकाशन जारी किए गए।

रा.शै.अ.प्र.प. ने अपने प्रकाशनों को प्रदर्शित करने और बेचने के लिए निम्नलिखित प्रदर्शनियों और पुस्तक कार्यक्रमों में भी भाग लिया—

1. 10 से 18 फरवरी 2024 तक विश्व पुस्तक मेला 2024, दिल्ली।
2. 26 से 31 दिसंबर 2024 तक 50वीं राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी, पुणे।
3. 15 से 16 मार्च 2024 तक एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग में अखिल भारतीय बाल शैक्षिक ई-सामग्री प्रतियोगिता (ए.आई.सी.ई.ई.सी.सी.)।
4. 18 से 31 जनवरी 2024 तक कोलकाता पुस्तक मेला 2024।

हिंदी प्रकोष्ठ

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

परिषद् में राजभाषा को बढ़ावा देने तथा इसके समुचित कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें आयोजित की गईं तथा प्रगति पर चर्चा की गई। रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक ने राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष के रूप में वर्ष के दौरान क्रमशः 16 जून 2023, 25 अगस्त 2023, 15 दिसंबर 2023 तथा 5 मार्च 2024 को आयोजित चार बैठकों की अध्यक्षता की। परिषद् के विभागों/प्रभागों/समूहों/इकाइयों/अनुभागों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर तैयार की गई तिमाही प्रगति रिपोर्ट शिक्षा मंत्रालय तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार को प्रस्तुत की गईं।

हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस समारोह का आयोजन

सितंबर 2023 के महीने के दौरान, 15–29 सितंबर, 2023 तक वार्षिक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया, जिसमें आठ हिंदी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं—

1. हिंदी अनुवाद
   (क) शैक्षणिक श्रेणी
   (ख) गैर-शैक्षणिक श्रेणी
2. हिंदी टिप्पण एवं प्रारूपण (नोटिंग और ड्राफ्टिंग) (प्रशासनिक श्रेणी)

3. हिंदी निबंध
   (क) शैक्षणिक श्रेणी
   (ख) गैर-शैक्षणिक श्रेणी
4. कविता पाठ
5. प्रश्नोत्तरी
6. हिंदी पत्र-लेखन एवं निबंध लेखन (गैर-हिंदी भाषा बोलने वालों के लिए)
7. हिंदी सुलेख
   (क) गैर-हिंदी भाषा बोलने वालों के लिए
   (ख) मल्टी-टास्किंग कर्मचारियों (एम.टी.एस.) के लिए
8. हिंदी संपादन (परिषद् के सभी कर्मचारियों के लिए)

   हिंदी पखवाड़े के समापन पर विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम/संगोष्ठी एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

विजेता अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची इस प्रकार है—

क्र.सं.	प्रतियोगिता का नाम	विजेता अधिकारी/कर्मचारी का नाम और पदनाम	प्रतियोगिता में स्थान	पुरस्कार राशि
1. (क)	हिंदी अनुवाद (गैर-शैक्षणिक श्रेणी)	शीतांशु सक्सेना, *अवर श्रेणी लिपिक*	प्रथम	2100
		रितेश कुमार, *अवर श्रेणी लिपिक*	द्वितीय	1600
		प्रदीप कुमार शर्मा, *कनिष्ठ लेखाकार*	तृतीय	1200
		इंदेश सिंह, *अनुभाग अधिकारी*	प्रोत्साहन	600
1. (ख)	हिंदी अनुवाद (शैक्षणिक श्रेणी)	सीमा शुक्ला ओझा, *प्रोफ़ेसर*	प्रथम	2100
		हरीश कुमार मीणा, *सहायक प्रोफ़ेसर*	प्रथम	2100
		आशीष कुमार श्रीवास्तव, *सहायक प्रोफ़ेसर*	द्वितीय	1600
2. (क)	हिंदी निबंध (गैर-शैक्षणिक श्रेणी)	प्रदीप कुमार शर्मा, *कनिष्ठ लेखाकार*	प्रथम	2100
		रितेश कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय	1600
		दीपक सेहरावत, *कनिष्ठ लेखाकार*	तृतीय	1200
		अनिल कुमार, *अवर श्रेणी लिपिक*	प्रोत्साहन	600
2. (ख)	हिंदी निबंध (शैक्षणिक श्रेणी)	अभय कुमार, *सहायक प्रोफ़ेसर*	प्रथम	2100
		गुलफाम, *सहायक प्रोफ़ेसर*	द्वितीय	1600
3.	हिंदी संपादन	शीतांशु सक्सेना, *अवर श्रेणी लिपिक*	प्रथम	2100
		गौतम कुमार, *अवर श्रेणी लिपिक*	द्वितीय	1600
		ऋषिपाल सिंह, *संपादकीय सहायक*	तृतीय	1200
		अंजुला सागर, *क्षेत्र निरीक्षक*	प्रोत्साहन	600
		राकेश कुमार, *प्रतिधारक (कॉपी होल्डर)*	प्रोत्साहन	600

4.	हिंदी नोटिंग और ड्राफ्टिंग	रितेश कुमार, *अवर श्रेणी लिपिक*	प्रथम	2100
		शीतांशु सक्सेना, *अवर श्रेणी लिपिक*	द्वितीय	1600
		प्रदीप कुमार शर्मा, *कनिष्ठ लेखाकार*	तृतीय	1200
		अत्तर सिंह, *अनुभाग अधिकारी*	प्रोत्साहन	600
5.	हिंदी पत्र-लेखन एवं निबंध लेखन	कुंडा शमकुवार, *अधीक्षण अभियंता*	प्रथम	2100
		रिजाउल करीम, *सहायक प्रोफेसर*	द्वितीय	1600
6. (क)	हिंदी सुलेख (गैर-हिंदी भाषा बोलने वालों के लिए)	एंजल रत्नाबाई, सहायक प्रोफेसर	प्रथम	2100
		कुंडा शमकुवार, *अधीक्षण अभियंता*	द्वितीय	1600
6. (ख)	हिंदी सुलेख (एम.टी.एस.)	अशोक कुमार, *बहुकार्य कर्मचारी*	प्रथम	2100
		ममता रानी, *बहुकार्य कर्मचारी*	द्वितीय	1600
7.	कविता पाठ	नीरजा रश्मि, *प्रोफेसर*	प्रथम	2100
		रितेश कुमार, *अवर श्रेणी लिपिक*	द्वितीय	1600
		प्रदीप कुमार शर्मा, *कनिष्ठ लेखाकार*	तृतीय	1200
		विजय पाल सिंह, *प्रोफेसर*	तृतीय	1200
		अंजुला सागर, *क्षेत्र निरीक्षक*	प्रोत्साहन	600
8.	क्विज (प्रश्नोत्तरी)	रितेश कुमार, *अवर श्रेणी लिपिक*	प्रथम	2100
		प्रदीप कुमार शर्मा, *कनिष्ठ लेखाकार*	द्वितीय	1600
		अमित रंजन, *सहायक प्रोफेसर*	तृतीय	1200
		गुलफाम, *सहायक प्रोफेसर*	प्रोत्साहन	600
कुल				55,400/-

उपरोक्त प्रतियोगिताओं में परिषद् के कुल 61 अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। पखवाड़े के समापन समारोह के दौरान 3 अक्तूबर 2023 को 'संक्रमण' नामक नाटक का मंचन किया गया। प्रतियोगिताओं के 19 विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग के लिए हिंदी कार्यशालाएँ और राजभाषा निरीक्षण

हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा वर्ष की पहली तिमाही के लिए 1 जून 2023 को परिषद् के प्रशासनिक श्रेणी के कर्मचारियों के लिए कार्यशाला आयोजित की गई। जुलाई–सितंबर 2023 तिमाही के लिए कार्यशाला 22 अगस्त 2023 को आयोजित की गई। अक्तूबर–दिसंबर 2023 तिमाही के लिए कार्यशाला 13 दिसंबर 2023 को आयोजित की गई, जिसमें संकाय के नवनियुक्त सदस्यों को राजभाषा पर अभिमुखीकरण किया गया। वर्ष की चौथी तिमाही के लिए कार्यशाला 12 मार्च 2024 को परिषद् के नवनियुक्त शैक्षणिक कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई।

परिषद् के विभिन्न विभागों/प्रभागों/अनुभागों में राजभाषा हिंदी की स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा आठ विभागों/अनुभागों का राजभाषा निरीक्षण किया गया। हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा 6–8 फरवरी 2024 तक क्षेत्रीय शिक्षा शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर में तथा 29 फरवरी से 1 मार्च 2024 तक क्षेत्रीय शिक्षा शिक्षा संस्थान, मैसूरु में राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण रिपोर्ट संबंधित विभागों/अनुभागों तथा भुवनेश्वर और मैसूरु के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों को भी भेजी गई।

कर्मचारियों के लिए वार्षिक प्रोत्साहन पुरस्कार योजना

हिंदी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह में परिषद् के दस कर्मचारियों को भारत सरकार की पुरस्कार योजना के तहत हिंदी में अधिकतम दैनिक कार्य करने के लिए नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं का विवरण इस प्रकार है—

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	पुरस्कार	राशि
1.	मनोज कुमार	सहायक	स्थापना-2	प्रथम	5000/-
2.	रचित शर्मा	अवर श्रेणी लिपिक	स्थापना-2	प्रथम	5000/-
3.	अनिल कुमार बामिल	अवर श्रेणी लिपिक	स्थापना-2	द्वितीय	3000/-
4.	तिलकश	अवर श्रेणी लिपिक	स्थापना-2	द्वितीय	3000/-
5.	पूनम	उच्च श्रेणी लिपिक	सी.आर. प्रकोष्ठ	द्वितीय	3000/-
6.	विनीत कुमार	अवर श्रेणी लिपिक	स्थापना-3	तृतीय	2000/-
7.	अनिल कुमार	अवर श्रेणी लिपिक	सी. एंड पी. समिति और संसद अनुभाग	तृतीय	2000/-
8.	शीतांशु सक्सेना	अवर श्रेणी लिपिक	आरक्षण निगरानी	तृतीय	2000/-
9.	हेम चंदर	अवर श्रेणी लिपिक	सी.आई.ई.टी.-प्रशासनिक	तृतीय	2000/-
10.	संजय कुमार	अवर श्रेणी लिपिक	सी. एंड पी. समिति और संसद	तृतीय	2000/-

अनुवाद कार्य

हिंदी प्रकोष्ठ में परिषद् के आधिकारिक दस्तावेजों के अंग्रेजी संस्करण का हिंदी में अनुवाद करने की सुविधा प्रदान की जाती है। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के प्रावधानों के अंतर्गत परिषद् के भर्ती नियमों, विज्ञापनों, कार्यालय आदेशों, ज्ञापनों, परिपत्रों, प्रेस नोटों, लेखा एवं प्रशासन से संबंधित रिपोर्टों तथा समितियों की बैठकों के एजेंडे और कार्यवृत्त आदि का भी हिंदी में अनुवाद किया गया। रिपोर्ट वर्ष के दौरान हिंदी प्रकोष्ठ ने शिक्षा मंत्रालय को प्रस्तुत करने के लिए अंग्रेजी में तैयार की गई अनेक रिपोर्टों का हिंदी में अनुवाद किया है, जिनमें रा.शै.अ.प्र.प. की पहलों पर सामग्री, संसदीय स्थायी समिति के प्रश्न और उत्तर, संसद में सांसदों द्वारा उठाए गए प्रश्न एवं उनके उत्तरों का अनुवाद आदि सम्मिलित हैं।

हिंदी में सर्वाधिक कार्य के लिए राजभाषा शील्ड पुरस्कार

वर्ष 2022–23 के लिए हिंदी की चार तिमाही प्रगति रिपोर्ट के आधार पर हिंदी में अधिकतम कार्य करने के लिए 15 दिसंबर 2024 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान अध्यापक शिक्षा विभाग और सुरक्षा अनुभाग को राजभाषा शील्ड के साथ प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)

स्कूल और अध्यापक शिक्षा के लिए ई.टी./आई.सी.टी. में संसाधन-सह-गतिविधि केंद्र

सी.आई.ई.टी. देश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के उत्थान के लिए विभिन्न डिजिटल शिक्षा पहलों से परिचित कराकर अनेक गतिविधियाँ आयोजित कर रहा है। गतिविधियों में से एक विस्तार कार्यक्रम है जहाँ यह आउटरीच गतिविधि शुरू

करता है। इसके तहत, सी.आई.ई.टी. देशभर से और विदेशों से विभिन्न संस्थानों/संगठनों जैसे एस.सी.ई.आर.टी./डी.आई.ई.टी./विश्वविद्यालयों/टी.ई.आई./कॉलेजों आदि के विद्यार्थियों, अध्यापक प्रशिक्षकों/संकाय/प्रतिनिधियों/सरकारी अधिकारियों के लिए शैक्षिक, एक्सपोजर विजिट, विस्तार व्याख्यान एवं इंटर्नशिप, प्रदर्शनी आमंत्रित करता है और उनका आयोजन करता है।

डिजिटल लर्निंग और मल्टीमीडिया पर बच्चों (6–10) के लिए 29 मई से 9 जून 2023 तक लगभग 100 प्रतिभागियों के लिए एक समर कैंप आयोजित किया गया। सी.आई.ई.टी. की मीडिया लाइब्रेरी में 8,661 सामान्य पुस्तकें और 5,920 बाल साहित्य, पत्रिकाएँ और समाचार-पत्र प्रदर्शित हैं। संसाधन-सह-गतिविधि केंद्र विभिन्न संगठनों के लिए एक्सपोजर विजिट और इंटर्नशिप भी आयोजित करता है।

इंटर्नशिप प्रोग्राम

डिजिटल कौशल, स्क्रिप्ट लेखन, संपादन और ऑडियो-वीडियो कार्यक्रमों के विकास आदि से संबंधित क्षमताओं को मजबूत करने के लिए सी.आई.ई.टी. में विद्यार्थियों को इंटर्नशिप कराई जाती है। देश के विभिन्न हिस्सों से विभिन्न कार्यक्रमों के विद्यार्थी सी.आई.ई.टी., नई दिल्ली में इंटर्नशिप करने में रुचि दिखाते हैं।

2023–24 के दौरान सी.आई.ई.टी. द्वारा आयोजित इंटर्नशिप कार्यक्रमों का विवरण

क्र.सं.	संस्थान/कॉलेज/संगठन का नाम	विद्यार्थियों की कुल संख्या	इंटर्नशिप आरंभ तिथि	इंटर्नशिप समाप्ति तिथि	इंटर्नशिप के दिन
1.	ज्वलंत चौधरी, बी.एससी (डेटा साइंस), गुजरात विश्वविद्यालय	1	04-03-23	28-03-23	24
2.	आई.टी.आई., दिल्ली	5	16-05-23	15-06-23	30
3.	मुकेश पटेल स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी, मैनेजमेंट एंड इंजीनियरिंग, एस.वी.के.एम.एस. एन.एम.आई.एम.एस., शिरपुर कैंपस, महाराष्ट्र	1	24-05-23	07-07-23	44
4.	बी.ए. (एप्लाइड आर्ट्स) से एमिटी इंटर्नशिप	2	29-05-23	28-06-23	30
5.	यूनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन	1	05-06-23	07-07-23	32

6.	मणिपाल विश्वविद्यालय, जयपुर से बी.टेक विद्यार्थी		19-06-23	28-06-23	9
7.	मानव रचना इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च एंड स्टडीज, फरीदाबाद, हरियाणा	1	20-06-23	20-07-23	30
8.	दिल्ली स्किल एंड एंटरप्रेन्योरशिप यूनिवर्सिटी	1	14-07-23	13-08-23	30
9.	मैनेजमेंट एजुकेशन एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट (एम.ई.आर.आई.), जी.जी.एस.आई.पी.यू. से संबद्ध, 52–55, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058	2	01-08-23	30-09-23	60
10.	दिल्ली प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, शाहबाद दौलतपुर, मुख्य बवाना रोड, दिल्ली–110042	1	28-06-23	10-08-23	43
11.	राजकीय पॉलिटेक्निक, गाजियाबाद, डी ब्लॉक, शास्त्री नगर, हापुड़ रोड, गाजियाबाद– उ. प्र. 201001	1	01-08-23	31-08-23	30
12.	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एजुकेशन (आई.एम.ई.), साहिबाबाद	2	30-08-23	28-09-23	29
13.	राम चमेली चड्डा विश्वास गर्ल्स कॉलेज, गाजियाबाद	1	30-08-23	28-09-23	29
14.	भारतीय कला और डिजाइन संस्थान (आई.आई.ए.डी.), ओखला, नई दिल्ली	1	03-07-23	29-09-23	88
15.	एन.सी.वी.टी. इंटर्नशिप/ओ.जे.टी.	8	27-12-23	05-01-24	10
16.	जे.एम.आई.के एम.एड. विद्यार्थियों की इंटर्नशिप	12	27-12-23	05-01-24	10
17.	शिक्षा अध्ययन विभाग, शिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया	12	27-12-23	05-01-24	10 (गैर-कामकाजी दिनों सहित)
18.	मानव विकास और बाल्यावस्था अध्ययन विभाग, एल.आई.सी., डी.यू. के एम.एससी. विद्यार्थी	22	09-02-24	16-02-24	8
19.	बी.एड.-एम.एड./पीएच.डी. विद्यार्थियों/शोधार्थियो की इंटर्नशिप, शिक्षा विभाग, डी.यू.	21	26-02-24	01-03-24	5
20.	नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा कैंपस	35	22-01-24	24-01-24	2.5
21.	एन.सी.वी.टी.	3	11-03-24	02-04-24	23

प्रदर्शनियाँ

सी.आई.ई.टी. लगातार अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में अपने डिजिटल नवाचारों को सामने लाने के प्रयास में लगा हुआ है। इन कार्यक्रमों में शैक्षिक आई.सी.टी. पहलों की विविध रेंज को प्रदर्शित करने के लिए जीवंत मंच प्रदान किए गए।

अपनी डिजिटल पहलों के प्रदर्शन के लिए सी.आई.ई.टी. ने निम्नलिखित कार्यक्रमों/प्रदर्शनियों में भाग लिया—

- ग्रेटर नोएडा में टेक 4 एड एक्सपो और कॉन्फ्रेंस 2023, 28–30 अप्रैल 2023

- अप्रैल 2023 में उड़ीसा में जी 20 कार्यक्रम
- 17–22 जून 2023 को पुणे में जी 20 कार्यक्रम
- एन.ई.पी. की तीसरी वर्षगांठ, अखिल भारतीय शिक्षा समागम पर प्लेनरी हॉल, आई.टी.पी.ओ., प्रगति मैदान, नई दिल्ली में 29–30 जुलाई 2023
- रा.शै.अ.प्र.प. स्थापना दिवस, 1 सितंबर 2023
- साइबर शांति शिखर सम्मेलन, 2023, 1 सितंबर 2023
- शिक्षक पर्व, 2023, 5 सितंबर 2023
- राज्य स्तरीय प्रौद्योगिकी मेला, 2023, देहरादून 25–26 सितंबर 2023
- उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल के पुजार गाँव में सी.एल.ए.पी. (निरंतर शिक्षण पहुँच परियोजना) मोबाइल वाहन के उपयोग पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, 27 सितंबर 2023
- बैंगलोर अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी केंद्र, बेंगलुरु, ए.एस.ई.एस. और डिडैक इंडिया 2023 प्रदर्शनी और सम्मेलन में भागीदारी
- 20 –24 नवंबर 2023 को राज्य स्तरीय बाल मेला, चिल्ड्रन पार्क, सिदगोड़ा, जमशेदपुर
- डी.डी.ए. मैदान, बुराड़ी में 7–10 दिसंबर 2023 तक 69वाँ ए.बी.वी.पी. अधिवेशन, 2023
- 50वीं राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी, पुणे, 26–31 दिसंबर 2023
- भारत पर्व 2024, पर्यटन मंत्रालय द्वारा 23–31 दिसंबर 2024 को लाल किला, नई दिल्ली में आयोजित
- 6 फरवरी 2024 को साइबर सुरक्षा दिवस
- विवो-इग्नाइट अवार्ड्स, 2024, होटल— द ग्रैंड्स, वसंत कुंज, नई दिल्ली, 10 फरवरी 2024
- 10 फरवरी 2024 को प्रगति मैदान, नई दिल्ली में ई-जादुई पिटारा और ई-पुस्तकालय का शुभारंभ
- नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2024, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में, 10–18 फरवरी 2024
- विश्व बैंक द्वारा 15 फरवरी 2024 को आयोजित शिक्षा ज्ञान विनिमय पर भारत शिखर सम्मेलन, होटल शांगरी ला, जनपथ, नई दिल्ली
- कौशल भवन, नई दिल्ली में 9 मार्च 2024 को वी.एस.के., डी.टी.एच. टीवी चैनलों का शुभारंभ और सी.आई.आई.एल. और रा.शै.अ.प्र.प. के 52 प्राइमरों का शुभारंभ
- 15–16 मार्च 2024 तक एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग में ऑडियो-वीडियो फिल्म महोत्सव

वेबसाइट, मोबाइल ऐप्स और अन्य डिजिटल गतिविधियाँ

सी.आई.ई.टी. द्वारा रा.शै.अ.प्र.प. की 16 वेबसाइट और 9 मोबाइल ऐप का रख-रखाव किया जाता है। इनमें प्रमुख हैं— दीक्षा, ई-पाठशाला और रा.शै.अ.प्र.प. व सी.आई.ई.टी. की मुख्य वेबसाइटें। इन वेबसाइटों को नियमित रूप से नई सामग्री के साथ अपडेट किया जाता है, जबकि आवश्यकताओं के अनुसार नई सुविधाएँ भी जोड़ी जाती हैं। 2023–24 में, सी.आई.ई.टी. (ciet.ncert.gov.in) के लिए एक नई वेबसाइट डिजाइन और लॉन्च की गई। साइटों को प्रयोक्ता के अनुकूल और अंत:क्रियात्मक बनाने के लिए, इन वेबसाइटों का समय-समय पर अद्यतनीकरण आवश्यक है और इसकी सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई है। इन पोर्टलों की साइबर सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी निगरानी की जा रही है और एन.आई.सी. तथा सी.ई.आर.टी.-आई.एन. के सुझावों के अनुसार नियमित अपडेट किए जा रहे हैं। ई-कंटेंट अपलोड करने में उनकी जाँच और मेटाडेटा का निर्माण सम्मिलित है। प्रकाशन प्रभाग से प्राप्त ई-बुक्स को ई-पब और फ्लिपबुक फॉर्मेट में परिवर्तित किया जाता है और सर्वर पर अपलोड करने से पहले

पी.डी.एफ. फाइलों पर वॉटरमार्क लगाया जाता है। मंत्रालय की ओर से विभिन्न राष्ट्रीय पहलें भी की गईं। हाल के उदाहरणों में सम्मिलित हैं— निबंध लेखन प्रतियोगिताएँ, प्रश्नोत्तरी, एन.ई.पी. पर संचार सामग्री, फोटोग्राफी प्रतियोगिताएँ और एन.ई.पी. के तहत अन्य कार्यक्रम, जैसे कि आत्मनिर्भर भारत।

गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री के निर्माण और राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों के साथ समन्वय में सुधार के लिए प्रतियोगिताएँ

अखिल भारतीय बाल शैक्षिक ई-सामग्री प्रतियोगिता 2023–24 पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), रा.शै.अ.प्र.प., शिलांग में 15–16 मार्च 2024 को निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ आयोजित की गई थी— i) विद्यार्थियों, शिक्षकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और स्वतंत्र ई-सामग्री निर्माताओं द्वारा गुणवत्तापूर्ण ई-सामग्री के निर्माण को प्रोत्साहित करना, ii) शिक्षा में विभिन्न हितधारकों के बीच सहयोग के लिए एक राष्ट्रीय स्तर का मंच प्रदान करना और iii) गुणवत्तापूर्ण ई-सामग्री तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए ओ.ई.आर. के व्यापक प्रसार की सुविधा प्रदान करना। कुल 727 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई (438 वीडियो, 180 ऑडियो और 109 इमर्सिव ई-सामग्री) जिनका मूल्यांकन 12 जूरी सदस्यों के पैनल द्वारा किया गया। मीडिया प्रकार, उत्पादन एजेंसी और सीखने के स्तर की विभिन्न श्रेणियों में कुल 75 पुरस्कार वितरित किए गए। ए.आई.सी.ई.ई.सी.सी. 2023–24 की घोषणा 3 नवंबर 2024 को की गई और इसका समापन एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय) में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम में हुआ। हर साल आयोजित होने वाली इस प्रतियोगिता में विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक मंच प्रदान किया गया और राष्ट्रीय स्तर पर नवीन सामग्री पर बहस और चर्चा की गई।

कक्षा 11 और 12 के लिए स्वयं पर एम.ओ.ओ.सी. के पाठ्यक्रम

रा.शै.अ.प्र.प. 11वीं और 12वीं कक्षा के लिए 11 विषयों में 28 ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करती है, जिनमें लेखाशास्त्र, व्यापार अध्ययन, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगोल, गणित, भौतिकी, मनोविज्ञान, अंग्रेजी और समाजशास्त्र सम्मिलित हैं। विज्ञान और गणित को अधिक रोचक बनाने और आभासी शिक्षा का समर्थन करने के लिए पाठ्यक्रम में वर्चुअल लैब गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है। पाठ्यक्रम को अधिक अंत:क्रियात्मक बनाने के लिए पाठ्यक्रम समन्वयकों हेतु एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। शिक्षार्थियों के बीच पाठ्यक्रमों को लोकप्रिय बनाने के लिए स्कूल का दौरा और रा.शै.अ.प्र.प. के आधिकारिक यूट्यूब तथा डी.टी.एच. टीवी चैनलों के माध्यम से सात लाइव सत्र आयोजित किए गए। सभी 28 पाठ्यक्रमों के लिए आवश्यक तिथियों और क्यू.आर. कोड के साथ फ्लायर्स और बैनर बनाए गए और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रसारित किए गए। कुल 48,238 विद्यार्थियों (चक्र 11: 28056, चक्र 12: 20182) ने स्वयं पोर्टल पर 28 ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में नामांकन किया है। पाठ्यक्रमों को बढ़ावा देने और व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने के लिए विभिन्न स्थानों पर डिजिटल स्टॉल लगाए गए हैं।

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल

विस्तार व्याख्यान शृंखला

कार्यक्रम विस्तार व्याख्यान शृंखला के अंतर्गत तीन अकादमिक व्याख्यान आयोजित किए गए, जिन पर प्रसिद्ध विशेषज्ञों और शिक्षाविदों द्वारा व्याख्यान दिए गए। इनके विषय थे— 'एन.ई.पी. 2020 के संदर्भ में भारतीय भाषाओं के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा', उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा के लिए नवाचार और 'अनुभव साझाकरण से उत्कृष्टता प्राप्ति'। सभी व्याख्यानों में संस्थान के लगभग 300 से अधिक विद्यार्थियों, शिक्षकों और संकाय तथा कर्मचारियों ने भाग लिया।

व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण में उभरते परिप्रेक्ष्य और अभ्यासों पर राष्ट्रीय सम्मेलन

व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण में परिप्रेक्ष्य और अभ्यासों पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन 1 और 2 फरवरी 2024 को पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल में आयोजित किया गया। सम्मेलन में विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों के विशेषज्ञों, विभिन्न संगठनों और संस्थानों के प्रतिनिधियों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों सहित पूरे भारत से 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्घाटन इंदर सिंह परमार, माननीय *कैबिनेट मंत्री*, उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष विभाग, मध्य प्रदेश सरकार ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में माननीय मंत्री ने व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से ग्रामीण कारीगरों के पारंपरिक कौशल में प्रौद्योगिकी को समेकित करने की आवश्यकता पर बल दिया। दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान लगभग 70 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए, जिनमें व्यावसायिक शिक्षा में उभरती प्रौद्योगिकियों का एकीकरण, उद्यमशीलता विकास और योग्यता आधारित आकलन जैसे विभिन्न विषय सम्मिलित थे। शोध पत्र प्रस्तुत किए गए, जिसमें क्षेत्र में नवीनतम अंतर्दृष्टि और नवाचारों को प्रदर्शित किया गया। सम्मेलन ने व्यावसायिक शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हितधारकों के बीच उपयोगी चर्चा, ज्ञान साझा करने और नेटवर्किंग के लिए एक मंच प्रदान किया। समापन सत्र में गौतम टेटवाल, मध्य प्रदेश सरकार के कौशल विकास और रोजगार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने भाग लिया। उन्होंने सेल्फी प्वाइंट और आई.ओ.टी. आधारित सिंचाई निगरानी एवं नियंत्रण प्रणाली का उद्घाटन किया, दोनों पहलों का उद्देश्य संस्थान के अंदर कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देना है। माननीय मंत्री ने मध्य प्रदेश को कुशल पेशेवरों का केंद्र बनाने, आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने और बेरोजगारी की चुनौतियों का समाधान करने की प्रतिबद्धता पर बल दिया। सम्मेलन का समापन प्रस्तुत शोध से निकाले गए व्यावहारिक निष्कर्षों के साथ हुआ, जिसने भारत में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को आगे बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रतिबद्धता की पुष्टि की।

जनजातीय स्कूलों के लिए पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए कार्य योजना

कार्यक्रम की शुरुआत पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल के संयुक्त निदेशक की प्रारंभिक टिप्पणियों से हुई, जिसमें व्यावसायिक शिक्षा पर चर्चा का माहौल तैयार किया गया। स्कूलों में शिक्षा के व्यवसायीकरण की अवधारणा और महत्व पर एक प्रस्तुति दी गई। प्रस्तुति में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि व्यावसायिक शिक्षा से किस तरह अकादमिक शिक्षा और व्यावहारिक कौशल के बीच के अंतराल को दूर किया जा सकता है और एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों (ई.एम.आर.एस.) में व्यावसायिक शिक्षा शुरू करने के लिए एक रोडमैप प्रस्तुत किया गया। इंदिरा मुदगल, *उपायुक्त,* राष्ट्रीय जनजातीय विद्यार्थी शिक्षा सोसाइटी (एन.ई.एस.टी.एस.), जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार की ने मौजूदा ई.एम.आर. स्कूलों के बारे में जानकारी दी और जनजातीय विद्यार्थियों

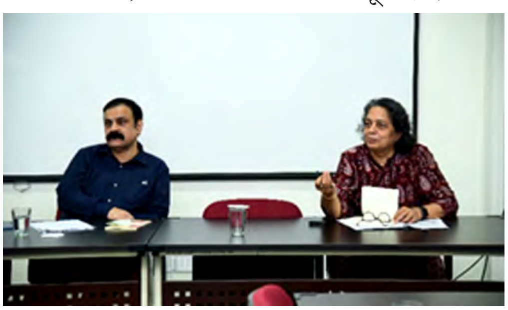

जनजातीय विद्यालयों में पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए कार्य योजना के विकास पर कार्यशाला के दौरान चर्चा करते विशेषज्ञ

को संगत व्यावसायिक कौशल के साथ सशक्त बनाने की कार्यनीतियों की रूपरेखा प्रस्तुत की। विशेषज्ञों में रा.शै.अ.प्र.प., एन.आई.ई.पी.ए., एन.ई.एस.टी.एस. के शिक्षक; मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, सिक्किम और त्रिपुरा के ई.एम.आर. स्कूलों के प्रधानाचार्य और शिक्षक सम्मिलित थे। तीन दिनों के दौरान गहन चर्चा और विचार-मंथन सत्रों की एक शृंखला आयोजित की गई, जिसके परिणामस्वरूप एक व्यापक कार्य योजना तैयार की गई। इस कार्य योजना में आवश्यकताओं का आकलन, अवसंरचना की आवश्यकताएँ, उद्योग सहयोग, राष्ट्रीय रूपरेखा के साथ पाठ्यक्रम संरेखण और कार्यान्वयन के विभिन्न स्तरों पर जिम्मेदारियों का चित्रण सम्मिलित है। इस कार्यक्रम के दौरान विकसित की गई कार्य योजना से पूरे भारत में आदिवासी स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा के भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक रूपरेखा तैयार करने की उम्मीद है।

व्यावसायिक शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच नवाचार, इनक्यूबेशन और उद्यमशीलता पर जागरूकता निर्माण

वर्ष 2023–24 के दौरान 'व्यावसायिक शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच नवाचार, इनक्यूबेशन और उद्यमशीलता पर जागरूकता निर्माण' पर एक वेबिनार और दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

संजय कुमार, *संरक्षक,* एम.एस.एम.ई. और स्टार्ट-अप इंडिया और बरनाली घटक, *सी.ई.ओ.*, एस.बी.एच. इलेक्ट्रोक्लाउड ने प्रतिभागियों के साथ अपने उद्यमशीलता संबंधी इनपुट साझा किए। उन्होंने अपनी यात्रा के बारे में व्याख्यान दिए और विद्यार्थियों को स्टार्ट-अप और नवाचार के क्षेत्र में अपना रास्ता बनाने के बारे में प्रेरित किया। वेबिनार में विभिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थी और शिक्षक (व्यावसायिक शिक्षक और विद्यार्थी एवं इच्छुक व्यावसायिक शिक्षक सहित) सम्मिलित हुए। इस संगोष्ठी में भोपाल के स्कूलों के 200 विद्यार्थी और 11 शिक्षक सम्मिलित हुए और वेबिनार में 100 से अधिक व्यावसायिक शिक्षक और विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

संस्थान द्वारा फरवरी 2024 के महीने में व्यावसायिक शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच नवाचार, इनक्यूबेशन और उद्यमशीलता पर जागरूकता निर्माण कार्यक्रम के तहत ड्रोन प्रौद्योगिकी पर दो-दो दिनों के तीन बूटकैंप आयोजित किए गए। इन बूटकैंप का आयोजन भोपाल, राजगढ़ और शुजालपुर में किया गया। जार्विस लैब्स प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक और सी.ई.ओ. यशराज सुनहरे, ने ड्रोन तकनीक पर गतिविधियों के बारे में विद्यार्थियों और शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया, जिसमें ड्रोन का परिचय, ड्रोन पायलटिंग, ड्रोन रख-रखाव कार्यशाला, ड्रोन निमार्ण की चुनौतियाँ और ड्रोन रेसिंग प्रतियोगिता सम्मिलित थी। इस बूटकैंप में भाग लेने के लिए विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों और शिक्षकों को आमंत्रित किया गया था। 5 स्कूलों के लगभग 90 विद्यार्थियों और 6 शिक्षकों ने बूटकैंप में भाग लिया। पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के सदस्य भी अपने अनुभव साझा करने के लिए वहाँ मौजूद थे।

व्यावसायिक शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच नवाचार, इनक्यूबेशन और उद्यमशीलता पर जागरूकता निर्माण कार्यक्रम के तहत ड्रोन प्रौद्योगिकी पर बूटकैंप में विद्यार्थी

पूर्वोत्तर क्षेत्र में व्यावसायिक शिक्षा को मजबूत करने के लिए राज्यवार कार्य योजनाओं के विकास हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर क्षेत्रीय कार्यशाला

पूर्वोत्तर क्षेत्र में व्यावसायिक शिक्षा को मजबूत करने के लिए राज्यवार कार्य योजनाओं के विकास के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर एक क्षेत्रीय कार्यशाला 26–28 सितंबर 2023 तक आयोजित की गई।

समग्र शिक्षा, स्कूल शिक्षा विभाग, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, मुक्त विद्यालयी शिक्षा बोर्ड तथा मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा, मेघालय और सिक्किम के राज्य बोर्डों के अधिकारियों द्वारा स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा की स्थिति पर प्रस्तुतियाँ दी गईं। प्रतिभागियों ने भोपाल के प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय की व्यावसायिक प्रयोगशालाओं का दौरा किया। राज्यों के स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा को सुदृढ़ करने के लिए राज्यवार कार्य योजनाएँ विकसित की गईं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में व्यावसायिक शिक्षा को मजबूत करने के लिए राज्यवार कार्य योजनाओं के विकास हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर क्षेत्रीय कार्यशाला में विशेषज्ञों की भागीदारी

व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण में डिप्लोमा (डी.वी.ई.टी.)

सत्र 2023–24 के लिए डी.वी.ई.टी. कार्यक्रम में पूरे देश के विभिन्न राज्यों से 70 आवेदन प्राप्त हुए। डी.वी.ई.टी. विद्यार्थियों का अभिविन्यास कार्यक्रम 9 अक्तूबर 2023 को पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल में ऑनलाइन मोड में आयोजित किया गया। 2022–23 का डी.वी.ई.टी. सत्र सितंबर 2023 के महीने में संपन्न हुआ, जिसमें 40 विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के सफल समापन पर डिप्लोमा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। डी.वी.ई.टी. कार्यक्रम का उद्देश्य व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र के क्षेत्र में शिक्षकों/पेशेवरों को प्रशिक्षित करना है। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों को आई.सी.टी. कौशल के साथ-साथ ऑटोमोटिव, स्वास्थ्य सेवा, आई.टी.-आई.टी.ई.एस., कृषि, परिधान और रिटेल जैसे अपने क्षेत्र से संबंधित कौशलों का व्यावहारिक अनुभव भी दिया गया। विद्यार्थियों को संपर्क माध्यम में समसामयिक उद्योगों के अनुभवों से भी अवगत कराया गया।

व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण (डी.वी.ई.टी.) में डिप्लोमा प्राप्त डी.वी.ई.टी. उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र जारी किया गया।

जी 20 जन भागीदारी गतिविधियाँ

जी 20 के अंतर्गत, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल ने क्रमश: भुवनेश्वर और पुणे में पहली एवं चौथी शिक्षा कार्यसमूह बैठक और 'कार्य का भविष्य' प्रदर्शनी में भाग लिया। युवाओं को सशक्त बनाने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और सामाजिक समावेश को बढ़ावा देने में व्यावसायिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालने के लिए 'व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से आर्थिक विकास एवं सामाजिक समावेश को बढ़ावा देना' विषय

के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से युवाओं को सशक्त बनाने पर संस्थान द्वारा जी 20 जन भागीदारी वेबिनार शृंखला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में देशभर के पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 250 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें बाहरी प्रतिभागी, संकाय और अन्य लोग सम्मिलित थे। जी 20 जन भागीदारी वेबिनार शृंखला ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण विषयों पर ज्ञान के आदान-प्रदान और चर्चा के लिए एक मूल्यवान मंच के रूप में कार्य किया। 'भविष्य के लिए कौशल विकास: भविष्य में नौकरियों के लिए रास्ते बनाना' विषय पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं, शिक्षकों और व्यवसायियों को एक साथ लाकर ज्ञान का आदान-प्रदान करना तथा कार्य और व्यावसायिक शिक्षा में नवीनतम प्रगति का पता लगाना था।

कार्य और व्यावसायिक शिक्षा पर राष्ट्रीय सम्मेलन— जन भागीदारी गतिविधियों के लिए उभरते रुझान

कार्य और व्यावसायिक शिक्षा पर राष्ट्रीय सम्मेलन 'जी 20 जन भागीदारी गतिविधियों के तहत उभरते रुझान' आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में ज्ञान के आदान-प्रदान और कार्य और व्यावसायिक शिक्षा में नवीनतम प्रगति की खोज के लिए लगभग 170 विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं, शिक्षकों और अभ्यासकर्ताओं ने भाग लिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 में शिक्षार्थियों को व्यावहारिक कौशल, रोजगार और उद्यमशीलता के अवसर प्रदान करने में व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को मान्यता दी जाती है। संजय तिवारी, *कुलपति,* भोज मुक्त विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश ने अपने मुख्य भाषण में व्यावसायिक शिक्षा और कौशल उन्नयन के महत्व पर बल दिया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि आज की तेजी से बदलती दुनिया में, बदलते जॉब मार्केट के अनुकूल होने के लिए रीस्किलिंग और अपस्किलिंग बहुत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने माना कि एक विकासशील देश के रूप में भारत को अपस्किलिंग पहलों के माध्यम से अधिक रोजगार के अवसर पैदा करने की आवश्यकता है। इस सम्मेलन के दौरान विभिन्न क्षेत्रों के बीस विद्वानों ने शोधपत्र प्रस्तुत किए। सम्मेलन का समापन शिक्षा और उद्योगजात की आवश्यकताओं के बीच के अंतराल को दूर करने के लिए उद्योग-शैक्षणिक सहयोग को मजबूत करने की अनुशंसाओं के साथ हुआ। व्यावसायिक शिक्षा में प्रौद्योगिकी का समेकन सीखने के अनुभवों को बढ़ाता है और विद्यार्थियों को तकनीकी रूप से उन्नत कार्यस्थलों के लिए तैयार करता है। उभरते रुझानों और उद्योगजगत की माँगों को प्रतिबिंबित करने के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के पाठ्यक्रम को नियमित रूप से अद्यतन किया जाना चाहिए।

शिक्षार्थियों को पाठ्यक्रम प्रस्तुतियों और मॉड्युलर कार्यक्रमों में लचीलेपन से अपने विशिष्ट करियर लक्ष्यों के लिए अपनी शिक्षा को अनुकूलित करने के अवसर प्रदान किए जा सकते हैं। उद्यमशीलता एवं नवाचार कार्यक्रमों को रचनात्मकता, समस्या-समाधान और व्यावसायिक कौशलों को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों की पेशकश करके बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उन व्यक्तियों के लिए सीखने के अवसर आजीवन सुलभ बनाए जाने चाहिए, जिन्होंने पहले ही व्यावसायिक शिक्षा पूरी कर ली है। अल्पकालिक कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम, कार्यशालाएँ और ऑनलाइन शिक्षण मंच व्यक्तियों को संगत बने रहने और नौकरी की बदलती आवश्यकताओं के अनुकूल होने में सक्षम बना सकते हैं। व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण प्रणाली को आई.आर. 4.0 की उभरती आवश्यकताओं और गतिशील श्रम बाजार परिवर्तनों के अनुकूल होने में सक्रिय होना चाहिए। व्यावसायिक शिक्षा में सुधार, अनुसंधान और मूल्यांकन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग किया जाना चाहिए।

जी 20, जन भागीदारी गतिविधियों के तहत पैनल चर्चा

जी 20 गतिविधियों के अंतर्गत 'स्किल डेवलपमेंट फॉर द फ्युचर— क्रिएटिंग पाथवेज फॉर फ्युचर जॉब्स' और 'एन्हांसिंग एक्सेस एंड क्वालिटी ऑफ वोकेशनल एजुकेशन— एजुकेशन वेज फॉरवर्ड' पर एक पैनल चर्चा आयोजित की गई। इस चर्चा में आर.आई.ई., भोपाल और भोपाल के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के लगभग 120

विद्यार्थियों और शिक्षकों ने भाग लिया। पैनलिस्ट विशेषज्ञ, शोधकर्ता, शिक्षक और व्यवसायी थे जिन्होंने कार्य और व्यावसायिक शिक्षा में नवीनतम प्रगति का पता लगाने के लिए अपने ज्ञान और विचारों का आदान-प्रदान किया। इन चर्चाओं का उद्देश्य ज्ञान के आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाने और कार्य एवं व्यावसायिक शिक्षा में नवीनतम प्रगति का पता लगाने के लिए विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं, शिक्षकों और व्यावसायियों को एक साथ लाना था। पैनल चर्चा में कुल 15 पैनलिस्ट सम्मिलित हुए। पहली पैनल चर्चा के दौरान, 'भविष्य के लिए कौशल विकास तथा भविष्य की नौकरियों के लिए रास्ते बनाने' पर ध्यान केंद्रित किया गया। चर्चा में नवीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों, लचीले शिक्षण मार्गों और उभरती प्रौद्योगिकियों और उद्योगों पर बल देने के साथ कौशल विकास को प्राथमिकता देने के महत्व पर बल दिया गया। शैक्षिक संस्थानों और उद्योग भागीदारों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने, आजीवन सीखने और कौशल विकास के अवसरों को बढ़ावा देने से, स्थायी रास्ते बनाए जा सकते हैं जो जॉब मार्केट की उभरती माँगों के साथ संरेखित होते हैं। दूसरी पैनल चर्चा में, अवसंरचना में निवेश करने, आउटरीच कार्यक्रमों का विस्तार करने और व्यावसायिक शिक्षा में सभी शिक्षार्थियों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। उद्योग हितधारकों के साथ साझेदारी को प्रोत्साहित करने, कठोर गुणवत्ता आश्वासन तंत्र को कार्यान्वित करने एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण में प्रौद्योगिकी के समेकन को व्यावसायिक शिक्षा की पहुँच और संगतता में सुधार करने के प्रभावी तरीकों के रूप में देखा गया।

जी 20 गतिविधियों के अंतर्गत 'भविष्य के लिए कौशल विकास— भावी नौकरियों के लिए रास्ते बनाना' और 'व्यावसायिक शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता बढ़ाना— आगे के रास्ते' पर पैनल चर्चा।

विकसित भारत अभियान के तहत मॉड्यूल

संस्थान ने वर्ष के दौरान विकसित भारत अभियान के तहत निम्नलिखित मॉड्यूल विकसित किए— बायोडीजल–ए फ्युचर ऑफ ऑटोमेटिव, ग्रीन हाइड्रोजन— चेंजिग द एयर फॉर फ्युचर जनरेशन, न्युक्लियर एनर्जी— जनरेटिंग पॉवर फॉर सेविंग लाइव्स, सोलर पॉवर—पॉवर ट्राजिंटिंग टू फ्युचर, सोर्स ऑफ एनर्जी, विंड एनर्जी— जनरेटिंग पॉवर फॉर जनरेशंस, नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020— एड्रेसिंग फ्युचर स्किल डेंवलपमेंट अपॉरच्युनिटीज थ्रू वोकेशनल एजुकेशन और स्टार्ट अप – अमृतकाल में विकास का इंजन, सतत विकास के लिए अमृतकाल।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

'मुस्कुराता बचपन'— प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.)

बचपन के शुरुआती वर्ष महत्वपूर्ण विकास की एक अहम अवधि होती है और इसे व्यापक रूप से एक व्यक्ति के भविष्य का निर्माण करने वाली नींव के रूप में मान्यता प्राप्त है। संस्थान ने शोध-आधारित कार्यान्वयन कार्यनीति के हिस्से के रूप में विकासात्मक परियोजना 'मुस्कुराता बचपन' को शुरू करने में अग्रणी भूमिका निभाई, जो एक प्रारंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रम है और जिसका उद्देश्य 3–5 वर्ष की आयु के बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा में प्रवेश करने से पहले सीखने की प्रक्रिया के लिए तैयार करना है। वर्तमान शैक्षणिक वर्ष में परियोजना के लिए स्तर

1, 2 और 3 के लिए प्रस्तावित गतिविधियाँ शुरू कर दी गई हैं। विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए विभिन्न गतिविधियों को सुगम बनाया गया। विद्यार्थियों को समावेशी वातावरण सहित अपने आस-पास के बारे में जागरूक किया गया और दैनिक जीवन की गतिविधियों के माध्यम से उन्हें स्वास्थ्य/आदतों/मूल्यों के बारे में बताया गया। विद्यार्थियों को स्तर-विशिष्ट दक्षताएँ प्रदान की गईं। बच्चों को संज्ञानात्मक और भाषा संबंधी दक्षताओं के साथ तैयार करने के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, जो पढ़ना, लिखना और संख्या बोध विकसित करना सीखने के लिए पूर्व-आवश्यक हैं, खेल-आधारित दृष्टिकोण/गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं।

प्रकृति के साथ सतत और सामंजस्यपूर्ण जीवन के लिए पर्यावरण शिक्षा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

पर्यावरण शिक्षा पर 4 –6 अक्तूबर 2023 के दौरान राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें 14 चिह्नित विषयों पर 114 शोधपत्रों को अंतिम रूप दिया गया। राष्ट्रीय संगोष्ठी में मैती आंदोलन के संस्थापक पद्मश्री कल्याण सिंह रावत और राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के भूविज्ञान विभाग पूर्व विभागाध्यक्ष, एम.के. पंडित, उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि थे। राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान 14 तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, जिसमें भारत के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिभागियों द्वारा कुल 77 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। इस संगोष्ठी के दौरान तीन पूर्ण सत्र आयोजित किए गए। प्रमुख वक्ताओं में एम.के. पंडित, पूर्व *अध्यक्ष*, भूविज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर; रमन मैग्सेसे पुरस्कार विजेता और भारत के जलपुरुष, राजेंद्र सिंह तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व कुलपति गिरीश्वर मिश्र सम्मिलित थे। राष्ट्रीय संगोष्ठी में पर्यावरण संबंधी सरोकारों से संबंधित विषयों पर विभिन्न मुख्य सत्र भी आयोजित किए गए। अमित कुमार जायसवाल, श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय (गोपेश्वर परिसर) चमोली, उत्तराखंड; प्रवीण माथुर, पूर्व *प्रोफेसर* और *विभागाध्यक्ष*, पर्यावरण विज्ञान, एम.डी.एस. विश्वविद्यालय, अजमेर; एम.एम. रंगा, *प्रोफेसर* (सेवानिवृत्त), पर्यावरण विज्ञान विभाग संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, अंबिकापुर, छत्तीसगढ़; अशोक कुमार गुप्ता, राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता और वृक्षपुरुष; अलका तोमर, पर्यावरण शिक्षा केंद्र और *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर यूथ (सी.वाई.), नई दिल्ली; आर.के. पाराशर, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; वीरेंद्र रावत, *प्रवर्तक*, ग्लोबल ग्रीन स्कूल, सुब्रतो दत्ता, *विभागाध्यक्ष*, पर्यावरण विज्ञान, एम.डी.एस. विश्वविद्यालय, अजमेर; आलोक चतुर्वेदी, एस.पी.सी. सरकारी कॉलेज, अजमेर; के.के. शर्मा, *पूर्व कुलपति*, एम.डी.एस. विश्वविद्यालय, अजमेर ने मुख्य भाषण दिया। सेमिनार के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में जे.एन.वी. विश्वविद्यालय, जोधपुर के पूर्व कुलपति पी.सी. त्रिवेदी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में गिरीश्वर मिश्रा और के.के. शर्मा उपस्थित थे। राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान 14 तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, जिनमें जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, ओडिशा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, तेलंगाना, गोवा, केरल, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, दिल्ली और पंजाब सहित भारत के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिभागियों द्वारा कुल 77 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। पर्यावरण शिक्षा के बारे में प्रतिभागियों से विचार और सुझाव एकत्रित किए गए। राष्ट्रीय संगोष्ठी के शोधपत्रों को समीक्षा के बाद संस्थान की पत्रिका '*एजुकेशनल ट्रेंड्स*' में कार्यवाही के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

समतामूलक एवं समावेशी शिक्षा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में समतामूलक और समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में अपने शोध और विकास को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, शोधकर्ताओं, प्रशासकों और नीति निर्माताओं की राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के महत्वपूर्ण विषय थे— समतामूलक और समावेशी शिक्षा— सभी के लिए सीखना, ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा— प्रौद्योगिकी का समान उपयोग सुनिश्चित करना, सामाजिक-शैक्षणिक समानता, समर्थन और सौहार्द की दिशा में तकनीकी उन्नति, कानून और

नीतिगत रूपरेखा— कार्यान्वयन पर चिंतन, स्कूली शिक्षा में सामाजिक-सांस्कृतिक और भाषा संबंधी बहुलता की गतिशीलता— समावेश को समृद्ध करना, समावेशी शिक्षा में कक्षा प्रक्रिया— शिक्षणशास्त्र और आकलन अभ्यास, सामुदायिक भागीदारी और संसाधनों का एकत्रीकरण— एक समतामूलक और समावेशी समाज के लक्ष्यों की प्राप्ति, शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में प्रतिमान बदलाव, स्कूली शिक्षा और समावेशी विकास में जेंडर आधारित विविधता पर अंतर्दृष्टि, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों और शिक्षणशास्त्र के माध्यम से समावेशन को संबोधित करना, समानता और गुणवत्ता— पाठ्यचर्या संबंधी मुद्दे, चुनौतियाँ और अभ्यास, कौशल शिक्षा के माध्यम से शिक्षार्थियों को सशक्त बनाना और समावेशी शिक्षा में समग्र विकास।

इस संगोष्ठी के लिए 338 शोध-सार प्राप्त हुए। इनमें से विषय/उप-विषयों से संबंधित 116 शोधपत्र/लेख प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किए गए। 9–11 जनवरी 2024 तक आयोजित संगोष्ठी में शिक्षकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और गैर-सरकारी संगठनों के संकाय सदस्यों और आर.आई.ई., अजमेर के एम.एड. विद्यार्थियों सहित लगभग 100 पेशेवरों ने भाग लिया। इसमें शोध-पत्र प्रस्तुतीकरण के अलावा, इस क्षेत्र के प्रतिष्ठित संकाय सदस्यों द्वारा 3 पूर्ण व्याख्यान और 10 मुख्य भाषण भी दिए गए। इस क्षेत्र की प्रतिष्ठित हस्तियाँ जैसे— एस.आर. मित्तल, *प्रोफेसर* (सेवानिवृत्त), जामिया मिलिया इस्लामिया; अनुपम आहूजा, *प्रोफेसर* (सेवानिवृत्त), डी.ई.जी.एस.एन., रा.शै.अ.प्र.प.; एस.सी. चौहान, *प्रोफेसर* (सेवानिवृत्त), डी.ई.जी.एस.एन., रा.शै.अ.प्र.प.; ब्रह्माकुमारी शांता दीदी, ब्रह्माकुमारीज अजमेर और एस.वी. शर्मा, *प्रधानाचार्य*, आर.आई.ई., अजमेर ने राष्ट्रीय संगोष्ठी के विभिन्न महत्वपूर्ण अवसरों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (दूरस्थ/ऑनलाइन और आमने-सामने)

मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (डी.सी.जी.सी.) जनवरी 2023 में शुरू हुआ। प्रशिक्षुओं ने जनवरी से जून माह तक अपने सात असाइनमेंट पूरे कर लिए हैं। मार्च महीने में स्कूल प्रैक्टिकम के विभिन्न क्षेत्रों पर तीन दिवसीय ओरिएंटेशन प्रोग्राम आयोजित किया गया। जुलाई से सितंबर 2023 तक तीन महीने का संपर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। संकाय सदस्यों ने कक्षा में प्रैक्टिकम गतिविधियों का प्रदर्शन किया। इसके बाद प्रशिक्षुओं को 45 दिनों के लिए सहयोगी स्कूलों में रखा गया, जहाँ उन्होंने आर.आई.ई. संकाय सदस्यों की देख-रेख में अपनी प्रैक्टिकम गतिविधियाँ कीं। संकाय सदस्यों की देख-रेख में डी.सी.जी.सी. 2023 के विद्यार्थियों ने एन.ई.पी. 2020 की तीसरी वर्षगाँठ के उत्सव के अवसर पर 29 जुलाई 2023 को प्रदर्शनी प्रदर्शित की। डी.सी.जी.सी. की सैद्धांतिक परीक्षाएँ और मौखिक परीक्षा सितंबर 2023 के अंतिम सप्ताह में आयोजित की गई थीं। डी.सी.जी.सी. प्रशिक्षुओं ने अपने संबंधित गृह नगर/कार्यस्थल पर अपना इंटर्नशिप प्रैक्टिकम कार्य पूरा कर लिया है और उनकी ओर से परियोजना कार्य संस्थान को भेज दिया गया है। उपरोक्त गतिविधियों ने प्रशिक्षुओं के करियर मार्गदर्शन और परामर्श पर कौशल को मजबूत किया है।

प्रख्यात व्यक्तित्वों पर अभिव्यक्ति शृंखला

इस सत्र में प्रतिष्ठित व्यक्तियों पर अभिव्यक्ति शृंखला के अंतर्गत विभिन्न अवसरों पर व्याख्यान आयोजित किए गए, जैसे— शिक्षक दिवस, महात्मा गांधी जयंती— स्वच्छता दिवस, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जयंती— अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस, सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती— राष्ट्रीय एकता दिवस, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस, संविधान दिवस, श्रीनिवास रामानुजन अयंगर जयंती— राष्ट्रीय गणित दिवस, वीर बाल दिवस और स्वामी विवेकानंद जयंती— राष्ट्रीय युवा दिवस। इस दौरान स्कूली विद्यार्थियों के लिए निबंध लेखन, भाषण, प्रश्नोत्तरी, पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता, नारा लेखन प्रतियोगिता, गणितीय पहेलियाँ जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गईं।

प्रख्यात शिक्षाविदों के विस्तार व्याख्यान

प्रख्यात शिक्षाविदों के विस्तार व्याख्यान की शृंखला के अंतर्गत, प्रख्यात शिक्षाविदों द्वारा एन.ई.पी. 2020 के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए विस्तार व्याख्यान आयोजित किए गए। पवन सुधीर, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त) और पूर्व *विभागाध्यक्ष*, कला और सौंदर्यशास्त्र विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.; नागेंद्र सिंह, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त) और पूर्व *डीन* (शोध), आर.आई.ई. अजमेर एवं राम गोपाल, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त) इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज ने संस्थान के संकाय, विद्यार्थियों और कर्मचारियों के लिए व्याख्यान दिए।

सहकारी विद्यालयों के प्रमुखों और समन्वय शिक्षकों के लिए शिक्षक के रूप में कार्य करना सीखने के लिए कार्यशाला (इंटर्नशिप)

सहकारी विद्यालयों के प्रमुखों और समन्वय शिक्षकों की इंटर्नशिप के लिए 12 जुलाई 2024 को मिश्रित मोड में कार्यशाला आयोजित की गई। सहकारी जवाहर नवोदय विद्यालयों के प्रमुखों और समन्वय शिक्षकों ने सहयोगी विद्यालयों में शिक्षक कार्यक्रम (इंटर्नशिप) के रूप में कार्य करने के लिए सीखने के सुचारु संचालन हेतु कार्यशाला में भाग लिया।

आर.आई.ई., अजमेर के बी.एड., बी.एससी.बी.एड. और बी.ए.एड. कार्यक्रमों के लिए सामुदायिक कार्यक्रम के साथ कार्य करना

पाठ्यक्रम के एक अभिन्न अंग के रूप में यह कार्यक्रम 4–15 दिसंबर, 2023 के दौरान आयोजित किया गया। संस्थान के विद्यार्थियों को पुष्कर के निकटवर्ती गाँवों— अजमेर जिले के कडेल, दुगारीकला और रेवेट में समुदाय के लिए की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया गया। इस कार्यक्रम के दौरान भावी शिक्षकों को विभिन्न गतिविधियों जैसे प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण, समावेशी स्कूल प्रदर्शन, मानसिक स्वास्थ्य के लिए सत्र, श्रम दान, वृक्षारोपण, परिसर के साथ-साथ गाँव में प्लास्टिक मुक्त अभियान, थीम आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम, केंद्र और राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई। इस भ्रमण से गाँव की लोकतांत्रिक व्यवस्था, गाँवों के सरकारी संगठन आदि को समझने में मदद मिली। विद्यार्थियों ने समुदाय के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक पहलुओं पर आँकड़े एकत्र किए और रिपोर्ट तैयार की।

आर.आई.ई., अजमेर में गणित प्रयोगशाला का कार्यान्वयन और रख-रखाव

विद्यार्थियों के लिए मॉडलों, परियोजनाओं और गतिविधियों के माध्यम से गणित की अवधारणाओं को समझने में रुचि पैदा करने और विद्यार्थियों के बीच समस्या समाधान, तर्क, गणितीय मॉडलिंग और रचनात्मकता कौशल विकसित करने के लिए, गणित की विभिन्न अवधारणाओं पर कार्यशील और स्थैतिक मॉडल विकसित किए गए। गणित प्रयोगशाला का उपयोग बी.एससी.बी.एड., बी.ए.बी.एड., आई.टी.ई.पी. विद्यार्थियों के लिए गणित पाठ्यक्रमों के शिक्षण के अभ्यास के लिए किया जा रहा है। गणितीय गतिविधियों की संख्या पर लेख विकसित किए गए हैं। प्रयोगशाला में गणित सीखने के लिए व्यावहारिक मॉडल भी प्रदर्शित किए गए हैं।

एन.ई.पी. 2020 के आलोक में ई.सी.सी.ई. और आई.टी.ई.पी. का कार्यान्वयन

एन.ई.पी. 2020 की अनुशंसाओं के आलोक में, प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल, अजमेर के पूर्व-प्राथमिक सेक्शन में लेवल 1, 2 और 3 में ई.सी.सी.ई. का कार्यान्वयन किया गया और रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी ने पूर्व-प्राथमिक सेक्शन के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन किया।

संस्थान में एन.ई.पी. 2020 की अनुशंसाओं के अनुसार आई.टी.ई.पी. लागू किया गया है और इस कार्यक्रम में प्रवेश सत्र 2022–24 से एन.टी.ए. के माध्यम से पूरा हो गया है। प्रो. सकलानी ने 16 और 17 अप्रैल 2023 को

संस्थान का दौरा किया। उन्होंने अपने दौरे के दौरान संस्थान में नवनिर्मित सरस्वती छात्रावास, भारत रत्न डॉ. बी.आर. अंबेडकर अतिथि गृह और भारत रत्न डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन अतिथि गृह, डी.एम.एस. पूर्व-प्राथमिक सेक्शन और सेमिनार हॉल, इनोवेशन हब और गणित एवं भाषा प्रयोगशालाओं का उद्घाटन किया। एन.सी.टी.ई. की सदस्य सचिव केसांग यांगजोम शेरपा, आई.आर.एस. ने आई.टी.ई.पी. के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न तौर-तरीकों पर चर्चा करने के लिए संस्थान का दौरा किया। संस्थान ने आई.क्यू.ए.सी. के तहत आई.टी.ई.पी. के संदर्भ में बी.ए.बी.एड. और बी.एससी.बी.एड. का पाठ्यक्रम तैयार किया है।

बुनियादी स्तर पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए अभिविन्यास-सह-प्रशिक्षण कार्यशाला

संस्थान में 30–31 मई 2023 के दौरान प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.), रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से बुनियादी स्तर पर मास्टर ट्रेनरों के लिए एक अभिविन्यास-सह-प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश (4), नई दिल्ली (5), पंजाब (4), चंडीगढ़ (4), जम्मू और कश्मीर (6), राजस्थान (5), हरियाणा (5), उत्तराखंड (4) और उत्तर प्रदेश (5) से कुल 43 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

स्कूल आकलनों और परीक्षा पद्धति तथा बोर्डों की समतुल्यता पर क्षेत्रीय कार्यशाला

संस्थान में 10 से 13 जुलाई 2023 तक परख, रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से स्कूल आकलनों और परीक्षा परिपटियों और बोर्डों की समतुल्यता पर एक क्षेत्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में हरियाणा (3), हिमाचल प्रदेश (3), जम्मू और कश्मीर (3), पंजाब (5), उत्तर प्रदेश (3), उत्तराखंड (3) और राजस्थान (3) राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों से कुल 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों, आर.आई.ई. अजमेर के संकाय और डी.एम.एस. शिक्षकों का शैक्षिक किटों पर उन्मुखीकरण

शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.), रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के के.आर.पी. और संकाय तथा डी.एम.एस. शिक्षकों के लिए शैक्षिक किटों पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में चंडीगढ़, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के के.आर.पी. ने भाग लिया।

विभिन्न राज्यों के वैकल्पिक (मदरसा) स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्रधानाचार्यों/प्रबंधकों की दक्षता बढ़ाने हेतु क्षमता निर्माण कार्यक्रम

डी.ई.जी.एस.एन. के सहयोग से संस्थान ने राजस्थान और उत्तर प्रदेश के वैकल्पिक (मदरसा) स्कूलों के प्रधानाचार्यों/प्रबंधकों के लिए 6–10 नवंबर 2023 तक क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य से कुल 32 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें से 16–16 प्रतिभागी थे। इस कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एन.सी.एफ.-एफ.एस., बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता, कला समेकित शिक्षा, खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र, आई.सी.टी. समेकन आदि जैसे विभिन्न अंत:क्रियात्मक सत्र आयोजित किए गए।

निष्ठा— समतामूलक और समावेशी शिक्षा

समतामूलक और समावेशी शिक्षा के लिए स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल *निष्ठा* के तहत, संस्थान में 5–9 फरवरी, 2024 तक पाँच दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्रों के प्रमुख संसाधन व्यक्ति/मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करना है जो अपने राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों/संगठनों/संगठनों के स्कूलों के शिक्षकों को आगे प्रशिक्षित करेंगे। इस कार्यक्रम के लाभार्थी

पी.एम. केंद्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, एकलव्य मॉडल स्कूल के सभी सामान्य शिक्षक थे। इस कार्यक्रम में सी.बी.एस.ई., के.वी.एस., के.जी.बी.वी., एन.वी.एस., ई.एम.आर.एस. और डी.आई.ई.टी./एस.सी.ई.आर.टी. संकायों के कुल 65 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

संस्थान के संकाय के लिए प्रेरण कार्यक्रम

एन.ई.पी. 2020 की तीसरी वर्षगाँठ के अवसर पर 27–28 जुलाई 2023 को संस्थान के संकाय सदस्यों और प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल के शिक्षकों के लिए आई.क्यू.ए.सी. के तहत एक प्रेरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रेरण कार्यक्रम में एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न पहलों— विद्या प्रवेश, विद्यांजलि, निपुण भारत— बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता, पंच कोष, जादुई पिटारा, परख, आई.के.एस., न्यू इंडिया साक्षरता कार्यक्रम पर विभिन्न सत्र आयोजित किए गए।

अहिंसा मैराथन का आयोजन

संस्थान ने 2 अप्रैल 2023 को अहिंसा, शांति और सद्भाव का संदेश फैलाने के उद्देश्य से अहिंसा मैराथन का आयोजन किया। संस्थान एवं डी.एम.एस. स्कूल के विद्यार्थियों और कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

देश के 77वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संस्थान के प्राचार्य एस.वी. शर्मा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर संस्थान एवं डी.एम.एस. के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए तथा परिसर में पौधारोपण अभियान चलाया।

रैगिंग विरोधी जागरूकता सप्ताह

संस्थान ने 11 से 15 सितंबर 2023 तक एंटी-रैगिंग जागरूकता सप्ताह मनाया, जिसमें रैगिंग के बारे में जागरूकता पैदा करने और कॉलेज परिसर में वैध आचरण के महत्व के लिए विभिन्न गतिविधियाँ जैसे— नारा लेखन, पोस्टर निर्माण, नुक्कड़ नाटक आदि आयोजित किए गए।

संस्कृत सप्ताह का उत्सव

संस्थान ने डी.एम. स्कूल के सहयोग से 31 अगस्त 2023 से 2 सितंबर 2023 तक संस्कृत भाषा के महत्व के बारे में जागरूकता लाने के लिए संस्कृत सप्ताह मनाया।

स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

संस्थान ने 1 से 15 सितंबर 2023 तक संस्थान में स्वच्छता जागरूकता अभियान का आयोजन किया। विद्यार्थियों ने निबंध लेखन, नारा लेखन, पोस्टर निर्माण, सफाई अभियान और वृक्षारोपण अभियान जैसी विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया, ताकि आस-पास और परिसर में स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा की जा सके।

गणतंत्र दिवस समारोह

संस्थान ने 26 जनवरी 2024 को भारत का 75वाँ गणतंत्र दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया। इस समारोह में छात्र-छात्राएँ, कर्मचारीगण, उनके परिवारजन तथा डी.एम.एस. समूह के लोग सम्मिलित हुए। इस अवसर पर संस्थान के प्राचार्य एस.वी. शर्मा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और उपस्थित लोगों को संबोधित किया। इस शुभ अवसर पर हरियाली और सुरक्षित पर्यावरण का संदेश देते हुए पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों का नामांकन (नीचे दी गई तालिका में जानकारी प्रस्तुत करें)—

सत्र 2023–2024 के लिए प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल में विद्यार्थी नामांकन		
क्र.सं.	**कक्षा**	**विद्यार्थी नामांकन**
1.	विद्यालय-पूर्व स्तर - 1	20
2.	विद्यालय-पूर्व स्तर - 2	20
3.	विद्यालय-पूर्व स्तर - 3	20
4.	1	35
5.	2	35
6.	3	34
7.	4	35
8.	5	35
9.	6	70
10.	7	67
11.	8	68
12.	9	71
13.	10	48
14.	11	101
15.	12	90
	कुल	**749**

आर.आई.ई., भोपाल के नेटवर्क का प्रबंधन और वेबसाइट का रख-रखाव

संस्थान की अंग्रेजी में एक स्टेटिक वेबसाइट है। लेकिन, वेबसाइट के उन्नयन की माँग बढ़ रही है क्योंकि मौजूदा वेबसाइट आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पा रही है। इसलिए, संस्थान की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली सभी विशेषताओं के साथ एक वेबसाइट विकसित की गई है। इसे 200 एम.बी.पी.एस. इंटरनेट कनेक्शन एन.आई.सी., भोपाल के माध्यम से एन.के.एन. के तहत बी.एस.एन.एल. द्वारा प्रदान किया गया है। संस्थान में विशाल नेटवर्किंग अवसंरचना है जिसमें 36 स्विच, 60 वाई-फाई यूनिट, 600 से अधिक कंप्यूटर आदि सम्मिलित हैं। कर्मचारी संकाय और विद्यार्थियों सहित 2,000 से अधिक इंटरनेट प्रयोक्ता हैं। यह एक निःशुल्क वाई-फाई एक्सेस परिसर है।

आर.आई.ई., भोपाल के सेवा-पूर्व अध्यापक प्रशिक्षुओं के लिए रंगमंच कार्यशाला और प्रदर्शन

एकीकृत बी.एड.एम.एड. प्रथम सेमेस्टर पाठ्यक्रम के लिए 1–7 जुलाई 2023 तक आर.आई.ई. भोपाल में आयोजित दस दिवसीय थिएटर शिक्षणशास्त्र कार्यशाला के दौरान विद्यार्थियों को अभिनय, पृष्ठभूमि संगीत, मंच प्रबंधन, निर्देशन, रोशनी, मेकअप, ड्रेसिंग, संवाद लेखन, नृत्य कोरियोग्राफी और अनेक अन्य चीजों जैसे विभिन्न प्रकार की नाट्य कला की बुनियादी बातों को सिखाने के लिए पेशेवर प्रशिक्षकों के एक समूह को आमंत्रित किया

गया। इसके अलावा, संबंधित कक्षाओं के विद्यार्थियों को इन 10 दिनों की अवधि के दौरान एक नाटक/लघु नाटक तैयार करना था और उसका प्रदर्शन करना था। इस कार्यशाला का शैक्षणिक महत्व भी है और यह शैक्षणिक उद्देश्य के लिए भी महत्वपूर्ण है।

स्टूडियो का रख-रखाव और ई-सामग्री का विकास

एन.ई.पी. 2020 ने डिजिटल लर्निंग और डिजिटल संसाधनों के महत्व को समझते हुए शिक्षा के सभी स्तरों पर डिजिटल लर्निंग और डिजिटल संसाधनों को शुरू करने की प्रबल अनुशंसा की है। मुख्य चुनौती अध्यापकों और विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुसार इन ई-संसाधनों की उपलब्धता में है। इसे ध्यान में रखते हुए, शिक्षा प्रणाली के प्रत्येक हितधारक को ई-संसाधनों तक मुक्त रूप से पहुँच प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय मुक्त शैक्षिक संसाधन भंडार (एन.आर.ओ.ई.आर.), दीक्षा पोर्टल, पी.एम. ई-विद्या कार्यक्रम और अनेक अन्य कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) में उपलब्ध स्टूडियो के अलावा आर.आई.ई. ने स्टूडियो सेट-अप स्थापित किया है। ये स्टूडियो राज्यों के लिए ई-संसाधन तैयार करने के लिए संसाधन बिंदु भी हो सकते हैं। कार्यक्रम के दो भाग हैं— ई-सामग्री/सामग्री का विकास और उसे अंतिम रूप देना तथा ई-सामग्री/सामग्री के विकास में अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण।

आर.आई.ई., भोपाल में ई.सी.सी.ई. केंद्र

कार्यक्रम में बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, भाषा संबंधी और भावनात्मक विकास सुनिश्चित करने के लिए आयु के उपयुक्त शिक्षण-अधिगम सामग्री का उपयोग करते हुए थीम आधारित दृष्टिकोण अपनाया गया। पाठ्यक्रम को नौ थीमों के आस-पास व्यवस्थित किया गया, जिसमें 'स्वयं', 'मेरा परिवार', 'परिवहन', 'वायु' और 'जल' सम्मिलित थे। ई.सी.सी.ई. केंद्र विभिन्न रुचि और गतिविधि क्षेत्रों की विशेषता वाले एक सक्षम वातावरण से सुसज्जित था जहाँ नौ थीमों को सहयोग प्रदान किया गया और छोटे समूह में सीखने के अनुभव प्रदान किए गए। कहानी सुनाने, कविताएँ गाने और सुनने के लिए ध्वनि खेल; दिखाओ-बताओ, भूमिका निर्वहन व बोलने के लिए लेखन-चर्चा करना; चित्र पुस्तकें पढ़ना, वस्तुओं को सूचीकृत करना और पठन हेतु वर्णमाला खेल; लिखने के लिए अक्षरों का अनुरेखण, अनुचित्रण और लेखन माध्यम से भाषा कौशल विकसित किए गए। अंत:क्रियात्मक गतिविधियाँ, संवेदी खेल और शैक्षिक ऐप आने से भाषा विकास को और बढ़ावा मिला। संख्यात्मकता के लिए, सॉर्टिंग, वर्गीकरण, तुलना, पैटर्न निर्माण, संख्या और वस्तु मिलान और वास्तविक जीवन की गिनती गतिविधियों जैसे खेलों और गतिविधियों के माध्यम से पूर्व-संख्या अवधारणाओं को पेश किया गया। विद्यार्थियों को अनुभवात्मक अधिगम में नियमित रूप से बाहर ले जाया जाता था एवं कला और शिल्प के माध्यम से रचनात्मक गतिविधियों में सम्मिलित किया जाता था। सामाजिक-भावनात्मक कौशलों के विकास को सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से साझा करने वाली गतिविधियाँ एवं नैतिक कहानियाँ सुनाई गईं और उनका अभिनय किया गया। भारत की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए ईद, रक्षाबंधन, दशहरा, दिवाली और क्रिसमस जैसे प्रमुख त्योहार मनाए गए। केंद्र ने विद्यार्थियों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए समृद्ध अनुभव प्रदान करने का प्रयास किया।

आर.आई.ई., भोपाल के विद्यार्थियों को अनुसंधान और बहुसांस्कृतिक पहलुओं पर सामुदायिक अनुभव प्रदान करना

वर्किंग विद कम्युनिटी (डब्ल्यू.डब्ल्यू.सी.) एक अनोखा कार्यक्रम है, जिसे आर.आई.ई., भोपाल के विद्यार्थियों को गाँव के वास्तविक जीवन का अनुभव प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है। बी.एससी.बी.एड. और

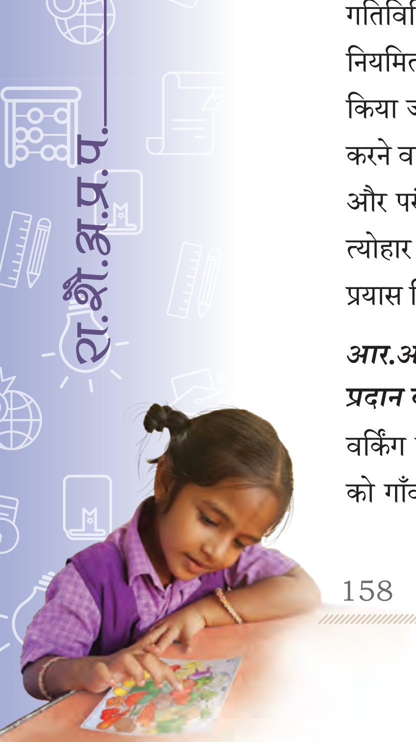

बी.ए.बी.एड. तृतीय सेमेस्टर और बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर के कुल 216 विद्यार्थियों ने इस पाँच दिवसीय समुदाय के साथ कार्य करने वाले कार्यक्रम में भाग लिया, जो 2– 6 जनवरी, 2023 और 26 जून से 1 जुलाई 2023 तक आस-पास के गाँवों— छाप मुगलिया, नाथू बरखेड़ा, मिंडोरी, मिंडोरा, ईंटखेड़ी, जाटखेड़ी, रातीबड़ और नीलबड़ में आयोजित किया गया। सर्वेक्षण, प्रकरण अध्ययन, साक्षात्कार आदि के माध्यम से विभिन्न गाँवों से आँकड़े एकत्रित किए गए। सरपंच, सचिव, आशा कार्यकर्ता, स्थानीय स्कूल अध्यापक, आँगनवाड़ी आदि से बातचीत की गई तथा उक्त गाँव के पदाधिकारियों से विभिन्न जानकारी एकत्रित की गई। गाँव में शिक्षा, महिला सशक्तीकरण, स्वच्छता, स्वास्थ्य आदि विषयों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, नुक्कड़ नाटक आदि आयोजित किए गए। गाँव समुदाय के सहयोग से स्वदेशी खेलों की प्रभात फेरी भी निकाली गई।

आर.आई.ई. भोपाल जर्नल ऑफ एजुकेशन— अर्धवार्षिक जर्नल (प्रिंट और ऑनलाइन)

आर.बी.जे.ई. एक जर्नल है जिसे आर.आई.ई., भोपाल द्वारा निकाला जाता है एवं इसके माध्यम से न केवल पश्चिमी क्षेत्र के शोध अध्ययनों और जरूरतों को पूरा किया जाता है बल्कि पूरे भारत में शिक्षा में शोध कार्यों को प्रस्तुत करने के लिए एक शैक्षणिक मंच भी प्रदान किया जाता है। यह विद्वानों को स्कूल एवं अध्यापक शिक्षा के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में शोध करने और वास्तविक कक्षा परिदृश्य में शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए इसे प्रसारित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

विज्ञान शिक्षा में समसामयिक प्रगति पर राष्ट्रीय सम्मेलन

'विज्ञान शिक्षा में समसामयिक प्रगति' पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन के विषयों में विज्ञान शिक्षा में स्वदेशी ज्ञान, 21वीं सदी के कौशलों हेतु विज्ञान में शिक्षण-अधिगम, विज्ञान शिक्षा में आई.सी.टी. का समेकन, विज्ञान शिक्षा में एस.टी.ई.ए.एम. का समेकन, अनुभवात्मक अधिगम— सिद्धांत से वास्तविकता तक, विज्ञान शिक्षा में आकलन एवं मूल्यांकन, विज्ञान शिक्षा में समावेशिता और विविधता, सतत विकास के लिए विज्ञान शिक्षा, विज्ञान शिक्षा में अनुसंधान और इसके शैक्षिक निहितार्थ सम्मिलित हैं। इस सम्मेलन में सम्मेलन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न विषयों पर 66 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए।

सम्मेलन के आयोजन से अवलोकन, विश्लेषण और साक्ष्य-आधारित सोच जैसी महत्वपूर्ण क्षमताओं के विकास को बढ़ावा दिया गया, जो एन.ई.पी. 2020 में उल्लिखित विज्ञान शिक्षा के लक्ष्यों के अनुरूप है। इससे सहयोग, संवेदनशीलता और विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा मिला, जिससे व्यक्तियों को सार्थक सामाजिक और व्यावसायिक भागीदारी के लिए तैयार करने के व्यापक उद्देश्य में योगदान मिला। इस सम्मेलन से प्राप्त अंतर्दृष्टि विज्ञान शिक्षा में भविष्य के प्रयासों को बताएगी, जिसमें नवाचारी अभ्यासों का एकीकरण और अध्यापन की विधियों का संवर्धन सम्मिलित है। हालिया प्रगति और नवीन अनुभवों का सफल साझाकरण विज्ञान शिक्षा के जारी विकास और उसके गतिशील स्वरूप को रेखांकित करता है। कुल मिलाकर, सम्मेलन ने विज्ञान शिक्षा में निरंतर प्रगति के लिए एक मजबूत नींव रखी है और इस आवश्यक क्षेत्र में जारी संवाद और विकास के लिए एक मंच प्रदान किया है।

महान भारतीय विचारकों के जीवन और कार्यों तथा अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं की स्मृति में अभिव्यक्ति शृंखला

महान भारतीय विचारकों के जीवन और कार्यों तथा अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं को याद करने के लिए अभिव्यक्ति शृंखला के अंतर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए— बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर का जीवन, दर्शन और योगदान (14/4/2023); पर्यावरण दिवस (5/6/2023); डॉ. एस. राधाकृष्णन का जीवन, दर्शन और योगदान

(05/09/2023); महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री का जीवन, दर्शन और योगदान (02/10/2023); सरदार वल्लभ भाई पटेल का जीवन, दर्शन और योगदान (31/10/2023); मौलाना अबुल कलाम आजाद का जीवन, दर्शन और योगदान (11/11/2023); राष्ट्रीय संविधान दिवस (26/11/2023); श्री सुब्रमणियम भारती का जीवन, दर्शन और योगदान (भारतीय भाषा दिवस) 11/12/2023); श्रीनिवास रामानुजन का जीवन, दर्शन और योगदान (22/12/2023); स्वामी विवेकानंद का जीवन, दर्शन और योगदान (12/01/2024); नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जीवन, दर्शन और योगदान (23/01/2024); मातृभाषा दिवस का उत्सव (21/02/2024); डॉ. सी.वी. रमन का जीवन, दर्शन और योगदान (28/02/2024); अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का उत्सव (08/03/2024) तथा संविधान और शिक्षा पर विस्तार व्याख्यान (02/02/2024)।

अध्यापन कार्यक्रम में इंटर्नशिप के लिए प्रधानाचार्य सम्मेलन का आयोजन

इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके आने वाले भविष्य के लिए समग्र अध्यापन अनुभव प्रदान करना है। इस कार्यक्रम से उन्हें वास्तविक जीवन की कक्षा स्थितियों की चुनौतियों और समस्याओं पर भी नज़र डालने का अवसर मिलता है। यहाँ उन्हें वास्तविक दुनिया से अध्यापन के क्षेत्र को जानने और अनुभव करने का अवसर मिलता है। इस कार्यक्रम के तहत राज्य बोर्ड के विद्यालयों, केंद्रीय विद्यालयों और जवाहर नवोदय विद्यालयों जैसे विभिन्न विद्यालयों के सभी प्रधानाचार्यों और प्रधानाध्यापकों को अध्यापन कार्यक्रम में इंटर्नशिप के बारे में बेहतर समझ के लिए विद्यार्थियों के साथ बातचीत करने हेतु आमंत्रित किया जाएगा। इस साल हमारे विद्यार्थियों को इंटर्नशिप के लिए रखने हेतु 23 विद्यालयों का चयन किया गया। इन सभी 23 विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को 22 सितंबर, 2023 को एक दिवसीय अभिमुखीकरण कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया गया जिसमें लगभग 15 विद्यालयों के प्रधानाचार्य आए। उन्हें पूरे इंटर्नशिप कार्यक्रम के साथ-साथ उनसे की जा रही अपेक्षाओं के बारे में भी बताया गया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

आर.आई.ई. परिसर में 15 अगस्त 2023 को 77वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया गया और सभी विद्यार्थियों और अन्य लोगों के लिए इसका सीधा प्रसारण किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत आर.आई.ई., भोपाल के प्राचार्य जयदीप मंडल के आगमन से हुई जिनको एन.सी.सी. अधिकारियों, सुरक्षा पर्यवेक्षक और गार्डों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए ले जाया गया। ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान के बाद एन.सी.सी. कैडेटों और एन.एस.एस. स्वयंसेवकों ने परेड कमांडर के साथ प्लाटूनों की कमान संभालते हुए मार्च पास्ट एवं परेड शुरू की और राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए राष्ट्र की स्वतंत्रता का जश्न मनाया।

गणतंत्र दिवस समारोह

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प. भोपाल ने 75वाँ गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.) और राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) के विद्यार्थियों ने परेड की। इस कार्यक्रम की शुरुआत जयदीप मंडल, *प्राचार्य*, आर.आई.ई., भोपाल, के आगमन के साथ हुई। उनके साथ *मुख्य सलाहकार* विद्यार्थी परिषद्, एन.सी.सी. और एन.एस.एस. अधिकारी, सुरक्षा पर्यवेक्षक और गार्ड भी मौजूद थे। राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया गया और राष्ट्रगान गाया गया। ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान के बाद एन.सी.सी. कैडेट्स और एन.एस.एस. स्वयंसेवकों ने मार्च पास्ट और परेड शुरू की, जिसमें परेड कमांडर ने आठ प्लाटून की कमान संभाली और अपने प्लाटून कमांडरों के साथ राष्ट्रीय ध्वज को श्रद्धांजलि दी और राष्ट्र की एकता और अखंडता का उत्सव मनाया।

परेड समाप्त होने के बाद, प्रधानाचार्य के संदेश और भारतीय संविधान की प्रस्तावना को प्रधानाचार्य द्वारा पढ़ने के साथ कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया, उसके बाद संविधान को पढ़ा गया। प्रधानाचार्य ने अपने संबोधन में संस्थान के अध्यापकों द्वारा की जा रही विभिन्न शोध परियोजनाओं के बारे में बात की। कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा संगीत, नृत्य और नाटक में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गई। कुल मिलाकर, यह देशभक्ति की भावना और राष्ट्र का हिस्सा होने पर गर्व की भावना से भरा दिन था।

विज्ञान दिवस समारोह

विज्ञान दिवस 28 फरवरी 2023 को मनाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों के लिए पोस्टर मेकिंग, वाद-विवाद, नारा लेखन और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता जैसी विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गई।

इंटर्नशिप कार्यक्रम

संस्थान में 22 अगस्त 2023 को पूर्व-इंटर्नशिप के साथ टीचिंग प्रोग्राम में इंटर्नशिप शुरू की गई, जिसमें बी.एड.एम.एड. तृतीय सेमेस्टर और बी.एड. तृतीय सेमेस्टर तथा बी.ए./बी.एससी.बी.एड. सप्तम सेमेस्टर के लिए 4 सितंबर 2023 से इंटर्नशिप शुरू की गई। विद्यार्थियों को 25 सितंबर 2024 से 19 जनवरी 2024 तक चार महीने के लिए पश्चिमी क्षेत्र के 24 विद्यालयों में रखा गया। कुल 253 विद्यार्थियों को जे.एन.वी. विद्यालयों, के.वी. और राज्य सरकार के विद्यालयों में रखा गया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 21 फरवरी 2024 को मनाया गया। सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग की प्रमुख संध्या साहू ने मातृभाषाओं और इस दिवस को मनाने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने सांकेतिक भाषा की संगतता पर भी चर्चा की। स्वाभिमान और अली यावर जंग नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग डिसेबिलिटीज (ए.वाय.जे.एन.आई.एस.एच.डी.) के सहयोग से 'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर सांकेतिक भाषा को पहचानना' विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया गया।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर अनेक वक्ताओं ने मातृभाषा के रूप में सांकेतिक भाषा के महत्व पर जानकारी दी। डीन (आई) मानसी गोस्वामी ने विषय की संकल्पना पेश की और इसकी सांस्कृतिक और भाषा संबंधी विविधता पर बल दिया। विशेषज्ञ तन्मयी साहू ने उत्सव को संगत बनाते हुए विरासत में इसके महत्व पर प्रकाश डाला। विशेषज्ञ लानू ने शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हुए इसके ऐतिहासिक विकास का पता लगाया। श्रीमती विश्वामित्र मिश्रा ने जागरूकता को बढ़ावा देते हुए भारतीय सांकेतिक भाषा की मूल बातें प्रदर्शित कीं। प्राचार्य पी.सी. अग्रवाल ने समावेशी शिक्षा के महत्व पर बल दिया एवं संस्थागत तत्परता और सभी के लिए शिक्षा जैसी राष्ट्रीय पहल की वकालत की। उन्होंने सशक्तीकरण में अध्यापकों की भूमिका एवं समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने में रा.शै.अ.प्र.प. के प्रयासों पर बल दिया और निरंतर सहयोगी संगोष्ठियों का समर्थन किया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

आर.आई.ई., भुवनेश्वर में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का उत्सव एक जीवंत और ज्ञानवर्धक कार्यक्रम था, जिसमें भारतीय वैज्ञानिकों के उल्लेखनीय योगदान को याद किया गया और विद्यार्थियों, अध्यापकों और समुदाय के बीच वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा दिया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सी.वी. रमन की विरासत का सम्मान करना था, जिन्होंने

28 फरवरी, 1928 को रमन प्रभाव की खोज की थी, जो भारतीय विज्ञान के इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि साबित हुआ। यह दिवस आर.आई.ई., भुवनेश्वर के प्रधानाचार्य पी.सी. अग्रवाल की अध्यक्षता में मनाया गया। आई.आई.टी., भुवनेश्वर के निदेशक श्रीपद कर्मालकर इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने सामाजिक प्रगति को आगे बढ़ाने एवं वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में वैज्ञानिक अनुसंधान, नवाचार और शिक्षा के महत्व पर बल दिया। सर सी.वी. रमन को विशेष श्रद्धांजलि दी गई, जिसमें भौतिकी में उनके अग्रणी कार्य और एक दूरदर्शी वैज्ञानिक के रूप में उनकी स्थायी विरासत पर प्रकाश डाला गया। प्रतिभागियों ने रमन की वैज्ञानिक उपलब्धियों और भारत की वैज्ञानिक विरासत पर उनके प्रभाव पर विचार किया।

गणतंत्र दिवस का उत्सव

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर में 26 जनवरी 2024 को गणतंत्र दिवस मनाया गया, जिसमें संस्थान एवं डी.एम. स्कूल के कर्मचारियों, अभिभावकों और विद्यार्थियों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में आर.आई.ई., भुवनेश्वर के प्रधानाचार्य पी.सी. अग्रवाल ने विद्यार्थियों से सम्मान ग्रहण किया। इसके बाद प्रधानाचार्य ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया एवं संस्थान और डी.एम. स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा मार्च पास्ट का अवलोकन किया। इस अवसर पर डी.एम. स्कूल के प्रधानाचार्य एवं हेडमास्टर ने सभा को संबोधित किया, जिसके बाद विद्यार्थियों द्वारा देशभक्ति थीम पर आधारित रंगारंग नृत्य और गीत प्रस्तुत किए गए। स्कूली बच्चों ने योग भी किया।

विस्तार व्याख्यान शृंखला

संस्थान में विस्तार कार्यक्रमों की शृंखला का उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण मुद्दों पर विद्यार्थियों और संकाय सदस्यों को जागरूक करना तथा विद्यार्थियों और कर्मचारियों को प्रख्यात शिक्षाविदों के साथ अकादमिक बातचीत के लिए एक मंच प्रदान करना है। इन कार्यक्रमों में शिक्षा के क्षेत्र में प्रख्यात व्यक्तियों के अनुभवों को साझा करके सेवा-पूर्व प्रशिक्षुओं और संकाय सदस्यों के ज्ञान और समझ को समृद्ध करने में मदद मिली। वर्ष के दौरान, निम्नलिखित विस्तार व्याख्यान आयोजित किए गए।

क्र.सं.	विषय	वक्ता का नाम	विषय
1.	सतर्कता जागरूकता और साइबर स्वच्छता	अरुण बोथरा (आई.पी.एस.)	2 नवंबर 2023
2.	शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली	अरुंधति नीलकंठ कवाडकर हिमांशु कुमार वर्मा	4 नवंबर 2023
3.	एन.ई.पी. 2020— राजनीति विज्ञान में संभावनाएँ	संजय श्रीवास्तव	29 दिसंबर 2023
4.	शैक्षणिक सांख्यिकी	सतीश प्रकाश शुक्ल	12 फरवरी 2024
5.	शिक्षण, अधिगम, शिक्षार्थी और प्रेरणा का शिक्षणशास्त्र	सुरेंद्र कुमार शर्मा	21 फरवरी 2024

अभिव्यक्ति शृंखला

देश की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और विद्यार्थियों के बीच साक्षरता गतिविधियों के प्रोत्साहन के लिए विशिष्ट विषयों पर अभिव्यक्ति शृंखलाएँ आयोजित की गईं। वर्ष के दौरान, निम्नलिखित अभिव्यक्ति शृंखलाएँ आयोजित की गईं।

क्र.सं.	विषय	विषय
1.	भारत रत्न बाबा साहब भीम राव अंबेडकर की 132वीं जयंती	14 अप्रैल 2023
2.	गुरु पूर्णिमा और वेदव्यास की जयंती	3 जुलाई 2023

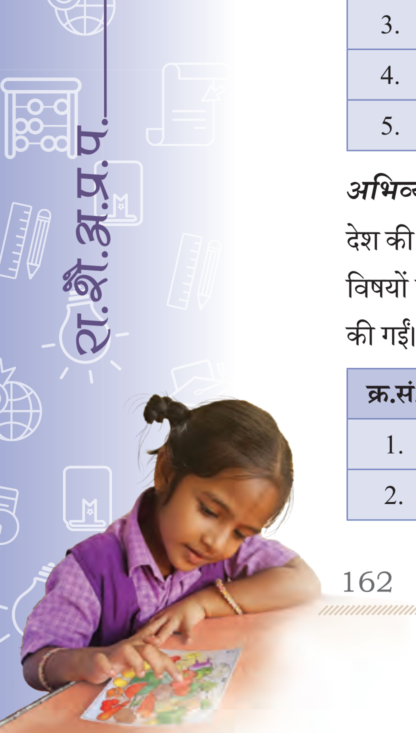

3.	गांधी और लाल बहादुर शास्त्री जयंती का आयोजन	2 अक्तूबर 2023
4.	राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती)	11 नवंबर 2023
5.	राष्ट्रीय संविधान दिवस	26 नवंबर 2023
6.	स्वामी विवेकानंद जयंती	12 जनवरी 2024
7.	सुभाष चंद्र बोस की 127वीं जयंती	23 जनवरी 2024

आर.आई.ई., भुवनेश्वर के सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में स्कूल इंटर्नशिप का आयोजन

इंटर्नशिप तीन चरणों— पूर्व-इंटर्नशिप, इंटर्नशिप और पोस्ट-इंटर्नशिप में आयोजित की गई। सहयोगी विद्यालय के प्रमुखों, अध्यापकों, विद्यार्थी अध्यापकों और संस्थान के संकाय सदस्यों के लिए पूर्व-इंटर्नशिप सम्मेलन 4 से 8 जुलाई 2023 को आयोजित किया गया। बिहार, झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के उन्नीस जवाहर नवोदय विद्यालयों (जे.एन.वी.) में 10 जुलाई 2023 से 17 अक्तूबर 2023 तक बी.एड. के 109 विद्यार्थियों को रखा गया। विद्यार्थी अध्यापक विभिन्न गतिविधियों जैसे सहयोगी अध्यापक की ऑनलाइन कक्षाओं का अवलोकन, ऑनलाइन सहकर्मी अवलोकन, इकाई योजना और पाठ योजना, पाठों का अध्ययन-अध्यापन, क्रियात्मक अनुसंधान का संचालन, ई-विषयवस्तु/सामग्री विकसित करना और उपलब्धि परीक्षण तथा चिंतनशील डायरी बनाए रखना आदि में सम्मिलित थे। विद्यार्थी अध्यापकों के नवाचारों, चुनौतियों और अनुभवों को साझा करने के लिए 19 से 20 अक्तूबर 2023 को संस्थान में पोस्ट-इंटर्नशिप सम्मेलन आयोजित किया गया था। बी.ए.बी.एड. का पूर्व-इंटर्नशिप सम्मेलन 6 –11 जुलाई 2023 तक आयोजित किया गया। विद्यार्थी अध्यापकों, सहयोगी विद्यालय प्रमुखों और अध्यापकों को स्कूल इंटर्नशिप के तौर-तरीकों से परिचित कराया गया। बी.ए.बी.एड. के 51 विद्यार्थियों को 4 जुलाई से 20 अक्तूबर 2023 तक बिहार, झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के चौबीस जवाहर नवोदय विद्यालयों (जे.एन.वी.) में रखा गया। विद्यार्थी अध्यापकों के नवाचारों, चुनौतियों और अनुभवों को साझा करने के लिए 31 अक्तूबर 2023 को संस्थान में पोस्ट-इंटर्नशिप सम्मेलन आयोजित किया गया। बी.एससी.बी.एड. की पूर्व-इंटर्नशिप कॉन्फ्रेंस 6 –11 जुलाई 2023 तक आयोजित की गई। विद्यार्थी अध्यापकों, सहयोगी स्कूल प्रमुखों और अध्यापकों के बीच स्कूल इंटर्नशिप के तौर-तरीकों पर उन्मुखीकरण किया गया। वर्तमान सत्र के दौरान, बी.एस.सी.बी.एड. के 91 विद्यार्थियों को 13–20 अक्तूबर 2023 तक बिहार, झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के सत्ताइस जवाहर नवोदय विद्यालयों (जे.एन.वी.) में रखा गया और विद्यार्थी अध्यापकों के नवाचारों, चुनौतियों और अनुभवों को साझा करने के लिए 30 अक्तूबर 2023 को संस्थान में पोस्ट इंटर्नशिप कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई।

स्कूल का उद्‌भासन और बहुसांस्कृतिक नियोजन कार्यक्रम का आयोजन

दो वर्षीय बी.एड. (द्वितीय सेमेस्टर) के विद्यार्थी अध्यापकों हेतु बहुसांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थी अध्यापकों को विद्यालयों के कार्य, अध्यापकों और प्रधानाध्यापकों की भूमिका, स्कूल की गतिविधियों, सहकर्मी अध्यापन और क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया से परिचित कराना है। कार्यक्रम दो चरणों— स्कूल एक्सपोजर और बहुसांस्कृतिक कार्यक्रम में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का पहला चरण 9 से 16 अक्तूबर 2023 तक भुवनेश्वर स्थित विभिन्न विद्यालयों में आयोजित किया गया तथा दूसरा चरण 28 जनवरी से 8 फरवरी 2024 तक तालचेर, अंगुल स्थित विभिन्न विद्यालयों में आयोजित किया गया। इस के लिए राज्य सरकार के स्कूल, डी.ए.वी. स्कूल, श्री अरबिंदो इंटीग्रल एजुकेशन सेंटर, सरस्वती शिशु विद्या मंदिर जैसे विभिन्न प्रकार के विद्यालयों का चयन किया गया। विद्यार्थियों को चरणबद्ध तरीके से विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में रखा गया ताकि सभी विद्यार्थियों को विविध अनुभवात्मक शिक्षा मिल सके। आर.आई.ई., भुवनेश्वर में 6 मार्च 2023 को आयोजित पोस्ट कॉन्फ्रेंस में विद्यार्थी

अध्यापकों ने बहुसांस्कृतिक कार्यक्रम से अपने संतोषजनक अधिगम के अनुभव को व्यक्त किया। बी.ए.बी.एड. (छठवाँ सेमेस्टर) के विद्यार्थियों के बहुसांस्कृतिक नियोजन से संबंधित सभी गतिविधियाँ 3 से 13 फरवरी 2024 तक जाजपुर जिले के क्षेत्र भ्रमण के दौरान पूरी की गई। बी.एस.सी.बी.एड. (छठवाँ सेमेस्टर) के विद्यार्थियों के बहुसांस्कृतिक नियोजन से संबंधित सभी गतिविधियाँ 31 जनवरी से 10 फरवरी 2024 तक ढेंकनाल जिले के क्षेत्रीय दौरे के दौरान पूरी की गई।

सेवा-पूर्व अध्यापकों का समुदाय के साथ कार्य करना

यह द्वितीय वर्ष के बी.एड. पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी-अध्यापकों को समुदाय, इसकी सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक विशेषताएँ और ये विशेषताएँ बच्चों की शिक्षा को कैसे प्रभावित करती हैं, से परिचित कराना है। 2023–24 शैक्षणिक सत्र में यह कार्यक्रम 1 फरवरी 2024 से 8 फरवरी 2024 तक नवकृष्ण चौधरी कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, अंगुल, ओडिशा और उसके आस-पास आयोजित किया गया। इसके अलावा, संस्थान में पूर्व-कॉन्फ्रेंस (29–30 जनवरी 2024) और पोस्ट-कॉन्फ्रेंस (9 फरवरी 2024) आयोजित की गई। कार्यक्रम की योजना बनाने से लेकर प्रदर्शन के मूल्यांकन तक व्यवस्थित और समय पर क्रियान्वयन किया गया। इस कार्यक्रम के लिए अपनाए गए तरीके थे— चर्चा, रैली, सामुदायिक सेटिंग में पोस्टर और बैनर प्रदर्शन, सर्वेक्षण, साक्षात्कार, जागरूकता कार्यक्रम आदि। विद्यार्थी अध्यापकों को जेंडर समानता/पर्यावरण प्रदूषण/एच.आई.वी.-एड्स/जनसंख्या शिक्षा, सामुदायिक स्वास्थ्य और स्वच्छता, विद्यालय में प्राथमिक शिक्षा और उपचारात्मक अध्यापन का सर्वेक्षण, स्कूल शिक्षा के लिए सामुदायिक संसाधनों का उपयोग और आर.टी.ई. अधिनियम 2009 पर जागरूकता जैसे क्षेत्रों में डेटा संग्रह के माध्यम से अवलोकन और लोगों के साथ बातचीत करके समुदायिक गतिविधियों से परिचित कराया गया। संकाय सदस्यों के मार्गदर्शन में विद्यार्थी अध्यापकों ने योग, शारीरिक व्यायाम और खेलकूद, सफाई अभियान गतिविधि के रूप में समुदाय में श्रमदान, नुक्कड़ नाटक एवं सामाजिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य मुद्दों के संदेश के साथ पोस्टर/बैनर और तख्तियों का उपयोग करते हुए विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर रैली जैसी गतिविधियों का आयोजन किया। उन्होंने क्षेत्र नियोजन के दौरान सामाजिक मुद्दों और समस्याओं पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम में सामुदायिक जीवन के बारे में जानकारी प्रदान की गई है, जिससे समुदाय के सदस्यों के साथ घनिष्ठ संपर्क स्थापित हुआ है, जो स्कूल विकास योजना तैयार करने, सांस्कृतिक अभ्यासों को साझा करने, कार्यक्रम आयोजित करने एवं औपचारिक शिक्षा प्रणाली के बारे में समुदायों की धारणा और आकांक्षाओं को जानने के मामले में लाभकारी है। बी.ए.बी.एड. सेमेस्टर-8 के विद्यार्थियों के लिए सामुदायिक कार्यक्रम के साथ कार्य 20–26 फरवरी 2024 तक ओडिशा आदर्श विद्यालय, गेंडा, ब्लॉक-चिलिका, खोरधा जिले में आयोजित किया गया और बी.एससी.बी.एड. सेमेस्टर-8 के विद्यार्थियों के लिए सामुदायिक कार्यक्रम के साथ कार्य 23–29 फरवरी 2024 तक ओडिशा के खोरधा जिले में आयोजित किया गया।

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय में विद्यालय-पूर्व केंद्र

बचपन के शुरुआती छह वर्ष जीवन में सबसे महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि इस स्तर पर गत्यात्मक, संवेदी, संज्ञानात्मक, भाषा संबंधी, सामाजिक और व्यक्तित्व विकास की नींव रखी जाती है। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) को बच्चे को आजीवन सीखने एवं विकास दोनों के लिए एक ठोस आधार सुनिश्चित करने हेतु एक सक्षम और प्रेरक वातावरण प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण हस्तक्षेप माना जाता है। ई.सी.सी.ई. औपचारिक स्कूली शिक्षा में बच्चों के नामांकन, प्रतिधारण, भागीदारी और सीखने के स्तर में सुधार करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) और कार्य योजना (पी.ओ.ए., 1992) में सार्थक ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम

की आवश्यकता पर बल दिया गया था। राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय कार्य योजना (2005) और *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.), 2005* और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यूनेस्को की वैश्विक निगरानी रिपोर्ट (2007) में ई.सी.सी.ई. और बी.ओ.ओ. के महत्व की पुष्टि की गई है। एन.सी.एफ. 2005 में सुझाव दिया गया है कि छोटे बच्चों को ऐसी देखभाल, अवसर और अनुभव प्रदान किए जाने चाहिए जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो अर्थात शारीरिक, सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास के साथ ही वे विद्यालय जाने के लिए तैयार हो सकें। सभी बच्चों को समान गुणवत्ता वाली ई.सी.सी.ई. प्रदान करने के लिए एन.सी.एफ. 2005 गुणवत्ता के पाँच बुनियादी आयामों की पहचान करती है, ये है— (i) विकासात्मक रूप से उपयुक्त पाठ्यक्रम (ii) प्रशिक्षित और पर्याप्त रूप से पुरस्कृत अध्यापक (iii) उपयुक्त शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात (iv) बच्चों की जरूरतों के लिए सहायक अवसंरचना और (v) पर्यवेक्षण एवं निगरानी की प्रोत्साहित करने वाली शैली। इसमें उचित मानदंड और दिशानिर्देश विकसित करने और एक नियामक रूपरेखा स्थापित करने का भी सुझाव दिया गया है। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा 2015 के दौरान ई.सी.सी.ई. पर अनुकरणीय सामग्री विकसित की गई है। एन.ई.पी. 2020 ने बुनियादी वर्षों की गुणवत्ता में सुधार के लिए सुझाव दिया है। डी.एम. स्कूल स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों को आजमाने के लिए एक प्रयोगात्मक मॉडल स्कूल के रूप में कार्य करता है। सत्र 2023–2024 के लिए ई.सी.सी.ई. केंद्र अवसंरचना के विकास और सुदृढ़ीकरण, अध्यापकों के चयन, विद्यार्थियों के चयन और प्रवेश, अध्यापकों और कर्मचारियों के प्रशिक्षण और प्रतिपुष्टियों के मूल्यांकन से लेकर प्रक्रिया में अनेक लोगों की मदद से सुचारु रूप से चला।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु

स्वतंत्रता दिवस का उत्सव

संस्थान ने 15 अगस्त 2023 को संस्थान के प्रौद्योगिकी ब्लॉक के सामने खेल के मैदान में 77वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया। समारोह की शुरुआत सुबह 9:00 बजे प्रधानाचार्य वाई. श्रीकांत द्वारा अनेक गणमान्य व्यक्तियों के समक्ष ध्वजारोहण के साथ हुई, उसके बाद राष्ट्रगान हुआ और एन.सी.सी. विद्यार्थियों द्वारा परेड की गई। प्रधानाचार्य ने विद्यार्थियों और कर्मचारियों को एक प्रेरक भाषण दिया, जो इस देशभक्ति के अवसर को मनाने के लिए परिसर में एकत्र हुए थे। आर.आई.ई. एवं प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने कुछ देशभक्ति गीत गाए और एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

गणतंत्र दिवस समारोह

संस्थान ने 26 जनवरी 2024 को अपने प्रौद्योगिकी ब्लॉक के सामने खेल के मैदान में 75वाँ गणतंत्र दिवस मनाया। गणतंत्र दिवस समारोह की शुरुआत सुबह 9:00 बजे प्रधानाचार्य वाई. श्रीकांत और गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई, उसके बाद राष्ट्रगान हुआ और एन.सी.सी. के विद्यार्थियों ने परेड की। ध्वजारोहण के बाद, प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने अपना मार्च पास्ट शुरू किया और राष्ट्रीय ध्वज को अपना सम्मान

दिया। आर.आई.ई. के विद्यार्थियों ने कुछ देशभक्ति गीत गाए और पूर्व-प्राथमिक, प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने एक सुंदर नृत्य और नाटक प्रस्तुत किया।

विज्ञान दिवस का उत्सव

संस्थान में अभिव्यक्ति शृंखला के भाग के रूप में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस विभिन्न गतिविधियों जैसे कि अंतर विद्यालयी विज्ञान प्रश्नोत्तरी, अंतर महाविद्यालयी विज्ञान प्रश्नोत्तरी और विज्ञान प्रदर्शनी के साथ मनाया गया। 28 फरवरी 2024 को भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के उच्च ऊर्जा भौतिकी केंद्र के प्रोफेसर, बी. अनंत नारायण अतिथि वक्ता थे। उन्होंने 'विकसित भारत के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकी' विषय पर व्याख्यान दिया।

अंतर-विद्यालयी विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता 2024

अंतर-महाविद्यालयी विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता 2024

विज्ञान प्रदर्शनी 2024

ग्रैंड फिनाले समारोह

इंटर्नशिप कार्यक्रम

सेवा-पूर्व पाठ्यक्रम विवरण 2023 के लिए इंटर्नशिप कार्यक्रम 10–13 अगस्त 2023 से शुरू हुआ और इंटर्नशिप के लिए प्रारंभिक गतिविधियाँ तय कार्यक्रम के अनुसार की गईं। बी.एस.सी.,बी.एड., बी.ए.बी.एड., एम.एस.सी.बी.एड. के सातवें सेमेस्टर के विद्यार्थियों को मैसूरु शहर के आवंटित विद्यालयों में लंबी अवधि की इंटर्नशिप गतिविधियों के बारे में 10 अगस्त 2023 को सामान्य अभिविन्यास दिया गया। स्कूल के साथ नियोजन कार्यक्रम दूसरे और चौथे वर्ष के पाठ्यक्रमों में दो सप्ताह की छोटी अवधि की स्कूल अनुभव आधारित गतिविधियाँ की गईं। अभिविन्यास कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षुओं के लिए सामान्य दिशानिर्देशों पर प्रकाश डाला गया और उसकी प्रति सभी विद्यार्थियों के साथ साझा की गई। यहाँ तक कि यूनिट प्लान और पाठ योजना के साथ उनके प्रारूपों के लेखन को भी पुनः

उन्मुख किया गया। विद्यार्थियों को 11 अगस्त 2023 को, 'एक्शन रिसर्च' से अवगत कराया गया। विद्यार्थियों को शिक्षणशास्त्र संकाय की देखरेख में अपने संबंधित शिक्षणशास्त्र में अपने सूक्ष्म अध्यापन कौशल को पूरा करने के लिए कहा गया विद्यार्थियों को 12 अगस्त 2023 को 'किशोर शिक्षा' से अवगत कराया गया। विद्यार्थियों को शिक्षणशास्त्र संकाय की देख-रेख में अपने संबंधित शिक्षणशास्त्र में अपने सूक्ष्म अध्यापन कौशल को पूरा करने के लिए कहा गया। शिक्षणशास्त्र–1 में प्रेरित अध्यापन और शिक्षणशास्त्र–2 में 14 अगस्त 2023 को प्रेरित अध्यापन आयोजित किया गया। संस्थान के संकाय के लिए 16 अगस्त 2023 को एक दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें इंटर्नशिप के सामान्य पहलू, इंटर्नशिप का सार एवं इसकी संगतता और आर.आई.ई., मैसूरु द्वारा अपनाए गए शैक्षिक वर्गीकरण, इकाई योजना एवं पाठ योजना प्रारूपों पर एक अभिविन्यास प्रस्तुत किया गया। संबंधित शैक्षणिक विषयों में वीडियो पाठों को देखा गया। इकाई परीक्षण निर्माण, इसके प्रशासन, स्कोरिंग और विश्लेषण प्रक्रियाओं पर चर्चा की गई। इसके बाद अवलोकन रिकॉर्ड, विद्यार्थी-मूल्यांकन प्रोफाइल, प्रतिपुष्टि प्रणाली और क्यू.एम.टी. (गुणवत्ता निगरानी टूल) प्रारूपों को भरने पर चर्चा की गई।

इसके बाद 17 से 19 अगस्त 2023 तक सहकारी स्कूल अध्यापकों और प्रधानाध्यापकों के लिए तीन दिवसीय पूर्व-इंटर्नशिप सम्मेलन का आयोजन किया गया। डी.डी.पी.आई. और मैसूरु के बी.ई.ओ. के सहयोग से सेमेस्टर 7 के 226 विद्यार्थियों और सेमेस्टर 3 के बी.एड विद्यार्थियों के इंटर्नशिप कार्यक्रम के लिए मैसूरु शहर के 31 विद्यालयों का चयन किया गया। इस सम्मेलन में 30 अध्यापकों ने भाग लिया। दिनवार सत्र आयोजित किए गए। पाठ योजना लिखने का 5ई मॉडल, शैक्षणिक विषयों में पाठ-पूर्व चर्चाओं का महत्व प्रदान किया गया। इसके बाद प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय के संबंधित कक्षा के विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों में प्रदर्शन पाठ दिए गए। इसके बाद पाठ-पश्चात चर्चाएँ हुईं। पाठों के प्रदर्शन के दौरान सहयोगी स्कूल अध्यापकों द्वारा विद्यार्थी मूल्यांकन प्रोफाइल भरने की भी सुविधा प्रदान की गई।

छह सप्ताह की अवधि की वास्तविक इंटर्नशिप 21 अगस्त 2023 से 30 सितंबर 2023 तक शुरू हुई। बाद में सातवें सेमेस्टर के विद्यार्थियों के लिए पोस्ट-इंटर्नशिप सम्मेलन आयोजित किया गया और विद्यार्थियों के स्कूली अनुभव साझा किए गए और भविष्य के सुधार के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान दिया गया। मैसूरु शहर में चयनित आठ प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेजों में सितंबर 2023 के दौरान एम.एस.सी.एड (भौतिकी/ रसायन विज्ञान/गणित) ग्यारहवें सेमेस्टर के लिए 3 सप्ताह की इंटर्नशिप गतिविधियाँ आयोजित की गईं। प्री-यूनिवर्सिटी व्याख्याताओं के लिए एक दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम 26 अगस्त 2023 को आयोजित किया गया। दिन के दौरान, व्याख्याताओं को प्री-यूनिवर्सिटी स्तर पर इंटर्नशिप के सार, यूनिट प्लान, पाठ योजना और इंटर्नशिप के दौरान अपनाई जाने वाली उनकी मूल्यांकन प्रक्रियाओं के बारे में बताया गया। इनके लिए इंटर्नशिप गतिविधियाँ 28 अगस्त 2023 से शुरू हुईं और 16 सितंबर 2023 तक चलीं। इसके बाद सितंबर माह के दौरान ही पोस्ट-इंटर्नशिप सम्मेलन हुआ।

समुदाय के साथ काम करना

मैसूरु जिले के हुनसूर शहर में बी.एड. तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों के लिए 3 से 12 अक्तूबर 2023 तक सामुदायिक गतिविधि का आयोजन किया गया। यह गतिविधि बी.एड. के 53 विद्यार्थियों द्वारा की गई, जिसमें ब्लॉक शैक्षिक पदाधिकारियों, सरकारी स्कूल के प्रधानाध्यापकों, निजी स्कूल प्रबंधन और स्थानीय समुदाय के नेताओं ने भाग लिया और सहयोग किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन 3 अक्तूबर 2023 को हुनसूर के नागपुर हाड़ी स्थित सरकारी हाईस्कूल में किया गया। कार्यक्रम में बी.ई.ओ. हुनसूर, स्थानीय स्कूल के प्रधानाचार्य, टैलेंट पब्लिक स्कूल के संवाददाता, पंचायत समुदाय के नेता सम्मिलित हुए। विद्यार्थियों ने नौ टीमों में काम किया और संबंधित स्कूल के विद्यार्थियों के साथ मिलकर विकास कार्य किए।

स्कूली बच्चों और समुदाय के सदस्यों की मदद से विद्यार्थियों ने थ्रो बॉल कोर्ट, वॉलीबॉल कोर्ट, खो-खो कोर्ट, कबड्डी कोर्ट तैयार करने का काम किया। एस.डी.एम.सी. के कार्य, मिड-डे मील कार्यान्वयन, स्कूल नहीं जाने वाले बच्चों और ड्रॉप आउट बच्चों, विद्यार्थियों के लिए स्कूल काउंसलिंग पर सामुदायिक जागरूकता सर्वेक्षण किया गया। 12 अक्तूबर 2023 को ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों, आर.आई.ई. मैसूरु के संकाय सदस्यों की उपस्थिति में किए गए कार्यों की रिपोर्ट की संक्षिप्त प्रस्तुति के साथ समुदाय के साथ काम करना समाप्त हो गया।

आर.आई.ई., मैसूरु का 61वाँ स्थापना दिवस

आर.आई.ई., मैसूरु के 61वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में, 1 अगस्त 2023 को, प्रतिष्ठित वैज्ञानिक और डी.आर.डी.ओ. के एयरोनॉटिकल सिस्टम्स के पूर्व महानिदेशक टेसी थॉमस द्वारा सरदार पणिक्कर स्मारक व्याख्यान दिया गया। इस अवसर पर भारतीय प्रवक्ता एवं प्रसिद्ध फिल्म और टेलीविजन कलाकार, मालविका अविनाश, मुख्य अतिथि थीं और उन्होंने एक संबोधन एवं प्रस्तुतीकरण दिया।

रा.शै.अ.प्र.प. का 63वां स्थापना दिवस

रा.शै.अ.प्र.प. के 63वें स्थापना दिवस, 1 सितंबर 2023 के अवसर पर स्वामी विवेकानंद योग अनुसंधान संस्थान के कुलाधिपति एच.आर. नागेंद्र ने योग शिक्षा, स्वास्थ्य और मानसिक कल्याण पर व्याख्यान दिया।

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर आंध्र प्रदेश के केंद्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय के कुलपति टी.वी. कट्टीमनी ने 17 नवंबर 2023 को एक विस्तार व्याख्यान दिया।

राष्ट्रीय युवा दिवस

राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर स्वामी विवेकानंद युवा आंदोलन, मैसूरु के अध्यक्ष एम.आर. सीताराम ने 18 जनवरी 2024 को 'विकसित भारत @ 2047— युवाओं के लिए, युवाओं के माध्यम से' विषय पर व्याख्यान दिया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के उच्च ऊर्जा केंद्र के प्रोफ़ेसर बी. अनंतनारायण ने 28 फरवरी 2024 को संस्थान के ए.वी. हॉल में "विकसित भारत के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकियाँ" विषय पर व्याख्यान दिया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

रंगमंच कलाकार और राज्योत्सव पुरस्कार विजेता रामेश्वरी वर्मा ने मुख्य अतिथि के रूप में 12 मार्च 2024 को संस्थान में महिला सशक्तीकरण पर व्याख्यान दिया।

पुरातत्व-मानव विज्ञान प्रदर्शनी

यह प्रदर्शनी 12–13 मार्च 2024 को संस्थान के असेंबली हॉल में आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य सामाजिक विज्ञान के क्षेत्रों एवं इसके व्यावहारिक पहलुओं से अवगत कराना, विद्यार्थियों के बीच जिज्ञासा और रुचि को बढ़ावा देने में बहु-विषयक प्रदर्शनियों की शैक्षिक संगतता को प्रदर्शित करना एवं अवधारणाओं की विभिन्न बारीकियों और सामाजिक विज्ञान के विभिन्न संबंधित क्षेत्रों, विशेष रूप से ऐतिहासिक अध्ययनों से इसके संबंधों पर प्रकाश डालना था। महामहिम यदुवीर कृष्णदत्त चामराजा वाडियार ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), उमियम

एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन के संदर्भ में अध्यापक शिक्षा पर राष्ट्रीय सम्मेलन

एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन के संदर्भ में 9–10 नवंबर 2023 को अध्यापक शिक्षा पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य स्वतंत्रता से पहले और बाद में भारत में अध्यापक शिक्षा के विकास, अध्यापक शिक्षा के विभिन्न मॉडलों, भारत में अध्यापक शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य, विदेशों में अध्यापक शिक्षा प्रणाली, भारत में अध्यापक शिक्षा की वर्तमान चुनौतियों, भारत में अध्यापक शिक्षा का भविष्य, अध्यापक शिक्षा में नवाचार एवं सर्वोत्तम अभ्यासों तथा समितियों, आयोगों, पाठ्यक्रम रूपरेखा और अध्यापक शिक्षा पर राष्ट्रीय नीतियों की अनुशंसाओं पर विचार-विमर्श करना है। अपनाई गई विधियों में ब्रोशर का विकास और आंतरिक कार्यशाला विधि के माध्यम से विषयों का चयन सम्मिलित है। विशेषज्ञों, अध्यापक प्रशिक्षकों, अध्यापकों, गैर-सरकारी संगठनों, अन्य पदाधिकारियों और शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले कार्मिकों से शोध पत्र (शोध/संकल्पना) आमंत्रित किए गए। शोध-पत्रों का संग्रह, जाँच, चयन और दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान बारह सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल सत्तर शोध-पत्र प्रस्तुतकर्ताओं को अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया। सत्रों के प्रमुख विषय थे— अध्यापक शिक्षा में शैक्षणिक अभ्यास, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम, अध्यापक शिक्षा में उभरते मुद्दे और सरोकार, भारत में अध्यापक शिक्षा का विकास, अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता आश्वासन, अध्यापक शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार, अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में आकलन, अध्यापक शिक्षा के लिए समेकित और बहु-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण। पहले दिन आई.टी.ई.पी.— मुद्दे और चुनौतियाँ विषय पर पैनल चर्चा हुई। संचालक एस.सी. रॉय, *प्रोफ़ेसर*, डी.ई., एन.ई.आर.आई.ई., शिलॉन्ग थे। पैनल के सदस्यों में एच.के. सेनापति, पूर्व *निदेशक,* रा.शै.अ.प्र.प. और *प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विभाग, आर.आई.ई., भुवनेश्वर; एम.ए. सुधीर, *प्रोफ़ेसर* एमेरिटस, गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान (मानद विश्वविद्यालय), डिंडीगुल, गांधीग्राम; अनिल कुमार, *प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विभाग, आर.आई.ई., मैसूरु; आशुतोष बिस्वाल, *प्रोफ़ेसर* एवं प्रमुख, शिक्षा विभाग और *डीन*, शिक्षा एवं मनोविज्ञान संकाय, एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा सम्मिलित थे। दूसरे दिन चर्चा का विषय भारत

में अध्यापक शिक्षा का परिदृश्य था। संचालक एन. प्रधान, *अध्यक्ष*, शिक्षा विभाग, एन.ई.आर.आई.ई., शिलॉन्ग थे। पैनल के सदस्यों में एम.ए. खादर, *पूर्व निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., केरल और *पूर्व प्रधानाचार्य*, आर.आई.ई., भुवनेश्वर; आर.आर. शर्मा, *डीन*, शिक्षा संकाय, *निदेशक*, कॉलेज विकास परिषद्, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू, डी.जी. राव, *पूर्व प्रधानाचार्य*, आर.आई.ई. मैसूरु और *पूर्व निदेशक*, सी.आई.आई.एल., मैसूरु और बी. एन. पांडा, *सेवानिवृत्त प्रोफेसर*, आर.आई.ई., भुवनेश्वर सम्मिलित हैं। शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन हुआ।

गणित शिक्षा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

संस्थान में 20–22 दिसंबर 2023 तक तीन दिनों के लिए गणित शिक्षा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के प्रमुख उद्देश्य थे— गणित अध्यापन के सर्वोत्तम अभ्यासों को साझा करने के लिए मंच प्रदान करना, गणित शिक्षण में सरोकारों और चुनौतियों के बारे में एक-दूसरे से सीखना और गणित अध्यापन में आई.सी.टी. का उपयोग करने में अपने अनुभव साझा करने के लिए अध्यापकों को अवसर प्रदान करना। सेमिनार के लिए 8 विषय निर्धारित किए गए थे, लेकिन 18 तकनीकी सत्रों में केवल सात विषयों पर ही प्रस्तुतीकरण दिया गया। कुल 79 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए, जिनमें से 66 ऑफलाइन और 13 ऑनलाइन थे।

सभी सत्रों में संबंधित प्रतिवेदकों द्वारा अनुशंसाएँ की गईं। सेमिनार की कुछ महत्वपूर्ण अनुशंसाओं का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है— गणित खेल पहेली, क्रॉस-करिकुलर एकीकरण, कार्ड गेम जैसे नवाचारी तरीकों का उपयोग, व्यक्तिगत सीखने के अनुभव; संख्यात्मक कौशल विकसित करने के लिए कार्ड गेम का उपयोग; सेवा-पूर्व अध्यापकों के बीच गणितीय संचार को बढ़ाने के लिए सहकारी अधिगम को सम्मिलित करना; गणित अधिगम को अधिक आकर्षक और आनंददायक बनाने के लिए गेमिफिकेशन दृष्टिकोण का उपयोग; 21वीं सदी के कौशल प्राप्त करने में गणितीय मॉडल का उपयोग; दृष्टिबाधित लोगों के साथ काम करने वाले अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करना; गणित के आकलन पर समग्र समझ पर अधिक अध्ययन और प्रयास, मध्य स्तर के लिए व्यापक मॉड्यूल का विकास; ऋणात्मक पूर्णांक, दशमलव और अंशों आदि की गणना पर व्यापक शोध।

द्विवर्षीय बी.एड इंटर्नशिप कार्यक्रम

पाठ्यक्रम के अनुसार, शिलॉन्ग शहर और उसके आस-पास के 10 विद्यालयों में 12 सप्ताह की इंटर्नशिप की गई, जहाँ प्रत्येक स्कूल में अधिकतम 5 विद्यार्थी-प्रशिक्षु (46 विद्यार्थी) जुड़े थे। इससे पहले, संस्थान में प्री-इंटर्नशिप की गई थी, जिसमें विद्यार्थियों को चयनित विद्यालयों में किए जाने वाले अध्यापन अभ्यास और अन्य गतिविधियों के लिए तैयार किया गया था। इंटर्नशिप समन्वयक बसंसी खरलुखी ने 3 अप्रैल 2023 को सहयोगी विद्यालयों के सभी प्रमुखों के साथ अभिमुखीकरण-सह-बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में, विद्यालय के प्रतिनिधियों को उन विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गई, जिन्हें विद्यार्थी प्रशिक्षुओं को अपने विद्यालयों में करने की आवश्यकता है और विद्यार्थी प्रशिक्षुओं को विद्यालयों से किस तरह के सहयोग की आवश्यकता है, इसके बाद यदि कोई चिंता है तो उसे दूर करने के तरीके के बारे में साझा किया गया। इस अभिमुखीकरण में, विद्यार्थी प्रशिक्षुओं को उन विद्यालयों से मिलने और बातचीत करने का मौका मिलता है, जहाँ उन्हें नियुक्त किया गया है।

इस इंटर्नशिप का उद्देश्य प्रभावी अध्यापन के लिए विभिन्न शिक्षण कौशल विकसित करना, कक्षा संचालन के लिए दक्षता प्राप्त करना, विभिन्न प्रकार की अध्यापन सहायक सामग्री तैयार करने का अभ्यास प्राप्त करना एवं अध्यापकों के दैनिक कार्य की डायरी तैयार करना था। स्कूल इंटर्नशिप अप्रैल से जून 2023 तक शुरू हुई। इस अवधि के दौरान विद्यार्थी प्रशिक्षुओं ने 60 पाठ (प्रत्येक विधि विषय से 30), 15 सहकर्मी अवलोकन पाठ, 2 आलोचना

पाठ पूरे किए। समय तालिका, पोर्टफोलियो, स्कूल असेंबली, अध्यापक डायरी, अध्यापक बैठक के मिनट आदि की तैयारी जैसी अन्य गतिविधियाँ भी विद्यार्थियों द्वारा की गईं।

विश्व पर्यावरण दिवस समारोह

5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिसमें पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न मुद्दों पर प्रकाश डाला जाता है। इस दिन को वर्तमान वर्ष की थीम 'जी 20— प्लास्टिक प्रदूषण को मात दें' पर मनाया गया। यह दिन विश्व स्तर पर मनाया जाता है। अंतरराष्ट्रीय विश्व पर्यावरण दिवस के एक हिस्से के रूप में, पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), रा.शै.अ.प्र.प., उमियम ने मयंक राय, *डीन*, सी.पी.जी.एस.ए.एस., सी.ए.यू., उमियम के एक व्याख्यान का आयोजन किया, जिसके बाद रा.शै.अ.प्र.प. के पूर्व निदेशक हृषिकेश सेनापति ने एक भाषण दिया। इस कार्यक्रम का समन्वयन सीमा आर., डी.ई.एस.एम. ने किया। 'प्लास्टिक प्रदूषण को मात दें' थीम पर बी.एड. विद्यार्थियों के लिए पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, साथ ही विद्यार्थियों द्वारा इसी थीम पर एक नाटक (मीम) भी प्रस्तुत किया गया, जिसके बाद चिल्ड्रन पार्क, एन.ई.आर.आई.ई. में फलों के पेड़ लगाए गए। धन्यवाद ज्ञापन के बाद विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

एन.ई.आर.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प. ने एन.ई.आर.आई.ई. परिसर में 9वाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया। कुल 125 प्रतिभागी एकत्रित हुए जिनमें संकाय, बी.एड. विद्यार्थी, प्रशासनिक कर्मचारी और अन्य सम्मिलित थे। एफ.जी. दखर, *प्राचार्य* (प्रभारी) ने सभी का स्वागत किया। योग प्रशिक्षक और कार्यक्रम के लिए संसाधन व्यक्ति धनंजय चक्रवर्ती ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के महत्व पर भाषण दिया। उन्होंने योग के अर्थ और समग्र पहलुओं पर बल दिया और इसे 9वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की थीम, अर्थात 'वसुधैव कुटुम्बकम के लिए योग' से जोड़ा। यह बहुत ज्ञानवर्धक भाषण था। इसके बाद दूसरे सेमेस्टर के (बी.एड.) विद्यार्थियों ने संगीत की पृष्ठभूमि में योग अभ्यासों पर एक समूह प्रदर्शन का शानदार प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन में अनेक आसन सम्मिलित किए गए, जिसकी सभी ने बहुत सराहना की।

अंतिम कार्यक्रम, जो दिन का मुख्य कार्यक्रम था, धनंजय चक्रवर्ती के मार्गदर्शन में किया गया सामूहिक योग सत्र था। उन्हें योग का 25 साल का अनुभव है और वे वर्तमान में अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय (पी.जी.टी.), शिलॉन्ग, मेघालय में कक्षाएँ लेते हैं। हम सभी बहुत भाग्यशाली थे कि वे हमारे संसाधन व्यक्ति थे क्योंकि उन्होंने विभिन्न वार्म अप व्यायाम, उसके बाद आसन और अंत में प्राणायाम और विश्राम तकनीकों के माध्यम से हम सभी का प्रभावी तरीके से मार्गदर्शन किया।

मेघालय में लगातार हो रही मानसूनी बारिश के कारण कार्यक्रम को बंद कमरे में ही आयोजित करना पड़ा।

अंगदान दिवस समारोह

अंगदान के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने और पूरे देश में अंग प्रत्यारोपण से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर प्रकाश डालने के लिए अगस्त 2023 को 'अंगदान दिवस' के रूप में मनाया गया।

अंगदान दिवस के अवसर पर, पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), रा.शै.अ.प्र.प., उमियम ने किंटिवलांग सनमीत, *रेजीडेंट डॉक्टर* (नेफ्रोलॉजी) एवं *गुणवत्ता अधिकारी*, बेथनी अस्पताल, शिलॉन्ग का एक व्याख्यान आयोजित किया। जिसमें उन्होंने अंगदान की प्रक्रिया सहित उसके उद्देश्य, महत्व, दिशानिर्देशों से अवगत कराया। उन्होंने अंग प्रत्यारोपण पर कुछ महत्वपूर्ण जानकारी भी साझा की। व्याख्यान सत्र के बाद चर्चा हुई। कर्मचारी सदस्यों ने अंग प्रत्यारोपण और दान से संबंधित कुछ प्रश्न पूछे, जिनका प्रस्तुतकर्ता ने उत्तर दिया। कार्यक्रम समन्वयक सीमा आर., डी.ई.एस.एम. ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

स्वच्छता पखवाड़ा

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ए.) में स्वच्छता पखवाड़ा, विशेष कैंपेन 3.0 के तहत अनेक गतिविधियाँ आयोजित की गईं।

सबसे पहले स्वच्छता शपथ ली गई, जिसमें सभी बी.एड. विद्यार्थियों ने ऑनलाइन शपथ ली। इसके बाद परिसर के अंदर और बाहर सफाई अभियान चलाया गया। सफाई अभियान में सभी बी.एड. विद्यार्थी और अध्यापक सम्मिलित हुए।

हमने 15 सितंबर 2023 को बारापानी क्षेत्र के 6 विद्यालयों को स्वच्छता मिशन पर आधारित प्रतियोगिता के लिए आमंत्रित किया था। ये स्कूल आर्मी पब्लिक स्कूल, उमियम बेथनी स्कूल, नोंग्सडर क्राइस्ट स्कूल, नोंग्सडर, केंद्रीय विद्यालय, नेपा, उमियम केंद्रीय विद्यालय, उमरोई कैंट और मीकल सेकेंडरी स्कूल, उमियम थे। प्रत्येक स्कूल से 5 विद्यार्थियों को उनके अध्यापकों के साथ आमंत्रित किया गया था। विद्यार्थियों के लिए अनेक गतिविधियों की योजना बनाई गई थी, जिसमें 'स्वच्छता केवल एक आदत नहीं जीवन जीने का एक तरीका है' विषय पर आधारित एक भाषण प्रतियोगिता भी सम्मिलित थी। इस चरण के दौरान बी.एड. विद्यार्थियों के लिए एक नारा लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें कार्यक्रम के सार को दर्शाने वाला एक प्रभावी नारा चुनना था।

अक्तूबर और नवंबर के शुरुआती महीनों में मुख्य रूप से संस्थान की सफाई के इर्द-गिर्द गतिविधियाँ की जा रही थीं, जिसमें विद्यार्थियों को परिसर को बेहतर बनाने और सफाई से जोड़ा गया। सूखे और गीले कचरे को अलग-अलग करने के लिए कुल 8 बड़े डस्टबिन खरीदे गए। विद्यार्थियों ने इन्हें परिसर के उचित हिस्सों में रखा और तब से इनका उपयोग किया जा रहा है।

नवंबर के अंत और दिसंबर के शुरुआती सप्ताह में विद्यार्थियों की परीक्षाएँ होती हैं और गतिविधियों को जारी रखना मुश्किल होता है। इसके बाद विद्यार्थी लंबी शीतकालीन छुट्टियों पर चले जाते हैं। अप्रैल 2024 में, चौथे सेमेस्टर के विद्यार्थी अपनी इंटर्नशिप में सम्मिलित हो गए हैं।

राष्ट्रीय एकता दिवस— सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती

प्रशासनिक ब्लॉक के सामने एन.ई.आर.आई.ई., शिलॉन्ग के सभी संकाय, कर्मचारियों और विद्यार्थियों द्वारा 31 अक्तूबर 2023 को राष्ट्रीय एकता की शपथ ली गई, जिसके बाद बी.एड. विद्यार्थियों द्वारा एन.ई.आर.आई.ई. प्रशासनिक ब्लॉक, उमियम से एस.आई.आर.डी., नोंग्सदर तक एकता दौड़ लगाई गई।

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

एन.ई.आर.आई.ई. ऑडिटोरियम में 11 नवंबर 2023 को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत बी. रमेश बाबू द्वारा विषय पर एक वार्ता के साथ हुई। इसके बाद, शिक्षा के क्षेत्र में अबुल कलाम आजाद के जीवन एवं योगदान पर एक वृत्तचित्र फिल्म की प्रस्तुतीकरण और संस्थान के बी.एड. विद्यार्थियों द्वारा 'बालिकाओं की शिक्षा' विषय पर एक नाटक प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का समापन एन.ई.आर.आई.ई. के एक संकाय सदस्य द्वारा प्रस्तुत औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। समारोह के समापन पर राष्ट्रगान गाया गया।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस (मातृभाषा दिवस)

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस (मातृभाषा दिवस) 21 फरवरी 2024 को संस्थान के सभागार में मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एन.ई.एच.यू. के प्रोफेसर स्टीमलेट दखर थे। इस कार्यक्रम में संकाय, कर्मचारी और विद्यार्थी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम की शुरुआत प्रभारी प्राचार्य एफ.जी. दखर के स्वागत भाषण से हुई, वक्ता का संक्षिप्त परिचय चौ. सरजूबाला ने दिया और एम.जी. वालेंग ने धन्यवाद ज्ञापन किया। स्टीमलेट ने वर्तमान समय में

बहुभाषीयता के महत्व के बारे में बात की, जो जीवन के सभी पहलुओं में एक वास्तविकता है और बताया कि हम मातृभाषाओं की क्षमता का सबसे अच्छा दोहन कैसे कर सकते हैं। उन्होंने राष्ट्रीय लक्ष्यों और बहुभाषी शिक्षा को लागू करने में आने वाली चुनौतियों का भी उल्लेख किया। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के महत्व को मनाने के एक हिस्से के रूप में, विद्यार्थियों के लिए मातृभाषा में भाषण प्रतियोगिता और कविता पाठ का आयोजन किया गया। पुरस्कार विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए गए।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का उत्सव

एन.ई.आर.आई.ई. ऑडिटोरियम में 28 फरवरी 2024 को 'विकसित भारत के लिए स्वदेशी तकनीक' थीम पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। यह कार्यक्रम सुबह 11:30 बजे शुरू हुआ और दोपहर 1:00 बजे तक जारी रहा। दोपहर 1:00 बजे, प्रधानाचार्य (प्रभारी) एफ.जी. दखर ने सभी का गर्मजोशी से स्वागत किया। स्वागत भाषण के बाद, प्रधानाचार्य (प्रभारी) और मंच पर मौजूद गणमान्य लोगों ने दीप प्रज्जवलित किया और सभी ने सर सी.वी. रमन को पुष्पांजलि अर्पित की। पुष्पांजलि के बाद, पी.एच. ब्रजयंती देवी, *प्रमुख,* डी.ई.एस.एम., एन.ई.आर.आई.ई. और *कार्यक्रम समन्वयक* ने प्रत्येक वर्ष एक नए विषय के साथ राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाने के महत्व पर एक संक्षिप्त व्याख्यान दिया। उन्होंने हमारे देश की पारंपरिक तकनीकों के महत्व और विकसित भारत को पूरा करने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। भाषण के बाद, बी.एड. विद्यार्थियों के बीच भाषण प्रतियोगिता हुई। कार्यक्रम का समापन एन.ई.आर.आई.ई. के संकाय सदस्यों में से एक निरजेश द्वारा प्रस्तावित औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। समारोह के समापन के अवसर पर राष्ट्रगान गाया गया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का उत्सव

शिलॉन्ग के उमियम स्थित एन.ई.आर.आई.ई. के ऑडिटोरियम में 8 मार्च 2024 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के समन्वयक बी. उमेश कुमार शर्मा थे। कार्यक्रम सुबह 10:00 बजे शुरू हुआ। एन.ई.आर.आई.ई. के प्रभारी प्राचार्य सुभाष चंद्र रॉय, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग की प्रमुख पी.एच. ब्रजयंती देवी, भाषा एवं सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग की प्रमुख मेलिसा जी. वालांग, विस्तार शिक्षा विभाग की प्रमुख बसंसी खरलुखी, कार्यक्रम समन्वयक बी. उमेश कुमार शर्मा मंच पर मौजूद थे। प्रो. रॉय ने उपस्थित स्वागत भाषण दिया और बी. उमेश कुमार शर्मा ने कार्यक्रम के बारे में बताया। उपस्थित सभी महिलाओं को ग्रीटिंग कार्ड और चॉकलेट भेंट की गई। कार्यक्रम का आयोजन चार कार्यक्रमों के साथ किया गया।

कार्यक्रम 1 — *तब और अब* (केवल संकाय और कर्मचारियों के लिए)— पी.एच. ब्रजयंती देवी, सीमा सहगल, मेलिसा जी. वालंग, बसंसी खरलुखी, सरजुबाला देवी, सीमा आर. और निरजेश ने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों पर काबू पाने की अपनी वास्तविक जीवन की कहानियाँ साझा कीं, साथ ही कठिन परिस्थितियों से निपटने में दूसरों का मार्गदर्शन करने के लिए सशक्त संदेश भी दिए।

कार्यक्रम 2 — *मेरी इच्छा*— प्रोत्साहन विनिमय (केवल विद्यार्थियों के लिए)— कार्यक्रम में बी.एड प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। यह चार सदनों अर्थात ब्लू हाउस, ग्रीन हाउस, रेड हाउस और येलो हाउस के बीच प्रतियोगिता के रूप में आयोजित किया गया था। आयोजित कार्यक्रम के दौरान, प्रत्येक सदन में प्रतिभागियों को पुरुष और महिला समूहों में विभाजित किया गया, जिसमें महिला समूहों को अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं (डब्ल्यू.आई.एस.एच.) को साझा करने और समूह में अनाम रूप से एक का चयन करने का काम सौंपा गया था। समूहों ने 3 मिनट की सख्त समय-सीमा के अंदर, एक इच्छा चुनने के लिए सहयोग किया, जिसे फिर एक प्रदान की गई शीट पर लिख दिया गया। प्रत्येक निर्दिष्ट घर के पुरुष विद्यार्थी समूहों को चयनित डब्ल्यू.आई.एस.एच. के अनुरूप प्रोत्साहन के शब्दों

को रचनात्मक रूप से तैयार करने का काम सौंपा गया, जिसकी समय सीमा 5 मिनट थी। उन्होंने सहयोगात्मक रूप से प्रेरक संदेश तैयार किए। इसके बाद के प्रस्तुतीकरण चरण में, महिला समूह नेता ने अपनी चुनी हुई इच्छा का परिचय दिया, उसके बाद पुरुष समूह नेता ने विशिष्ट इच्छा के लिए प्रोत्साहन के तैयार किए गए शब्द प्रस्तुत किए। अगले प्रस्तुतीकरण चरण में, महिला समूह नेता ने अपनी चुनी हुई इच्छा का परिचय दिया, उसके बाद पुरुष समूह नेता ने विशिष्ट इच्छा के लिए प्रोत्साहन के तैयार किए गए शब्द प्रस्तुत किए। इस क्रमिक प्रस्तुति से व्यक्त इच्छाओं के साथ सहायक भावनाओं को सहजता से मिला दिया गया, जिससे कार्यक्रम का प्रभाव समृद्ध हुआ एवं प्रतिभागियों के बीच प्रोत्साहन की संस्कृति को मजबूती मिली। प्रशिक्षुओं द्वारा सर्वश्रेष्ठ तीन के चयन हेतु मतदान किया गया और उन्हें विजेता घोषित किया गया।

कार्यक्रम 3 — *मुझे बात कहने का मौका दिया गया* (संकाय, कर्मचारी और विद्यार्थियों के लिए)— यह आयोजन एक यादगार अवसर था, जिसमें व्यक्तिगत विकास और अनुभवों के विभिन्न पहलुओं को सम्मिलित किया गया। प्रतिभागियों ने जीवन बदलने वाली परियोजनाओं में अपनी भागीदारी साझा की, विशेष यात्राओं और कैंपस में बिताए अपने समय के यादगार पलों को याद किया। उन्होंने प्रकृति की सुंदरता को फोटो में उतारा, जिसमें सूर्योदय की शांत महिमा से लेकर बागों का जीवंत जीवन और पर्वत शृंखलाओं की विस्मयकारी भव्यता सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त, व्यक्तियों ने कठिन परिस्थितियों पर काबू पाने में अपने लचीलेपन और मजबूती का प्रदर्शन किया, चुनौतियों का सामना करने की अपनी क्षमता को प्रकट किया और इस प्रकार लचीलेपन और दृढ़ संकल्प की भावना को मूर्त रूप दिया। सभी प्रस्तुतियाँ एकत्र की गईं तथा वीडियो के रूप में बनाई गईं तथा प्रस्तुत की गईं।

कार्यक्रम 4 — *धन्यवाद*— इस कार्यक्रम का उद्देश्य एन.ई.आर.आई.ई. की प्रेरणादायक महिला संकाय और स्टाफ सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करना था। यह कार्यक्रम सावधानीपूर्वक योजना बनाकर और हार्दिक भावनाओं के साथ आयोजित किया गया था। प्रत्येक हाउस ने सावधानीपूर्वक अनाम धन्यवाद नोट तैयार किए, जिसमें इन प्रेरणादायक महिलाओं ने कैसे हाउस और उनकी व्यक्तिगत यात्रा पर सकारात्मक प्रभाव डाला है, इस बारे में बताया गया था। तीन उत्साहजनक शब्दों के साथ अपने सर्वोत्तम गुणों पर बल देते हुए, प्रतिभागियों ने प्रदान की गई शीट पर 10 मिनट की समय-सीमा के अंदर अपने नोट्स तैयार किए। प्रस्तुतीकरण चरण के दौरान, प्रत्येक हाउस के नेताओं या प्रतिनिधियों ने संक्षिप्त 5 मिनट की समय-सीमा के अंदर अपने नोट्स प्रस्तुत किए। इसके बाद, सभी संकाय और स्टाफ सदस्यों ने तीन सबसे प्रभावशाली और उत्साहजनक प्रस्तुतियों को निर्धारित करने के लिए मतदान प्रक्रिया में भाग लिया। विजेता हाउस को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद प्रस्ताव और हल्के जलपान के साथ हुआ।

29वें एन.ई.आर.आई.ई. स्थापना दिवस का जश्न

एन.ई.आर.आई.ई. का 30वाँ स्थापना दिवस और वार्षिक दिवस 22 मार्च 2024 को एन.ई.आर.आई.ई. सभागार में दोपहर 2:30 बजे मनाया गया। प्रभारी प्राचार्य एफ.जी. दखर ने स्वागत भाषण दिया। सुभाष चंद्र रॉय, *विभागाध्यक्ष*, शैक्षिक विकास ने पूर्वोत्तर के शैक्षिक परिदृश्य के संदर्भ में एन.ई.आर.आई.ई. की संरचना, भूमिका, कार्यप्रणाली और इसकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। एन.ई.आर.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प. के पूर्व प्राचार्य डी.एस. भट्टाचार्जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपने विशाल अनुभव के आधार पर एक प्रेरक भाषण दिया। इस कार्यक्रम में पुरस्कार वितरण और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्मिलित थे। कार्यशाला में विकसित कार्यक्रम सामग्री की समन्वयक सीमा आर. ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, अजमेर

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय की स्थापना वर्ष 1964 में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के प्रयोगशाला स्कूल के रूप में की गई थी। यह एक सह-शिक्षा विद्यालय है और त्रि-भाषा सूत्र का पालन करता है। प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय का प्राथमिक खंड बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करने के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) केंद्र से सुसज्जित है। इस खंड में 2001–2002 से स्कूल आधारित मूल्यांकन लागू किया गया है। शुरुआत में इसने विभिन्न धाराओं जैसे विज्ञान, मानविकी, कृषि, गृह विज्ञान, वाणिज्य और प्रौद्योगिकी में पाठ्यक्रम प्रस्तुत किए। कुछ समय के लिए, यह राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध था और सार्वजनिक परीक्षाओं में उत्कृष्ट परिणामों के लिए इसने योग्यता प्रमाण पत्र प्राप्त किया। वर्ष 1977 से यह विद्यालय केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली से संबद्ध है तथा विद्यार्थियों को अखिल भारतीय माध्यमिक विद्यालय परीक्षा (कक्षा 10) तथा अखिल भारतीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय परीक्षा (11वीं एवं 12वीं) के लिए तैयार करता है। विद्यालय में विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों जैसे विभिन्न विषयों की शिक्षा के लिए सुविधाएँ मौजूद हैं। सभी कक्षाओं में पर्यावरण शिक्षा शुरू की गई है। इसके अलावा इस स्कूल में सौंदर्य और स्वास्थ्य तथा इससे संबंधित व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम भी शुरू किया गया है।

स्कूल की प्रमुख गतिविधियाँ और उपलब्धियाँ

विद्या प्रवेश

विद्यालय ने विद्या प्रवेश की शुरुआत की और इसका आयोजन किया, जो इस स्तर पर बच्चों के प्रवेश के समय कक्षा 1 के लिए तीन माह की खेल आधारित स्कूल तैयारी थी, जिसका उद्देश्य विविध पृष्ठभूमि से कक्षा 1 में आने वाले सभी बच्चों में स्कूल की तैयारी को बढ़ावा देना, बच्चों का घर के माहौल से स्कूल के माहौल में सुचारु बदलाव सुनिश्चित करना और आनंदमय वातावरण में खेल आधारित, आयु और विकास के अनुकूल अधिगम अनुभव प्रदान करना था।

विद्यार्थी गतिविधियाँ

राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, अजमेर के विद्यार्थियों ने 26 से 30 दिसंबर 2023 तक शिव छत्रपति खेल परिसर में रा.शै.अ.प्र.प. और एस.सी.ई.आर.टी. महाराष्ट्र द्वारा आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी में भाग लिया। इस दौरान कार्तिक गुप्ता और दिव्यांश शर्मा ने 'भारी यातायात के दौरान एंबुलेंस को फँसने से बचाने' पर प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया। माही पाराशर और अनुराधा रांकावत ने वॉकिंग ब्रिज पर प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया और पुष्कर नारायण और पुष्पेंद्र सिंह ने '127 के जादू' पर प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय योग ओलंपियाड

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने 18–20 जून 2023 तक आर.आई.ई., भोपाल में आयोजित राष्ट्रीय योग ओलंपियाड में भाग लिया और सीनियर लड़कों के समूह कार्यक्रमों में दूसरा स्थान प्राप्त किया। विद्यार्थियों ने 8–12 सितंबर 2023 तक मयूर स्कूल, अजमेर में जिला स्तर पर योग प्रतियोगिता में भाग लिया। विद्यार्थियों ने 19–23 सितंबर 2023 तक उदयपुर, राजस्थान में राज्य स्तर पर योग प्रतियोगिता में भाग लिया।

चंद्रयान 3 के प्रक्षेपण का जश्न मनाने के लिए नई दिल्ली का दौरा

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, अजमेर के विद्यार्थियों को 17 अक्तूबर 2023 को चंद्रयान मिशन पर इसरो के अध्यक्ष एस. सोमनाथ के भाषण में भाग लेने के लिए चुना गया था। विद्यार्थियों को सोमनाथ द्वारा अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में जटिलताओं और चुनौतियों के बारे में सुनने का एक अद्भुत अवसर मिला।

उपलब्धियाँ

- कक्षा 9–ए के किंशुक शर्मा ने 2 अक्तूबर 2023 को संसद भवन, नई दिल्ली में लाल बहादुर शास्त्री के जीवन इतिहास के बारे में बताया।
- कक्षा 8 की छात्रा गौरांशी शर्मा को डाक विभाग (जयपुर मंडल) द्वारा 'दीनदयाल स्पर्श विद्यार्थीवृत्ति' के लिए चुना गया।
- भारत विकास परिषद् द्वारा 26 अगस्त 2023 को माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, अजमेर में आयोजित 'भारत को जानो' प्रतियोगिता में भी विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिसमें जूनियर वर्ग में नीलवर्धन सिंह (8–बी) और तुषार बनवीर (8–बी) ने क्रमशः प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा सीनियर वर्ग में अखिलेश (10–ए) और निरल मिश्रा (10–ए) ने क्रमशः प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- कक्षा 11–सी के प्रियांशु कुमावत ने अंडर-17 वर्ग में जिला कराटे चैंपियनशिप में भाग लिया और स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने राज्य टूर्नामेंट में अजमेर जिले का प्रतिनिधित्व भी किया।
- कक्षा 11–सी के निसार अहमद ने जिला मुक्केबाजी प्रतियोगिता में अंडर-17 वर्ग और 80 किलोग्राम भार वर्ग में भाग लिया और कांस्य पदक जीता।
- कक्षा 11–सी के नक्षत्र भोपरिया ने जिला भारोत्तोलन प्रतियोगिता में अंडर-17 वर्ग और 49 किलोग्राम भार वर्ग में भाग लिया और रजत पदक जीता।
- कक्षा 12–बी के चंदन सिंह ने अंडर-19 वर्ग और लाइट वेट वर्ग में जिला मुक्केबाजी प्रतियोगिता में भाग लिया और स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने राज्य टूर्नामेंट में अजमेर जिले का प्रतिनिधित्व भी किया।
- निम्नलिखित विद्यार्थियों ने राज्य योग प्रतियोगिता में भाग लिया और समूह स्पर्धा में निम्नलिखित स्थान प्राप्त किए।
    1. प्रियांश बैरवा — प्रथम स्थान
    2. गिरीश तनवानी — प्रथम स्थान
    3. प्रहलाद जांगिड़ — प्रथम स्थान
    4. नरेश — प्रथम स्थान
    5. अरमान टाक — प्रथम स्थान

एन.सी.सी.

एन.सी.सी. की नौसेना शाखा में 50 कैडेट हैं। 2023–2024 में 22 कैडेटों ने 'ए' सर्टिफिकेट परीक्षा पास की। इसके अलावा, 22 कैडेट्स ने कायड़ विश्रामस्थली में आयोजित सी.ए.टी.सी. में भाग लिया। कैडेट मुजम्मिल ने उदयपुर में पूर्व-आर.डी.सी. कैंप और जयपुर में आई.जी.सी. कैंप में भाग लिया। इसी तरह, कैडेट मोहित राज जोशी ने उदयपुर में पूर्व-आर.डी.सी. कैंप में भाग लिया। कैडेट खुशी सैनी और कैडेट मुजम्मिल ने नाथद्वारा में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत कैंप' में भाग लिया।

अजमेर के कायड़ विश्रामस्थली में आयोजित सी.ए.टी.सी. कैंप में कैडेट्स ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में मम्मरी पुरस्कार जीते। 02 राज नेवल एन.सी.सी. इकाई द्वारा आयोजित 'यूनिटी रन' में कैडेट्स ने निम्न स्थान प्राप्त किए

1. कैडेट नंद किशोर बैरवा — प्रथम स्थान
2. कैडेट हेशुल कुमावत — द्वितीय स्थान

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय के कैडेटों ने नौसेना दिवस समारोह, एन.सी.सी. स्थापना दिवस समारोह और राष्ट्रीय योग दिवस समारोह में भाग लिया। इसके अलावा, विद्यार्थियों ने विभिन्न राष्ट्रीय स्तर की प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया।

25 विद्यार्थी एन.सी.सी. 'ए' स्तर प्रमाण पत्र परीक्षा में सम्मिलित हुए और सभी विद्यार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण हुए।

बोर्ड परीक्षा 2022–2023 में प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय के विद्यार्थियों का प्रदर्शन

कक्षा	उपस्थित विद्यार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
10	55/55	100
12 (विज्ञान)	29/29	100
12 (सामाजिक विज्ञान)	33/32	96.96
12 (वाणिज्य)	25/24	96

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भोपाल

सी.बी.एस.ई. से संबद्ध प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., भोपाल का एक भाग है। यह स्कूल 1965 में अस्तित्व में आया और यह आर.आई.ई. कैंपस, श्यामला हिल्स, भोपाल में स्थित है। प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा परिकल्पित 10+2 पैटर्न के तहत विद्यालय-पूर्व से कक्षा 12 तक शिक्षा का व्यापक कार्यक्रम चलाता है। विद्यालय का मिशन बच्चों के समग्र विकास के लिए राष्ट्र की स्कूली शिक्षा के लिए एक मॉडल प्रदान करना है। विद्यालय की भूमिका नवीनतम तकनीकों को नियोजित कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। इसके साथ ही भावी अध्यापकों को इंटर्नशिप कार्यक्रम के माध्यम से सीखने और अध्यापन का अभ्यास करने में सक्षम बनाना है।

कक्षा 1–12 तक के विद्यार्थियों का नामांकन)

सत्र 2023–2024 के लिए प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल में विद्यार्थी नामांकन	
कक्षा	विद्यार्थियों की संख्या
1	70
2	70
3	69
4	69
5	69
6	74
7	69
8	68
9	69
10	66

11	89
12	65
कुल	**847**

विद्यालय की प्रमुख गतिविधियाँ और उपलब्धियाँ

विद्यार्थियों द्वारा जीते गए पुरस्कार एवं पारितोषिक

- भारत अंतरिक्ष सप्ताह के अंतर्गत इसरो द्वारा 18 दिसंबर 2023 को विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं, इनमें कक्षा 11 की छात्रा पिंकी अहिरवार ने निबंध लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार और 5000 रुपए जीते। प्राथमिक कक्षा की छात्रा अफना सुल्तान को राष्ट्रीय स्तर पर सांत्वना पुरस्कार और 1000 रुपए मिले।
- कक्षा 9 की छात्रा परमी नागदेवे ने राज्य स्तर पर अंडर 17 और 19 श्रेणियों में अनेक पुरस्कार प्राप्त किए। इंदौर और शिवपुरी में उन्हें एमपी स्टेट टेबल टेनिस चैंपियनशिप में पहला स्थान मिला। उज्जैन और इंदौर में, परमी नागदेवे को फर्स्ट प्राइमर टेबल टेनिस लीग 2023 में दूसरा स्थान मिला और 2023 में खेलो एमपी यूथ गेम्स में पहला स्थान मिला। इसके साथ ही उन्हें 67वें स्कूल गेम एस.जी.एफ.आई. स्कूल स्टेट टेबल टेनिस चैंपियनशिप 2023 में दूसरा स्थान मिला।
- साइबर सिक्योरिटी डे स्कूल में पोस्टर मेकिंग कम्पीटीशन में कक्षा 9 और 10 के विद्यार्थियों आशी भाटी, अंशिका पांडे, प्रशस्ति सोमकुवर ने पुरस्कार जीते। सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण के लिए कक्षा 11 और 12 के विद्यार्थियों युवराज सिकरवार, जारा गुफरान, स्मृति तिवारी ने पुरस्कार जीते।
- प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय ने अंतर-विद्यालयी चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की और तीन समूहों में पुरस्कार जीते। समूह ए में, प्रथम स्थान मोहनेश कुकोडिया (कक्षा 1), तृतीय स्थान प्रवी पुष्प (कक्षा 1), सांत्वना पुरस्कार, यज्ञ्या यादव (कक्षा 1), समूह बी में द्वितीय पुरस्कार शाहबजादी अमीमा अमजद (कक्षा 4), तृतीय पुरस्कार कनक भल्लावी (कक्षा 4) को मिला। समूह डी में, तृतीय पुरस्कार मुनीर फातिमा (कक्षा 12) को मिला।
- कक्षा 10 के विद्यार्थी जयंत के. बंसल ने अंडर 18 में बालक वर्ग प्रतियोगिता म.प्र. टेनिस एसोसिएशन में तीसरा स्थान प्राप्त किया।
- कक्षा 11 की छात्रा भूमि मल्होत्रा ने वन सहकारी संघ, मध्य प्रदेश द्वारा आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त किया।
- पंडित कुंजी दुबे संसदीय विद्यापीठ द्वारा मतदान के प्रति जागरूकता विषय पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में कक्षा 11 की छात्रा अंजनी सोनी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा 9000/- का पुरस्कार प्राप्त किया।
- कक्षा 11 के विद्यार्थियों ने पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., आर.आई.ई., भोपाल में राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान आयोजित ड्रोन निर्माण प्रतियोगिता में दो दिवसीय ड्रोन प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूर्ण किया तथा द्वितीय पुरस्कार जीता।
- कक्षा 12 के विद्यार्थी सूरज सिंह थापा को बहुराष्ट्रीय कार्यक्रम में नृत्य प्रदर्शन के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रशंसा प्रमाण पत्र और पुरस्कार मिला।

विद्यालय की प्रमुख गतिविधियाँ और उपलब्धियाँ

- प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भोपाल ने मई और जून के माह के समर कैंप में जी 20 की थीम 'मिशन लाइफ' पर आधारित नारा लेखन प्रतियोगिता, प्रकृति की सैर, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, मेडिटेशन (ध्यान), रचनात्मक लेखन, पोस्टर प्रतियोगिता, भाषण, परामर्श सत्र, पठन और अभिव्यक्ति गतिविधियाँ, प्लास्टिक के उपयोग को हटाना, विभिन्न राज्यों के नृत्य प्रदर्शन, पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सभी प्रतियोगिताओं में भाग लिया और अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया।

- ❑ रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा 18 जून 2023 से 20 जून 2023 तक आर.आई.ई. भोपाल, मध्यप्रदेश में आयोजित राष्ट्रीय योग ओलंपियाड में 16 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस ओलंपियाड की थीम थी— वसुधैव कुटुंबकम के लिए योग।
- ❑ जुलाई माह में विद्यालय ने मैनिट, भोपाल द्वारा आयोजित एन.ई.पी. 2020 पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में भाग लिया। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा संबोधित अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन 2023 का लाइव प्रसारण प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भोपाल के सभी अध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा देखा गया।
- ❑ बंसल कॉलेज में 12 अगस्त से 21 अगस्त तक 4 एमपी गर्ल्स बटालियन द्वारा आयोजित 10 दिवसीय सी.ए.टी.सी. कैंप इसमें 24 कैडेटों ने भाग लिया। उन्होंने हथियार प्रशिक्षण, मानचित्र पढ़ना, व्यक्तित्व विकास, स्वास्थ्य परिसर, स्वच्छता आदि जैसी कक्षाओं में भाग लिया और बुनियादी जीवन कौशल सीखा।
- ❑ विद्यार्थियों ने 23 अगस्त 2023 को पं कुंजीलाल दुबे राष्ट्रीय संसद विद्यापीठ के मार्गदर्शन में युवा संसद प्रतियोगिता में भाग लिया और उन्हें इसके लिए विशेष दक्ष पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- ❑ सितंबर 2023 माह में प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भोपाल के व्यावसायिक स्कंध में के.आर.आई.वी.ई.टी., दक्षिण कोरिया के प्रतिनिधिमंडल द्वारा व्यावसायिक अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया गया।
- ❑ प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय के अध्यापकों ने विभिन्न स्तरों पर चंद्रयान पर अलग-अलग मॉड्यूल में योगदान दिया, जिसे रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित किया गया है।
- ❑ जे.पी. अहिरवार (टी.जी.टी. विज्ञान), हेमंत राजे, करुणा (पी.जी.टी. अकाउंट्स), आदित्य आर्य (टी.जी.टी. विज्ञान), अंकिता साहू (लैब असिस्टेंट, रसायन विज्ञान), 10 विद्यार्थी कौशल भवन, नई दिल्ली में 17 अक्तूबर 2023 को मॉड्यूल 'अपना चंद्रयान' के उद्घाटन कार्यक्रम में सम्मिलित हुए एवं अन्य सभी स्टाफ सदस्य एवं विद्यार्थी स्कूल में लाइव कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।
- ❑ स्वच्छता ही सभी बीमारियों की एकमात्र दवा है। इस संदेश का प्रसार करने के लिए स्कूल ने स्वच्छता पखवाड़ा 2024 मनाया। इस अवसर पर विद्यार्थियों और अध्यापकों ने स्वच्छ और हरित भारत को बनाए रखने की शपथ ली। रोल-प्ले, नारा लेखन और व्यक्तिगत स्वच्छता दिवस जैसी विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं। इसके साथ ही एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई जिसमें विद्यार्थियों ने अपशिष्ट पदार्थों से बने 'आर्टिस्टिक डस्टबिन' कलात्मक कूड़ेदान प्रदर्शित किए।
- ❑ प्रथम वीर बाल दिवस के अवसर पर 26 दिसंबर 2024 को प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय भोपाल में निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की गईं। साहिबजादा जोरावर सिंहजी एवं साहिबजादा फतेह सिंहजी की बहादुरी से संबंधित एक वीडियो (चार साहिबजादे) बनाया गया और कहानी सुनाई गई। सुबह की सभा के समय विद्यार्थियों द्वारा कहानी लेखन, आभार कार्ड और वादा कार्ड बनाए गए और वीर बाल दिवस से संबंधित अपनी जानकारी साझा की गई।
- ❑ प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय ने 25 नवंबर को एक अंतर-विद्यालयी चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की और तीन समूहों में पुरस्कार जीते। समूह ए में, प्रथम स्थान मोहनेश कुकोडिया, कक्षा 1; तृतीय स्थान प्रवी पुष्प, कक्षा 1; सांत्वना पुरस्कार, यज्ञा यादव, कक्षा 1; समूह बी में, द्वितीय पुरस्कार शहाबजादी अमीमा अमजद, कक्षा 4; तृतीय पुरस्कार कनक भल्लावी, कक्षा 4; समूह डी में, वरिष्ठ कक्षाओं के लिए प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय की कक्षा 12 से मुनीर फातिमा को तीसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- ❑ राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.), रा.शै.अ.प्र.प. के अंतर्गत, आर.आई.ई. भुवनेश्वर में जे.पी. अहिरवार (टी.जी.टी. बायो), हेमंत राजे (टी.जी.टी. इंजी.), अवनि पाराशर (पी.जी.टी. गाइडेंस एंड काउंसिलिंग), घनेश्वरी यादव (पी.जी.टी. इंजी.) के मार्गदर्शन में, कक्षा 8 और 9 के 11 विद्यार्थियों ने रोल प्ले और डांस में प्रदर्शन किया और तीसरा स्थान प्राप्त किया।

- बैरसिया में एन.पी.ई.पी. के अंतर्गत दो दिवसीय स्वास्थ्य एवं शिक्षा परिसर का आयोजन किया गया तथा अवनि पाराशर एवं जे.पी. अहिरवार के मार्गदर्शन में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया।

शैक्षणिक प्रदर्शन

बोर्ड परीक्षाओं में विद्यार्थियों का प्रदर्शन (नीचे दी गई तालिका में जानकारी प्रस्तुत करें)

कक्षा	उपस्थित विद्यार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
10	63/61	96.83
12 (विज्ञान)	28/24	85.71
12 (सामाजिक विज्ञान)	25/24	96.0
12 (वाणिज्य)	27/26	96.3

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भुवनेश्वर

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, स्कूल शिक्षा के प्रमुख क्षेत्रों से संबंधित अनुसंधान और विकास में भाग लेकर भारत के पूर्वी क्षेत्र में एक अग्रणी विद्यालय के रूप में कार्य करता है और मुख्यतः क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर के अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए एक केंद्र के रूप में कार्य करता है।

इस स्कूल में समाज के सभी वर्गों के विद्यार्थी आते हैं और उन्हें योग्यता के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं प्रशिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों ने आई.आई.टी., एन.आई.एस.ई.आर. और आई.आई.एस.ई.आर. जैसे राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी योग्यता साबित की है। स्कूल में 1184 विद्यार्थी हैं, जिनमें से 578 लड़के और 606 लड़कियाँ हैं। इनमें 182 विद्यार्थी अनुसूचित जाति, 85 विद्यार्थी अनुसूचित जनजाति, 30 विद्यार्थी दिव्यांग तथा 23 विद्यार्थी पूर्व सैनिक श्रेणी से संबंधित हैं।

विद्यालय-पूर्व से 1–12 तक के विद्यार्थियों का नामांकन

सत्र 2023–24 के लिए प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल में विद्यार्थी नामांकन	
कक्षा	**विद्यार्थियों की संख्या**
विद्यालय-पूर्व 1	26
विद्यालय-पूर्व 2	25
विद्यालय-पूर्व 3	23
1	70
2	70
3	70
4	70
5	70
6	105
7	105
8	105
9	104

10	103
11	135
12	103
कुल	**1184**

विद्यालय की प्रमुख उपलब्धियाँ

स्वच्छता पखवाड़ा (स्वच्छता गतिविधियाँ)

- विद्यालय में 1 से 15 सितंबर 2023 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया तथा विद्यार्थियों को स्वच्छता एवं सेनिटाइजेशन के महत्व के बारे में जागरूक करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसके साथ ही जल संरक्षण पर नुक्कड़ नाटक एवं वेबिनार आयोजित किए गए तथा प्राथमिक एवं जूनियर समूह के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न नारा लेखन एवं पोस्टर निर्माण प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। विद्यालय में कला विभाग द्वारा अपशिष्ट पदार्थों से निर्मित कलाकृतियों की एक स्वच्छता स्कूल प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।
- पंच प्राण की शपथ ली गई— औपनिवेशिक मानसिकता के किसी भी अवशेष को समाप्त करें, अपनी समृद्ध विरासत को अपनाएँ, एकता को बढ़ावा दें और अपने रक्षकों का सम्मान करें। एक साथ, जिम्मेदार नागरिकों के रूप में, हम एक विकसित और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में काम करेंगे।
- आजादी अमृत महोत्सव के अंतर्गत स्वच्छता पखवाड़ा के एक भाग के रूप में कक्षा 4 से 8 (विषय— स्वच्छता जीवन जीने का सर्वोत्तम तरीका है) और कक्षा 9 से 12 (विषय— स्वतंत्रता के गौरवशाली 100 वर्षों की ओर कैसे बढ़ें) के विद्यार्थियों के लिए पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की गई।

एन.सी.सी. दिवस

- एन.सी.सी. वार्षिक प्रशिक्षण कैंप 2 सितंबर से 11 सितंबर 2023 तक 6 (ओडिशा) बटालियन पुरी में आयोजित किया गया था। इसमें प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय के 24 कैडेटों (14 जूनियर डिवीजन और 10 जूनियर विंग) ने हथियार प्रशिक्षण, मानचित्र पढ़ना, टेंट पिचिंग एवं सेटिंग और ड्रिल जैसी विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया। कैडेटों ने पुनीत सागर अभियान (जलाशयों को साफ करना और प्लास्टिक मुक्त समुद्र तट बनाना) में भाग लिया। कैडेट ड्रिल और फायरिंग प्रतियोगिता में उत्कृष्ट थे। स्कूल के एन.सी.सी. कैडेटों ने 6 (ओडिशा) बटालियन एन.सी.सी. पुरी में अनेक पदक जीते।
- वृक्षारोपण कार्यक्रम 'वन महोत्सव' का आयोजन किया गया, जिसके दौरान कैडेटों ने 40–40 पौधे लगाए और पेड़ों की देखभाल भी की।
- एन.सी.सी. कैडेट सार्जेंट सौम्या रंजन मुर्मू ने 2 दिसंबर 2023 से 11 दिसंबर 2023 तक सी.आर.पी.एफ., भुवनेश्वर में आयोजित संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण कैंप सफलतापूर्वक पूरा किया।

एन.एस. एस. गतिविधियाँ

- एन.एस.एस. स्वयंसेवकों द्वारा 1 अक्तूबर 2023 को प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भुवनेश्वर में स्वच्छता पखवाड़ा शपथ और सफाई अभियान का आयोजन किया गया। 31 अक्तूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस मनाते हुए दूरदर्शी स्वतंत्रता सेनानी सरदार वल्लभभाई पटेल को श्रद्धांजलि दी गई, जिनके अथक प्रयासों से विभिन्न रियासतों को एक साथ लाकर एक अखंड भारत का निर्माण हुआ। प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भुवनेश्वर में, 31 अक्तूबर 2023 को अध्यापकों और विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय एकता और सद्भाव हेतु एकता शपथ ली। प्रायोगिक बहुद्देशीय विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा एकता के लिए दौड़ भी लगाई गई।

- 20 एन.एस.एस. स्वयंसेवकों (उत्कल मंडप, भुवनेश्वर) ने 14 नवंबर 2023 को ओडिशा राज्य सहकारी सप्ताह समारोह में भाग लिया।
- एच.आर.एफ. इंडिया ने जयदेव भवन, भूटान में मानवाधिकार रक्षक दिवस समारोह का आयोजन किया। इसमें 11 एन.एस.एस. स्वयंसेवकों और एक कार्यक्रम अधिकारी ने भाग लिया।

स्काउट एवं मार्गदर्शक

अक्तूबर माह में स्काउट एवं मार्गदर्शक विद्यार्थियों द्वारा पौधारोपण अभियान एवं हाथों को साफ रखने से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भुवनेश्वर जिला भारत स्काउट एवं गाइड द्वारा 11 से 15 दिसंबर 2023 को आयोजित 30वें जिला कैम्पोरी में 50 स्काउट एवं गाइड विद्यार्थियों ने भाग लिया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

- विद्यालय ने विभिन्न श्रेणियों के विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता आयोजित करके 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' मनाया। इस प्रतियोगिता के विषय थे— 'ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है' प्राथमिक श्रेणी के लिए, 'भ्रष्टाचार से निपटने में शिक्षा की भूमिका' कनिष्ठ श्रेणी के लिए और 'सतर्कता— भ्रष्टाचार का एक उपाय' माध्यमिक और वरिष्ठ श्रेणी के लिए।
- स्कूल ने ऑनलाइन मोड के माध्यम से सभी विद्यार्थियों, अध्यापकों और कुछ अभिभावकों को सम्मिलित करते हुए सतर्कता जागरूकता शपथ ली। स्कूल परिसर के चारों ओर भ्रष्टाचार विरोधी उद्धरण प्रदर्शित किए गए।

बाल दिवस उत्सव

- अनप्लग्ड 2023 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रंगोली बनाना, मटका पेंटिंग, फूड फेस्टिवल, कला और शिल्प प्रदर्शनी जैसी अनेक आकर्षक गतिविधियाँ आयोजित की गईं, जिससे विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं अध्यापकों के बीच रचनात्मकता, प्रतिभा और सामुदायिक भावना को बढ़ावा मिला।
- साहिबजादा जोरावर सिंह और साहिबजादा फतेह सिंह जी के न्याय की खोज में किए गए बलिदान को याद करने के लिए 13 जनवरी 2024 को वीर बाल दिवस मनाया गया। सुबह की सभा में विद्यार्थियों और अध्यापकों ने उनकी वीरता और बलिदान के विषय में बात की।
- विद्यार्थियों ने वीर गाथा 2.0 परियोजना में भाग लिया। इसमें वीरता पुरस्कार विजेताओं पर बनाई गई परियोजनाएँ (कविता, पोस्टर, कहानियाँ) भारत सरकार द्वारा प्रदान किए गए लिंक में अपलोड की गईं।

60वीं वार्षिक एथलेटिक प्रतियोगिता 2023–2024

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय की 60वीं वार्षिक एथलेटिक प्रतियोगिता 22 से 24 नवंबर 2023 को आयोजित की गई। प्रधानाचार्य आर.आई.ई., भुवनेश्वर ने प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। 90 ट्रैक और फील्ड स्पर्धाओं में 800 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि, स्कूल के पूर्व छात्र एवं आर.बी.आई. के गवर्नर, शक्तिकांत दास थे जिन्होंने मार्च पास्ट में सर्वश्रेष्ठ एथलीट और चैंपियन हाउस तथा विभिन्न श्रेणियों में समग्र रूप से चैंपियन हाउस (साहित्यिक गतिविधियाँ, खेल और खेल गतिविधियाँ) को ट्रॉफी प्रदान की।

60वाँ वार्षिक समारोह 2023–2024

60वें वार्षिक समारोह और पुरस्कार वितरण समारोह का उद्घाटन 21–22 दिसंबर 2023 को पी.सी. अग्रवाल ने किया। इस समारोह में सी.एस.आई.आर.-आई.एम.एम.टी., भुवनेश्वर के निदेशक रामानुजन नारायण मुख्य अतिथि थे। उन्होंने समारोह में संबोधन दिया एवं पुरस्कार प्रदान किए। यह समारोह प्रेम, कृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करने का एक साधन है और जो दुनिया द्वारा दिए गए उपहारों की सराहना करता है।

उपलब्धियाँ

- ओडिशा में 5 फरवरी 2023 को विज्ञान प्रसार और रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से भारती (वी.आई.बी.एच.ए.) पर विज्ञान द्वारा आयोजित विद्यार्थी विज्ञान मंथन (वी.वी.एम.) राज्य स्तरीय परीक्षा (स्तर II) में कक्षा 11 के स्वयंभुबा पट्टनायक ने दूसरा स्थान हासिल किया।
- प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय के कक्षा 3 के विद्यार्थी देबास्मान मिश्रा ने 7 फरवरी 2023 को रवींद्र मंडप, भुवनेश्वर में अस्तित्व और पी.ई.सी.टी. द्वारा आयोजित कला प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त किया।
- ओ.यू.ए.टी. भुवनेश्वर द्वारा 06 फरवरी 2023 को आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय के कक्षा 9 के विद्यार्थी सुभ्रांसु शुभंकर साहू और एस.के. सफीउर रहमान ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- कक्षा 11 (सी) के मास्टर बिप्रांशु सिंह ने राज्य स्तरीय क्रिकेट टूर्नामेंट में खोरधा जिले का प्रतिनिधित्व किया।
- कक्षा 10 (ए) की देबाश्री देबस्मिता ने 14वीं राष्ट्रीय थाई मुक्केबाजी चैम्पियनशिप 2023 में स्वर्ण पदक जीता। उन्हें विश्व थाई मुक्केबाजी चैम्पियनशिप 2023 में प्रतिस्पर्धा करने के लिए चुना गया है।
- भुवनेश्वर में 29 जुलाई 2023 को नंदनकानन रेसोर द्वारा आयोजित 24वें किंग शतरंज टूर्नामेंट में ऋतुप्रज्ञान महापात्रा ने अंडर-8 लड़कियों में द्वितीय पुरस्कार जीता।
- कक्षा 8 (सी) की अनिका कर ने पहली ओडिशा राज्य रैंकिंग रोलर स्केटिंग रेसिंग चैंपियनशिप, भुवनेश्वर 2023 में 2 स्वर्ण पदक जीते। उन्होंने 29 अक्तूबर 2023 को रायपुर में आयोजित सी.बी.एस.ई. जोनल स्केटिंग प्रतियोगिता में 500 मीटर में स्वर्ण और 1000 मीटर में रजत भी जीता।
- अर्निका दास ने 29 जुलाई 2023 को नंदनकानन रेसोर, भुवनेश्वर द्वारा आयोजित 24वें किंग शतरंज टूर्नामेंट में अंडर-8 बालिका वर्ग में प्रथम पुरस्कार जीता।
- 74वें वन महोत्सव 2023 का आयोजन ओडिशा सरकार के वन, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन विभाग द्वारा किया गया। वाद-विवाद वर्ग में कक्षा 9 के प्रांशु मिश्रा तीसरे स्थान पर रहे और अंग्रेजी निबंध लेखन प्रतियोगिता में श्रेयांश शौर्य पांडा दूसरे स्थान पर रहे।
- कला उत्सव 2023 में जिला स्तर पर 12वीं कक्षा के सोहेल बेहरा ने गायन (शास्त्रीय) में प्रथम पुरस्कार जीता और त्रिशा पति ने लोक गायन में प्रथम पुरस्कार जीता तथा राज्य स्तरीय कला उत्सव के लिए चयनित हुईं।
- कक्षा 7 के निरेंद्र दास ने 8 अक्तूबर 2023 को भुवनेश्वर के खुर्दा जिला में किक बॉक्सिंग एसोसिएशन द्वारा आयोजित ओडिशा राज्य किक बॉक्सिंग चैंपियनशिप में कैडेट-I बॉयज (50 किग्रा) वर्ग में प्वाइंट फाइट स्पर्धा में प्रतिस्पर्धा करते हुए रजत पदक जीता।
- राजधानी कला संसद में बी.वी.पी. वाणी विहार द्वारा 5 नवंबर 2023 को आयोजित 'भारत को जानो' प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के सीनियर समूह में कक्षा 9 के श्रेयांश शौर्य पांडा और कक्षा 9 के स्वप्निल बेहरा ने प्रथम स्थान हासिल किया। कनिष्ठ समूह में कक्षा 8 के आरित कौशिक और कक्षा 7 के दिनकृत स्वैन भी विजयी हुए और उन्होंने पहला स्थान प्राप्त किया।
- प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय की 11वीं कक्षा की छात्रा स्वातिका त्रिपाठी ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2023 के तहत 3 नवंबर 2024 को नाल्को भवन, भुवनेश्वर में नाल्को द्वारा आयोजित अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त किया।
- 10वीं कक्षा के मनीष कुमार महुंता ने 19–20 अक्तूबर 2024 को ओडिशा के संबलपुर में सेंट जॉन्स स्कूल द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित फादर जॉन विलियम बास्केटबॉल मेमोरियल टूर्नामेंट 2023 में उपविजेता स्थान प्राप्त किया।

- कक्षा 3 (ए) के सैयद रीफान अहमद ने 27–29 अक्तूबर 2023 को के.पी.एस. स्कूल, रायपुर में के.पी.एस. सरोना रायपुर द्वारा आयोजित सी.बी.एस.ई. जोनल स्केटिंग प्रतियोगिता में क्वाड्स 500 मीटर स्पर्धा में कांस्य पदक प्राप्त किया।
- फिलैटली विद्यार्थीवृत्ति योजना अर्थात दीन दयाल 'स्पर्श' योजना के तहत प्रथम स्तर की फिलैटली प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता सितंबर 2023 को आयोजित की गई। विद्यार्थी श्रेयांस एस. पांडा (9-ए), सिबात्री पांडा (7-सी) और आरित कौशिक (8-ए) ने पहला राउंड क्वालीफाई किया और सिबात्री पांडा को विद्यार्थीवृत्ति मिली।
- भुवनेश्वर में 2 अक्तूबर 2021 को हेल्पमेट द्वारा गांधी जयंती और आजादी अमृत महोत्सव के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय देशभक्ति गीत प्रतियोगिता में कक्षा 9 की स्वास्तिका त्रिपाठी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- कक्षा 7 के मास्टर निरेन्द्र दास ने 01 जनवरी 2023 को भुवनेश्वर में ऑल उड़ीसा किक बॉक्सिंग संगठन द्वारा आयोजित जूनियर नेशनल किक बॉक्सिंग चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता।
- त्यागराज इंडोर स्टेडियम, नई दिल्ली में 28 से 30 दिसंबर 2022 को ताइक्वांडो एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित 37वीं राष्ट्रीय ताइक्वांडो आई.टी.एफ. चैंपियनशिप में कक्षा 9 की मास्टर निहारिका बारिक ने 40–45 किलोग्राम भार वर्ग में कांस्य पदक जीता।
- प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय की कक्षा 8 (ए) की आकांक्षा प्रियदर्शिनी को 2 अक्तूबर 2023 को संसद भवन, नई दिल्ली में गांधी जयंती और शास्त्री जयंती के भव्य समारोह में भाग लेने के लिए चुना गया।
- कक्षा 7 की आकांक्षा को राष्ट्रीय योग ओलंपियाड में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए चुना गया, जहाँ उन्होंने अपनी स्कूल की मिडिल क्लास की लड़कियों की टीम के साथ कांस्य पदक जीता, यह भोपाल में आयोजित किया गया था।
- कक्षा 10 के प्रांशु मिश्रा और कक्षा 10 की आकांक्षा दास ने साईं इंटरनेशनल स्कूल, भुवनेश्वर में आयोजित साइटेड कॉन्क्लेव 2023 में साइंस अप कॉमेडी में पहला और दूसरा स्थान हासिल किया।
- स्वप्निल बेहरा ने जी 20 प्रेसीडेंसी 2023 के अंतर्गत जन भागीदारी गतिविधियों और कार्यक्रमों में प्रथम स्थान (जिला स्तरीय) प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्राप्त किया।
- स्वयंभुव पटनायक ने जी 20 प्रेसीडेंसी 2023 के अंतगर्त जन भागीदारी गतिविधियों और कार्यक्रम में निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान (जिला स्तर) प्राप्त किया।
- कक्षा 12 के स्वयंभुव पटनायक ने 25 अप्रैल 2023 को ताज विवांता, भुवनेश्वर में सिंगापुर के प्रतिनिधियों और भारत के कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्री माननीय धर्मेंद्र प्रधान के साथ 'भारत और सिंगापुर के शासन मॉडल पर कार्य कौशल वास्तुकला का भविष्य' विषय पर एक कार्यशाला में भाग लिया।

बोर्ड परीक्षाओं में विद्यार्थियों का प्रदर्शन

(सत्र 2022–2023 के लिए)

कक्षा	उपस्थित विद्यार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण का प्रतिशत
10	98	98	100%
12 (विज्ञान)	71	69	98%
12 (मानविकी)	16	15	94%
12 (वाणिज्य)	19	17	90%

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, मैसूरु

वर्ष 1965 में अस्तित्व में आने के बाद, प्रायोगिक स्कूल, मैसूरु ने पाँच दशकों से अधिक समय तक जनता की सेवा की है। इसके उद्देश्यों में नवीनतम तकनीकों का उपयोग करके गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना; स्कूल शिक्षा के प्रमुख क्षेत्रों में अनुसंधान की पहचान और विश्लेषण के लिए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु की प्रयोगशाला के रूप में कार्य करना और इंटर्नशिप कार्यक्रम में भागीदारी के माध्यम से भावी अध्यापकों को शिक्षण के अवलोकन, अधिगम और अभ्यास में सक्षम बनाना; तथा पाठ्यक्रम विकास में अध्ययन केंद्र के रूप में कार्य करना सम्मिलित है। उपरोक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए स्कूल ने निम्नलिखित विशिष्ट विशेषताओं को प्राप्त किया है। यह एन.ई.पी. 2020 के तहत 5 + 3 + 3 + 4 पैटर्न पर नर्सरी से कक्षा 12 तक शिक्षा के एक व्यापक कार्यक्रम के रूप में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई., नई दिल्ली) से संबद्ध है। यह सह-शिक्षा स्कूल है जहाँ सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सक्रिय और अनिवार्य भागीदारी के माध्यम से सामंजस्यपूर्ण मानवीय संबंधों और उच्च नैतिक मानक पर बल दिया जाता है। स्कूल में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है और कक्षा 6 से 8 तक त्रिभाषा फॉर्मूला का पालन किया जाता है। कक्षा की क्षमता प्रति वर्ग 35 विद्यार्थियों तक सीमित है। स्कूल में अच्छी तरह से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ और एक पुस्तकालय है जिसमें पुस्तकों, समाचार-पत्रों और बच्चों की पत्रिकाओं का अच्छा संग्रह है। कार्य अनुभव (लकड़ी का काम, कला एवं शिल्प) और कला शिक्षा (संगीत, नृत्य, ड्राइंग एवं पेंटिंग, नाटक और योग) स्कूल कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग हैं। स्कूल में लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग एन.सी.सी. विंग भी है और कक्षा 8वीं और 9वीं के विद्यार्थियों के लिए एन.सी.सी. अनिवार्य है। स्कूल में आधुनिक और अच्छी तरह से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं और स्कूल कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए बुनियादी कंप्यूटर जागरूकता और साक्षरता कार्यक्रम प्रदान करता है। आई.सी.टी. समेकित अध्ययन-अध्यापन के लिए मल्टीमीडिया सक्षम कक्षाएँ हैं।

कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों का नामांकन

सत्र 2023–2024 के लिए प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल में विद्यार्थी नामांकन		
क्रम संख्या	**कक्षा**	**विद्यार्थियों की संख्या**
1.	1	67
2.	2	67
3.	3	70
4.	4	68
5.	5	70
6.	6	69
7.	7	68
8.	8	68
9.	9	68
10.	10	58
11.	11 (विज्ञान) 11 (मानविकी)	24 29

12.	12 (विज्ञान) 12 (मानविकी)	33 22
	कुल	**781**

स्कूल की प्रमुख गतिविधियाँ और उपलब्धियाँ

विद्यार्थियों द्वारा जीते गए पुरस्कार एवं पारितोषिक

- कक्षा 10 के एन. अरुण अधवन ने 26 दिसंबर से 31 दिसंबर 2023 तक पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित 50वीं राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी 2023 में अपना प्रदर्शन प्रस्तुत किया।

खेलकूद एवं पाठ्यचर्या गतिविधियों में विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ

- कक्षा 5 (ए) की रेणुका प्रसाद आर. ने मैसूरु किडाथॉन 2023 में 3 कि.मी. वर्ग में भाग लिया और दूसरा स्थान हासिल किया।
- कक्षा 6 (बी) के नवनिध सूर्या ने विभिन्न राष्ट्रीय स्तर की कराटे प्रतियोगिताओं में भाग लिया और पुरस्कार हासिल किए।
- कक्षा 10 (बी) के किशन आर. ने एथलेटिक्स में धारवाड़ में सी.बी.एस.ई. स्कूल प्रतियोगिताओं में प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर विभिन्न पुरस्कार भी हासिल किए।
- कक्षा 9 (बी) के दैविक ने 17वीं राज्य स्तरीय कराटे प्रतियोगिता में भाग लिया और प्रथम पुरस्कार हासिल किया।
- कक्षा 4 (ए) के आदिकेशव के. सोंथ ने 29वीं राष्ट्रीय स्तर की कराटे चैंपियनशिप 2023 में लड़कों के कलर बेल्ट में तीसरा पुरस्कार हासिल किया।

बोर्ड परीक्षाओं में विद्यार्थियों का प्रदर्शन

कक्षा	उपस्थित विद्यार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
10	62/62	100
12 (विज्ञान)	33/33	100
12 (मानविकी)	29/29	100

7. रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा समन्वित की जा रही शिक्षा मंत्रालय की प्रमुख योजनाएँ

रा.शै.अ.प्र.प. विद्यालय और अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता सुधार के लिए विभिन्न अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम संचालित करती है। इन कार्यक्रमों को अनुमति देने वाली परिषद् की सर्वोच्च शैक्षणिक समिति कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) है। इनके अतिरिक्त, शिक्षा मंत्रालय परिषद् को अपनी विभिन्न योजनाओं और परियोजनाओं को कार्यान्वित करने का कार्य सौंपता है, जो शिक्षा मंत्रालय के कार्यक्रम अनुमोदन बोर्ड (पी.ए.बी.) द्वारा अनुमोदित विद्यालय और अध्यापक शिक्षा से संबंधित हैं। इस योजना को प्रभावी तरीके से कार्यान्वित करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न घटकों को जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं। वर्ष 2023–24 के दौरान परिषद् ने निम्नलिखित योजनाएँ कार्यान्वित कीं।

समग्र शिक्षा के तहत प्रमुख कार्यक्रम— विद्यालयी शिक्षा के लिए समेकित योजना

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के अनुवर्तन के रूप में, वर्ष 2020–21 में विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा और वयस्क शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के विकास की प्रक्रिया आरंभ की गई है।

बुनियादी स्तर से प्राप्त प्रतिक्रिया को ध्यान में रखते हुए, 2020–2022 के दौरान, रा.शै.अ.प्र.प. ने जिला स्तर पर परामर्श और मोबाइल ऐप सर्वेक्षण आयोजित किए। रा.शै.अ.प्र.प. ने विश्वविद्यालयों के सहयोग से 12 परामर्श भी आयोजित किए हैं, जिनमें विश्वविद्यालय के कुलपति, संकाय सदस्यों और विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं नागरिक समाज समूह के सदस्यों ने भी भाग लिया। देशभर में आयोजित 12 परामर्शों में लगभग 8000 प्रतिभागियों ने भाग लिया और ई.सी.सी.ई., विद्यालयी शिक्षा, अध्यापक शिक्षा और वयस्क शिक्षा के लिए प्रतिक्रिया दी। रा.शै.अ.प्र.प. ने आकलन और परीक्षा में इनपुट प्राप्त करने के लिए विद्यालयी शिक्षा बोर्डों के साथ भी परामर्श किया है। 2021 में इस उद्देश्य के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति ने इस पूरी प्रक्रिया को मार्गदर्शन प्रदान किया।

बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) तैयार की गई है। एन.सी.एफ.-एफ.एस. 20 अक्तूबर, 2022 को जारी किया गया और एन.सी.एफ.-एस.ई. 23 अगस्त, 2023 को जारी किया गया। अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार की गई है और इसे अंतिम रूप दिया जा रहा है। वयस्क शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार की जा रही है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का हिंदी भाषा में अनुवाद पूरा हो चुका है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसरण में बुनियादी शिक्षा के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री का विकास किया गया। 3–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए, शिक्षण-अधिगम सामग्री का एक संग्रह 'जादुई पिटारा' का विमोचन 20 फरवरी, 2023 को किया गया। इसके अलावा 6–8 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों अर्थात कक्षा 1 और 2 के लिए पाठ्यपुस्तकें विकसित की गईं और 4 जुलाई, 2023 को विमोचन किया गया।

शिक्षा मंत्रालय द्वारा सौंपे गए कार्य के अनुसार, छह राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों, अर्थात राजस्थान, महाराष्ट्र, पुदुच्चेरी, दिल्ली, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह और ओडिशा में विद्या प्रवेश का कार्यक्रम मूल्यांकन किया गया है, जिसका उद्देश्य कक्षा 2 में एन.ई.पी. 2020 द्वारा अनुशंसित विद्या प्रवेश कार्यक्रम के कार्यान्वयन की देखरेख करना है।

एन.ई.पी. 2020 के बाद के हस्तक्षेप और अनुवर्ती कार्रवाई

एन.ई.पी. 2020 के बाद के हस्तक्षेपों को ध्यान में रखते हुए, जिसमें पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का विकास सम्मिलित है, इस कार्यक्रम की रचना की गई है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा की अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में कक्षा 3–12 के लिए पाठ्यपुस्तकों और अन्य शिक्षण-अधिगम सामग्री के विकास की पूरी प्रक्रिया को समन्वित करने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.) का गठन किया गया था। पूरी प्रक्रिया का मार्गदर्शन करने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा निरीक्षण समिति का भी गठन किया गया। एन.एस.टी.सी. के तहत विषयवार पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए 13 पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह गठित किए गए हैं। एन.एस.टी.सी. को सहयोग देने के उद्देश्य से इस कार्यक्रम के तहत एक कार्यक्रम कार्यालय की स्थापना की गई है। इस कार्यक्रम कार्यालय की भूमिका विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के साथ अनुसंधान और समन्वय सहायता प्रदान करना है। इस कार्यक्रम के तहत एन.एस.टी.सी. को सहायता प्रदान करने के अलावा रा.शै.अ.प्र.प. और राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन और हस्तक्षेप का भी अनुसरण किया जा रहा है। एन.एस. टी.सी. द्वारा शैक्षणिक सत्र 2024–25 के लिए कक्षा 3 और 6 के लिए पाठ्यपुस्तकें लाने का निर्णय लिया गया।

बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) को सशक्त करना

बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) को सशक्त बनाने के लिए, शैक्षणिक सत्र 2023–24 के दौरान, इस परियोजना में पहलों की एक विस्तृत शृंखला शुरू की गई। इन पहलों में शिक्षकों और प्रशिक्षकों के लिए शैक्षणिक मार्गदर्शन और क्षमता निर्माण कार्यक्रम और विविध शैक्षिक संसाधनों का विकास सम्मिलित है। इन संसाधनों में प्रिंट और गैर-प्रिंट सामग्री, शैक्षिक खिलौने, ई-सामग्री, वीडियो और अन्य अनेक सामग्रियाँ सम्मिलित हैं, जो शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए उपयुक्त और लाभकारी हैं। इसके अतिरिक्त इन्फोग्राफिक्स, कार्यपुस्तिकाएँ, मूल्यांकन सामग्री और निर्देशात्मक वीडियो जैसे आकर्षक ई-सामग्री के विकास के माध्यम से डिजिटल शिक्षण अनुभवों को बढ़ाने की दिशा में गहन प्रयास किया गया। इसके साथ ही, एक आवश्यक आयाम के रूप में इसमें बालवाटिका से लेकर कक्षा 3 तक के लिए कार्यपुस्तिकाओं (लक्ष्य 3, निपुण भारत) के रूप में सहायक सामग्री को डिजाइन और विकसित करना सम्मिलित था। इसका उद्देश्य साक्षरता और संख्यात्मकता के

बुनियादी स्तंभों को सशक्त करना था तथा शिक्षकों और शिक्षार्थियों दोनों के लिए एक समृद्ध शैक्षिक परिदृश्य का पोषण करना था।

प्रारंभिक स्तर में वंचित समूहों और सुभेद्य बच्चों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अधिगम प्रतिफल आधारित संसाधन

एन.ई.पी. 2020 में प्रारंभिक स्तर में विभिन्न विषयों के एकीकरण के साथ बहु-विषयक दृष्टिकोण का उपयोग करके 21वीं सदी के कौशल की प्राप्ति के साथ-साथ उनके समग्र विकास की परिकल्पना की गई है। महामारी के कारण पिछड़े वंचित वर्ग के बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने और उन्हें समग्र तरीके से विभिन्न पाठ्यक्रम क्षेत्रों के अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए एक संसाधन पूल बनाया जा रहा है। इस वर्ष कुल 14 वीडियो कार्यक्रम विकसित किए गए। इन वीडियों के लिए स्क्रिप्ट को विकसित किया गया, समीक्षा की गई और संगत चित्रण, ग्राफिक्स, अंग्रेजी, हिंदी में वॉयस-ओवर के साथ अंतिम रूप दिया गया और सांकेतिक भाषा का उपयोग किया गया। एन.ई.पी. 2020 के दृष्टिकोण के अनुसार गणित, भाषा, कला शिक्षा, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा, नैतिकता और भारतीय ज्ञान प्रणालियों को एकीकृत करते हुए एनिमेटेड अधिगम प्रतिफल आधारित संसाधन बनाए गए।

विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल (निष्ठा)

निष्ठा के अंतर्गत अब तक चार श्रेणियों के तहत कार्यक्रम प्रारंभ किए गए हैं। वर्ष 2022–23 में, निष्ठा (माध्यमिक) को लगभग 7.5 लाख माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों द्वारा पूरा किया गया। ई.सी.सी.ई. के लिए निष्ठा का शुभारंभ 29 जुलाई, 2022 को किया गया और इसमें बी.आर.सी/सी.आर.सी और अन्य प्रमुख संसाधन व्यक्तियों ने भाग लिया। एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के परिप्रेक्ष्य के अनुसार निष्ठा-विद्यालय प्रशासकों और व्यावसायिक शिक्षा के लिए प्रक्रियाधीन हैं। राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के संबंधित प्रतिनिधियों उन्मुखीकरण मॉड्यूल तैयार करने हेतु लिए सी.आई.ई.टी., पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. और एन.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प. के सामग्री विभागों के साथ विभिन्न कार्यशालाएँ और बैठकें आयोजित की गईं। निष्ठा विभिन्न कार्यक्षेत्रों के माध्यम से स्कूल प्रमुखों और अध्यापकों के बीच व्यापक व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। निष्ठा ई.सी.सी.ई. (2 भाषाओं— हिंदी और अंग्रेजी में 6 पाठ्यक्रम) और एफ.एल.एन. पाठ्यक्रम (3 भाषाओं— अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू में 12 पाठ्यक्रम) के एक और बैच के पुन: प्रारंभ होने से क्रमशः 93,160 और 41,014 शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में सहायता मिली है।

स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल (निष्ठा)— समतामूलक और समावेशी शिक्षा

समतामूलक और समावेशी शिक्षा पर स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल (निष्ठा) कार्यक्रम का आयोजन सामान्य विद्यालयों के शिक्षकों और अन्य पदाधिकारियों को संवेदनशील बनाने और प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से किया गया था, ताकि सामान्य विद्यालयों में नामांकित दिव्याँग बच्चों और वंचित समूहों के बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। सामान्य शिक्षकों के लिए अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूरु और शिलांग में स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के माध्यम से पाँच क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए जाने निर्धारित किए गए हैं, जिनमें राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों, के.वी.एस. आदि के संसाधन व्यक्तियों, मास्टर प्रशिक्षकों को उनके संबंधित राज्यों के अधिकार क्षेत्र में सम्मिलित किया जाएगा। 18–22 दिसंबर 2023 को आर.आई.ई. भुवनेश्वर में, 8–12 जनवरी 2024 को आर.आई.ई. मैसूरु में, 29 जनवरी–2 फरवरी 2024 को आर.आई.ई. भोपाल में, 5–9 फरवरी 2024 को आर.आई.ई. अजमेर में तथा 19–23 फरवरी 2024 को एन.ई.आर.ई.ई., शिलांग में कुल 339 प्रतिभागियों को समतामूलक और समावेशी शिक्षा पर प्रशिक्षित किया गया।

क्र. सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान एवं दिनांक
1.	स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल (निष्ठा) — समतामूलक और समावेशी शिक्षा	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 18–22 दिसंबर, 2023 आर.आई.ई., मैसूरु 8–12 जनवरी, 2024 आर.आई.ई., भोपाल 29 जनवरी – 02 फरवरी, 2024 आर.आई.ई., अजमेर 5–9 फरवरी, 2024 एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग 19–23 फरवरी, 2024

देश के पूर्वी क्षेत्र के अध्यापकों के लिए समानता और समावेशी शिक्षा पर 18–22 दिसंबर, 2023 के दौरान पाँच दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें ओडिशा, पश्चिम बंगाल, बिहार और झारखंड राज्यों के साथ-साथ अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के संघ राज्य क्षेत्र सम्मिलित थे। यह कार्यक्रम रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विभिन्न आर.आई.ई. में आयोजित इसी तरह की पहल की एक शृंखला थी। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समतामूलक और समावेशी शिक्षा तथा इसके कार्यान्वयन पर के.आर.पी. को समृद्ध और सशक्त बनाना था, ताकि अपने-अपने राज्यों में प्रतिभागियों को समृद्ध बनाना जारी रखा जा सके। कार्यक्रम में सरकारी विद्यालयों, सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों और क्षेत्र के सी.बी.एस.ई., के.वी.एस., एन.वी.एस., के.जी.बी.वी., ई.एम.आर. के अंतर्गत आने वाले विद्यालयों से 49 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के दौरान हस्तक्षेपों के लाभों का पता लगाने के लिए एक प्रश्नावली का प्रयोग करके एक प्री-टेस्ट और पोस्ट-टेस्ट आयोजित किया गया था, जिसे आर.सी.आई. और रा.शै.अ.प्र.प. में मॉड्यूल विकसित करने वाले विशेषज्ञों की टीम द्वारा तैयार किया गया था। यह पाया गया कि निष्ठा कार्यक्रम के आयोजन से प्रतिभागियों के ज्ञान और समझ के स्तर पर पर्याप्त सुधार आया।

निष्ठा विद्यालय प्रशासक

शैक्षिक प्रणाली और एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन में विद्यालय प्रशासकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विद्यालय प्रशासकों के लिए निष्ठा को विद्यालय प्रशासकों के दृष्टिकोण से एन.ई.पी. को कार्यान्वित करने के उद्देश्य से डिजाइन किया गया है। एन.ई.पी. 2020 में परिकल्पित सुधारों को सुविधाजनक बनाने के लिए, विभाग ने शैक्षिक प्रशासकों के लिए एक कार्यक्रम विकसित करने के लिए समन्वय किया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विभिन्न प्रशासनिक स्तरों पर विद्यालयों में परिवर्तन लाने के लिए शैक्षणिक प्रणाली में प्रमुख सुधारों को समझना, शैक्षणिक पारिस्थितिकी तंत्र के विकास को सुगम बनाना, प्रभावी विद्यालय प्रशासन के महत्व को समझना, सामाजिक विभाजन को पाटने के लिए एक न्यायसंगत और समावेशी विद्यालय प्रणाली सुनिश्चित करना, विद्यालय प्रणाली में मौजूदा बाधाओं की पहचान करना एवं समाधान और साक्ष्य आधारित निर्णय लेने के कौशल की खोज करना है। इस कार्यक्रम के ग्राहक विद्यालय प्रशासक, हेडमास्टर, विद्यालयों के प्रधानाचार्य, डी.आई.ई.टी, एस.सी.ई.आर.टी., ब्लॉक और क्लस्टर स्तर के केंद्रों के प्रशासक होंगे। इस कार्यक्रम में छह मॉड्यूल हैं— एन.ई.पी. 2020 के नजरिए से विद्यालय प्रशासक; शैक्षिक प्रशासकों के लिए नेतृत्व: एक शैक्षणिक पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना; विद्यालय प्रशासन और विद्यालय समुदाय संबंध; विद्यालयों के लिए साक्ष्य-आधारित निर्णय लेना; आई.सी.टी. पहल, प्रभावी विद्यालय प्रशासन, समावेशी न्यायसंगत विद्यालय प्रणाली; विद्यालय शिक्षा में आकलन; पाठ्यक्रम साक्षरता, अध्यापकों या प्रधान अध्यापकों पाठ्यचर्या साक्षरता का व्यावसायिक विकास और मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण।

निष्ठा शैक्षिक प्रौद्योगिकी

निष्ठा अपने पूरक के रूप में शैक्षिक प्रौद्योगिकी स्तर 1 पर एन.आर.जी. (राष्ट्रीय संसाधन समूह) की क्षमता निर्माण के उद्देश्य से चार चरणों में आमने-सामने कार्यशालाओं की एक शृंखला आयोजित की गई। निष्ठा शैक्षिक

प्रौद्योगिकी स्तर 1 कार्यशालाओं के आरंभ से पहले, निष्ठा शैक्षिक प्रौद्योगिकी स्तर 1 के 12 मॉड्यूल लिखने के लिए आई.सी.टी. विशेषज्ञों के साथ समन्वय किया गया था। इन निष्ठा शैक्षिक प्रौद्योगिकी स्तर 1 प्रशिक्षण सत्रों में 189 एन.आर.जी. ने भाग लिया, जिससे व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने में गहरी समझ और दक्षता विकसित हुई। एन.ई.पी. 2020 के आलोक में निष्ठा प्राथमिक के 18 पाठ्यक्रमों की समीक्षा की गई, ताकि पाठ्यक्रम को वर्तमान अनुशंसाओं के साथ संरेखित किया जा सके। माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रमों का विकास प्रारंभ किया गया।

निष्ठा कौशल (व्यावसायिक शिक्षा) मॉड्यूल

निष्ठा (स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल) परियोजना भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा प्रारंभ की गई एक व्यापक अध्यापक प्रशिक्षण और विकास पहल है। इसका प्राथमिक उद्देश्य निरंतर व्यावसायिक विकास के माध्यम से स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की क्षमताओं को बढ़ाकर विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है। यह परियोजना अध्यापकों और विद्यालय नेताओं को उनके कौशल और ज्ञान का निर्माण करने के लिए उच्च-गुणवत्ता वाला प्रशिक्षण प्रदान करने पर केंद्रित है। इसमें कार्यशालाएँ, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और शिक्षण, नेतृत्व और विद्यालय प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं को कवर करने वाली संसाधन सामग्री सम्मिलित हैं। संस्थान ने निष्ठा कार्यक्रम के तहत, शिक्षकों के लिए ऑनलाइन क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए अंग्रेजी में शिक्षा के विभिन्न चरणों के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर पाठ्यक्रम और वीडियो विकसित किए हैं, जो एकीकृत अध्यापक प्रशिक्षण के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक कदम है। संस्थान इन पाठ्यक्रमों का हिंदी और उर्दू भाषाओं में भी अनुवाद करेगा।

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय का राष्ट्रीय मूल्यांकन अध्ययन (के.जी.बी.वी. 2022–23)

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय (के.जी.बी.वी.) का लक्ष्य वंचित समूहों की बालिकाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों (एस.ई.डी.जी.) की बालिकाओं को मुख्यधारा में लाना है। के.जी.बी.वी. को जवाहर नवोदय विद्यालयों के बराबर लाने की संसदीय स्थायी समिति की अनुशंसा के आधार पर, 2022 में कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय (के.जी.बी.वी.) का तृतीय पक्ष राष्ट्रीय मूल्यांकन अध्ययन का कार्य शिक्षा मंत्रालय द्वारा रा.शै.अ.प्र.प. को दिया गया था। यह अध्ययन एक मिश्रित विधि दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए किया जाने वाला एक सर्वेक्षण था, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार से डेटा एकत्र किया गया और उनका विश्लेषण किया गया था। अन्य विभागों और संगठनों के विशेषज्ञों के सहयोग से 11 अनुसंधान उपकरण विकसित किए गए। इस अध्ययन के लिए 30 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्र को कवर करने वाले 254 के.जी.बी.वी. को नमूने के रूप में चुना गया था। उत्तर प्रदेश के दो के.जी.बी.वी. में एक प्रायोगिक अध्ययन आयोजित किया गया था। इसके बाद पाँच आर.आई.ई. और जे.एन.वी. के सहयोग से सभी 30 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्र में डेटा संग्रह किया गया। देशभर के विभिन्न के.जी.बी.वी. के दौरे के दौरान क्षेत्रीय अन्वेषकों के विचारों पर एक ऑनलाइन राष्ट्रीय वेबिनार भी आयोजित किया गया था। राष्ट्रीय कोर टीम ने डेटा विश्लेषण पूरा किया और रिपोर्ट तैयार की। अध्ययन की अंतिम रिपोर्ट शिक्षा मंत्रालय को सौंप दी गई है। के.जी.बी.वी. में नियमित और पूर्णकालिक शिक्षण और प्रशासनिक कर्मचारियों की कमी है। इस अध्ययन में पाया गया कि कम वेतन, रोजगार की असुरक्षा, के.जी.बी.वी. के दूरदराज और एकाकी स्थानों के कारण कर्मचारियों को प्रतिधारित करना एक बड़ी चुनौती है। के.जी.बी.वी. को सशक्त करने के लिए अवसंरचना पर ध्यान देने की आवश्यकता है जैसे कि कमरों या शयनगृहों के आकार के लिए मानदंड स्थापित करना, अध्यापकों और सहायक कर्मचारियों के लिए अलग रहने की जगह, कार्यात्मक शौचालय और

नियमित जलापूर्ति, बालिकाओं की सुरक्षा और संरक्षा, विज्ञान तथा कंप्यूटर प्रयोगशालाओं का प्रावधान, पौष्टिक आहार, चारदीवारी की मरम्मत आदि। सभी स्तरों पर समय पर निधि वितरण करने की सुनिश्चिता हेतु के लिए एक प्रभावी तंत्र विकसित करने की आवश्यकता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि के.जी.बी.वी. की बालिकाओं को उच्च-स्तरीय शिक्षा मिले, बेहतर नियोजन, उचित निधि वितरण और सदुपयोग आवश्यक है।

के.जी.बी.वी. में पुस्तकालय से अध्ययन करती बालिकाएँ

शिक्षकों के मार्गदर्शन में कंप्यूटर का उपयोग करती के.जी.बी.वी. की बालिकाएँ

राज्यस्तरीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी (आर.एस.बी.वी.पी.)

प्रदर्शनी का उद्देश्य बच्चों को उनकी स्वाभाविक जिज्ञासा, रचनात्मकता, नवाचार और आविष्कारशीलता को प्रोत्साहित करने हेतु एक मंच प्रदान करना था। इसका उद्देश्य बच्चों को हमारे आस-पास मौजूद विज्ञान और गणित से जुड़ने, ज्ञान प्राप्त करने और सीखने की प्रक्रिया को भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण से जोड़कर अनेक समस्याओं को हल करने के लिए प्रोत्साहित करना है। इसके अतिरिक्त, प्रदर्शनी पर्यावरण संबंधी मुद्दों और चिंताओं के बारे में जागरूकता बढ़ाती है और बच्चों को उनकी रोकथाम और शमन के लिए नवाचारी विचारों को विकसित करने के लिए प्रेरित करती है।

वर्ष 2023-24 के लिए बच्चों के लिए राज्य स्तरीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी (आर.एस.बी.वी.पी.) और राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी (आर.बी.वी.पी.)-2024 का विषय था: 'समाज के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी', और उप-विषय थे स्वास्थ्य, जीवन (पर्यावरण के लिए जीवन शैली), कृषि, संचार और परिवहन तथा कंप्यूटेशनल सोच। विभाग ने इस शैक्षणिक वर्ष में एक सलाहकार समिति की बैठक और दो राज्य समन्वयक बैठकें आयोजित कीं। अब तक 22 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों ने रा.शै.अ.प्र.प. से उत्प्रेरक अनुदान लिया है। कुछ राज्यों ने राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की है और अन्य यह आयोजन करने की प्रक्रिया में हैं।

राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी 2023 (आर.बी.वी.पी. 2023)

रा.शै.अ.प्र.प. प्रत्येक वर्ष बच्चों को उनकी स्वाभाविक जिज्ञासा और आविष्कारशीलता को आगे बढ़ाने, रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने और बच्चों और आम जनता के बीच विज्ञान को लोकप्रिय बनाने हेतु एक मंच प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन करती है। इस वर्ष 50वीं राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी (आर.बी.वी.पी.)-2023 का आयोजन 26–31 दिसंबर, 2023 तक महाराष्ट्र सरकार के स्कूली शिक्षा विभाग के सहयोग से पुणे (महाराष्ट्र) में किया गया। आर.बी.वी.पी.-2023 का उद्घाटन महाराष्ट्र के राज्यपाल माननीय रमेश बैस ने श्री शिव छत्रपति खेल परिसर, महालुंगे, बालेवाड़ी, पुणे, महाराष्ट्र में दीप प्रज्वलित करके किया। इस उद्घाटन समारोह में महाराष्ट्र के उप-मुख्यमंत्री अजीत दादा पवार, शिक्षा मंत्री दीपक केसरकर और चंद्रकांत दादा पाटिल, रा.शै.अ.प्र.प. के संयुक्त निदेशक श्रीधर श्रीवास्तव भी मौजूद थे। आर.बी.वी.पी.-2023 का विषय 'प्रौद्योगिकी और खिलौने' था, जिसके सात उप-विषय थे—

1. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी में उन्नति
2. पर्यावरण के अनुकूल सामग्री
3. स्वास्थ्य और स्वच्छता
4. परिवहन और नवाचार
5. पर्यावरण संबंधी चिंताएँ
6. वर्तमान नवाचार के साथ ऐतिहासिक विकास
7. हमारे लिए गणित

इस प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए कुल 172 वैज्ञानिक प्रदर्शन आमंत्रित किए गए थे। ये प्रदर्शन 27 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों और अन्य संगठनों से थे, जिनमें से 77 ग्रामीण क्षेत्रों से, 85 शहरी क्षेत्रों से, 4 अर्ध-शहरी क्षेत्रों से और 1 आदिवासी क्षेत्र से थे। इस कार्यक्रम में मेजबान राज्य महाराष्ट्र की संस्कृति को प्रदर्शित करने वाला एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्मिलित था। इसके अतिरिक्त विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा आश्चर्यजनक वैज्ञानिक तथ्य, स्वास्थ्य और स्वच्छता, दिन-प्रतिदिन की समस्याओं को हल करने के लिए आधारभूत नवाचार और महामारी के रूप में इन्फ्लूएंजा जैसे विषयों पर लोकप्रिय विज्ञान वार्ता भी सम्मिलित थी। अन्य गतिविधियों में स्काई वॉच, संगीत प्रदर्शन, एक विज्ञान प्रश्नोत्तरी, एक विज्ञान नाट्य और दे विभिन्न राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों से आए विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत लोकनृत्यों और लोकगीतों का सांस्कृतिक प्रदर्शन जैसी गतिविधियाँ भी की गई थीं।

समापन समारोह 30 दिसंबर, 2023 को आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में रा.शै.अ.प्र.प. के प्रभारी सचिव डॉ. प्रत्यूष कुमार मंडल और एस.सी.ई.आर.टी. के निदेशक अमोल येडगे उपस्थित थे। अगले दिन 31 दिसंबर, 2023 को सभी प्रतिभागियों के लिए भ्रमण का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह (आर.ए.एस.)

देश के विभिन्न राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के विद्यालयों में उनके शैक्षणिक कैलेंडर के आधार पर नवंबर 2023 से फरवरी 2024 के मध्य 'राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह' (आर.ए.एस.) नामक विज्ञान को समर्पित गतिविधियों की एक सप्ताह की शृंखला मनाई गई। आर.ए.एस. 2023–24 का विषय 'खाद्य पदार्थों में मिलावट की पहचान' था, जिसके लिए रा.शै.अ.प्र.प. ने एक संरचित दिशानिर्देश विकसित किया, जिसे राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों में स्कूल शिक्षा विभागों के पदाधिकारियों को प्रसारित किया गया। ये कार्यक्रम रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट पर अपलोड किए गए और आमने-सामने की बैठक के दौरान राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के साथ साझा किए गए। खाद्य पदार्थों में मिलावट की पहचान करने के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के लिए 15 अलग-अलग गतिविधियाँ तैयार की गईं। इस दौरान विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों की सहायता से रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा दिए गए दिशानिर्देशों के अनुसार गतिविधियाँ कीं। प्रतिफल ऑनलाइन प्रस्तुत करने के लिए, एक गूगल फॉर्म का प्रावधान किया गया था, जहाँ विद्यालय कार्यक्रमों की तस्वीरों के साथ डेटा अपलोड कर सकते थे। इस कार्यक्रम में 31 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के 1,651 विद्यालयों ने भाग लिया, जिनमें से 46 प्रतिशत (766 विद्यालय) ग्रामीण क्षेत्रों से थे, 43 प्रतिशत (702 विद्यालय) शहरी क्षेत्रों से थे और 11 प्रतिशत (183 विद्यालय) अर्ध-शहरी क्षेत्रों से थे। देशभर के कुल 1,651 विद्यालयों ने इन गतिविधियों में हिस्सा लिया, जिनमें से 352 पी.एम. श्री विद्यालय थे और 1,299 अन्य विद्यालय थे। देशभर के विभिन्न क्षेत्रों के विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा कुल 13,668 नमूनों का विश्लेषण किया गया, जिसमें विभिन्न खाद्य पदार्थों में मिलावट की मात्रा 35 से 65 प्रतिशत तक पाई गई।

कला उत्सव 2023

स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग (डी.एस.ई. एंड एल.), शिक्षा मंत्रालय (एम.ओ.ई.), भारत सरकार (जी.ओ.आई.) की एक पहल कला उत्सव है, 2023 में नई दिल्ली में मनाया गया। इस सांस्कृतिक उत्सव में 34 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के 669 विद्यार्थियों ने भाग लिया, साथ ही के.वी.एस. और एन.वी.एस. ने भी भाग लिया (336 छात्राओं और 333 छात्रों) जिन्होंने भारतीय कला रूपों की यादगार छवियों और दृश्यों का प्रदर्शन किया। कला में 10 श्रेणियों में प्रस्तुतियाँ थीं— (क) शास्त्रीय गायन संगीत, (ख) लोक गायन संगीत, (ग) ताल वाद्य, (घ) मधुर वाद्य, (ङ) शास्त्रीय नृत्य, (च) लोक नृत्य, (छ) रंगमंच, (ज) दृश्य कला–2डी, (झ) दृश्य कला–3डी, (ञ) स्वदेशी खिलौना और डिजाइन।

कार्यक्रम दो अलग-अलग स्थानों, अर्थात राष्ट्रीय बाल भवन (एन.बी.बी.) और गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति में आयोजित किया गया। निर्णायक मंडल के 30 सदस्यों ने प्रस्तुति को मंत्रमुग्ध कर देने वाला पाया और प्रतिभागियों की प्रशंसा की।

शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने राज्य मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी की उपस्थिति में राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली में स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता मंत्रालय के अधिकारियों के साथ इस महोत्सव का उद्घाटन किया। समापन समारोह राष्ट्रीय बाल भवन में आयोजित किया गया और ये पुरस्कार राज्य मंत्री शिक्षा मंत्रालय–स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता, डॉ. सुभाष सरकार और राज्य मंत्री, शिक्षा मंत्रालय–स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता, डॉ. राजकुमार रंजन सिंह द्वारा प्रदान किए गए।

श्री धर्मेंद्र प्रधान, शिक्षा मंत्री, भारत सरकार के साथ कला उत्सव के प्रतिभागी

परीक्षा पे चर्चा 2024

कला उत्सव के राष्ट्रीय पुरस्कार विजेताओं को 29 जनवरी, 2024 को भारत मंडपम् में परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था। प्रदर्शन कला के पुरस्कार विजेताओं ने 'भारत मंडपम्' में संगीत और नृत्य की प्रस्तुति दी। दृश्य कला पुरस्कार विजेताओं ने 'भारत मंडपम्' के हॉल में मिट्टी, कागज और धातु की वस्तुओं से बनी कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगाई। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इन विजेताओं से संवाद किया और उनकी उत्कृष्ट प्रतिभा की प्रशंसा भी की। 54 बच्चों ने गणतंत्र दिवस परेड और 'बीटिंग द रिट्रीट' कार्यक्रम देखा।

समग्र शिक्षा योजना के सोशल ऑडिट पर मास्टर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण

'समग्र शिक्षा' भारत सरकार की एक केंद्र-प्रायोजित प्रमुख योजना है, जिसमें सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान और अध्यापक शिक्षा जैसी अन्य योजनाएँ सम्मिलित हैं। यह पूर्व-प्राथमिक से लेकर उच्चतर

माध्यमिक स्तर तक सभी बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्रोत्साहित करती है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2021 में सार्वजनिक जवाबदेही बढ़ाने और कार्यक्रम कार्यान्वयन में समानता और न्याय के मुद्दों को हल करने के लिए, समग्र शिक्षा का सोशल ऑडिट प्रस्तावित किया गया था। सोशल ऑडिट में सामाजिक मुद्दों का लेखा-जोखा सम्मिलित होता है, जिसमें जमीनी स्तर की समस्याएँ सम्मिलित होती हैं। इससे समयबद्ध तरीके से ऐसे मंचों के माध्यम से हितधारकों की लोकतांत्रिक भागीदारी को सुगम बनाया जाता है। यह तथ्य खोजने की प्रक्रिया है, न कि दोष खोजने की प्रक्रिया। शोध प्रमाणित करते हैं कि यह योजना की निगरानी में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है, जिससे योजना का कार्यान्वयन की अधिक सुदृढ़ होता है।

सोशल ऑडिट के संचालन हेतु, राज्यों में विशिष्ट भूमिका और जिम्मेदारियों के साथ टीमें बनाई गई हैं। राज्य स्तर पर, सोशल ऑडिट इकाई सोशल ऑडिट के निर्वहन और संचालन के लिए जिम्मेदार है। राज्य को सोशल ऑडिट इकाई के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करना होगा और फिर डी.टी.ई., रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित तीन मॉड्यूलों के आधार पर मास्टर प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करना होगा।

अध्यापक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. ने शिक्षा मंत्रालय द्वारा दिए गए दिशानिर्देशों के आधार पर 3 मॉड्यूल विकसित किए हैं और उनके द्वारा दी गई तिथि पर उन्हें राज्य द्वारा चुने गए मास्टर प्रशिक्षकों की क्षमता निर्माण के लिए सत्र आयोजित करने का दायित्व सौंपा गया है। क्षमता निर्माण का आयोजन ओडिशा, झारखंड, गुजरात, गोवा, अंडमान एवं निकोबार, कर्नाटक और मेघालय जैसे राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों में किया गया है।

कार्यक्रम का शीर्षक	कार्यक्रम गतिविधियाँ
समग्र शिक्षा योजना के सोशल ऑडिट पर मास्टर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण	• ओडिशा के मास्टर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण 6 अक्तूबर, 2023 को भुवनेश्वर में किया गया। • झारखंड के मास्टर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण 4 जनवरी, 2024 को रांची में किया गया। • गुजरात के मास्टर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण 12 फरवरी, 2024 को अहमदाबाद में किया गया। • गोवा के मास्टर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण 20 फरवरी, 2024 को पोंडा में किया गया। • अंडमान एवं निकोबार के मास्टर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण 4 मार्च, 2024 को पोर्ट ब्लेयर में किया गया। • कर्नाटक के मास्टर प्रशिक्षकों 20 मार्च, 2024 को बेंगलुरु में किया होगा। • मेघालय के मास्टर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण 9 मई, 2024 को शिलांग में किया गया।

पी.एम. श्री योजना (पी.एम.— स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया) के प्रधानाचार्यों/प्रधान अध्यापकों का अभिविन्यास कार्यक्रम

पी.एम. श्री योजना (पी.एम. स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया) 7 सितंबर, 2022 को शुरू की गई एक केंद्र प्रायोजित योजना (सी.एस.एस.) है, जिसका उद्देश्य मौजूदा विद्यालयों को गुणात्मक रूप से सशक्त करना और *राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020* के कार्यान्वयन को प्रदर्शित करना और उन्हें समय के साथ अनुकरणीय विद्यालय बनाना है। इस योजना का मुख्य फोकस देशभर में केंद्र सरकार/राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकार के स्थानीय निकायों द्वारा प्रबंधित 14,500 से अधिक विद्यालयों की पहचान करना और उन्हें सुदृढ़ बनाना है, जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी स्वागत और देखभाल अनुभव करता है, जहाँ एक सुरक्षित और प्रेरक सीखने का परिवेश मौजूद है, जहाँ सीखने के व्यापक अनुभव प्रदान किए जाते हैं, और जहाँ सभी विद्यार्थियों के लिए अच्छी भौतिक अवसंरचना और सीखने के लिए उपयुक्त संसाधन उपलब्ध

हैं। इन विद्यालयों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और सभी विद्यार्थियों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए विकसित किया गया है। इन विद्यालयों में आधुनिक सुविधाओं का बेहतरीन उपयोग किया जाएगा। ये विद्यालय एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन को उसकी वास्तविक भावना में प्रदर्शित करने जा रहे हैं।

एन.आई.ई., नई दिल्ली में पी.एम. श्री विद्यालयों के प्रधानाचार्यों/प्रधान अध्यापकों के लिए क्रमशः 16–18 अक्तूबर, 19–21 अक्तूबर, 26–28 अक्तूबर और 30 अक्तूबर–1 नवंबर, 2023 तक क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए। कुल 421 प्रतिभागियों को एन.ई.पी. 2020, एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के विजन और दिशानिर्देश, डिजिटल शिक्षा पहल, पी.एम. श्री विद्यालयों में नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देना, पी.एम. श्री विद्यालयों में नेतृत्व कौशल का विकास, कौशल पहल को बढ़ावा देना, विद्यालय प्रशासन के लिए गुणवत्ता मानदंड और 'फिट इंडिया' अभियान पर अभिविन्यास प्रदान किया गया। ये सत्र शिक्षा मंत्रालय, रा.शै.अ.प्र.प., एन.आई.ई.पी.ए., कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय, ए.आई.सी.टी.ई., युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय, एडोब इंडिया और शिक्षा-लोकम के विभिन्न संसाधन व्यक्तियों द्वारा संचालित किए गए थे।

विद्यालयों में ई.एस.डी. और जी.सी.ई.डी. के पाठ्यक्रम एकीकरण और कार्यान्वयन के लिए दिशानिर्देश और कार्ययोजना

विद्यालयी पाठ्यक्रम में सतत विकास के लिए शिक्षा (ई.एस.डी.) और वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जी.सी.ई.डी.) विषयों को एकीकृत करने के उद्देश्य से दिशानिर्देशों और कार्ययोजना के विकास पर पी.ए.बी. द्वारा स्वीकृत परियोजना को प्रारंभ किया गया है, ताकि एस.डी.जी. लक्ष्य 4.7 को प्राप्त किया जा सके। यह *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के दृष्टिकोण के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य शिक्षार्थियों के अंदर ज्ञान, कौशल, मूल्य और स्वभाव विकसित करना है, जो मानवाधिकारों, सतत विकास और जीवन और वैश्विक कल्याण के प्रति एक उत्तरदायी प्रतिबद्धता का समर्थन करते हैं।

इस परियोजना के उद्देश्यों में विद्यालय पाठ्यक्रम में जी.सी.ई.डी. और ई.एस.डी. विषयों को सम्मिलित करने के लिए विचारों को संकलित करना सम्मिलित है। इसमें विभिन्न विषयों और स्तरों पर पाठ्यचर्या सामग्री और अभ्यासों में इन विषयों को एकीकृत करने के लिए उदाहरणों की पहचान करना और उन्हें विकसित करना सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त परियोजना का उद्देश्य दिशानिर्देश और एक कार्ययोजना तैयार करना है जिसमें विद्यालयों में जी.सी.ई.डी. और ई.एस.डी. के निर्बाध एकीकरण और कार्यान्वयन के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रदान किए जाते हैं, जिससे विभिन्न शिक्षण और सीखने के संदर्भों में उनकी प्रयोज्यता सुनिश्चित होती है।

हितधारकों से अनेक परामर्श बैठकों के माध्यम से विविध दृष्टिकोण एकत्र किए गए हैं, जिससे नीति निर्माताओं, पाठ्यक्रम विकासकों, अध्यापको, अध्यापक प्रशिक्षकों, प्रश्न पत्र निर्माताओं और परीक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों सहित विभिन्न हितधारकों के लिए दिशानिर्देशों के विकास को आकार मिला है, सभी स्तरों (बुनियादी, प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक) और विषयों के लिए उदाहरण दिशानिर्देशों में सम्मिलित किए गए हैं। पाठ्यक्रम में ई.एस.डी. और जी.सी.ई.डी. विषयों के एकीकरण से ज्ञान प्रदान करने और शिक्षार्थियों के अंदर वैश्विक स्थिरता और नागरिकता के प्रति उत्तरदायित्व की भावना पैदा करने की उम्मीद है।

मनोदर्पण प्रकोष्ठ

मनोदर्पण, शिक्षा मंत्रालय (एम.ओ.ई.), भारत सरकार की 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के अंतर्गत एक पहल है, जिसका उद्देश्य कोविड-19 के दौरान और उसके बाद विद्यार्थियों, अध्यापकों और परिवारों को मानसिक स्वास्थ्य एवं भावनात्मक कल्याण के लिए मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करना है। इसका उद्घाटन 21 जुलाई, 2020 को शिक्षा मंत्री द्वारा किया गया था।

'मनोदर्पण' पहल के तहत परिकल्पित कार्य को सुविधाजनक बनाने के लिए, 14 अक्तूबर, 2020 को रा.शै.अ.प्र.प. में मनोदर्पण प्रकोष्ठ की स्थापना की गई। इस प्रकोष्ठ में डी.ई.पी.एफ.ई., एन.आई.ई., नई दिल्ली और अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूरु और उमियम (मेघालय) में आर.आई.ई. के संकाय सदस्य सम्मिलित हैं। मनोदर्पण के व्यापक उद्देश्यों में विद्यार्थियों की मानसिक कल्याण की चिंताओं के बारे में अध्यापकों, अभिभावकों और अन्य हितधारकों के बीच संवेदनशीलता और समझ विकसित करना और इन चिंताओं को दूर करने में विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों का समर्थन करना सम्मिलित है।

मनोदर्पण वेबपेज (https://manodarpan.education.gov.in/)

मनोदर्पण प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प. अपने उद्देश्यों को कार्यान्वित करने की दिशा में अनके गतिविधियाँ कर रहा है। मनोदर्पण वेबपेज (https://manodarpan.education.gov.in/) में मानसिक स्वास्थ्य का समर्थन करने के लिए विभिन्न संसाधन हैं। हितधारकों तक पहुँचने की दिशा में एक और कदम राष्ट्रीय टोल-फ्री टेली-हेल्पलाइन सेवा (+91-844-844-0632) है। यह हेल्पलाइन जुलाई 2020 से सप्ताह के सभी दिनों में सुबह 8:00 बजे से रात 8:00 बजे तक प्रशिक्षित परामर्शदाताओं के माध्यम से विद्यार्थियों, अभिभावकों और अध्यापकों सहित कॉल करने वालों को सहायता प्रदान कर रही है।

'सहयोग' और 'परिचर्चा'

मानसिक स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के मुद्दों पर विद्यार्थियों (कक्षा 6–12) के लिए सोमवार से शुक्रवार (शाम 5:00 बजे से सुबह 5:30 बजे तक) विभिन्न क्षेत्रों में अभ्यास करने वाले परामर्शदाताओं के साथ लाइव अंत:क्रियात्मक सत्र 'सहयोग' आयोजित किए जाते हैं। क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ हर शुक्रवार (दोपहर 2:30 बजे से शाम 4:00 बजे तक) वेबिनार 'परिचर्चा' आयोजित की जाती है। ये सत्र पी.एम. ई-विद्या चैनलों पर प्रसारित किए जाते हैं और 'रा.शै.अ.प्र.प. ऑफिशियल' यूट्यूब चैनल पर भी उपलब्ध हैं।

मनोदर्पण द्वारा विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए राज्य प्रशासकों, विद्यालय प्रमुखों और अध्यापकों की जागरूकता और क्षमता निर्माण के लिए राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर सम्मेलनों, कार्यशालाओं और अभिविन्यास सत्रों जैसी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन भी किया जा रहा है।

विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक सामाजिक समर्थन और मानसिक कल्याण के लिए शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की मनोदर्पण पहल द्वारा लाइव सत्र का आयोजन किया गया।

परिचर्चा	
दिनांक	**विषय**
20/01/2023	तैयार हो जाएँ! पढ़ाई और परीक्षा के लिए सकारात्मक आदतें बनाएँ
03/03/2023	परीक्षा तनाव को प्रबंधित करने के लिए कार्यनीतियाँ
14/04 2023	राष्ट्र निर्माण के लिए किशोरों को सशक्त बनाना
26/05/2023	परीक्षा परिणाम को अपना निर्धारण न करने दें

07/07/2023	किशोरों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सामना करने के कौशल को बढ़ाना
18/08/2023	देश के किशोरों के सशक्तीकरण और मानसिक स्वास्थ्य का महत्व
29/09/2023	स्वतंत्रता और रचनात्मकता के लिए सहयोगात्मक शिक्षण
10/11/2023	प्रसन्नता के लिए स्वच्छता की आदतें
22/12/2023	डिजिटल वेल बीइंग— परीक्षा के दौरान सोशल मीडिया डिटॉक्स
02/02/2024	परीक्षा के तनाव और चिंता पर काबू पाना
15/03/2024	विद्यार्थियों में समय प्रबंधन कौशल
सहयोग	
दिनांक	**विषय**
06/02/2023	परीक्षा तनाव और किशोरों पर इसका प्रभाव
07/02/2023	परीक्षा के दौरान प्रदर्शन के दबाव से निपटना
08/02/2023	परीक्षा के तनाव से निपटने का नया तरीका है लचीलापन विकसित करना
09/02/2023	परीक्षा तनाव से निपटना
10/02/2023	आत्मविश्वास के साथ परीक्षा का सामना करना
20/03/2023	छोटी-छोटी चीजें भी प्रसन्नता का स्रोत होती हैं
21/03/2023	जीतते वे हैं जो विश्वास करते हैं कि वे जीत सकते हैं
22/03/2023	किशोरों में निर्णय लेने का कौशल
23/03/2023	सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य के लिए खुशहाली का विकास करना
24/03/2023	आत्म-स्वीकृति, अच्छे मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण की ओर एक कदम
01/05/2023	किशोर शिक्षार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य का विकास करना
02/05/2023	किशोरों को अपने सपने पूरे करने के लिए प्रेरित करना
03/05/2023	किशोरावस्था के मुद्दे और हस्तक्षेप
04/05/2023	ग्रीष्मावकाश के दौरान उत्पादक कैसे बनें?
05/05/2023	इससे पहले कि आपकी प्राथमिकताओं से ध्यान हटा लें, अपनी प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करें
12/06/2023	परीक्षा के बाद तनाव प्रबंधन की कार्यनीतियाँ
13/06/2023	चिंतन और आनन्द का समय
14/06/2023	आपके परीक्षा के अंक कभी भी आपकी योग्यता निर्धारित नहीं करते
15/06/2023	परीक्षा के बाद समय का सदुपयोग करना
16/06/2023	विजयी रहने की मनोवृत्ति आपको उत्तम अंको से भी आगे ले जाती हैं
24/07/2023	समग्र कल्याण के लिए स्वयं को व्यवस्थित और अनुशासित करना
25/07/2023	स्वस्थ संबंधों के लिए संचार
26/07/2023	प्रसन्नता के लिए न्यूनतमवाद की आदत विकसित करना
27/07/2023	किशोरों के समायोजन संबंधी मुद्दों पर ध्यान देना

28/07/2023	किशोरों में आलोचनात्मक चिंतन कौशल को बढ़ाना
4/9/2023	किशोरों के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता
5/9/2023	किशोरों में भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना
6/9/2023	लचीलापन बनाना— चुनौतियों का सामना करना और मजबूती से वापसी करना
7/9/2023	सामाजिक संबंध का पुनर्निर्माण
8/9/2023	मुस्कुराहट के साथ परिश्रम
16/10/23	किशोरों पर शैक्षणिक दबाव
17/10/23	तनाव प्रबंधन— खुशहाल जीवन की ओर एक रास्ता
18/10/23	सांस्कृतिक पहचान और मानसिक कल्याण
19/10/23	किशोरावस्था में रोष प्रबंधन
20/10/23	मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण पर शारीरिक गतिविधि की भूमिका
27/11/23	हार्मोन असंतुलन के भावनात्मक प्रभाव— इसके प्रबंधन के तरीके
28/11/23	सामाजिक सहयोग के रूप में खेल
29/11/23	किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर साथियों के दबाव के प्रभाव और उसके उपचार
30/11/23	किशोरावस्था के दौरान चुनौतियाँ
01/12/23	चिंता दूर करें और मानसिक स्वास्थ्य बनाएँ
08/01/24	परीक्षा के समय विद्यार्थियों के साथ व्यवहार
09/01/24	भाषा संबंधी उपचार— कक्षा में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना
10/01/24	किशोरों में सोशल मीडिया के उपयोग और आत्मसम्मान के बीच संबंध
11/01/24	किशोरों में स्क्रीन टाइम— चिंता का विषय
12/01/24	शारीरिक गतिविधि और खेल विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करते हैं
19/02/24	नई प्रौद्योगिकी-ए.आई. को सम्मिलित करके परीक्षा तनाव से निपटने के लिए माध्यमिक कक्षा को नया स्वरूप देना
20/02/24	किशोर अपने साथियों के दबाव के प्रति अधिक संवेदनशील क्यों होते हैं और जोखिम भरे निर्णय लेते हैं तथा माता-पिता किस प्रकार उनका सहयोग कर सकते हैं?
21/02/24	मनोवैज्ञानिक कल्याण और विकास मानसिकता
22/02/24	किशोरों को तनावमुक्त परीक्षा के लिए तैयार करना
23/02/24	प्रभावी समय प्रबंधन की कला— शैक्षणिक माँगों में संतुलन

विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना— चुनौतियाँ और कार्यनीतियाँ (दो दिवसीय क्षेत्रीय स्तर की कार्यशाला)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर में 30–31 जनवरी, 2024 के दौरान 'विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने' पर दो दिवसीय क्षेत्रीय स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य विद्यालय प्रमुखों, प्रशासकों और विद्यालयी शिक्षा में अन्य हितधारकों को विद्यार्थियों के स्वास्थ्य के बारे में जागरूक करना था। यह कार्यशाला शिक्षा मंत्रालय (एम.ओ.ई., जी.ओ.आई.) की पहल 'मनोदर्पण' के तहत रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा

विभिन्न आर.आई.ई. में आयोजित की गई कार्यशालाओं एवं कार्यक्रमों की एक शृंखला थी। इस कार्यशाला में बिहार, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और संघ राज्य क्षेत्र अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के केंद्र और राज्य सरकारों के विद्यालय प्रशासकों और नेताओं ने भाग लिया। रा.शै.अ.प्र.प. के मनोदर्पण सदस्य ऑनलाइन माध्यम से भी कार्यशाला में सम्मिलित हुए।

उम्मीद (समझाना, प्रेरित करना, प्रबंधित करना, सहानुभूति रखना, सशक्त बनाना और विकसित करना)— आत्महत्या की रोकथाम— विद्यालयों के लिए दिशानिर्देश

'उम्मीद (समझाना, प्रेरित करना, प्रबंधित करना, सहानुभूति रखना, सशक्त बनाना और विकसित करना)— आत्महत्या की रोकथाम— विद्यालयों के लिए दिशानिर्देश' का विकास इस उद्देश्य से किया गया था कि विद्यार्थियों की आत्महत्या या आत्महत्या के प्रयास के बारे में संवेदनशीलता और समझ बढ़ाने के लिए दिशानिर्देश प्रदान करके विद्यालयों को सहायता प्रदान की जा सके और हितधारकों के बीच साझेदारी को प्रोत्साहित करते हुए आत्महत्या को रोकने के लिए एक व्यापक कार्ययोजना बनाई जा सके।

ये दिशानिर्देश विद्यालयी शिक्षा में सभी हितधारकों (विद्यालय प्रशासन, अध्यापक, अन्य कर्मचारी, विद्यार्थी, अभिभावक और समुदाय सहित) को आत्महत्या, उससे जुड़ी मिथकों और तथ्यों, जोखिम और सुरक्षात्मक कारकों तथा जोखिम में विद्यार्थियों की पहचान के लिए चेतावनी संकेतों के बारे में समझ प्रदान करते हैं। इसमें विद्यालयों के लिए एक व्यापक रोकथाम योजना का भी सुझाव दिया गया है। ये दिशानिर्देश शिक्षा मंत्रालय को सौंप दिए गए हैं।

विद्यालय जाने वाले बच्चों और किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं की शीघ्र पहचान और हस्तक्षेप— शिक्षकों और संबद्ध हितधारकों के लिए मॉड्यूलर पुस्तिका

विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं की शीघ्र पहचान के लिए आवश्यक कौशल से अध्यापकों को युक्त करने और शीघ्र पहचान और समर्थन के लिए सभी हितधारकों के बीच संवेदनशीलता का निर्माण करने के उद्देश्य से 'विद्यालय जाने वाले बच्चों और किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं की शीघ्र पहचान और हस्तक्षेप— अध्यापकों और संबद्ध हितधारकों के लिए मॉड्यूलर पुस्तिका' का विकास किया गया था। प्रायोगिक क्षेत्र परीक्षण से प्राप्त प्रतिक्रिया के आधार पर, दस्तावेज को वर्ष 2023–24 में संशोधित किया गया था। वर्ष 2024 में संशोधित इस पुस्तिका में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं की रोकथाम के लिए एक संपूर्ण विद्यालय दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला गया है, बच्चों और किशोरों के बीच सामान्य मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं पर अध्यापकों की समझ का निर्माण किया गया है और उन तरीकों पर प्रकाश डाला गया है जिनसे अध्यापक माता-पिता और अन्य हितधारकों को सहायता और सहयोग कर सकते हैं।

एक गतिविधि पुस्तिका-विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की ओर— विद्यालय से जुड़ाव

'विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की ओर— विद्यालय से जुड़ना' गतिविधियों की पुस्तिका विद्यालय के अध्यापकों और विद्यालयों में अन्य हितधारकों के लिए विकसित की गई थी, जिसका उद्देश्य गतिविधियों के माध्यम से सभी विद्यार्थियों के लिए एक सकारात्मक और सहायक वातावरण बनाना है, जिससे उन्हें अपने विद्यालय के साथ (भावनात्मक रूप से, व्यावहारिक रूप से और संज्ञानात्मक रूप से) जुड़ने के लिए प्रेरणा मिलेगी और इस प्रकार, उनके मानसिक और भावनात्मक कल्याण को सुविधाजनक बनाया जाएगा। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों के समग्र विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित हैं।

मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े विषयों पर जागरूकता और समर्थन सामग्री को विद्यालयों में सभी हितधारकों के बीच मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए फ्लायर्स और कैलेंडर के रूप में विकसित किया गया था।

मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन से जुड़े विषयों पर चार फ्लायर्स का हिंदी में अनुवाद किया गया। मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए मनोदर्पण वार्षिक कैलेंडर 2024–25 भी विकसित किया गया।

विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने पर क्षेत्रीय कार्यशालाएँ— चुनौतियाँ और कार्यनीतियाँ

आर.आई.ई., मैसूरु में 23–24 नवंबर, 2023 को 'विद्यालयों में मानसिक कल्याण को बढ़ावा देना— चुनौतियाँ और कार्यनीतियाँ' पर दो दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए मानसिक कल्याण के महत्व के बारे में राज्य प्रशासकों और विद्यालय प्रमुखों को उन्मुख और संवेदनशील बनाना था। इस कार्यशाला में सी.बी.एस.ई., एन.वी.एस., के.वी.एस., एस.सी.आर.ई.टी., डी.आई.ई.टी. के प्रशासकों और अधिकारियों तथा दक्षिणी क्षेत्र के केंद्र सरकार, राज्य सरकार और निजी विद्यालयों के स्कूल प्रमुखों सहित कुल लगभग 95 प्रतिभागियों ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र में डॉ. इंदुमति राव, *संस्थापक* और *क्षेत्रीय सलाहकार*, समुदाय आधारित पुनर्वास (सी.बी.आर.) नेटवर्क, प्रो. अंजुम सिबिया, *डीन (शैक्षणिक)* और *प्रभारी*, मनोदर्पण प्रकोष्ठ, श्री टी. गोपालकृष्ण, *उपायुक्त*, नवोदय विद्यालय समिति, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद ने भाग लिया।

रा.शै.अ.प्र.प. में 30–31 जनवरी, 2024 को आर.आई.ई. भुवनेश्वर, 'विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना— चुनौतियाँ और कार्यनीतियाँ' पर दो दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन विद्यालय के विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण की समझ विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करने के साथ किया गया था। इस सत्र में सी.बी.एस.ई., के.वी., जे.एन.वी., राज्य शिक्षा विभाग, एन.सी.टी.ई., एस.सी.ई.आर.टी., डी.आई.ई.टी., क्षेत्र के बी.आर.सी. प्रतिनिधियों और अधिकारियों तथा पूर्वी क्षेत्र के केंद्र सरकार, राज्य सरकार और निजी विद्यालयों के स्कूल प्रमुखों सहित कुल 64 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए सम्पूर्ण विद्यालय दृष्टिकोण पर विद्यालय परामर्शदाताओं का राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन

विद्यालय परामर्शदाताओं का राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन 6–7 मार्च, 2024 को एन.आई.ई., नई दिल्ली में मिश्रित मोड में आयोजित किया गया। देश के सभी क्षेत्रों के जे.एन.वी., के.वी., राज्य सरकार, आर्मी स्कूल, सैनिक स्कूल और निजी स्कूल के विद्यालय परामर्शदाता और अध्यापक-परामर्शदाताओं ने पूरे विद्यालय दृष्टिकोण के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की दिशा में विभिन्न विषयों पर अपनी विद्यालय प्रणाली में कार्यान्वित किए गए अभ्यासों और कार्यनीतियों को प्रस्तुत किया।

शिखर सम्मेलन सत्रों की अध्यक्षता स्वाति पात्रा, *मनोविज्ञान प्रोफेसर*, सामाजिक विज्ञान विद्यालय, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), नई दिल्ली; विभा जोशी, *प्रोफेसर* (सेवानिवृत्त), स्कूल ऑफ एजुकेशन, इग्नू, नई दिल्ली; समीना बानो, *प्रोफेसर* (मनोविज्ञान विभाग), जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली; और मधु बाला सिंह, *प्रधानाचार्य* पी.एम. के.वी. अर्जनगढ़ (सेवानिवृत्त) ने की।

पी.एम. ई-विद्या 200 डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों और रेडियो प्रसारणों और पॉडकास्ट का प्रबंधन

29 जुलाई, 2023 से परीक्षण के आधार पर 200 डी.टी.एच. टीवी चैनल शुरू किए गए थे और अंततः 9 जुलाई 2023 को भारत सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री द्वारा औपचारिक रूप से इसका शुभारंभ किया गया। पी.एम. ई-विद्या पहल के तहत, सी.आई.ई.टी.- रा.शै.अ.प्र.प. ने अपने सांस्थानिक उत्पादन में एन.आई.ई., पी.एस.एस.सी. आई.वी.ई. और आर.आई.ई. सहित 6,881 से अधिक वीडियो का निर्माण और प्रसंस्करण किया है। सी.आई.ई.टी. ने 1 अप्रैल, 2020 से 6,881 से अधिक वीडियो कार्यक्रम, 4247 आई.एस.एल. कार्यक्रम, 4499 संवर्धन ऑडियो

कार्यक्रम तैयार किए हैं और 82 डी.ए.आई.एस.वाई. पुस्तकों में 1,182 अध्यायों के लिए ऑडियो सामग्री विकसित की है। संस्थानिक उत्पादन के अतिरिक्त, सी.आई.ई.टी.- रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा अन्य संगठनों, जैसे आर.आई. एल.एम., एन.आई.ओ.एस., सी.बी.एस.ई., के.वी.एस. आदि से प्रसारण के लिए 15,141 से अधिक वीडियो सामग्री खरीदी, जाँची और प्रबंधित की गई है। पी.एम. ई-विद्या पहल के तहत 9,080 से अधिक लाइव शो प्रसारित किए गए हैं। प्रसारण के लिए सीमित संख्या में ई-सामग्री उपलब्ध होने और पी.एम. ई-विद्या 12 डी.टी.एच. चैनलों से शुरू होकर; प्रसारण की अवधि बढ़कर 2.5 से 3 घंटे (क्रमशः कक्षा 1–9 और 10–12 के लिए) हो गई है। इसमें दिव्याँगों के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा में ई-सामग्री और व्यावसायिक शिक्षा पर वीडियो सम्मिलित हैं। 72 समर्पित यूट्यूब चैनलों पर डी.टी.एच. चैनलों की एक साथ लाइव स्ट्रीमिंग की जा रही है और इसके विस्तार की प्रक्रिया चल रही है। इसके अलावा, रा.शै.अ.प्र.प. 400 रेडियो स्टेशनों (11 ज्ञानवाणी एफ.एम. रेडियो स्टेशन, 257 सामुदायिक रेडियो स्टेशन और 132 ऑल इंडिया रेडियो स्टेशन) के माध्यम से अपना ऑडियो ई-सामग्री प्रसारित करता है, जिसमें आई रेडियो और जियो सावन मोबाइल ऐप पर पॉडकास्ट सम्मिलित हैं। पाठ्यक्रम-आधारित रेडियो कार्यक्रमों (कक्षा 1–12) के 3,980 से अधिक सामग्रियाँ प्रसारण के लिए प्रसारित किए गए हैं और 2,476 से अधिक लाइव कार्यक्रम आईरेडियो और जियो सावन ऐप के माध्यम से प्रसारित किए गए हैं।

दीक्षा— एक राष्ट्र, एक डिजिटल प्लेटफॉर्म

दीक्षा (डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग) विद्यालयी शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय मंच है, जो शिक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में रा.शै.अ.प्र.प. की एक पहल है। देशभर के विद्यार्थी, अध्यापक, अभिभावक और अध्यापक स्वतंत्र रूप से दीक्षा तक पहुँच सकते हैं। दीक्षा पर 38 भाषाओं में 3.56 लाख से अधिक डिजिटल सामग्री उपलब्ध है, जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (सी.डब्ल्यू.एस.एन.) के लिए सामग्री भी सम्मिलित है। वर्तमान में इसमें 6,200 से अधिक युनिक एनर्जाइज्ड टेक्स्टबुक (ई.टी.बी.) शीर्षक हैं, जिनका अनुवाद 600 मिलियन से अधिक ई.टी.बी. में किया गया है, जिन्हें देशभर में वितरित किया गया है। दीक्षा में अध्यापकों के लिए 19,000 से अधिक क्षमता-निर्माण पाठ्यक्रम सम्मिलित हैं, जिन्होंने 173 मिलियन से अधिक नामांकन प्राप्त किए हैं, और देशभर में शिक्षार्थियों को 141 मिलियन से अधिक सत्यापन योग्य प्रमाण-पत्र जारी किए गए हैं। 'ई-जादुई पिटारा' दीक्षा के तहत शुरू की गई एक पहल है जो 3–8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए डिजाइन की गई एक खेल-आधारित शिक्षण किट, भौतिक जादुई पिटारा का पूरक है। ई-जादुई पिटारा में सभी सामग्री 6 श्रेणियों में उपलब्ध हैं अर्थात माता-पिता के लिए गतिविधियाँ, अध्यापकों के लिए गतिविधियाँ, कविताएँ, तुकबंदियाँ, कहानियाँ, गीत, लोरियाँ और पहेलियाँ, जिन्हें दो आयु समूहों में विभाजित किया गया है, अर्थात 3–6 वर्ष और 6–8 वर्ष के लिए ये बच्चों वीडियो, ऑडियो, पी.डी.एफ. और एम.पी.4 फाइलों में उपलब्ध हैं। दीक्षा पाठ्यक्रम-आधारित डिजिटल सामग्री और सी.पी.डी. पाठ्यक्रम प्रदान करके लगभग 26 करोड़ विद्यार्थियों और 95 लाख अध्यापकों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

राष्ट्रीय विद्या समीक्षा केंद्र (आर.वी.एस.के.)

राष्ट्रीय विद्या समीक्षा केंद्र की संकल्पना माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा अप्रैल 2022 में गाँधीनगर, गुजरात में विद्यालयी शिक्षा के लिए कमांड-एंड-कंट्रोल सेंटर के दौरे के दौरान की गई थी। आर.वी.एस.के. का उद्देश्य निर्णयकर्ताओं को वास्तविक समय या लगभग वास्तविक समय के शैक्षिक डेटा और विश्लेषण से युक्त करके, डेटा-संचालित निर्णय लेने की सुविधा प्रदान करके शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र में उत्प्रेरक के रूप में कार्य करना था। सभी राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों में विद्या समीक्षा केंद्रों (वी.एस.के.) की स्थापना की पहल स्कूली शिक्षा और

साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, दिनांक 24 मई, 2022 (डी.ओ. संख्या 19-11/2022-आईएस-6) के सचिव के एक पत्र के माध्यम से की गई थी। इसके बाद 30 सितंबर, 2022 को एक और पत्र (संख्या एफ.19-11/2022-आईएस-6) जारी किया गया, जिसमें प्रत्येक राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र में विद्यालयों की संख्या के आधार पर बजट आबंटन और चरणबद्ध रोडमैप का विवरण दिया गया था।

सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. में विद्या समीक्षा केंद्र (वी.एस.के.) को राष्ट्रीय विद्या समीक्षा केंद्र के लिए नोडल संगठन के रूप में नामित किया गया और 9 मार्च, 2024 को इसका उद्घाटन किया गया। आर.वी.एस.के. ने '6ए' शैक्षिक डेटा कैप्चरिंग फ्रेमवर्क को नियोजित किया, जिसमें उपस्थिति, मूल्यांकन, प्रत्यायन, प्रशासन, ए.पी.ए.ए.आर. और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सम्मिलित थे। आर.वी.एस.के. ने एक संघीय शिक्षा निगरानी प्रणाली का प्रयोग किया जिसका प्राथमिक उद्देश्य प्रौद्योगिकी के कार्यनीतिक उपयोग के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना, शैक्षिक नीतियों और कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करना है। राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यक्रमों की कल्पना और निगरानी के अतिरिक्त, आर.वी.एस.के. ने राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों से वास्तविक समय के शैक्षिक डेटा को एकत्रित और विश्लेषित किया।

31 मार्च, 2024 तक, कुल 22 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों (आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, दिल्ली, गोवा, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, झारखंड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, ओडिशा, पुदुच्चेरी, पंजाब, सिक्किम, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड) में विद्या समीक्षा केंद्र (वी.एस.के.) प्रचालित थे, जिनमें से 18 राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र एन.डी.ई.ए.आर.-अनुरूप रा.शै.अ.प्र.प. स्टार्टर पैक का उपयोग कर रहे थे। इस बीच, 7 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों (बिहार, राजस्थान, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल, लद्दाख, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह और लक्षद्वीप) में वी.एस.के. गैर परिचालन में रहे, जहाँ धीमी या कोई प्रगति नहीं दर्शाई गई है। इसके अतिरिक्त, 7 अन्य राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों (कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, हरियाणा, छत्तीसगढ़, चंडीगढ़, दादर और नगर हवेली एवं दमन और दीव) ने जून 2024 तक अपने वी.एस.के. को प्रचालित करने की प्रतिबद्धता जताई है।

यूनिवर्सल डिजाइन ऑफ लर्निंग (यू.डी.एल.) पर आधारित डिजिटल पाठ्यपुस्तकें "किताब एक पढ़ें अनेक"

इस परियोजना के तहत कक्षा 1 और 2 की पाठ्यपुस्तकों को यू.डी.एल. आधारित सुलभ डिजिटल पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तित किया जाएगा, जिसमें टच पॉइंट, प्रिंट से ऑडियो, संशोधित असाइनमेंट और चित्र विवरण जैसी आवश्यक विशेषताएँ होंगी। इस संबंध में, कक्षा की पाठ्यपुस्तकों के दो अध्याय, *सारंगी* पाठ्यपुस्तक हिंदी कक्षा 1 और *मृदंग* पाठ्यपुस्तक अंग्रेजी, कक्षा 1 में से प्रत्येक से एक अध्याय को प्रायोगिक आधार पर परिकल्पित सुविधाओं के साथ विकसित किया गया है। इन्हें एक तकनीकी विशेषज्ञ संगठन की सहायता से तैयार किया गया है जो टच पॉइंट्स को उभारने में लगा हुआ है, जिससे हैंडहेल्ड डिवाइस की सहायता से प्रिंट और ऑडियो तैयार किया जा सकता है। प्रत्येक पृष्ठ को वांछित आउटपुट, प्रिंट और ऑडियो साथ ही स्पर्श योग्य प्रिंट और ब्रेल के प्रकाश में अनुकूलित किया गया है। प्रोटोटाइप का प्रायोगिक परीक्षण कक्षा में 30 विद्यार्थियों के साथ किया गया, जिसमें बधिरता, दृष्टिहीनता और बिना दिव्याँगता वाले बच्चे सम्मिलित थे। एक अध्यापक की उपस्थिति में और सहायक तकनीक और दिव्याँगता समावेशन में काम करने वाले विशेषज्ञों के साथ साझा किया गया। क्यू.आर.-कोडेड आई.एस.एल. वीडियो देखने के दौरान, बधिर विद्यार्थियों को बिना किसी निर्देश के संकेतों को दोहराते हुए पाया गया और दृष्टिहीन विद्यार्थियों ने उत्सुकता से ऑडियो सुना, जबकि बाकी की रुचि सक्रिय रूप से डिवाइस और मुद्रित एनर्जाइज्ड पाठ्यपुस्तकों के साथ बनी रही।

शिक्षकों का सतत व्यावसायिक विकास (सी.पी.डी.)

एन.ई.पी. 2020 में अध्यापकों के सतत व्यावसायिक विकास (सी.पी.डी.) की आवश्यकता पर बल दिया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे नवीनतम शैक्षणिक दृष्टिकोणों से युक्त हैं और उनसे प्रत्येक कम से कम 50 घंटे सी.पी.डी. अवसरों में भाग लेने की अपेक्षा की जाती है। इस संबंध में, अध्यापकों के व्यावसायिक विकास को बढ़ाने के लिए 'दीक्षा' के माध्यम से चार सामान्य सी.पी.डी. पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए गए हैं। इन पाठ्यक्रमों के लिए कुल नामांकन 61,186 है, जिसमें कुल प्रमाणन 32,224 है। अध्यापकों के व्यावसायिक विकास के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को प्रभावी तरीके से विकसित करने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य ऑनलाइन पाठ्यक्रम के लिए मॉड्यूल संरचना विकसित करना, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के लिए पांडुलिपियाँ बनाना, वीडियो स्क्रिप्ट विकसित करना और प्रशिक्षण पैकेज की समीक्षा करना तथा उसे अंतिम रूप देना है। ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के विकास के लिए 30 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों और 5 स्वायत्त संगठनों के 314 राज्य संसाधन समूहों (एस.आर.जी.) और मास्टर प्रशिक्षकों को ऑनलाइन मोड में प्रशिक्षण भी दिया गया है, ताकि उन्हें ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को प्रभावी तरीके से विकसित करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान किए जा सकें।

25 कार्यभूमिकाओं के लिए पाठ्यक्रम

पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. को 2023–24 के दौरान 25 नए कार्यभूमिकाओं के लिए अधिगम प्रतिफल आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम के विकास का कार्य सौंपा गया है। वर्ष के दौरान, संस्थान ने 16 क्षेत्रों में कार्यभूमिकाओं के लिए पाठ्यक्रम के विकास के लिए लगभग 14 कार्यशालाएँ आयोजित कीं, जैसे— विमानन, कृषि, मोटर वाहन, परिधान, इलेक्ट्रॉनिक्स, खाद्य उद्योग, स्वास्थ्य सेवा, हस्तशिल्प और कालीन, आई.टी. और आई.टी.ई.एस., दूरसंचार, परिवहन, रसद और भंडारण, प्रबंधन और उद्यमशीलता, मीडिया और मनोरंजन, प्लंबिंग, निजी सुरक्षा, यात्रा एवं पर्यटन क्षेत्र।

विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा का नवोन्मेषी मॉडल

विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा का नवोन्मेषी मॉडल के तहत, अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूरु में स्थित रा.शै.अ.प्र.प. के चार प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय (डी.एम.एस.) और मध्य प्रदेश, त्रिपुरा, मेघालय, राजस्थान, कर्नाटक और ओडिशा के राज्य बोर्डों से संबद्ध छह विद्यालयों को नवोन्मेषी मॉडल विद्यालयों के रूप में विकसित किया गया है। सभी 10 विद्यालयों में प्रयोगशालाओं में फर्नीचर और उपकरण लगाए गए हैं। पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. परियोजना की प्रगति की समीक्षा करने और भविष्य की योजना और कार्यान्वयन के लिए इनपुट प्रदान करने के लिए विद्यालयों के प्रमुखों और व्यावसायिक अध्यापकों के साथ बैठक आयोजित करता है।

नवोन्मेषी व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम ने वास्तविक दुनिया के अनुभवों के माध्यम से विद्यार्थियों की शिक्षा को बढ़ाने के लिए सशक्त औद्योगिक भागीदारी को प्रोत्साहन दिया है। स्थानीय व्यवसायों और संगठनों के साथ सहयोग, जैसे कि ओडिशा पर्यटन विकास निगम लिमिटेड (ओ.टी.डी.सी.) होटल, पंथनिवास पुरी और बरकुल और ओ.डी.आई. कला संग्रहालय, चिल्का के दौरे ने पर्यटन और आतिथ्य व्यापार में विद्यार्थियों को मूल्यवान अनुभव और नेटवर्किंग के अवसर प्रदान किए। रिटेल ट्रेड के विद्यार्थियों के लिए इसी तरह स्मार्ट बाजार और रिलायंस ट्रेंड्स के साथ साझेदारी के जरिए रिटेल सेवाओं और विशेषज्ञ सत्रों के बारे में सूचना प्रदान की गई। उल्लेखनीय कार्यक्रमों में डोमिनोज पिज्जा का दौरा सम्मिलित है, जहाँ विद्यार्थियों ने ग्राहक सेवा और संचालन के बारे में सीखा और परफेक्ट सिजर और ऑरा मेकओवर में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किए, जहाँ उन्होंने हेयरस्टाइलिंग और मेकअप लगाने का अभ्यास किया।

करियर मार्गदर्शन और परामर्श कार्यक्रम का अभिन्न अंग था, जिससे विद्यार्थियों को सूचित करियर विकल्प चुनने में सहायता मिली। ऑडियो-विजुअल टूल, विभिन्न क्षेत्रों के पेशेवरों के साथ बैठकें और सत्र और मेलों के

आयोजन ने विद्यार्थियों के करियर के दृष्टिकोण को व्यापक बनाया। करियर-डे कक्षाओं और तकनीकी शिक्षा जागरूकता सत्रों ने विद्यार्थियों को व्यावसायिक विषयों से जल्दी परिचित कराया, जबकि माता-पिता और सर्वेक्षणों से लगातार मिलने वाली प्रतिक्रिया से पाठ्यक्रम की पेशकश के बारे में जानकारी मिली। प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों में विद्यार्थियों की भागीदारी परियोजना का मुख्य घटक थी। आई.टी.-आई.टी. सक्षम सेवाओं के विद्यार्थियों ने विद्यालय और कॉर्पोरेट दुनिया के बीच के अंतराल को दूर करने के लिए इंफोसिस, मैसूरु कार्यक्रम में भाग लिया।

आस-पास के विद्यालयों के लिए कंप्यूटर साक्षरता कक्षाएँ और मेघालय के री-भोई जिले के मावकीरडेप गाँव में सामुदायिक सेवा पहल जैसी परियोजनाओं के माध्यम से सामुदायिक सहभागिता पर बल दिया गया। ये गतिविधियाँ न केवल व्यावहारिक अनुभव प्रदान करती हैं, बल्कि विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना भी पैदा करती हैं। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों ने मशरूम की खेती और सौंदर्य चिकित्सा जैसे व्यवसायों में कदम रखा है, जो हमारे व्यावसायिक कार्यक्रमों के व्यावहारिक मूल्य और दीर्घकालिक लाभों को दर्शाता है। नियमित बैठकों और प्रतिक्रिया संग्रह के माध्यम से अभिभावक और हितधारकों की भागीदारी को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया गया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को प्रभावी तरीके से पूरा किया जा सके। अभिभावकों ने अपने बच्चों की व्यावसायिक शिक्षा का समर्थन करते हुए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आभासी कौशल प्रयोगशाला

कुल मिलाकर, 10 क्षेत्रों में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए 75 आभासी कौशल प्रयोगशाला विकसित की जानी हैं। ये आभासी कौशल प्रयोगशाला एक आभासी वातावरण है, जहाँ विद्यार्थियों को सिमुलेशन, 3डी एनिमेशन, वीडियो आदि के माध्यम से गतिविधियाँ करने और किसी विशेष कौशल के प्रमुख घटकों को सीखने की सुविधा मिलती है। आभासी प्रयोगशालाओं के विकास का काम एडसिल को दिया गया है और स्क्रिप्ट विकसित की जा रही हैं।

उल्लास— नव भारत साक्षरता कार्यक्रम

उल्लास संक्षिप्त प्राइमर

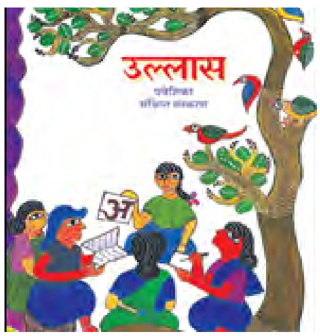

उल्लास संक्षिप्त प्राइमर का नाम है, जिसे मुख्य रूप से उन शिक्षार्थियों के लिए विकसित किया गया है, जो दिन के अधिकांश समय में आजीविका कमाने के लिए काम करते हैं और साथ ही उन स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए जो विद्यालयों और उच्च संस्थानों के विद्यार्थी हैं। इसके संक्षिप्त संस्करण में स्वयंसेवी अध्यापकों और शिक्षार्थियों को अपनी पढ़ाई और काम का प्रबंधन करने के अतिरिक्त पढ़ाने और सीखने की सुविधा दी गई है।

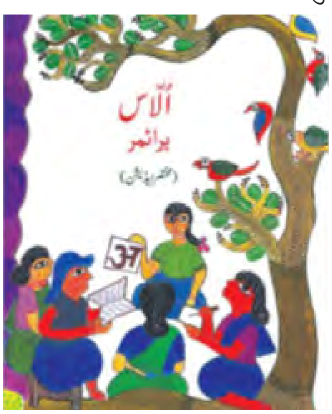

संक्षिप्त प्राइमर में एकीकृत तरीके से भाषा और संख्यात्मकता सम्मिलित है, जिससे शिक्षार्थियों को 7 महत्वपूर्ण विषयों अर्थात परिवार और पड़ोस, बातचीत, हमारा रहन-सहन, हमारे आस-पास, खान-पान और सेहत, मतदान और कानूनी जानकारी के माध्यम से अवधारणाओं को समझने की सुविधा मिलती है।

हिंदी और उर्दू में संक्षिप्त प्राइमर को तैयार किया गया है, जिसका उपयोग राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में संक्षिप्त प्राइमर विकसित करने, अनुकूलित करने और संदर्भ प्रदान करने के लिए उदाहरण के रूप में किया जाएगा।

संक्षिप्त प्राइमर उल्लास (हिंदी और उर्दू दोनों) को सी.एन.सी.एल. वेबसाइट पर इस लिंक https://ncert.nic.in/cncl/praveshika.php का उपयोग करके देखा जा सकता है।

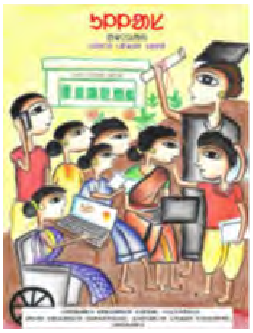

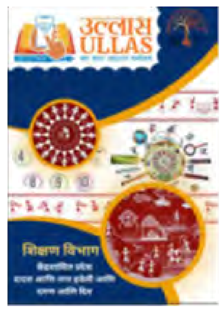

स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए मार्गदर्शिका

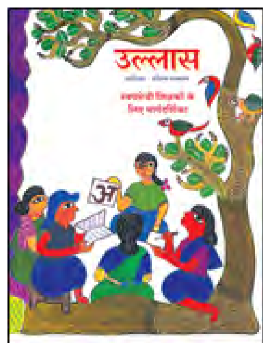

मुख्य रूप से मास्टर प्रशिक्षुओं और स्वयंसेवी अध्यापकों के लिए संक्षिप्त प्राइमर के रूप में एक मार्गदर्शिका भी विकसित की गई है। इसका उद्देश्य सबसे अधिक शिक्षण-अधिगम कार्यनीतियों को नियोजित करके शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को समझने में उनकी सहायता करना है। इसमें शिक्षार्थियों को बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता प्राप्त करने में सहायता करने के लिए प्राइमर का उपयोग करने के मुख्य बिंदु भी सम्मिलित हैं।

संक्षिप्त प्राइमर के लिए मार्गदर्शिका हिंदी और उर्दू दोनों में उपलब्ध है। इन्हें सी.एन.सी.एल. की वेबसाइट पर इस लिंक https://ncert.nic.in/cncl/margdarshika.php का उपयोग करके प्राप्त किया जा सकता है।

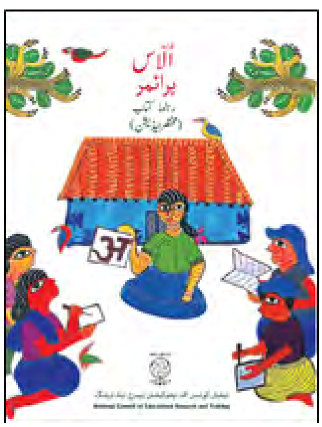

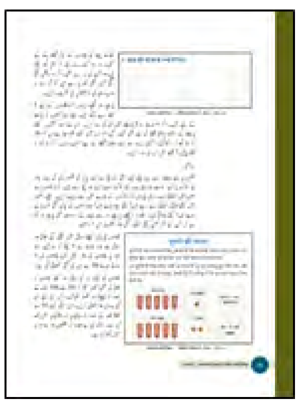

साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए अधिगम प्रतिफल और शैक्षणिक प्रक्रिया

प्रकोष्ठ द्वारा साक्षरता और अंकगणित दोनों के लिए हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में अधिगम प्रतिफल और उनकी शैक्षणिक प्रक्रियाएँ विकसित की गई हैं। ये अधिगम प्रतिफल शिक्षार्थियों के समग्र विकास की दिशा में उनकी प्रगति का आकलन करने में सहायता करते हैं। अधिगम और अध्यापन की प्रक्रियाएँ सुझाव के रूप में दी गई हैं। यह आवश्यक नहीं कि ये किसी एक प्रतिफल से जुड़ी हों। इसका अर्थ यह है कि एक प्रक्रिया से अनेक अधिगम प्रतिफल को प्राप्त करने में सहायता मिल सकती है और एक से अधिक प्रक्रियाओं को मिलाकर एक एकल अधिगम प्रतिफल प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, प्रक्रिया के साथ-साथ कई गतिविधियाँ भी दी गई हैं जिनका उपयोग शिक्षार्थियों के आकलन के लिए किया जा सकता है।

सी.एन.सी.एल. की वेबसाइट पर अधिगम प्रतिफल और उनकी शैक्षणिक प्रक्रिया को इस लिंक https://ncert.nic.in/cncl/los.php का उपयोग करके देखा जा सकता है।

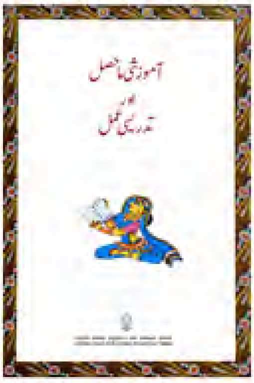

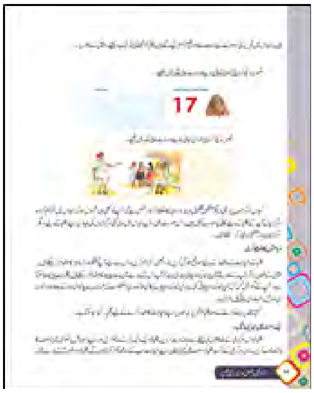

प्राइमर के विकास के लिए दिशानिर्देश

राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के लिए अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में प्राइमर विकसित करने, उन्हें अनुकूलित करने और समरूप बनाने के लिए हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू भाषाओं में दिशानिर्देश विकसित किए गए हैं। ये दिशानिर्देश सभी हितधारकों के लिए केवल सुझाव हैं कि वे अपने विवेक से कैसे काम करें। इनसे यह समझने में सहायता मिलती है कि उल्लास प्राइमर केवल एक माध्यम है, एक उपकरण है जिसका उपयोग बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के अधिगम प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है। प्राइमर में उदाहरण शिक्षार्थियों को साक्षरता और संख्यात्मकता कौशल प्राप्त करने में सहायता करने के लिए दिए गए हैं। सामग्री को उदाहरणों और चित्रों की सहायता से सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है, ताकि कम शब्दों का उपयोग करके अधिक जानकारी प्रसारित की जा सके।

प्राइमर के विकास के लिए दिशानिर्देश सी.एन.सी.एल. वेबसाइट पर इस लिंक https://ncert.nic.in/cncl/guidelines_primer.php का उपयोग करके देखे जा सकते हैं।

कार्यपत्रक— बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता

शिक्षार्थियों और स्वयंसेवी अध्यापकों/प्रशिक्षकों दोनों के लिए कार्यपत्रक विकसित किए गए, जो बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता पर ध्यान केंद्रित करते हुए तैयार किए गए हैं। ये कार्यपत्रक प्राइमर उल्लास के अध्यायों में सम्मिलित सामग्री पर आधारित हैं। इनके जरिए शिक्षार्थियों को उनके द्वारा सीखी गई बातों का अभ्यास करके अपने पढ़ने, लिखने और संख्यात्मक कौशल का स्व-मूल्यांकन करने में सहायता करने के प्राथमिक उद्देश्य को पूरा किया जा सकता है और स्वयंसेवी शिक्षकों/प्रशिक्षकों को अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने की आवश्यकता को समझने में सहायता मिलती है।

साक्षरता (100) और संख्यात्मकता (100) दोनों के लिए कार्यपत्रक निम्न लिंक पर उपलब्ध हैं—

सी.एन.सी.एल. की वेबसाइट— https://ncert.nic.in/cncl/worksheet.php

सभी के लिए शिक्षा वर्टिकल (दीक्षा पोर्टल)— https://diksha.gov.in/play/collection/do_31339162185892659212479?contentType=TextBook

https://diksha.gov.in/play/collection/do_3136203257626787841409 1?contentType=TextBook

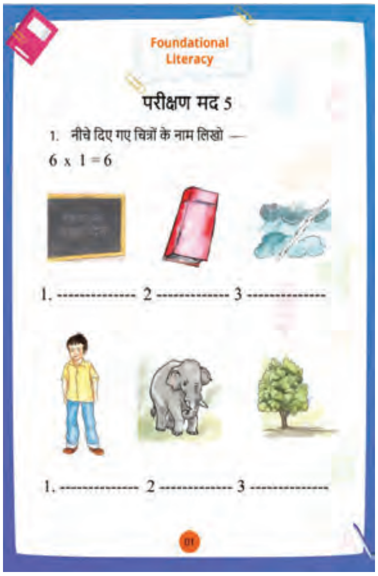

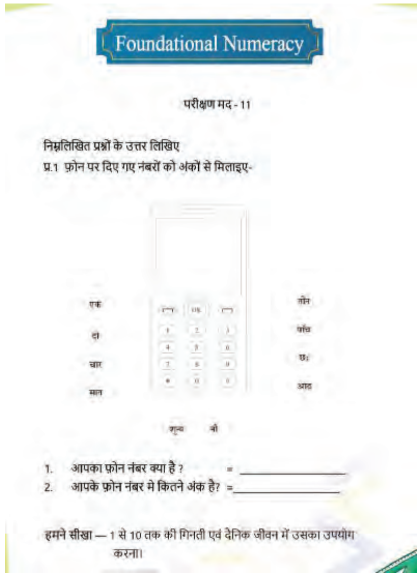

आकलन के मद— बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए आकलन के मद

आकलन के मद विकसित किए गए हैं, जिसका उद्देश्य शिक्षार्थियों की प्रगति का आकलन करना और उन्हें साक्षरता प्राप्त करने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता करना है। इनमें ऐसे प्रश्न सम्मिलित हैं जिनके सामने अंक अंकित हैं। बुनियादी साक्षरता (100) और संख्यात्मकता (100) के लिए आकलन के मद निम्न लिंक पर देखे जा सकते हैं—

सी.एन.सी.एल. की वेबसाइट— https://ncert.nic.in/cncl/assessment.php

सभी के लिए शिक्षा वर्टिकल (दीक्षा पोर्टल)— https://diksha.gov.in/play/collection/do_31339162845099622412484?contentType=TextBook

आकलन पत्र (परीक्षण पत्र)

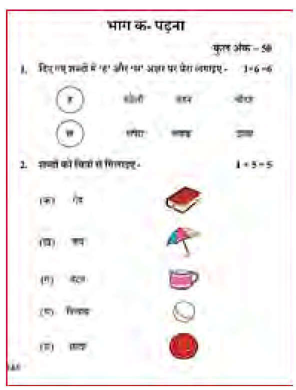

आकलन परीक्षण पत्रों को राज्यों के लिए उनके विशिष्ट संदर्भों को ध्यान में रखते हुए उनकी संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं में विकसित करने के लिए उदाहरण के रूप में विकसित किया गया है। प्रत्येक परीक्षण पत्रों में पढ़ना, लिखना और संख्यात्मकता के 3 खंड होते हैं और प्रत्येक के लिए 50 अंक आबंटित होते हैं। उल्लास के तहत बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए आकलन परीक्षा के लिए आकलन परीक्षण पत्र भी प्रकोष्ठ द्वारा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एन.आई.ओ.एस.) के सहयोग से विकसित किए गए थे। यह परीक्षा 17 मार्च, 2024 को एक साथ अनेक राज्यों में दूसरी बार आयोजित की गई थी।

ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम

निरक्षर विद्यार्थियों और स्वयंसेवी अध्यापकों एवं अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम विकसित किए गए हैं। कार्यक्रम बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता की योग्यताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो विद्यार्थियों की वास्तविक जीवन की स्थिति को दर्शाते हैं और महत्वपूर्ण जीवन कौशल को समेकित तरीके से पूरा करते हैं।

- **ऑडियो कार्यक्रम** — इन कार्यक्रमों को डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता, सभी के लिए शिक्षा के महत्व आदि जैसे विभिन्न विषयों पर विद्यार्थियों को ज्ञान और जागरूकता प्रदान करने के उद्देश्य से विकसित किया गया है। इन कार्यक्रमों को मराठी, मधिया, गोंडी, कोरकू, मलयालम, तमिल और तेलुगु जैसी कई क्षेत्रीय और आदिवासी भाषाओं में भी विकसित किया गया है। प्रकोष्ठ द्वारा विभिन्न विषयों पर इस प्रकार के 18 कार्यक्रम विकसित किए हैं।

- **वीडियो कार्यक्रम** — "साक्षरता की डगर पर' नाम से 20 वीडियो कार्यक्रमों की एक शृंखला विकसित की गई है, जो बुनियादी साक्षरता और बुनियादी संख्यात्मकता दोनों के लिए है। ये कार्यक्रम प्राइमर उल्लास में सम्मिलित सामग्री पर आधारित हैं, जो शिक्षार्थियों को परस्पर क्रियात्मकता से अवधारणाओं को समझने में सहायता करते हैं। इन्हें निम्नलिखित लिंक पर देखा जा सकता है—

  सी.एन.सी.एल. की वेबसाइट— https://ncert.nic.in/cncl/fln_video_programs.php

  सभी के लिए शिक्षा वर्टिकल (दीक्षा पोर्टल)

  https://diksha.gov.in/play/collection/do_31339163624268595212492?contentType=TextBook

  रा.शै.अ.प्र.प. का आधिकारिक यूट्यूब चैनल (लिंक) https://www.youtube.com/c/NCERTOFFICIAL

इसके अतिरिक्त, प्रकोष्ठ द्वारा पेरेंटिंग थीम पर आधारित वीडियो कार्यक्रमों की एक और शृंखला विकसित की गई है। वीडियो कार्यक्रमों का शीर्षक 'परवरिश' रखा गया है। इन कार्यक्रमों को होस्ट और एक विशेषज्ञ के साथ बातचीत के रूप में विकसित किया गया है। यहाँ चर्चा में सम्मिलित किए गए मुद्दे परवरिश, बच्चों को समझना, बच्चों को सही और गलत के बीच अंतर समझने और उन्हें प्यार एवं देखभाल के साथ व्यवहार करने में सहायता करना है। इस 12-भाग की शृंखला का प्रत्येक एपिसोड अलग-अलग विषयों पर केंद्रित है, जैसे कि बच्चों में आक्रामकता, मोबाइल फोन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का अत्यधिक उपयोग, सोशल मीडिया का प्रभाव आदि।

इन वीडियो कार्यक्रमों को निम्नलिखित लिंक का उपयोग करके देखा जा सकता है—

सी.एन.सी.एल. की— https://ncert.nic.in/cncl/cls_video_program.php

सभी के लिए शिक्षा वर्टिकल (दीक्षा पोर्टल)— https://diksha.gov.in/play/collection/do_31358614530139750411808?contentType=TextBook

रा.शै.अ.प्र.प. का आधिकारिक यूट्यूब चैनल— https://www.youtube.com/watch?v=GnGEWc8aVXc&list=PLUgLcpnv1YifL-nriLGqSVsfzzD3gEZEL

ग्राफिक स्टोरीबुक

महत्वपूर्ण जीवन कौशल पर आधारित कहानियों को ग्राफिक पुस्तकों के रूप में विकसित किया गया है, ताकि शिक्षार्थियों के साथ-साथ स्वयंसेवी अध्यापकों के लिए भी अधिगम-अध्यापन की प्रक्रिया को आसान बनाया जा सके। इन कहानी की पुस्तकों में आज के समय में शिक्षार्थियों के लिए आसान जीवन जीने के लिए आवश्यक कुछ प्रमुख जीवन कौशलों को सम्मिलित किया गया है, जैसे— कानूनी साक्षरता, वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, पर्यावरण साक्षरता आदि। प्रकोष्ठ द्वारा ऐसी कुल 14 पुस्तकें विकसित की गई हैं, जिनमें से छह को प्रकोष्ठ की वेबसाइट पर देखा जा सकता है।

ग्राफिक स्टोरीबुक को सी.एन.सी.एल. की वेबसाइट पर https://ncert.nic.in/cncl/story_book.php लिंक का उपयोग करके देखा जा सकता है।

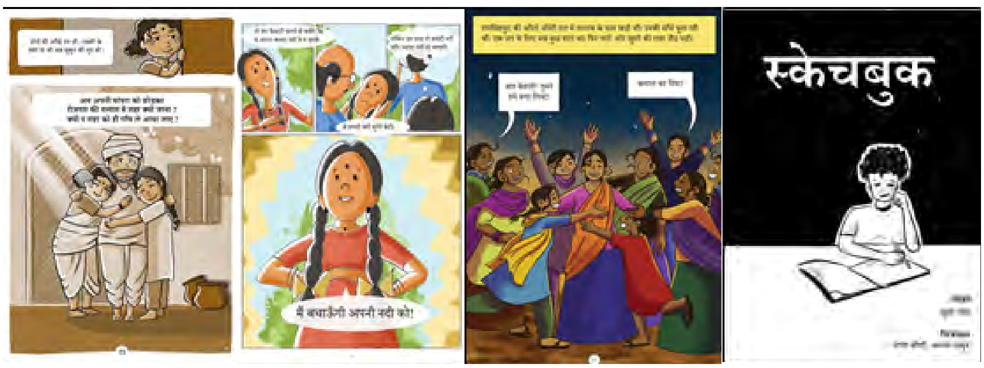

एनिमेटेड वीडियो

जीवन के प्रमुख विषयों और मुद्दों को रोचक और नवाचारी तरीके से समझने के लिए शिक्षार्थियों के लिए महत्वपूर्ण जीवन कौशल पर आधारित लघु एनिमेटेड वीडियो विकसित किए गए हैं। ये वीडियो शिक्षार्थियों को किसी विशेष विषय या विषय से संबंधित सभी आवश्यक जानकारी 3 मिनट से भी कम समय में प्रदान करते हैं, जो इन वीडियो को एक ही समय में शिक्षाप्रद होने के साथ-साथ आकर्षक भी बनाता है। इन वीडियो में स्वास्थ्य और स्वच्छता, पर्यावरण साक्षरता, डिजिटल साक्षरता आदि जैसे महत्वपूर्ण जीवन कौशल को कवर किया गया है।

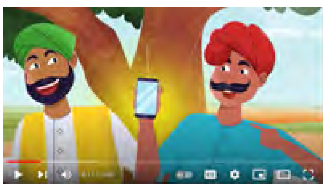

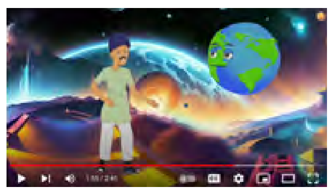

एनिमेटेड वीडियो को इन लिंक का उपयोग करके देखा जा सकता है— रा.शै.अ.प्र.प. का आधिकारिक यूट्यूब चैनल— https://www.youtube.com/watch?v=d1rKlvGLubM&t=3s

https://www.youtube.com/watch?v=rnejtK4kr0g
https://www.youtube.com/watch?v=UysaDZPKUOw
सी.एन.सी.एल. की वेबसाइट — https://ncert.nic.in/cncl/animated_videos.php

आपदा प्रबंधन

आपदा प्रबंधन विषय पर तीन पुस्तिकाओं की एक शृंखला हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार की गई है। शृंखला की पहली पुस्तिका में आपदाओं के प्रकारों और उनसे निपटने के सामान्य तरीकों का विवरण दिया गया है, जबकि दूसरी और तीसरी पुस्तिका में क्रमशः प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओं पर चर्चा की गई है। इस शृंखला में सरल भाषा में सामग्री सम्मिलित है, जिसमें शिक्षार्थियों को जानकारी को आसानी से समझने के लिए कई चित्र भी दिए गए हैं।

दोनों भाषाओं में पुस्तिकाएँ सी.एन.सी.एल. वेबसाइट पर इस लिंक https://ncert.nic.in/cncl/disaster-management.php का उपयोग करके प्राप्त की जा सकती हैं।

सभी के लिए शिक्षा पर प्रचार सामग्री — सूचना ग्राफिक पोस्टर, फ्लायर्स, जिंगल, वृत्तचित्र इत्यादि जैसी विभिन्न समर्थन सामग्री विकसित की गई है। 'उल्लास' और 'कर्तव्य बोध' योजना के विषय में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए *उल्लास* पर एक वृत्तचित्र फिल्म और जिंगल विकसित किया गया है। इन सभी को हिंदी भाषा में उदाहरण के रूप में विकसित किया गया है ताकि राज्यों को अपनी विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में संसाधन सामग्री को विकसित कर सके, जो शिक्षार्थियों के विभिन्न संदर्भों को पूरा करें।

इन्हें नीचे दिए गए लिंक का उपयोग करके रा.शै.अ.प्र.प. के आधिकारिक यूट्यूब चैनल और दीक्षा पोर्टल पर देखा जा सकता है—

https://www.youtube.com/watch?v=yO1r8OAkFgU&list= PLUgLcpnv1YieLeB1i_fejPZ5j9H8KjD5k&index=2

https://www.youtube.com/watch?v=_FwqTbAz8YY&list=PLUgLcpnv1Yie LeB1i_fejPZ5j9H8KjD5k

https://diksha.gov.in/play/collection/do_3136203277458800641409 4?contentType=TextBook

दीक्षा पोर्टल पर सभी के लिए शिक्षा वर्टिकल

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) ने 'दीक्षा' नाम से एक ऑनलाइन पोर्टल विकसित किया है, जहाँ सी.एन.सी.एल., रा.शै.अ.प्र.प. और परिषद् के अन्य विभागों के साथ-साथ कई संगठनों द्वारा विकसित संसाधन सामग्री आसानी से प्राप्त की जा सकती है। प्रकोष्ठ द्वारा विकसित सभी संसाधन और प्रचार सामग्री सभी के उपयोग के लिए वर्टिकल 'सभी के लिए शिक्षा' अनुभाग पर अपलोड की जाती है और इसे इस लिंक https://diksha.gov.in/adult-education.html पर देखा जा सकता है—

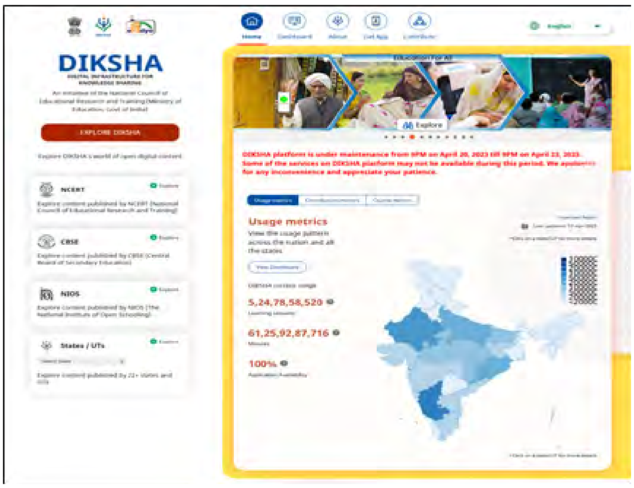

तीन अलग-अलग स्तरों— केंद्रीय, राज्य, जिला पर कार्यशालाएँ आयोजित की गई हैं। 2023–24 में कुल 36 कार्यशालाएँ आयोजित की गई हैं, जिनमें 'उल्लास' शिक्षार्थियों के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में संसाधन सामग्री का विकास और मास्टर प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाएँ सम्मिलित हैं। कार्यशालाओं का उद्देश्य प्रतिभागियों को 'उल्लास नवभारत साक्षरता कार्यक्रम' और देश के लिए इसके महत्व के बारे में अभिमुखीकरण करना है। अभिविन्यास कार्यक्रम भी शिक्षार्थी और स्वयंसेवी शिक्षकों को प्रेरणा प्रदान करते हैं। प्राइमर, परीक्षा पत्र, आकलन पत्र, ऑडियो एवं वीडियो जैसी संसाधन सामग्री विकसित करने के उद्देश्य से कार्यशालाएँ भी आयोजित की गई हैं और उल्लास के लिए विभिन्न प्रकार की प्रचार सामग्री भी तैयार की गई हैं।

क्र. सं.	कार्यक्रम/सम्मेलन/प्रदर्शनी का नाम/विवरण	स्थान और दिनांक
1.	उल्लास के कार्यान्वयन पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	नागालैंड 9–11 मई, 2023

2.	उल्लास के कार्यान्वयन पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	लखनऊ बैच I: 30 मई–03 जून, 2023; बैच II: 01–05 जून, 2023
3.	उल्लास के कार्यान्वयन पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	एस.सी.ई.आर.टी., जम्मू और कश्मीर, मंडल कार्यालय, जम्मू 7–11 अगस्त, 2023
4.	उल्लास के लिए पब्लिक स्कूलों के फोरम के सहयोग से विद्यालय प्रमुखों और अध्यापकों के लिए अभिविन्यास/क्षमता निर्माण कार्यक्रम	रा.शै.अ.प्र.प. 19 अगस्त, 2023
5.	उल्लास के कार्यान्वयन पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	अरुणाचल प्रदेश 21–25 अगस्त, 2023
6.	संक्षिप्त प्राइमर (उल्लास), उल्लास ऐप और उल्लास के कार्यान्वयन के लिए अन्य पहलों पर अभिविन्यास/क्षमता निर्माण कार्यक्रम	ऑनलाइन 6 सितंबर, 2023
7.	उल्लास के कार्यान्वयन पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पुणे 13–15 सितंबर, 2023
8.	उल्लास के कार्यान्वयन पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	महाराष्ट्र 13–15 सितंबर, 2023
9.	उल्लास के अंतर्गत विद्यालय प्रमुखों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	गोवा 25–27 सितंबर, 2023
10.	उल्लास के कार्यान्वयन के लिए मास्टर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण	केरल 16–20 अक्तूबर, 2023
11.	उल्लास के अंतर्गत स्वयंसेवी अध्यापकों के रूप में कॉलेज, विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 26–27 फरवरी, 2024

उल्लास मेला 2024

उल्लास मेला 2024 का आयोजन भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा सी.एन.सी.एल.-रा.शै.अ.प्र.प. और एडसिल (इंडिया) लिमिटेड के सहयोग से 6–7 फरवरी, 2024 को नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय बाल भवन में किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री धर्मेंद्र प्रधान, माननीय *शिक्षा और कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री* ने किया। इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में श्रीमती अन्नपूर्णा देवी, केंद्रीय शिक्षा *राज्य मंत्री*; श्री संजय कुमार, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग (डी.ओ.एस.ई.एल.) के *सचिव*; श्री अतुल कुमार तिवारी, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय के *सचिव*; श्रीमती अर्चना शर्मा अवस्थी, डी.ओ.एस.ई.एल. की *संयुक्त सचिव*; प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी, रा.शै.अ.प्र.प. के *निदेशक* और प्रो. उषा शर्मा, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र (रा.शै.अ.प्र.प.) के प्रकोष्ठ की *प्रभारी* सम्मिलित थे।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य नव-साक्षरों और स्वयंसेवी *अध्यापकों* को सम्मानित करना था, जिन्होंने उल्लास योजना में अनुकरणीय योगदान दिया था। इसका उद्देश्य राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों को अपनी उपलब्धियों को प्रदर्शित करने, सर्वोत्तम अभ्यासों को साझा करने और नव-साक्षरों और स्वयंसेवी शिक्षकों के साथ पैनल चर्चा आयोजित करने के लिए एक मंच प्रदान करना था। इसके अतिरिक्त, इस कार्यक्रम में पंजीकृत स्वयंसेवी अध्यापकों और शिक्षार्थियों

द्वारा साझा किए गए अनुभवों को साझा करना तथा राज्य-विशिष्ट संसाधनों, जैसे— संक्षिप्त प्राइमर, अतिरिक्त अध्यापन-अधिगम सामग्री, वृत्तचित्र फिल्में और अन्य दृश्य-श्रव्य संसाधनों का लोकार्पण करना भी सम्मिलित था।

पहले दिन के उद्घाटन सत्र के बाद डी.ओ.एस.ई.एल. की संयुक्त सचिव अर्चना शर्मा अवस्थी ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर राज्य मंत्री अन्नपूर्णा देवी जी और स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के सचिव, एम.ओ.ई. सहित विशेष अतिथि उपस्थित थे। उल्लास के विजेताओं, पोस्टर प्रतियोगिता के विजेताओं का अभिनंदन किया गया और अन्य प्रकाशनों के अतिरिक्त उल्लास संक्षिप्त प्राइमर और मार्गदर्शिका का विमोचन करके कार्यक्रम की भव्यता को और बढ़ाया गया।

दूसरे दिन की आरंभ सी.एन.सी.एल. और राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के स्टॉल के दौरे से हुई, जिसमें उपस्थित लोगों को शिक्षार्थियों और स्वयंसेवी अध्यापकों के लिए विकसित संसाधन सामग्रियों के प्रदर्शनों का अन्वेषण अवसर प्रदान किया गया। विभिन्न राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के सर्वोत्तम अभ्यासों पर प्रस्तुति ने साक्षरता संवर्धन के लिए नवोन्मेषी दृष्टिकोणों पर प्रकाश डाला गया। दिन का समापन आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रमों और यादगार समापन कार्यक्रम के साथ हुआ, जिसमें सम्मानित अतिथियों के संबोधन और प्रतिभागियों द्वारा उल्लास मेले के हार्दिक अनुभव साझा किए गए।

उल्लास द्वितीय बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक आकलन परीक्षा

उल्लास के तहत दूसरी बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक आकलन परीक्षा पूरे भारत में 23 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों में एक साथ आयोजित की गई। एक तरह से यह केंद्र प्रायोजित योजना की सफलता का राष्ट्रीय उत्सव का एक और कदम था। भारत के विभिन्न क्षेत्रों से शिक्षार्थी आगे आए और परीक्षा दी, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में रेखांकित 100 प्रतिशत साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में देश की प्रगति का एक संकेतक है।

राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र, रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकोष्ठ के सदस्यों ने विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न परीक्षा केंद्रों का दौरा किया और परीक्षा प्रक्रिया की निगरानी की। उन्होंने शिक्षार्थियों और स्वयंसेवी अध्यापकों के साथ बातचीत की ताकि विभिन्न क्षेत्रों में अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया की स्थितियों और परिस्थितियों को समझा जा सके और उनके लिए विकसित की जा रही संसाधन सामग्री पर प्रतिक्रिया प्राप्त की जा सके। दूसरी आकलन परीक्षा एक अद्भुत सफलता थी, जिसने देश को 100 प्रतिशत साक्षरता के सपने के समीप पहुँचने में सहायता की।

8. रा.शै.अ.प्र.प. में आने वाले अतिथि और अंतरराष्ट्रीय सहयोग

रा.शै.अ.प्र.प. में आने वाले अतिथि

लाइबेरिया प्रतिनिधिमंडल

माननीय वरिष्ठ शिक्षा मंत्री, डी. अंशु सोनी, *प्रोफेसर* के नेतृत्व में एक लाइबेरियाई प्रतिनिधिमंडल ने 13 अप्रैल, 2023 को रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली का दौरा किया और पाठ्यचर्या विकास, पाठ्यपुस्तकों एवं अन्य सामग्रियों के विकास, शिक्षा में आई.सी.टी. और डिजिटल माध्यमों का उपयोग, लाइबेरियाई शैक्षिक प्रणाली और कौशल विकास को मजबूत करने, शैक्षिक नियोजन, पाठ्यचर्या विकास, सामग्री (पाठ्यपुस्तक विकास, शैक्षिक किट) आदि के संदर्भ में शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान साझा करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के साथ सहयोग की संभावना पर विचार किया।

न्यूजीलैंड प्रतिनिधिमंडल

न्यूजीलैंड जी2जी की कार्यकारी निदेशक मिशा मैनिक्स-ओपी ने रा.शै.अ.प्र.प. का दौरा किया और रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी, रा.शै.अ.प्र.प. के अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग के प्रमुख और प्रभारी सचिव पी.के. मंडल और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.) में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की सह-आचार्य रोमिला सोनी के साथ 17 अप्रैल, 2023 को बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के आयामों पर बातचीत की।

कोरिया रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग से कोरियाई प्रतिनिधिमंडल

कोरिया रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग (के.आर.आई.वी.ई.टी.) से किम यंग सांग के नेतृत्व में छह सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 4 से 8 सितंबर, 2023 तक रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान और पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल का दौरा किया। इस यात्रा का उद्देश्य व्यावसायिक शिक्षा में कोरिया और भारत के बीच सहयोग और भारत में व्यावसायिक शिक्षा का विकास करना था।

नॉर्वे प्रतिनिधिमंडल

सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. ने अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.) के सहयोग से 8 नवंबर, 2023 को ओस्लो मेट्रोपॉलिटन यूनिवर्सिटी, नॉर्वे के प्रतिनिधिमंडल की यात्रा का आयोजन किया। अध्ययन दौरे पर आए

समूह में विश्वविद्यालय से एक प्रोफेसर और 17 विद्यार्थी अध्यापक शामिल थे। इस दौरे का उद्देश्य रा.शै.अ.प्र.प. के कार्यक्षेत्र, स्कूली शिक्षा, पाठ्यचर्या और भारत में इसके अभ्यास के बारे में जानकारी प्राप्त करना था। समूह को भारत के शैक्षिक अभ्यासों से अवगत कराया गया और सी.आई.ई.टी. के विभिन्न अनुभागों और प्रभागों जैसे कि अनुभवात्मक शिक्षण केंद्र, वर्चुअल लैब का दौरा किया गया। उन्होंने किबो, स्मार्ट स्पीक जैसी नवीन सहायक प्रौद्योगिकियों, विभिन्न शैक्षिक टूल्स, अंत:क्रियात्मक प्रौद्योगिकियों और अनुभवात्मक प्रयोगशाला में उपलब्ध नवाचारी अध्यापन विधियों आदि का भी पता लगाया।

मादक पदार्थ और अपराध पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय (यू.एन.ओ.डी.सी.) का प्रतिनिधिमंडल

यू.एन.ओ.डी.सी. के दो प्रतिनिधियों, दक्षिण एशिया के क्षेत्रीय प्रतिनिधि मार्को टेक्सेरा और संचार अधिकारी एवं रीजनल फोकल प्वाइंट फॉर यूथ एंड एजुकेशन के समर्थ पाठक ने 22 नवंबर, 2023 को रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग के किशोरावस्था शिक्षा प्रकोष्ठ और अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग के संकाय सदस्यों के साथ चर्चा की। अतिथियों ने मुख्य फोकस क्षेत्रों— क्षेत्रीय सुरक्षा, अपराध रोकथाम, सुशासन, न्याय और स्वास्थ्य पर जोर देते हुए शांति, अखंडता, नैतिकता और जिम्मेदार व्यवहार को मजबूत करने हेतु शिक्षा के माध्यम से युवाओं को सम्मिलित करने पर बातचीत की। जो बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव और श्रीलंका जैसे देशों के लिए सतत विकास लक्ष्यों और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप है।

ईरानी प्रतिनिधिमंडल

इस्लामी गणराज्य ईरान के तीन प्रतिनिधियों— डॉ. इराज इलाही, नई दिल्ली में ईरान के माननीय *राजदूत*; गुलाम अली हदादे आदिल, राष्ट्रीय फारसी भाषा केंद्र के *प्रमुख*; और फरीद असर, *सांस्कृतिक सलाहकार*, ईरान कल्चर हाउस, नई दिल्ली ने 12 दिसंबर, 2023 को रा.शै.अ.प्र.प. का दौरा किया और दिनेश प्रसाद सकलानी, *निदेशक,* रा.शै.अ.प्र.प. के साथ भारत में फारसी भाषा को बढ़ावा देने, भाषाओं एवं भाषा शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में भारत और ईरान के बीच सांस्कृतिक संबंधों को प्रोत्साहित करने, ईरान में फारसी भाषा अध्यापक शिक्षा प्रदान करने के लिए 10 भारतीय विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने, भारतीय विद्यार्थियों को ईरान के अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में आमंत्रित करने और रा.शै.अ.प्र.प. के समर्थन से फारसी भाषा शिक्षा में अध्यापन-अधिगम शैक्षिक सामग्री विकसित करने पर चर्चा की।

कोरिया गणराज्य के कोरिया रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग (के.आर.आई.वी.ई.आई.) के विशेषज्ञों का दौरा

कोरिया गणराज्य के कोरिया रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग (के.आर.आई.वी.ई.आई.) के विशेषज्ञों की एक टीम ने 6–7 सितंबर, 2023 को व्यावसायिक शिक्षा के विकास और चौथी औद्योगिक क्रांति से उत्पन्न चुनौतियों के बारे में जानकारी बढ़ाने के उद्देश्य से एक कार्य समूह परामर्श बैठक के सिलसिले में पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. का दौरा किया। व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के भावी रुझानों और संभावनाओं पर प्रस्तुतियाँ, विशेष रूप से चौथी औद्योगिक क्रांति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हाइपर-कनेक्टेड सोसाइटी द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों और अवसरों के प्रकाश में, किम यंग-सांग, ओह होयंग, चो सेउंगिक और वाई जिनह्वा द्वारा दी गईं। आह्न जंग और जिनह्वा वाई ने मेक्ट्रोनिक्स पर व्यावहारिक सत्र आयोजित किए। कोइका (कोरिया इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी) के *कंट्री डायरेक्टर* श्री वू चान चांग ने मेक्ट्रोनिक्स लैब की स्थापना के लिए सहयोग पर रा.शै.अ.प्र.प. के *निदेशक* दिनेश प्रसाद सकलानी के साथ हुई चर्चा के बारे में जानकारी दी। लिम सियोन-ही ने

डी.एम.एस. के व्यावसायिक अध्यापकों के लिए व्यावहारिक सत्र आयोजित किया और सौंदर्य और कल्याण के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी।

- इब्राहम ए. किआजुलु II, आई.आर.आई.एस.ई. के *परियोजना समन्वयक*, शिक्षा मंत्रालय, लाइबेरिया ने 13 अप्रैल, 2024 को किट्स प्रभाग का दौरा किया।
- आई.आई.टी., गुजरात के दो संकाय सदस्यों के साथ 60 से अधिक विद्यार्थियों ने 17 अप्रैल, 2023 को अपने शैक्षिक दौरे के एक भाग के रूप में एल.डी.डी. का दौरा किया।
- लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली के एक संकाय सदस्य के साथ एम.एड. के 10 विद्यार्थियों ने 11 अक्तूबर, 2023 को एल.डी.डी. का दौरा किया।
- शिक्षा विभाग, नोएडा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा के 52 प्रतिभागियों ने 15 मार्च 2024 को अध्यापक शिक्षा विभाग का दौरा किया।
- शिक्षा विभाग, भारतीय अध्यापक शिक्षा संस्थान, गांधीनगर, गुजरात से 63 प्रतिभागियों ने 19–20 मार्च 2024 को अध्यापक शिक्षा विभाग का दौरा किया।
- शिक्षा विभाग, मनोनमनियम सुंदरनार विश्वविद्यालय, तिरुनेलवेली, तमिलनाडु से 15 प्रतिभागियों ने 21 मार्च, 2024 को अध्यापक शिक्षा विभाग का दौरा किया।
- वर्ष 2023–2024 के दौरान निम्नलिखित संस्थान/कॉलेज/संगठनों ने सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. का दौरा किया—

क्र. सं.	संस्थान/कॉलेज/संगठन का नाम	यात्रा की तिथि
1.	एम.सी.डी. के वरिष्ठ अधिकारियों और सलाहकारों ने एस.ए.आर.डी. टीम, दिल्ली के साथ सहयोग से दौरा किया	13 अप्रैल, 2023
2.	शिक्षा मंत्रालय, लाइबेरिया के प्रतिनिधि	13 अप्रैल, 2023
3.	राजेंद्र विश्वविद्यालय, ओडिशा के बी.एड-एम.एड. के विद्यार्थी	17 अप्रैल, 2023
4.	व्यावसायिक अध्ययन संस्थान के बी.एड. के विद्यार्थी	18 अप्रैल, 2023
5.	दिल्ली के व्यावसायिक अध्ययन संस्थान के बी.एड. के विद्यार्थी	1 मई, 2023
6.	जामिया मिलिया इस्लामिया से एम.ए. एजुकेशन के विद्यार्थी	2 मई 2023
7.	विश्व भारती, शांतिनिकेतन के एम.एड. के विद्यार्थी	2 मई, 2023
8.	के.वी.एस., दिल्ली कैंट के विद्यार्थी	8 मई, 2023
9.	ए.जी.सी.आर. द्वारा आयोजित उत्तर भारत क्षेत्र के के.वी. अध्यापकों की बैठक	12 मई, 2023
10.	नवोदय विद्यालय समिति, नई दिल्ली के प्रधानाचार्य	28 मई, 2023
11.	एन.आई.ई.पी.ए. द्वारा स्कूल नेतृत्व पर आयोजित कार्यशाला में प्रतिभागी	10 जून, 2023
12.	एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली के प्रतिभागियों का दौरा	22 जून, 2023
13.	आई.आई.एम.सी., दिल्ली के डिजिटल मीडिया विद्यार्थियों का दौरा	26 जून, 2023
14.	एन.आई.ई.पी.ए., शैक्षिक प्रशासन के लिए पाँचवें अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम के प्रतिभागी	28 जुलाई, 2023

15.	पब्लिक स्कूल फोरम	19 अगस्त 2023
16.	बनारस हिंदू विश्वविद्यालय	23 अगस्त, 2023
17.	श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	19 सितंबर, 2023
18.	एन.आई.पी.ई.ए. (स्कूल प्रिंसिपल प्रोग्राम)	13 अक्तूबर, 2023
19.	एन.आई.पी.ई.ए., 10वीं पी.जी.डी.ई.पी.ए. के प्रतिभागी	19 अक्तूबर, 2023
20.	बाल भवन के बच्चे	20 अक्तूबर, 2023
21.	डी.टी.यू. के एम.ए. (शिक्षा) के विद्यार्थी	27 अक्तूबर, 2023
22.	वृक्षा ग्लोबल स्कूल	30 अक्तूबर, 2023
23.	शताब्दी पब्लिक स्कूल, मेरठ	31 अक्तूबर, 2023
24.	विद्यार्थी, मीडिया अध्ययन, आई.आई.एम.सी.	7 नवंबर, 2023
25.	ओस्लो मेट्रोपोलिटन यूनिवर्सिटी, नॉर्वे से प्रतिनिधिगण	8 नवंबर, 2023
26.	के.आर. मंगलम विश्वविद्यालय, गुरुग्राम	30 नवंबर, 2023
27.	पी.एम. श्री केंद्रीय विद्यालय पी.जी.टी. अध्यापक और प्रधानाध्यापक	30 नवंबर, 2023
28.	व्यावसायिक अध्ययन संस्थान	7 दिसंबर, 2023
29.	बांग्लादेश, मलेशिया, मालदीव और श्रीलंका से प्रतिनिधिमंडल	7 दिसंबर, 2023
30.	एम.एड. स्कॉलर इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन एजुकेशन, मिजोरम	12 जनवरी, 2024
31.	लद्दाख डी.आई.ई.टी. टीम	15 जनवरी, 2024
32.	डी.एल.एड के विद्यार्थी विद्या प्रशिक्षण संस्थान	19 जनवरी, 2024
33.	राजेंद्र विश्वविद्यालय के बी.एड.-एम.एड. एकीकृत पाठ्यक्रम के विद्यार्थी	25 जनवरी, 2024
34.	पश्चिम बंग समग्र शिखा मिशन की टीम का दौरा	5 फरवरी, 2024 से 6 फरवरी, 2024
35.	5–9 फरवरी, 2024 तक आयोजित मास्टर प्रशिक्षक कार्यशाला का दौरा	6 फरवरी, 2024
36.	प्रशिक्षण महानिदेशालय, पी.एम.-ई विद्या (एम.एस.डी.ई. टीम) की महानिदेशक टीम का दौरा	20 फरवरी, 2024
37.	एस.सी.ई.आर.टी., तमिलनाडु की टीम का दौरा	29 फरवरी, 2024
38.	एन.आई.एम.आई. टीम, चेन्नई, तमिलनाडु का दौरा	4 मार्च, 2024
39.	गलगोटिया विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा के विद्यार्थियों का दौरा	5 मार्च, 2024
40.	सी.आई.आई.एल., मैसूरु के निदेशक प्रोफेसर शैलेंद्र मोहन का दौरा	8 मार्च, 2024
41.	नोएडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा में बी.एड./एम.ए. (शिक्षा) के विद्यार्थियों का दौरा	15 मार्च, 2024
42.	आई.आई.टी.ई., गुजरात के विद्यार्थियों का दौरा	20 मार्च, 2024
43.	फेयरफील्ड इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी, नई दिल्ली के विद्यार्थियों का दौरा	28 मार्च, 2024

अंतरराष्ट्रीय सहयोग

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) की संयुक्त कार्य समिति-फिनिश राष्ट्रीय शिक्षा एजेंसी (ई.डी.यू.एफ.आई.), फिनलैंड

रा.शै.अ.प्र.प. और फिनिश नेशनल एजेंसी ऑफ एजुकेशन (ई.डी.यू.एफ.आई.) के सहयोग की संयुक्त कार्य समिति की दूसरी बैठक 30 अक्तूबर, 2023 को रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी ने की और इसमें फिनलैंड दूतावास, नई दिल्ली के काउंसलर मीका, रा.शै.अ.प्र.प. के संयुक्त निदेशक श्रीधर श्रीवास्तव, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) के संयुक्त निदेशक अमरेंद्र पी. बेहरा, पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) के संयुक्त निदेशक दीपक पालीवाल और फिनलैंड के विश्वविद्यालयों के संकाय सदस्य, शिक्षण और अधिगम के लिए वैश्विक नवाचार नेटवर्क (जी.आई.एन.टी.एल.) के प्रतिनिधि एवं रा.शै.अ.प्र.प. और उसकी घटक इकाइयों के विभागों के प्रमुख और संकाय सदस्य शामिल हुए। संयुक्त कार्य समिति ने सहयोग और कार्यान्वयन को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न विषयगत क्षेत्रों पर विचार-विमर्श किया।

फिनलैंड के सहयोग से वेबिनार

फिनिश नेशनल एजेंसी ऑफ एजुकेशन (ई.डी.यू.एफ.आई.) के साथ समझौता ज्ञापन के हिस्से के रूप में वेबिनार की एक श्रृंखला आयोजित की गई। प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., फिनिश नेशनल एजेंसी ऑफ एजुकेशन (ई.डी.यू.एफ.आई.) और ग्लोबल इनोवेशन नेटवर्क फॉर टीचिंग एंड लर्निंग (जी.आई.एन.टी.एल.), फिनलैंड ने संयुक्त रूप से नवंबर 2023 से मार्च 2024 तक फाउंडेशनल लिटरेसी और न्यूमेरेसी पर तीन वेबिनारों की एक श्रृंखला आयोजित की। वेबिनार में रा.शै.अ.प्र.प. और इसके क्षेत्रीय संस्थानों और ई.डी.यू.एफ.आई. और फिनलैंड के अन्य संस्थानों के विद्यार्थियों, अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, अनुसंधान और संकाय सदस्यों ने भाग लिया।

वेबिनार 1— साक्षरता विकास और बहुभाषावाद के लिए विभिन्न देशों की कहानियों के साथ-साथ 'कावड़ काढ़ा', 'पट्टचित्र' (धागे और छाया कठपुतलियों के माध्यम से) जैसी भारतीय कहानी वाचन परंपरा की तकनीकों के माध्यम से 'पंचतंत्र' और जातक कथाओं से भारतीय कहानियों और कहानी वाचन परंपरा को बढ़ावा देने के लिए 24 नवंबर, 2023 को 'बुनियादी स्तर के लिए खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र' पर एक वेबिनार आयोजित किया गया।

वेबिनार 2— 'बुनियादी स्तर पर खेल और खेल-आधारित शिक्षण को बढ़ावा देना' विषय पर एक वेबिनार बुनियादी स्तर पर नवाचारी और अनुभवात्मक शिक्षणशास्त्र को बढ़ावा देने के लिए 11 जनवरी, 2024 को आयोजित किया गया। वेबिनार में सार्वभौमिक अधिगम डिजाइन (यू.डी.एल.) और समावेशी शिक्षा पर आधारित रीडिंग 'ऑल' सीरीज भी प्रदर्शित की गई।

वेबिनार 3— 'बुनियादी वर्षों के दौरान सीखने के लिए एस.टी.ई.ए.एम. दृष्टिकोण को प्रोत्साहन' पर एक वेबिनार 15 मार्च, 2024 को आयोजित किया गया। एस.टी.ई.ए.एम. दृष्टिकोण खेल, जिज्ञासा, अन्वेषण, अवलोकन और पूछताछ में अंतर्निहित है। सीखने के लिए एस.टी.ई.ए.एम. दृष्टिकोण में, विभिन्न प्रकार के कौशल सीखने और ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रभावी टूलों को बनाने हेतु एस.टी.ई.ए.एम. मे निहित सभी पाँच क्षेत्रों को अपनाया जाता है और आपस में जोड़ा जाता है।

बुनियादी वर्षों के अध्यापक, ई.सी.सी.ई. अध्यापक, अध्यापक प्रशिक्षक, माता-पिता, प्रशासक और नीति नियोजक, एस.सी.ई.आर.टी., डी.आई.ई.टी. और ई.सी.सी.ई. के क्षेत्र में काम करने वाले अन्य हितधारक लक्षित दर्शक थे।

रा.शै.अ.प्र.प. संकाय द्वारा विदेश दौरे

- जतींद्र मोहन मिश्रा, *प्रोफेसर*, रा.शै.अ.प्र.प. 22 दिसंबर, 2021 से 22 दिसंबर, 2023 तक संस्कृत और भारतीय दर्शन के लिए महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस में *विजिटिंग प्रोफेसर* और आई.सी.सी.आर. *अध्यक्ष* के रूप में प्रतिनियुक्ति पर थे। इस अवधि के दौरान वे संस्कृत और भारतीय दर्शन के स्नातक और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए शिक्षण कार्य कर रहे थे और उन्होंने डिप्लोमा, डिग्री एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की अनुसंधान परियोजनाओं और शोध प्रबंधों का पर्यवेक्षण किया। उनकी देख-रेख में चार प्रत्याशी मॉरीशस ओपन यूनिवर्सिटी में पीएच.डी. कार्यक्रम में शामिल हुए हैं। उन्होंने स्कूल ऑफ इंडोलॉजिकल स्टडीज, एम.जी.आई. के संकाय सदस्यों की क्षमता निर्माण के लिए कुछ सत्र भी आयोजित किए। इसके साथ ही, उन्होंने भारतीय उच्चायोग के कार्यालय और इंदिरा गांधी भारतीय संस्कृति केंद्र के माध्यम से मॉरीशस की आम जनता के लिए संस्कृत और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने और प्रचार करने की अपनी सेवा का विस्तार किया। इस अवधि के दौरान, वे आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में एम.जी.आई., मोका, मॉरीशस द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस 2022 के उपलक्ष्य में एक ऑनलाइन प्रकाशन, *इकोलॉजी एंड एनवायरमेंटल एथिक्स : इंडोलॉजिकल पर्सपेक्टिस* के संपादक थे। उन्होंने मॉरीशस की स्कूली शिक्षा में संस्कृत को शामिल करने के लिए भी प्रयास किए, जो अब उचित प्रक्रिया में है।
- सी.आई.ई.टी. के संयुक्त निदेशक अमरेंद्र बेहरा ने 6 से10 नवंबर, 2023 तक यूनिसेफ और डब्ल्यू.एच.ओ. द्वारा जकार्ता, इंडोनेशिया में 'सहायक प्रौद्योगिकी' तक पहुँच बढ़ाने की पर क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

परिशिष्ट

- **परिशिष्ट I**
  रा.शै.अ.प्र.प. के संकाय सदस्यों द्वारा प्रकाशन और प्रस्तुतियाँ
- **परिशिष्ट II**
  रा.शै.अ.प्र.प. संकाय के पर्यवेक्षण में वर्ष के दौरान प्रदान की गई एम.फिल./पीएच.डी. डिग्रियाँ
- **परिशिष्ट III**
  पुरस्कार और अध्येतावृत्तियाँ
- **परिशिष्ट IV**
  वर्ष 2023–24 के लिए बहिर्नियमावली में उल्लिखित रा.शै.अ.प्र.प. की समितियों का विवरण
- **परिशिष्ट V**
  31 मार्च, 2024 को रा.शै.अ.प्र.प. के समेकित संस्वीकृत पदों की संख्या और आरक्षण की स्थिति
- **परिशिष्ट VI**
  31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्तियाँ एवं भुगतान लेखा
- **परिशिष्ट VII**
  वर्ष 2023–24 के दौरान जारी किए गए प्रकाशन
- **परिशिष्ट VIII**
  प्रकाशन प्रभाग और इसके क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र
- **परिशिष्ट IX**
  रा.शै.अ.प्र.प. के संघटक और संकाय

रा.शै.अ.प्र.प.
रा.शै.अ.प्र.प.

रा.शै.अ.प्र.प. के संकाय सदस्यों द्वारा प्रकाशन और प्रस्तुतियाँ

प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

शोध पत्र और लेख

निकल्जे, वी.एम. और के. मनवाल. 2023. द परसेप्शन ऑफ ग्लोबल सिटीजनशिप एजुकेशन अमंग स्कूल टीचर्स इन इंडिया — ए सर्वे. *द प्राइमरी टीचर*. 47(1), पृ. 37–46.

निकल्जे, वी.एम. और ओ. जिमिक. 2023. द रोल ऑफ म्यूजियम्स इन प्राइमरी स्कूल एजुकेशन. *द प्राइमरी टीचर*. 44(1), पृ. 7–17.

संगाई, एस. 2023. कोविड-19 महामारी के दौरान भारत सहित वैश्विक स्तर पर विद्यालयी शिक्षा में हुए प्रयासों एवं बदलावों का विश्लेषण. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 42(2), पृ. 13–19.

शर्मा, के. 2023. असेसमेंट एंड क्वॉलिटी एजुकेशन इन इंडिया. द ब्लू डॉट. यूनेस्को. 17, पृ. 61–65.

संपादित पुस्तक में अध्याय

बोली, जी. 2024. इन्फ्लुएंस ऑफ सोशल इंटेलिजेंस ऑन द टीचिंग एप्टीट्यूड ऑफ द सेकेंडरी स्कूल टीचर्स इन अपर सियांग. मोंजू, तागे, सोनू, मीनू, पादु और अंगा (संपादक). *टीचर एजुकेशन इन द नॉर्थ-ईस्ट इंडिया*. पृ. 23–28. पी.के. पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली.

यादव, पी. 2024. रोल ऑफ डाइट्स इन ट्रेनिंग प्रीस्कूल टीचर्स. पांड्या, किन्नरी, जिगीशा शास्त्री और वृंदा दत्ता (संपादक). *टीचिंग द यंग — द अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट प्रोफेशन इन इंडिया*. पृ. 161–171. ओरिएंट ब्लैकस्वान प्रा. लि., हैदराबाद.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

संगाई, एस. 2023. प्रमोटिंग एनवायर्नमेंटल कंजरवेशन थ्रू पेडागॉजी एट द फाउंडेशनल एंड प्रीपेरेटरी स्टेजेस. *एनवायर्नमेंटल एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल एंड हार्मोनियस लिविंग विद नेचर* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र., आर.आई.ई., अजमेर. 4–6 अक्तूबर.

———. 2023. टेक्निकल सेशन टी4 टू टी6. *एनवायर्नमेंटल एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल एंड हार्मोनियस लिविंग विद नेचर*. पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में सत्र की अध्यक्षता. आर.आई.ई., अजमेर. 4–6 अक्तूबर.

———. 2024. रोल ऑफ लर्निंग एनवायर्नमेंटल एंड टीचर फॉर पेडागॉजिकल ट्रांसफॉर्मेशन एट द फाउंडेशनल स्टेज. *ट्रांसफॉर्मिंग इंडियन एजुकेशन पोस्ट-एन.ई.पी. 2020 कनेक्टिंग टू द पास्ट — टार्गेटिंग एट द फ्यूचर* पर शिक्षा 2024 पर द जामिया इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में प्रस्तुत शोधपत्र. जामिया मिलिया इस्लामिया. 14–15 फरवरी.

सनवाल, एस. 2023. फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमरेसी इन द लाइट ऑफ एन.ई.पी. 2020 एंड एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022. *फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमरेसी* पर वेबिनार में प्रस्तुत शोधपत्र. आर.आई.ई., भोपाल. 6 जून.

———. 2023. एन.सी.ई.आर.टी. इनिशिएटिव्स ऑन फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमरेसी. *फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमरेसी पॉलिसिस एंड प्रैक्टिस* पर राष्ट्रीय वेबिनार वार्ता में आमंत्रित पैनलिस्ट. आर.आई.ई., भुवनेश्वर. 16 अप्रैल.

शर्मा, के. 2023. एमर्जिंग मेथडॉलॉजीज इन एजुकेशनल रिसर्च. *एजुकेशनल रिसर्च — एमर्जिंग मेथडॉलॉजीज एंड ट्रेंड्स* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र. सेंटर फॉर एकेडमिक लीडरशिप एंड एजुकेशनल मैनेजमेंट, शिक्षा विभाग, पंजाब. 24–25 अगस्त.

———. 2023. हाउ टू डिजाइन असेसमेंट्स फॉर एजुकेशन फॉर फ्लोरिशिंग. *जेनरेशन एआई — शेपिंग एजुकेशन फॉर फ्लोरिशिंग* पर यूनेस्को जी20 के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में पैनलिस्ट. मैसूरु. 16–17 मई.

———. 2024. लीडिंग कलेक्टिव एक्शन फॉर ग्रीनर फ्यूचर. द *ग्रीन स्कूल इनिशिएटिव एट द वर्ल्ड सस्टेनेबल डेवलपमेंट समिट (डब्ल्यू.एस.डी.एस.)* पर वार्षिक सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. टाटा स्टील फाउंडेशन एंड टेरी, नई दिल्ली. 8 फरवरी.

यादव, पी. 2023. ओवरव्यू ऑफ नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क ऑन फाउंडेशनल स्टेज 2022. *नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 — अपॉर्च्यूनिटीज, इम्पैक्ट एंड फ्यूचर चैलेंजेस* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में वक्ता के रूप में व्याख्यान. गीता निकेतन आवासीय विद्यालय, कुरुक्षेत्र. 26 नवंबर.

भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)

शोध पत्र और लेख

शर्मा, वंदना. 2023. दलित साहित्य का स्वरूप, मुद्दे और प्रमुख चुनौतियाँ शोध. *उत्कर्ष*. 4, पृ. 27–28.

पुस्तकें

अंसारी, फारूक. 2023. उर्दू — सफर दर सफर. एप्लाइड बुक्स, नई दिल्ली.

कोहली, नरेश. (संपादक). 2023. प्रेमचंद कहानी रचनावली — कुछ और मोती. अक्षर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली.

यादव, सरयुग. 2023. प्रो. डी. गांगुली — ए जर्नी विदआउट लुकिंग बैक. श्वेतांशु प्रकाशन, नई दिल्ली.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

कपूर, के. 2023. एम्पावरिंग डाइवर्स वॉइसेज इन इंग्लिश क्लास रूम थ्रू एक्सपीरिएन्शियल एंड कॉन्टेक्स्चुअल लर्निंग. *एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स — ट्रांसफॉर्मेटिव ट्रेंड्स इन द एशिया-पैसिफिक रीजन ए.पी.सी.एल. एच.ए.एन.यू.* पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. हनोई यूनिवर्सिटी. 28–30 नवंबर.

———. 2023. इंटीग्रेटिंग मैटीरियल्स, पेडागॉजी एंड असेसमेंट — फुलफिलिंग कोर लैंग्वेज करिकुलम ऑब्जेक्टिव्स. *एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स — ट्रांसफॉर्मेटिव ट्रेंड्स इन द एशिया-पैसिफिक रीजन ए.पी.सी.एल. एच.ए.एन.यू.* पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. हनोई यूनिवर्सिटी. 28–30 नवंबर.

शोध पत्र और लेख

बिस्वास, रंजन. 2023. ए स्टडी ऑन प्रेजेंट एजुकेशनल सेनारीओज ऑफ भील ट्राइबल ग्रुप्स इन मध्य प्रदेश. *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेंट साइंस एंड टेक्नोलॉजी*. 14(12), पृ. 100–107.

———. 2023. यूजिंग ऑफ इंडीजीनस टॉयज, गेम्स एंड स्पोर्ट्स फॉर प्रमोटिंग एजुकेशन एट फाउंडेशनल स्टेजेस अमंग ट्राइबल एरियास इन नॉर्थ-ईस्ट स्टेट्स. *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ साइंस इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी.* 13(4), पृ. 103–10.

सिंह, वी.के. 2023. एमर्जिंग ट्रेंड्स ऑफ रिसर्चेज इन एजुकेशन ऑफ चिल्ड्रेन विद डिसएबिलिटीज — इंडियन पर्सपेक्टिव्स. *आर.आई.ई. भोपाल जर्नल ऑफ एजुकेशन.* 6(2), पृ. 182–194.

संपादित पुस्तक में अध्याय

प्रकाश, एस. और एम. शर्मा. 2024. चैलेंजेस फेस्ड बाय स्टूडेंट टीचर्स ड्यूरिंग टीचिंग प्रैक्टिस इन पापुम पारे डिस्ट्रिक्ट ऑफ अरुणाचल प्रदेश. मोंजू, टी., एम. सोनो और ए. पादु (संपादक). *टीचर एजुकेशन इन नॉर्थ-ईस्ट इंडिया.* पृ. 73–85. पी.के. पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

चौहान, एस.सी. 2023. नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन (एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023). *एन.ई.पी. 2020 अपॉर्च्यूनिटीज, इम्पैक्ट एंड फ्यूचर चैलेंजेस* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र. गीता निकेतन आवासीय विद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा. 26 नवंबर.

———. 2024. कम्यूनिटी पार्टिसिपेशन एंड रिसोर्स मोबिलाइजेशन — रियलाइजिंग गोल्स ऑफ एन इक्विटेबल एंड इन्क्लूसिव सोसायटी. *इक्विटेबल एंड इन्क्लूसिव एजुकेशन* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य संबोधन. आर.आई.ई., अजमेर. 9–11 जनवरी.

सिंह, वी.के. 2023. लर्निंग नीड्स ऑफ चिल्ड्रेन विद डिसएबिलिटीज — आई.सी.टी. इन इन्क्लूसिव क्लासरूम. *आई.सी.टी. टूल्स फॉर स्कूल एजुकेशन — करंट स्टेट्स एंड एमर्जिंग ट्रेंड्स* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र, डी.एस.आई.आर.-ए2के+ (स्टडीज) प्रोग्राम ऑफ डिपार्टमेंट ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रीयल रिसर्च (डी.एस.आई.आर.) टेक्नोलॉजी भवन, न्यू मेहरौली रोड, नई दिल्ली. 6 सितंबर.

———. 2024. एजुकेशनल इंटरवेंशन्स फॉर एजुकेटिंग चिल्ड्रेन विद स्पेसिफिक लर्निंग डिसएबिलिटीज इन एन इन्क्लूसिव क्लासरूम विद आई.सी.टी. इंटीग्रेशन. *स्पेसिफिक लर्निंग डिसएबिलिटी — थियोरेस्टिकल पैराडाइम्स एंड प्रैक्टिकल इंटरवेंशन्स इन द एजुकेशन सिस्टम्स* पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य संबोधन. डिपार्टमेंट ऑफ टीचर ट्रेनिंग एंड नॉन-फॉर्मल एजुकेशन, शिक्षा संकाय. जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली. 22–23 मार्च.

———. 2024. इंटीग्रेटिड सपोर्टिव इंटरवेंशन सिस्टम फॉर चिल्ड्रेन विद स्पेसिफिक लर्निंग डिसएबिलिटीज. *स्पेसिफिक लर्निंग डिसएबिलिटी — थियोरेस्टिकल पैराडाइम्स एंड प्रैक्टिकल इंटरवेंशन्स इन द एजुकेशन सिस्टम्स* पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. डिपार्टमेंट ऑफ टीचर ट्रेनिंग एंड नॉन-फॉर्मल एजुकेशन, शिक्षा संकाय. जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली. 23 मार्च.

जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

आनंद, रॉय मिली. 2023. *जेंडर एंड मेंटल हेल्थ. मेंटल वेल-बीइंग एंड इकोसिस्टम — बिल्डिंग एन अंडरस्टेंडिंग* पर परिचर्चा वेबिनार के पैनलिस्ट. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. 15 दिसंबर.

———. 2024. सोशियो-इमोशनल डेवलपमेंट ऑफ गर्ल्स फॉर्म के.जी.बी.वी. स्कूल्स. इन्क्लूसिवनेस एंड मेंटल वेल-बीइंग — ए जेंडर परस्पेक्टिव पर परिचर्चा वेबिनार के पैनलिस्ट. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. 8 मार्च.

सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

शोध पत्र और लेख

खोबंगु, वी. 2023. यूथ डॉर्मिटरी फॉर लर्निंग इन ट्रेडीशनल हमार सोसायटी. *जी.ए.पी. बोधी-तारू — ए ग्लोबल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज.* वॉल्यूम 4, स्पेशियल इश्यू, अगस्त. पृ. 136–140.

ओझा, सीमा एस. 2023. इतिहास की पाठ्यपुस्तकें, विवाद और इनमें इतिहासकारों की भूमिका. *अनाकृति,* 9 (98–99), पृ. 83–96.

———. 2023. पाठ्यपुस्तकें और इतिहास की निष्पक्षता. *अधिगम.* 27, पृ. 7–14.

———. 2024. पब्लिक डिबेट ऑन एन.सी.ई.आर.टी. हिस्टोरी टेक्स्टबुक्स — एनालाइजिंग ट्वीट्स ऑन मुगल्स. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी.* 6(1), पृ. 261–272.

रश्मि. 2023. एक्सप्लोरिंग साइकोलॉजिकल रैमिफिकेशन ऑफ 2019–एन कोव पैंडेमिक. *यूरोपियन केमिकल बुलेटिन.* 12(8), पृ. 3219–3232.

श्रीवास्तव, गौरी. 2023. डिकोडिंग द वेल्थ ऑफ ट्राइबल नॉलेज — द यूनिक वेज ऑफ अंडरस्टेंडिंग द हैबिटेट, कल्चर एंड कंट्रीब्यूशंस. *यूनिवर्सिटी न्यूज.* 61(47), पृ. 57–62.

———. 2023. लीगल लिटरेसी — द ड्राइविंग फोर्स फॉर डेमोक्रेसी इन प्रैक्टिस. *इंडियन जर्नल ऑफ लॉ एंड लीगल रीसर्च.* 5(3), पृ. 1–17.

———. 2023. योग — ए गिफ्ट ऑफ अवर हेरिटेज, ए जर्नी ऑफ हेल्थ एंड वेल-बीइंग इन टाइम एंड स्पेस. *इंडियन एजुकेशन रिव्यू.* 61(1), पृ. 1–12.

पुस्तकें

श्रीवास्तव, गौरी. 2024. सीमलेस एक्सपोजिशन्स. वी.एल. मीडिया सोल्यूशन्स, नई दिल्ली.

संपादित पुस्तक में अध्याय

खोबुंग, वी. 2023. सिस्टेमिक करप्शन — फिनोमेनन एनसुइंग मार्जिनलाइजेशन ऑफ ट्राइबल्स इन मणिपुर. किखी, केडिलेजो गौतम, एंव धर्मा रक्षित (संपादक). *पर्सपेक्टिव्स ऑफ मार्जिनलाइजेशन फ्रॉम द नॉर्थ-ईस्ट.* पृ. 210–223, रूटलेज, न्यूयॉर्क.

रश्मि. 2023. ग्रीन मार्केटिंग एंड कस्टमर रिटेंशन पब्लिकेशन — ए बिब्लियोमेट्रिक एनालिसिस. मल्होत्रा, अमरजीत कौर, संजय कुमार, जियांगक्सिया लिउ और तबसुम अहमद (संपादक). रे-इमेजिनिंग ग्रीन बिजनेस. पृ. 325–334. पेन टू प्रिंट पब्लिशिंग एल.एल.पी., नई दिल्ली.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

सिंह, जया. 2023. अंडरस्टेंडिंग एनवायर्नमेंट एज ए प्लेनेटरी इनहेरिटेंस — वर्क फॉर इट्स प्रोटेक्शन एंड रिस्टोरेशन. *नोलेज इंडियन सिस्टम* पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. दर्शनशास्त्र विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय, रबींद्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी एंड ग्रैंड एकेडमिक पोर्टल- जी.ए.पी. इंडिया. 28–29 जुलाई.

विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)

शोध पत्र और लेख

वर्मा, पी. और एस. शर्मा. 2023. नैनोपार्टिकल्स इन कॉम्बेटिंग एबायोटिक स्ट्रेस (ड्रॉट स्ट्रेस) इन प्लांट्स — एन इंटीग्रेटिड एप्रोच फॉर सस्टेनेबल फार्मिंग. *एनवायर्नमेंटल एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल एंड हार्मोनियस लिविंग विद नेचर (एन.एस.ई.ई. 2023)* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र. आर.आई.ई., अजमेर. 4–6 अक्तूबर.

पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग (डी.सी.एस. एंड डी.)

शोध पत्र और लेख

अरोरा, आर. 2023. करिकुलम हैज बीन रेशनलाइज्ड फॉर द टाइम्स. *इंडियन एक्सप्रेस.* https://indianexpress.com

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

अरोड़ा, आर. 2023. ए जर्नी फ्रॉम अन्नमया टू आनंदमय विकास. *डिजाइनिंग ह्यूमन सेंट्रिक एजुकेशन फॉर ए सस्टेनेबल वर्ल्ड थीम* पर एन.पी.एस.सी. के 50वें वार्षिक सम्मेलन में पैनलिस्ट. एन.पी.एस.सी., नई दिल्ली. 26 अप्रैल 2023.

———. 2023. नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023 — एम्स, प्रिंसिपल्स एंड एप्रोचेज. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन* पर सम्मेलन में पैनलिस्ट. आर.आई.ई., मैसूरु और एस.पी.एस.आर., नेल्लोर. 17 दिसंबर 2023.

कोइरेंग, आर. 2023. ए थियोरेटिकल स्टडी ऑफ इलेक्ट्रिकल रेसिस्टिविटी ऑफ लिक्विड सी.यू.-एन.आई. एंड सी.यू.-जेड.आर. बाइनरी एलॉयज. *कंडेंस्ड मैटर एंड डिवाइस फिजिक्स* पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. पंडित दीन दयाल यूनिवर्सिटी (पी.ई.डी.यू.), अहमदाबाद. 27–29 सितंबर.

———. 2023. टीचर एजुकेशन करिकुलम. *टीचर एजुकेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ इम्प्लीमेंटिंग एन.ई.पी. 2020* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में सत्र की अध्यक्षता. पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), उमियम. 9–10 नवंबर.

विजयन, के. 2023. इनोवेटिव एप्रोचेज एंड मेथडॉलॉजीज ऑफ जी.सी.ई.डी. करिकुलम इंटीग्रेशन. *ग्लोबल सिटीजनशिप एजुकेशन एंड टीचर एम्पावरमेंट इन साउथ एशिया* पर उप क्षेत्रीय कार्यशाला में प्रस्तुत शोधपत्र. ए.पी.सी.ई.आ.ई.यू. और यूनेस्को, काठमांडू, नेपाल. 9–11 मई.

———. 2023. एन्शुरिंग इन्क्लुसिव एंड इक्विटेबल क्वॉलिटी एजुकेशन — द वे आउट. *इन्क्लुसिव एंड इक्विटेबल एजुकेशन फॉर डिसैडवांटेज्ड ग्रुप — एस.डी.जी. 4 एंड एन.पी.ई. 2020* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में पैनलिस्ट. चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, चंडीगढ़. 19–20 मई.

———. 2023. स्पेशल एजुकेशन एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस. *फ्यूचर ऑफ एजुकेशन* पर 6वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सत्र की अध्यक्षता. द इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ नॉलेज मैनेजमेंट, कौलालंपुर, मलेशिया. 6–7 जुलाई.

———. 2023. पैराडाइम शिफ्ट इन टीचिंग ऑफ मैथेमेटिक्स. *मैथेमेटिक्स एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में पैनलिस्ट. एन.ई.आर.आई.ई., उमियम. 20–22 दिसंबर.

———. 2023. मैथेमेटिक्स इन स्कूल करिकुलम. *मैथेमेटिक्स एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में पैनलिस्ट. एन.ई.आर.आई.ई., उमियम. 20–22 दिसंबर.

———. 2023. मैथेमेटिक्स लर्निंग — इश्यूज एंड कंसर्न्स. *मैथेमेटिक्स एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में पैनलिस्ट. एन.ई.आर.आई.ई., उमियम. 20–22 दिसंबर.

कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग (डी.ई.ए.ए.)

शोध पत्र और लेख

बनर्जी, एस. 2023. कला उत्सव — प्रमोटिंग ट्रेडीशनल आर्ट्स. *संगीत गैलेक्सी*. 12(2), पृ. 5–13.

शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

शोध पत्र और लेख

कौल, ए. और ए.के. श्रीवास्तव. 2023. ब्रेकिंग बैरियर्स — मेकिंग हैंड्स-ऑन साइंस लर्निंग एक्सेसिबल फॉर स्टूडेंट्स विद विजुअल इम्पेयरमेंट्स एट मिडल स्टेज. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन एंड टीचिंग*. 3(2), पृ. 134–149.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

सिंह, वी.पी. 2024. स्ट्रेटेजीज फॉर प्रोमोशन एंड इंटीग्रेशन ऑफ वोकेशनल एजुकेशन इन स्कूल्स. *पर्सपेक्टिव्स एंड प्रैक्टिस इन वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. पी.एस.एस.सी.आई.वी., भोपाल. 1–2 फरवरी.

———. 2024. इन्क्लुसिविटी एंड डाइवर्सिटी इन साइंस एजुकेशन. *रिसेंट एडवांसेज इन साइंस एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में आमंत्रित वार्ता. आर.आई.ई., भोपाल. 26–28 फरवरी.

सिंह, वी.पी., ए.के. श्रीवास्तव और एन. जंगीर. 2024. एफिकेसी ऑफ मिडल स्टेज साइंस किट्स ऑफ एन.सी.ई.आर.टी. इन टीचिंग-लर्निंग ऑफ साइंस इन गवर्नमेंट स्कूल्स ऑफ दिल्ली. *रिसेंट एडवांसेज इन साइंस एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. आर.आई.ई., भोपाल. 26–28 फरवरी.

शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)

शोध पत्र और लेख

महापात्र, एस.के. 2024. पीर इंटरएक्शन, एक्सक्लुजन एंड स्कूल पार्टिसिपेशन — इश्यूज ऑफ स्कूलिंग इन ए ट्राइबल विलेज ऑफ ओडिशा. *कंटेम्परेरी वॉइस ऑफ दलित*. https://doi.org/10

मणि, एस. और पी. मिश्रा. 2024. एक्सप्लोरिंग द इम्पैक्ट ऑफ कल्चरल डाइवर्सिटी ऑन साइकोलॉजिकल वेल-बीइंग एंड हैप्पीनेस. *इंडियन जर्नल ऑफ हेल्थ एंड वेल-बीइंग*. 15(1), पृ. 30–33.

सिंह, पारुल. 2023. डेवलपिंग द टेक्स्टबुक इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ लर्निंग 'हाउ टू लर्न'. *संवर्धिनी*. 5, पृ. 1–11.

अनुसंधान रिपोर्ट

दीक्षित, एस., पी. बत्रा, ए. बजाज और एस. साध. 2023. *ट्रांसफॉर्मिंग एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल फ्यूचर्स — टी.ई.एस.एफ. इंडिया हब सिंथेसिस रिपोर्ट.* नई दिल्ली, टी.ई.एस.एफ. इंडिया-आई.आई.एच.एस. https://doi.org/10.5281/zenodo.10532605

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

चक्रबर्ती, एस. 2024. मेंटल हेल्थ एंड वेल-बीइंग फॉर स्कूल स्टूडेंट्स — ए सर्वे, 2022. *प्रमोटिंग मेंटल वेल-बीइंग इन स्कूल्स — चैलेंजीज एंड स्ट्रेटेजीज* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में पैनलिस्ट. मनोदर्पण, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर. 31 जनवरी.

———. 2023. मनोदर्पण — एन इनिशिएटिव ऑफ एम.ओ.ई. *लाइफ स्किल्स, मेंटल हेल्थ एंड वेल-बीइंग* पर भारत की जी-20 अध्यक्षता की स्मृति में आयोजित और सी.बी.एस.ई. किशोर शिखर सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. सी.बी.एस.ई., नई दिल्ली और रामकृष्ण मिशन, अगरतला. 26 जुलाई.

चक्रबर्ती, एस. 2023. होल स्कूल एप्रोच (डब्ल्यू.एस.ए.) फॉर मेंटल हेल्थ एंड वेल-बीइंग— स्टेकहोल्डर्स' रोल. *प्रमोटिंग मेंटल वेल-बीइंग इन स्कूल्स— चैलेंजीज एंड स्ट्रेटेजीज* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में पैनलिस्ट. मनोदर्पण, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु. 23 नवंबर.

———. 2023. टुवर्ड्स मेंटल हेल्थ एंड वेल-बीइंग इन स्कूल्स — पॉलिसी परस्पेक्टिव एंड रिसेंट इनिशिएटिव्स. *मेंटल वेल-बीइंग ऑफ स्कूल गोइंग चिल्ड्रेन इन इंडिया* परामर्श में पैनलिस्ट. रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी के सहयोग से राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग. महाराष्ट्र. 11 दिसंबर.

चक्रबर्ती, एस. और आर. चौधरी. 2023. एन एक्सप्लोरेशन ऑफ मेंटल हेल्थ एंड वेल-बीइंग ऑफ ट्राइबल स्टूडेंट्स इन इंडिया. *मेंटल हेल्थ इश्यूज ऑफ द ट्राइबल्स— प्रमोटिंग देयर वेल-बीइंग* पर विश्व मानव विज्ञान कांग्रेस 2023 में प्रस्तुत शोधपत्र. भुवनेश्वर. 14 अगस्त 2023.

महापात्र, एस.के. 2023. रोल ऑफ एन.ई.पी. 2020 इन एड्रेसिंग कंटेम्परेरी चैलेंजीज ऑफ डाइवर्सिटी एंड इन्क्लुजन इन एजुकेशन. *एजुकेशन एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. व्यावसायिक अध्ययन संस्थान, दिल्ली. 10 अक्तूबर.

शुक्ला, आर. 2023. पॉजिटिव स्कूल *एनवायर्नमेंट* फॉर मेंटल वेल-बीइंग एंड सेफ्टी. *पीस एजुकेशन/स्कूल सेफ्टी एंड सिक्योरिटी/चाइल्ड सेफगार्डिंग* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में सत्र की अध्यक्षता. श्रीनगर, कश्मीर विश्वविद्यालय. 18–19 जुलाई 2023.

———. 2023. प्रमोटिंग मेंटल वेल-बीइंग इन स्कूल्स — चैलेंजीज एंड स्ट्रेटेजीज. *प्रमोटिंग मेंटल वेल-बीइंग इन स्कूल्स* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. मनोदर्पण, रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, मैसूरु. 23–24 नवंबर.

शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग (डी.ई.आर.)

शोध पत्र और लेख

भारद्वाज, बी.पी. 2022. पेडागॉजिकल लीडरशिप इन स्कूल — ए क्वालिटेटिव स्टडी. *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन.* 48(3), पृ. 38–47.

अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)

शोध पत्र और लेख

पाटीदार, जितेन्द्र कुमार. 2023. अनुभव आधारित अधिगम-शिक्षण (सीखने-सिखाने) की प्रक्रिया द्वारा विद्यालयी ज्ञान को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ना. *अधिगम*. 29, पृ. 63–75.

पाटीदार, जितेन्द्र कुमार और प्रसून कुमार. (प्रकाशनाधीन). विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने की एक सार्थक पहल — सोशल ऑडिट. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 44(2).

सिन्हा, शरद. 2023. कोविड-19 डिजास्टर, चैलेंजीज, मीनिंगफुल इफोर्ट्स एंड इनिशिएटिव्स. द *प्राइमरी टीचर*. 47(1), पृ. 67–77.

———. (प्रकाशनाधीन). ब्रिजिंग गैप्स इन थ्योरी एंड प्रैक्टिस — एक्सप्लोरिंग द वैल्यू ऑफ इंटर्नशिप. *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन*. 49(1).

वर्मा, सरला. (प्रकाशनाधीन). विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए नीतिगत प्रयास और उनका क्रियान्वयन. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 44(3).

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

पाटीदार, जितेन्द्र कुमार. 2023. एन.ई.पी. 2020 वोकेशनल एजुकेशन वर्सिस एकेडमिक एजुकेशन. *बूस्टिंग इकोनॉमी बाय स्ट्रीमलाइनिंग वोकेशनल एजुकेशन इन स्कूल्स* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में आमंत्रित व्याख्यान. गीतारत्तन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज एंड ट्रेनिंग, रोहिणी, दिल्ली. 8 अप्रैल.

सिन्हा, शरद. 2023. इंश्योरिंग इन्क्लुसिव एंड इक्विटेबल क्वॉलिटी एजुकेशन इन स्कूल एजुकेशन — द वे आउट. *इन्क्लुसिव एंड इक्विटेबल एजुकेशन फॉर डिसैडवांटेज्ड ग्रुप्स — रियलाइजिंग एन.ई.पी. 2020 एंड एस.डी.जी. 4* पर राष्ट्रीय सम्मेलन की पैनल चर्चा में सत्र की अध्यक्षता. चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ एजुकेशन और इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, मोहाली. 19 मई 2023.

———. 2023. *होलिस्टिक हेल्थ एंड वेल-बीइंग* पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य वक्ता. एसोसिएशन ऑफ इंडियन एकेडमी ऑफ हेल्थ साइकोलॉजी, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, फगवारा. 2–3 जून.

———. 2023. न्यू एज पेडागॉजिकल प्रैक्टिस फॉर द फ्यूचर. 6वें जयपुरिया वार्षिक स्कूल लीडरशिप कॉन्क्लेव में सत्र की अध्यक्षता की. जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, नोएडा. 8 जून.

वर्मा, सरला. 2024. इंडियन नॉलेज ट्रेडिशन एंड एनवायर्नमेंटल कॉन्टेक्स्ट इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020. *इंडियन नॉलेज ट्रेडिशन — जियोग्राफिकल एंड एनवायर्नमेंटल कॉन्टेक्स्ट, नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 इन द लाइट ऑफ इंडियन नॉलेज ट्रेडिशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र, छत्रपति साहूजी महाराज यूनिवर्सिटी, कानपुर, उत्तर प्रदेश. 29–30 मार्च.

शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

शोध पत्र और लेख

भादुड़ी, इंद्राणी, अल्का सिंह, बेंसी जोय और आर.के. सिंह. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में कंपेरेटिव स्टडी ऑफ द नेशनल अचीवमेंट सर्वे (एन.ए.एस.) रिजल्ट्स ऑफ 2017 और 2021. *जामिया जर्नल ऑफ एजुकेशन*. 9 (1 और 2).

भादुड़ी, इंद्राणी. 2023. इम्प्लीमेंटिंग ए लार्ज-स्केल असेसमेंट सर्वे टू अंडरस्टैंड द लर्निंग लेवल्स फॉर पॉलिसी इम्प्लीकेशंस एंड टू इम्प्रूव टीचिंग-लर्निंग. *स्कूल साइंस — ए क्वार्टरली जर्नल ऑफ साइंस एजुकेशन*. 55(4).

———. 2023. मॉनिटरिंग एंड सुपरवाइजिंग टीचर एजुकेशन एंड स्कूल एजुकेशन. *टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन इन इंडिया — पर्सपेक्टिव्स, कंसर्न्स* एंड ट्रेंड्स.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

भादुड़ी, इंद्राणी और दिनेश प्रसाद सकलानी. 2023. एन्हांसिंग एजुकेशनल इक्विटी थ्रू लार्ज-स्केल असेसमेंट्स— ए केस स्टडी ऑफ जेंडर इक्वेलिटी इन इंडिया. *डिजिटलाइजिंग असेसमेंट्स एंड क्रेडेंशियल्स* पर 48वें वार्षिक अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक मूल्यांकन संघ (आई.ए.ई.ए.) वार्षिक सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. किंगस्टन, जमैका. 25 सितंबर.

———. 2023. एस्टैब्लिशिंग लर्निंग बेंचमार्क्स इन मल्टी-लिंगुअल इंडिया. *डिजिटलाइजिंग असेसमेंट्स एंड क्रेडेंशियल्स* पर 48वें वार्षिक अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक मूल्यांकन संघ (आई.ए.ई.ए.) वार्षिक सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. किंगस्टन, जमैका. 25 सितंबर.

———. 2023. लार्ज-स्केल एजुकेशनल असेसमेंट्स — द केस ऑफ इंडिया कंपेयर्ड इंटरनेशनली. *डिजिटलाइजिंग असेसमेंट्स एंड क्रेडेंशियल्स* पर 48वें वार्षिक अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक मूल्यांकन संघ (आई.ए.ई.ए.) वार्षिक सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. किंगस्टन, जमैका. 25 सितंबर.

अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

मेघनाथन, आर. 2023. इनोवेशन्स इन एजुकेशन. *एजुकेशन फॉर होलिस्टिक* डेवलपमेंट पर सम्मेलन में अतिथि वक्ता. एटोमिक एनर्जी एजुकेशन सोसायटी (ए.ई.ई.एस.), अनुशक्ति नागर, मुंबई. 29 अप्रैल.

———. 2023. एम्ब्रेसिंग मल्टी-लिंगुअलिज्म इन क्लासरूम इन एलाइनमेंट विद एन.सी.एफ.–एस.ई. 2023. *14वे ऑल केरल सी.बी.एस.ई. प्रिंसिपल्स' लीडरशिप कॉन्फ्रेंस* एंड ट्रेनिंग में अतिथि वक्ता. केरल सहोदय स्कूल्स, कोचिन. 2–3 अक्तूबर.

———. 2023. प्रमोशन ऑफ इंडियन लैंग्वेजेज, आर्ट्स एंड कल्चर. एन्हासिंग अवेयरनेस एंड अंडरस्टेंडिंग ऑफ द नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 अमंग एकलव्य मॉडल रेसिडेंशियल स्कूल (ई.एम.आर.एस.) टीचर्स. *प्रमोशन ऑफ इंडियन लैंग्वेजेज, आर्ट* एंड *कल्चर* पर वेबिनार में अतिथि वक्ता. जनजातीय कार्य मंत्रालय (एम.ओ.टी.ए.). नई दिल्ली (वर्चुअल). 7 दिसंबर.

पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)

शोध पत्र और लेख

जैन, पूजा. 2024. बिब्लियोमेट्रिक एनालायसिस ऑफ इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी (2019–2023). लाइब्रेरी हेराल्ड — एक सहकर्मी की समीक्षा की गई पत्रिका. 62(1), पृ. 34–49.

जैन, पूजा, गरिमा दलाल और परवीन बब्बर. 2024. मल्टीमीडिया एजुकेशन फॉर इन्क्लुसिव डेवलपमेंट — एक्सप्लोरिंग एन.सी.ई.आर.टी. ओपन-एक्सेस इनिशिएटिव्स इन इंडियाज स्कूल एजुकेशन सिस्टम. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी*. 6(1), पृ. 341–350.

सामंतराय, एम. 2023. माइग्रेशन फ्रॉम प्रोप्राइटरी टू एफ.ओ.एस.एस. — ए जर्नी आर क्वेस्ट. जर्नल ऑफ एडवांसेज इन लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन साइंस. 12(3), पृ. 151–157, डी.ओ.आई. — 10.5281/जेनोडो — 8310940

———. 2024. अंडरस्टैंड द पास्ट टू एनविजन द फ्यूचर — माइग्रेशन टू ओ.एस.एस. — फ्रॉम ए प्रैक्टिशनर्स परस्पेक्टिव. जे.ए.एल.आई.एस.आई. 13(1), पृ. 7–16.

संपादित पुस्तकों में अध्याय

जैन, पूजा और मीरा. 2024. मैपिंग द रिसर्च प्रोडक्टिविटी ऑफ द नॉर्थ-ईस्ट रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन (एन.ई.आर.आई.ई.), एन.सी.ई.आर.टी. — ए बिब्लियोमेट्रिक एनालिसिस. भकारेताल (संपादक). *मल्टीडिसिप्लीनरी रिसर्च ट्रेंड्स एंड एप्रोचेज* पर 8वें राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही, पृ.152–164. सेंचुरी पब्लिकेशंस, राजस्थान.

———. 2024. एन.सी.ई.आर.टी. इंस्ट्रक्शनल मैटीरियल — रोल इन स्कूल एंड टीचर एजुकेशन. अहमद, जसीन, एरम खान और अंसार अहमद (संपादक). *रिवाइटलाइजिंग टीचर एजुकेशन इन इंडिया एन.ई.पी. 2020 — प्रोस्पेक्ट्स एंड चैलेंजीज*. पृ. 247–256. शिप्रा पब्लिकेशंस, दिल्ली.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

जैन, पूजा. 2024. एक्जामिनिंग एन.सी.ई.आर.टी. एजुकेशनल/इंस्ट्रक्शनल मैटीरियल्स — इनसाइट्स इनटू इट्स रोल इन स्कूल एंड टीचर एजुकेशन. *एजुकेशन 2024 ऑन ट्रांसफॉर्मिंग इंडियन एजुकेशन पोस्ट-एन.ई.पी. 2020* पर जामिया अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली. 14–15 फरवरी.

योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

शोध पत्र और लेख

रवीन्द्रन, आशिता. 2019. एजुकेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ एस.डी.जी. 4.7 — इंटीग्रेशन ऑफ ई.एस.डी. एंड जी.सी.ई.डी. इन स्कूल करिकुलम. द *प्राइमरी टीचर*. 44(4), पृ. 7–14.

सुभाष, पी. 2023. रोल ऑफ लोकल अथॉरिटीज इन डेवलपमेंट ऑफ प्राइमरी स्कूल्स. *रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लीनरी*. 8(3), पृ. 106–113. https://doi.org/10.31305rrijim.2023.v08.n03.013

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

रवीन्द्रन, आशिता. 2023. हाउ कैन इन-सर्विस टीचर्स बी सपोर्टेड इन द करंट कॉन्टेक्स्ट टू डिलीवर द बेस्ट आउटकम फॉर स्टूडेंट्स? *स्कूल एजुकेशन कॉन्फ्रेंस फर्दरिंग इनोवेशन एंड सस्टेनेबल एजुकेशन इन स्कूल्स* में पैनेलिस्ट. ब्रिटिश काउंसिल और सी.बी.एस.ई., दिल्ली. 14–15 दिसंबर.

राष्ट्रीय साक्षरता केन्द्र प्रकोष्ठ (सी.एन.सी.एल.)

संपादित पुस्तक में अध्याय

शर्मा, उषा. 2023. एजुकेशन एंड जेंडर सेंसिटाइजेशन. सिन्हा, पवन (संपादक). इंडियन थ्रू ऑन फेमिनिज्म. पृ. 163–180. इंटीट्यूट फॉर रिसर्च इन इंडियन विजडम, गाजियाबाद.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

शर्मा, उषा. 2023. इंस्टीट्यूशनलाइजिंग चेंज — एन.ई.पी. 2020. *इंस्टीट्यूशनलाइजिंग चेंज — एन.ई.पी. 2020 एंड द विजन ऑफ न्यू क्लासरूम* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. एस.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली. 2 फरवरी.

———. 2023. री-स्ट्रेटजाइजिंग एडल्ट एजुकेशन. *द फॉरगॉटन पीपल — पुटिंग द एडल्ट इन एजुकेशन* पर राष्ट्रीय परामर्श में प्रस्तुत शोधपत्र. इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली. 18 अक्तूबर.

———. 2023. द इंडियन कॉन्टेक्स्ट एंड चैलेंजीज ऑफ इम्प्लीमेंटिंग लाइफ-लॉन्ग लर्निंग. *बियॉन्ड एजुकेशन — इम्प्लीमेंटेशन ऑफ लाइफ-लॉन्ग लर्निंग इन इंडिया* पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सत्र की अध्यक्षता की. सी.एस.जे.एम. यूनिवर्सिटी, कानपुर, इंडिया. 12 दिसंबर.

———. 2024. पेडागॉगी ऑफ हायर एजुकेशन. *पेडागॉगी ऑफ हायर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र. दिल्ली टीचर यूनिवर्सिटी, दिल्ली. 23 फरवरी.

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)

शोध पत्र और लेख

बरभुइया, आर.के. 2023. इंट्रोडक्शन टू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस — करंट डेवलपमेंट्स, कंसर्न्स एंड पॉसिबिलिटीज फॉर एजुकेशन. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी.* 5(2), पृ. 266–277.

———. 2024. साइबर-सेफ्टी — कॉन्सेप्ट्स, थ्रेट्स एंड एसेन्शियल मेजर्स. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी.* 6(1), पृ. 361–376.

हक रिजवानुल. 2024. उस्ताद राशिद खान — ऐसा कहाँ से लाऊँ कि तुझसा कहूँ जिसे. *उर्दू दुनिया.* 26(3), पृ. 69–72.

———. 2023. फलसफा-ए-तसव्वुफ और ख्वाजा मीर दर्द की शेरी इन्फिरादियात. *मिज्गाँ.* 25(75), पृ. 94–100.

कुमार, ए. और एस. यादव. 2023. द प्लेनेट अर्थ इन ए प्लास्टिक सूप. *द हिंदुस्तान टाइम्स.* https://www.hindustantimes.com

प्रभा, एस. और जे. भट्टाचार्य. 2023. साइंटिफिक इन्क्वायरी कंपीटेंसी इन परफॉर्मिंग केमिस्ट्री एक्सपेरिमेंट — डिजाइन एंड इवैल्यूएशन ऑफ एन इंस्ट्रूमेंट फॉर असेसमेंट ऑफ स्टूडेंट्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज.* 10(1), पृ. 478–88.

रत्नाबाई, एंजेल एस. 2023. नर्चरिंग मेंटल एंड इमोशनल वेल-बीइंग इन द साइबरस्पेस. *इंडियन जर्नल ऑफ हेल्थ एंड वेल-बीइंग.* 14(4), पृ. 538–542.

———. 2023. ऑनलाइन ट्रेनिंग एज ए स्ट्रेटेजी फॉर कंटीन्यूअस प्रोफेशनल डेवलपमेंट (सी.पी.डी.) ऑफ टीचर्स. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी.* 5(2), पृ. 237–247.

———. 2024. डेवलपिंग कंपीटेंसीज फॉर टेक्नोलॉजी पेडागॉजी इंटीग्रेशन अमंग इन-सर्विस टीचर्स — रिफ्लेक्शंस. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी.* 6(1), पृ. 350–360.

पुस्तकें

पाल, आर. 2022. गुणवत्तनात्मक शोध की विधियाँ. हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, मध्य प्रदेश.

रंगनाथन, नमिता और भारती कौशिक. 2023. *बच्चों की दुनिया — विकास और शिक्षा.* शिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली.

संपादित पुस्तक में अध्याय

कौशिक, भारती और सर्वानंद. 2023. इक्विटेबल एंड इन्क्लुसिव लर्निंग स्पेसेस इन हायर एजुकेशन (इंडिया) — एक्सप्लोरिंग द आई.सी.टी. सोल्यूशन्स. एस्क्यूडेरो, पी., एन. एस्क्यूडेरो और ओ. बर्नार्डेस (संपादक). *हैंडबुक ऑफ रिसर्च ऑन एडवांसिंग इक्विटी एंड इन्क्लुजन थ्रू एजुकेशनल टेक्नोलॉजी.* पृ. 263–284. https://www.igi-global.com.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

बेहरा, अमरेंद्र प्रसाद. 2023. नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी फॉर चिल्ड्रेन एंड एडोलेसेंट्स. *इम्प्लीमेंटेशन ऑफ बजट 2023 स्किल/एजुकेशन सेक्टर* पर वेबिनार में संचालक. शिक्षा मंत्रालय (एम.ओ.ई.), भारत सरकार, नई दिल्ली. 25 फरवरी.

कौशिक, भारती. 2024. द *रिलेवेंस ऑफ लेशन प्लानिंग एंड टी.एल.एम. विद रेफरेंस टू पेडागॉजिज एज पर एन.ई.पी. 2020* पर संगोष्ठी में पैनलिस्ट. इंडिया इस्लामिक सेंटर, बी.एड. डिवीजन, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली. 22 फरवरी 2024.

———. 2024. *इन्क्लुसिव पेडागॉजिज एंड प्रैक्टिस एज पार्ट ऑफ द कनेक्टेड लर्निंग एंड रिसर्च ऑन इन्क्लुसिव एजुकेशन (क्लीयर)* पर संगोष्ठी में पैनलिस्ट. अविनाशलिंगम इंस्टीट्यूट फॉर होम साइंस एंड हायर एजुकेशन फॉर वूमेन, कोयंबटूर, तमिलनाडु, सेंटर ऑफ एक्सलेंस इन टीचर एजुकेशन, टी.आई.एस.एस. मुंबई. 24 फरवरी.

कौशिक, बी. और एल. खुल्लर. 2024. इन्क्लुसिव एजुकेशन फॉर ऑल — ओपिनियंस ऑफ स्पेशियल एडुकेटर्स. *इक्विटेबल एंड इन्क्लुसिव एजुकेशन* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, रा.शै.अ.प्र.प. 9–11 जनवरी.

कौशिक, बी., एल. खुल्लर और बी. मालिक. 2024. वॉइसेज फ्रॉम विदइन — स्पेशियल एडुकेटर्स' परसेप्शंस ऑफ देयर रोल इन इन्क्लुसिव एजुकेशन. *एक्सप्लोरिंग इंटरडिसिप्लीनरी फ्रंटियर्स — चैलेंजीज एंड अपॉर्च्यूनिटीज* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र. इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू). 25–26 अप्रैल.

पं. सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), भोपाल

शोध पत्र और लेख

गोस्वामी, के. और पी. खन्ना. 2022–2023. स्टडी ऑफ अवेयरनेस एंड इंटरेस्ट ऑफ स्टूडेंट्स टुवड्र्स वोकेशनल एजुकेशन एट स्कूल लेवल इन शेड्यूल्ड ट्राइब पॉप्युलेटेड डिस्ट्रिक्ट्स ऑफ मध्य प्रदेश. *इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन*. 34(4), पृ. 9–19.

कुमार, पी., पी.सी. राउत, मधुरिमा और आर. रामासामी. 2023. रुरल कम्यूनिटी परस्पेक्टिव एंड द स्टेट ऑफ टूरिज्म डेवलपमेंट इन मिजोरम. *जर्नल ऑफ टूरिज्म*. 24(1), पृ. 61–70. https://www.jothnbgu.in

रविचंद्रन, आर. 2023. ब्रिजिंग द गैप — द रोल ऑफ अप्रेंटिसशिप ट्रेनिंग प्रोग्राम्स. *जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन स्टडीज*. 6(1), पृ. 156–166.

———. 2023. वोकेशनल करियर गाइडेंस एंड काउंसलिंग इन स्कूल्स. *इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन*. 34, पृ. 47–55.

———. 2024. हाइब्रिड लर्निंग — हाउ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी इज इनेबलिंग ए न्यू एरा ऑफ क्लासरूम फ्लेक्सिबिलिटी. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी*. 6(1), पृ. 312–322.

रविचंद्रन, आर. और जयश्री महापात्र. 2023. स्टूडेंट्स' परसेप्शन ऑन टीचिंग एंड लर्निंग ऑफ ग्रीन स्किल्स फॉर सस्टेनेबल फ्यूचर. *जर्नल ऑफ एन्वायर्नमेंटल एंड साइंस एजुकेशन*. 3(1), पृ. 29–36.

रविचंद्रन, आर. और प्रीति दीक्षित. 2023. सोयबीन प्रोसेसिंग सेक्टर इन इंडिया — इकोनोमिक एंड इम्प्लॉयमेंट एनालिसिस. *सोयबीन रिसर्च जर्नल*. 21(1), पृ. 1–12.

———. 2024. एम्पावरिंग द नेक्स्ट जेनरेशन ऑफ एंटरप्रीन्योर्स — द रोल ऑफ इनोवेशन एंड इन्क्यूबेशन सेंटर्स. *जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन स्टडीज*. 7(1), पृ. 156–166.

———. 2024. द पोटेंशियल ऑफ मिलेट ग्रेन्स — ए कॉम्प्रीहेंसिव रिव्यू ऑफ न्यूट्रीशनल वैल्यू, प्रोसेसिंग टेक्नोलॉजीज एंड फ्यूचर प्रोस्पेक्ट्स फॉर फूड सिक्योरिटी एंड हेल्थ प्रोमोशन. *जर्नल ऑफ फूड टेक्नोलॉजी एंड न्यूट्रीशन साइंसेज*. 6(1), पृ. 1–8.

पुस्तकें

कुमार, पी., एस.के. गुप्ता, एम. कोर्सतांजे, पी.सी. राउत और मधुरिमा. 2024. *अचीविंग सस्टेनेबल ट्रांसफॉर्मेशन इन टूरिज्म एंड हॉस्पिटलिटी सेक्टर्स*. आई.जी.आई. ग्लोबल, यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका.

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

शोध पत्र और लेख

आर्य, वी.पी. 2023. इम्पैक्ट ऑफ एनीलिंग एंड हाइड्रोजनेशन ऑन द आप्टिकल कैरेक्टरिस्टिक्स ऑफ ZnSe/Mn एंड ZnSe/Co डी.एम.एस. थिन फिल्म्स प्रीपेयर्ड वाया थर्मल इवेपोरेशन मैथड. *एवरग्रीन जॉइंट जर्नल ऑफ नॉवेल कार्बन रिसोर्स साइंसेज एंड ग्रीन एशिया स्ट्रेटेजी*. 11(1), पृ. 178–185.

बेहरा, ए. 2024. इम्पैक्ट ऑफ द मनरेगा ऑन रुरल लेबर मार्केट परफॉर्मेंस — ए केस स्टडी ऑफ आंध्र प्रदेश. *मध्य भारती — ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज*. 85(13), पृ. 132–138.

———. 2024. यूज ऑफ इन्फॉर्मेशन कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी इन एग्रीकल्चरल मार्केटिंग — ए स्टडी फ्रॉम ओडिशा. *एजुकेशन एंड सोसायटी.* 48(2), पृ. 54–60.

दास, एस.के. 2023. स्टबल बर्निंग इम्पैक्ट ऑन एन्वायर्नमेंट, हेल्थ एंड एग्रीकल्चर — ए रिव्यू ऑन मैनेजमेंट प्रैक्टिस. *प्लांट आर्काइव्स.* 23(2), पृ. 194–199.

गुप्ता, ए.के. 2023. एयर पॉल्यूशन एंड ह्यूमन रेस्पीरेटरी सिस्टम इन द कोर्स ऑफ स्टडी रिलेटेड टू द बायोलॉजिकल साइंस एट वेरियस लेवल्स. *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ इनोवेशन्स इन इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आई.आर.जे.आई.ई.टी.).* 7(7), पृ. 55–58.

———. 2023. इंटरडिपेंडेंसी बिटवीन प्लांट एंड एनिमल इज वन ऑफ द प्रोसेसेस ऑफ बायोरिमिडिएशन. *इंटरनेशनल करंट जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस (आई.सी.जे.ई.एस.).* 2(5), पृ. 1–4.

———. 2023. मरिन पॉल्यूशन एंड रेस्पीरेटरी सिस्टम ऑफ टेलीयोस्ट फिशेज इन कोर्स ऑफ स्टडी अंडर इंटीग्रेटिड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम (आई.टी.ई.पी.). *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ इनोवेशन्स इन इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आई.आर.जे.आई.ई.टी.).* 8(1), पृ. 15–18.

———. 2023. मरिन पॉल्यूशन एंड रेस्पीरेटरी सिस्टम ऑफ इलास्मोब्रांचे फिशेज इन कोर्स ऑफ स्टडी अंडर इंटीग्रेटिड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम (आई.टी.ई.पी.). *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ इनोवेशन्स इन इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आई.आर.जे.आई.ई.टी.).* 7(11), पृ. 725–728.

———. 2023. स्टडी ऑफ इफेक्ट्स ऑफ डिफोरेस्टेशन ऑन इकोसिस्टम इन कोर्स ऑफ स्टडी रिलेटेड टू द बायोलॉजिकल साइंस एट वेरियस लेवल्स. *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ इनोवेशन्स इन इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आई.आर.जे.आई.ई.टी.).* 7(5), पृ. 300–303.

———. 2023. वॉटर पॉल्यूशन एंड ह्यूमन डाइजेस्टिव सिस्टम इन कोर्स ऑफ स्टडी रिलेटेड टू द बायोलॉजिकल साइंस एट वेरियस लेवल्स. *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ इनोवेशन्स इन इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आई.आर.जे.आई.ई.टी.).* 7(8), पृ. 26–29.

कात्यायनी, ए. 2023. कोविड-19 महामारी के दौरन बी.एड. विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा एवं शैक्षणिक तनाव का अध्ययन. *शैक्षिक परिसंबाद — एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन.* 12(1 और 2), पृ. 39–45.

कौशल, एस. 2024. ए कॉम्प्रीहेंसिव रिव्यू ऑन बायोजेनिक सिंथेसिस ऑफ बाईमटैलिक नैनोपार्टिकल्स एंड देयर एप्लीकेशन एज कैटालिटिक रिडक्शन ऑफ 4-नाइट्रोफेनोल. *केमिकल पेपर्स.* 78, पृ. 2757–2782.

———. 2024. नॉन-कैटालिटिक रेजियोसेलेक्टिव सिंथेसिस ऑफ ट्रांस बिस-पिर्रोलो आइसोक्साजोल साइक्लोएडक्ट्स इन वॉटर. *आर.एस.सी. सस्टेनीबलिटी.* 2, पृ. 546–557.

———. 2024. पी.डी. सपोर्टेड ए.एल.-बी.डी.सी. एम.ओ.एफ. फॉर एफिशिएंट एंड सिलेक्टिव एन-मिथाइलेशन ऑफ एमाइन्स अंडर सॉल्वेंटलेस कंडीशंस. *एमर्जेंट मैटर.* 7, पृ. 1683–1693.

———. 2024. रेशनली टेलर्ड सिनर्जी बिटवीन एडसॉर्प्शन एफिशिएंसी ऑफ कॉटन शेल एक्टिवेटेड कार्बन एंड पी.एम.एस. एक्टिवेशन वाया बायोजेनिक एफ.ई.ओ. और सी.यू.ओ. फॉर इफेक्टिव मिटिगेशन ऑफ ट्रिफेनिलमीथेन डायस. *सेपरेशन एंड प्योरिफिकेशन टेक्नोलॉजी.* 342, पृ. 127010.

संपादित पुस्तक में अध्याय

आचार्य, पी. 2023. ओडिशा इन प्री-मॉडर्न टाइम्स. डेवी, जी.एन., टॉनी जोसेफ एंड रवि कोरीसेत्तर (संपादक). द *इंडियन्स — हिस्टोरीज ऑफ ए सिविलाइजेशन.* पृ. 365–371, एलेफ बुक कंपनी, दिल्ली.

तिरुमूर्ति, जी. 2024. चाइल्ड-सेंटर्ड प्रीवेन्टिव एंड प्रोटेक्टिव मेजर्स ऑफ एन्वायर्नमेंटल डिजास्टर — इज नीड ऑफ द ऑवर. प्रकाशम. (संपादक). चाइल्ड प्रोटेक्शन एंड चाइल्ड राइट्स इन डिजास्टर्स एंड एमरजेंसीज. पृ. 65–79, रॉयल बुक पब्लिशिंग, सलेम.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

बेज, डी.के. 2024. हार्नेसिंग इंडीजीनस गेम्स एज पेडागॉजी इन एलिमेंटरी एजुकेशन — अ पाथवे टू होलिस्टिक डेवलपमेंट ऑफ चिल्ड्रेन एंड कल्चरल प्रिजर्वेशन. *रिसर्चिंग स्कूल्स, चिल्ड्रेन, एंड चिल्डहुड्स* पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. जेसस एंड मेरी कॉलेज, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली. 20 मार्च.

चौरसिया, पी.के. 2023. फ्रॉम थ्योरी टू एक्शन — एम्पावरिंग सस्टेनेबिलिटी थ्रू इंटीग्रेटिड साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एन्वायर्नमेंटल एजुकेशन. *एन्वायर्नमेंटल एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल एंड हार्मोनियस लिविंग विद नेचर* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र. आर.आई.ई., अजमेर. 4–6 अक्तूबर.

शर्मा, आर. 2023. रोल ऑफ इंडियन नॉलेज एंड ट्रेडीशनल प्रैक्टिस इन मॉडर्न एन्वायर्नमेंटल कंजरवेशन प्रोसेसेस. *एन्वायर्नमेंटल एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल एंड हार्मोनियस लिविंग विद नेचर (एन.एस.ई.ई. 2023)* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र. आर.आई.ई., अजमेर. 4–6 अक्तूबर.

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

शोध पत्र और लेख

महतो, जी. 2024. ए स्टडी ऑफ द इफेक्ट ऑफ लैंग्वेज लेबोरेटरी इन द डेवलपमेंट ऑफ रीडिंग स्किल्स ऑफ द बी.ए. बी.एड. स्टूडेंट्स ऑफ आर.आई.ई., एन.सी.ई.आर.टी. *भोपाल जर्नल ऑफ एजुकेशन.* आर.आई.ई., भोपाल. 7, पृ. 21–37.

प्रजापति, आर.पी. 2024. इनकल्केशन ऑफ मल्टीडिसिप्लीनरी नेचर ऑफ एन्वायर्नमेंटल एजुकेशन एज पर एन.ई.पी. 2020. *जे.ई.टी.आई.आर.* 11(1), पृ. सी823–सी829.

प्रजापति, आर.पी. और रश्मि सिंघई. 2023. इनकल्केशन ऑफ एथिकल वैल्यूज एज पर एन.ई.पी. 2020 फॉर क्वॉलिटी असेसमेंट. *जे.ई.टी.आई.आर.* 10(7), पृ. बी240–बी247.

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

शोध पत्र और लेख

आशीष और आर. मोहालिक. 2023. इंस्ट्रक्शनल लीडरशिप ऑफ प्रिंसिपल्स एज पर्सीव्ड बाय टीचर्स ऑफ जवाहर नवोदय विद्यालय इन पटना रीजन. *ऑनलाइन इंटरनेशनल इंटरडिसिप्लीनरी रिसर्च जर्नल.* 13(3), पृ. 54–65.

अग्रवाल, पी.सी. 2023. रिफ्लेक्शन ऑफ प्री-सर्विस टीचर्स ऑन यूसेज ऑफ इन्फॉर्मेशन एंड कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी ड्यूरिंग द स्कूल इंटर्नशिप ऑफ बैचेलर ऑफ एजुकेशन प्रोग्राम. *इंडियन जे.* 6(1), पृ. 133–142.

———. 2024. कमेंटरी — रोल ऑफ साइंस इन करिकुलम. *स्कूल साइंस.* 58(2), पृ. 79–80.

बागुई, डी. और वी. कुमारी. 2023. प्लाइट ऑफ द यूथ इन एंटन चेखोवस *"द बेट", लिटरेरी हेराल्ड.* 9(1), पृ. 28–33.

चक्रवर्ती, एस. और आई.पी. गौरम्मा. 2023. लिटरेसी इन इंडियन अक्षरा एंड अदर ट्रांसपेरेंट ऑर्थोग्राफिक लैंग्वेज — टीचर एजुकेशन कन्सिडरेशंस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मॉडर्न एजुकेशन स्टडीज.* 7(2), पृ. 346–370. https://doi.org/10.51383/ijonmes.2023.329

दलाई, बी. और एस.के. दास. 2023. डीप-अल्ट्रावायलेट (डी.यू.वी.) नॉन लिनियर आप्टिकल (एन.एल.ओ.) क्रिस्टल्स — एन एप्लीकेशन इन फोटोनिक टेक्नोलॉजीज. *आप्टिकल मैटीरियल्स.* 143, पृ. 113909.

दीक्षित, मार्कण्डेय. 2023. जॉन डेवी के शैक्षिक दर्शन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. *मातादर्श.* 15(4), पृ. 92–95.

गौतम, के. और आई.पी. गौरम्मा. 2024. जर्नल राइटिंग — इम्प्लीकेशंस फॉर फैसिलिटेटिंग रिफ्लेक्टिव लर्निंग. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च.* 11(1), पृ. 327–335. https://www.jetir.org/view?paper=JETIR2401538

कपूर, एस. और के. मंजू. फ्री कन्वेक्शन इन ए पोरस इनक्लोजर बाय वर्च्यू ऑफ साइनूसोइडल हीटिंग एंड कूलिंग ऑन लेटरल साइड — ए वेरिएबल पीरियोडिसिटी परस्पेक्टिव. *प्रोक. नेटिल. एकैड. साइं., इंडिया, सेक्ट. ए फिज. साइं.* 93, पृ. 685–694. https://doi.org/10.1007/s40010–023–00833-, SCOPUS INDEX, SCI.

कुमारी, प्रीति और आर. सेठी. 2023. क्वेस्शननेयर फॉर सर्वे — द नॉलेज ऑफ वेदिक बिलीफ्स. *जर्नल ऑफ एमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च.* 10(3), पृ. 248–264.

———. 2023. क्वेस्शननेयर फॉर सर्वे — द नॉलेज ऑफ वेदिक बेलीफ्स. *वेदिक फिलोसोफी एंड टीचर एजुकेशन.* 9(4), पृ. 263–267.

मोहालिक, आर. और आर. सेठी. 2023. ए स्टडी ऑन द चैलेंजीज एंड इनिशिएटिव्स ऑफ टीचिंग-लर्निंग इन प्राइमरी एजुकेशन ड्यूरिंग कोविड-19 इन इंडिया. *टीचर एजुकेशन जर्नल ऑफ बांग्लादेश.* 2(1), पृ. 85–96.

नेगी, ए. और एस. कपूर. 2023. प्रोपेगेशन ऑफ लव वेव्स थ्रू एन इर्रेग्युलर सरफेस ऑफ ए लेयर्ड पोरोएलास्टिक रॉक स्ट्रक्चर. *जर्नल ऑफ ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी.* 11(2), पृ. 153–176. https://doi.org/10.13052/jgeu0975–1416.1123

पाथी, एस., बी. दलाई, एस.के. दास और पी.सी. अग्रवाल. 2023. एयर पॉल्यूशन इन द इंडस्ट्रीयल बेल्ट्स ऑफ ओडिशा — इट्स हेल्थ इम्पैक्ट विद मिटिगेट मेजर्स. *जर्नल ऑफ केमिकल हेल्थ रिस्क्स.* 13(4), पृ. 214–227.

———. 2023. एयर पॉल्यूशन इन द इंडस्ट्रीयल एरियास ऑफ टेम्पल सिटी, भुवनेश्वर एंड वेरियस मेजर्स फॉर इट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मेम्ब्रेन साइंस एंड टेक्नोलॉजी.* 10(1), पृ. 735–742.

पात्रा, बी., आर. साहू, डी.के. साहू, बी. दलाई, सी. परिदा और एस. दास. 2023. सिंथेसिस, कैरेक्टरिस्टिक्स एंड एप्लीकेशन ऑफ ग्राफीन कंपोजिट्स. *ए सर्वे जर्नल ऑफ तुर्किश केमिकल सोसायटी.* 10(3), पृ. 757–772.

राज, ए. और डी. बागुई. 2023. डेपिक्शन ऑफ होमोएरोटिसिज्म एंड पैट्रियार्की इन इस्मत चुगताई का 'लिहाफ'. *रिसर्च जर्नल ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज एंड लिटरेचर.* 11(2), पृ. 323–327.

रियांग, जे.जे. और आर. मोहालिक. 2023. आई.सी.टी. कंपीटेंसी ऑफ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स.* 11(9), पृ. 351–559.

साहू, एस.एस. और आर. मोहालिक. 2023. इफेक्टिवनेस ऑफ फ्लिप्ड लर्निंग — ए क्रिटिकल रिव्यू ऑफ रिसर्चेज. *ऑनलाइन इंटरनेशनल इंटरडिसिप्लीनरी रिसर्च जर्नल.* 13(3), पृ. 24–30.

साहा, ए.के., एम.के. होता और पी.के. मोहंती. 2023. ए क्लास ऑफ क्वाड्रेचर रूल्स फॉर कॉम्प्लेक्स कॉची प्रिंसिपल वैल्यू इंटीग्रल्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैथेमेटिकल, इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट साइंसेज.* 8(6), पृ. 1206–1224.

संगीता और आर. मोहालिक. 2023. रिसर्च कंपीटेंसी ऑफ टीचर एजुकेटर्स एट सेकेंडरी लेवल इन झारखंड. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स.* 11(10), पृ. 690–697.

उद्दीन, एम., बी.एन. पांडा और पी.सी. अग्रवाल. 2023. आई कैन नव डिटेक्ट एंड रेक्टिफाई माइ एरर. न्यू जनरेशन नाइंथ-ग्रेड लर्नर्स प्रॉब्लम-सोल्विंग स्किल ड्यूरिंग एक्सपेरिमेंट्स इन फिजिक्स थ्रू मेटाकॉग्निटिव ब्रेनस्टॉर्मिंग स्ट्रेटिजीस. *फिजिक्स एजुकेशन.* 58(3), 035023–035034, डी.ओ.आई. — 10.1088/1361-6552/एसीसी296.

पुस्तकें

अग्रवाल, पी.सी. 2023. *ग्रीन ऑडिट.* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर.

अग्रवाल, पी.सी. और एस.के. दास. 2023. *एजुकेशनल रिर्सोसेस-हर्बल गार्डन, रिसोर्स सेंटर, थीम पार्क.* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर.

अग्रवाल, पी.सी., ए. महापात्रा और एस.के. दास. 2023. *साइंस एजुकेशन.* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर.

अग्रवाल, पी.सी. और ए.के. साहा. 2023. मैथेमेटिक्स एजुकेशन. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर.

अग्रवाल, पी.सी., बी.एन. पांडा और एस.के दास. 2023. *इम्प्लीमेंटेशन ऑफ एन.सी.ई.आर.टी. इंटरवेशन्स एट स्कूल स्टेज — ए जर्नी ऑफ रिसर्च इन चिलिका ब्लॉक, ओडिशा.* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर.

अग्रवाल, पी.सी. और केतकी, कलिंग. 2023. ह्यूमन राइट्स एजुकेशन. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर.

गोस्वामी, एम. 2023. कनेक्टिंग द एल्फाबेट्स. ब्लैक ईगल, यू.एस.ए.

कपूर.एस. (प्रकाशनाधीन). डायनामिक कैरेक्टरिस्टिक्स ऑफ लेयर्ड स्ट्रक्चर्स — मैथेमेटिकल मॉडलिंग एंड न्यूमेरिकल सिम्युलेशंस. सी.आर.सी. प्रेस, टेलोर एंड फ्रांसिस ग्रुप, बोका रतों, फ्लोरिडा, यूनाइटेड स्टेट्स.

मोहालिक, आर. और एस. रॉय. 2023. ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ एजुकेशन इन द लाइट ऑफ एन.ई.पी. 2020. दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस. ग्रेटर नोएडा.

संपादित पुस्तकों में अध्याय

बाल्मीकि, यू. और आर. मोहालिक. 2024. डिकोडिंग नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क 2023 फॉर अचीविंग गोल ऑफ एन.ई.पी. 2020. प्रधान, मनोरंजन (संपादक). *नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020* एंड *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क्स 2023.* पृ. 248–260. कुनाल बुक्स, नई दिल्ली.

साहू, एस. और आर. मोहालिक. 2023. फ्लिप्ड लर्निंग — एन इनोवेटिव मेथड ऑफ टीचिंग एंड लर्निंग. मोहालिक, आर. और एस. रॉय (संपादक). *ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ एजुकेशन इन द लाइट ऑफ द एन.ई.पी. 2020.* पृ. 154–162, दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, ग्रेटर नोएडा.

सेठी, आर. 2023. डिजिटल पेडागॉजी एंड इनिशिएटिव फॉर एजुकेशन ड्यूरिंग द पैंडेमिक. मोहालिक, आर. और एस.के. रॉय (संपादक). *ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ एजुकेशन इन द लाइट ऑफ एन.ई.पी. 2020.* दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, ग्रेटर नोएडा.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

बभानी, एस. और आई.पी. गौरम्मा. 2023. रिफ्लेक्टिव प्रैक्टिस एज एन असेसमेंट फॉर लर्निंग. *ट्रांसफॉर्मिंग असेसमेंट* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. आर.आई.ई., भुवनेश्वर, 26–27 सितंबर.

गंगमेई, ई. और आई.पी. गौरम्मा. 2023. असेसमेंट ऑफ मैटीरियल्स डेवलप्ड बाय एस.सी.ई.आर.टी., ओडिशा ऑन फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमरेसी. *ट्रांसफॉर्मिंग असेसमेंट* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. आर.आई.ई., भुवनेश्वर. 26–27 सितंबर.

गौरम्मा, आई.पी. 2024. लाइफ स्किल्स एजुकेशन इन स्कूल्स–इनोवेटिव मेथड्स. *कॉम्प्रीहेंसिव मेंटल हेल्थ इनिशिएटिव्स इन स्कूल्स, इन एडोलेसेंट लाइफ स्किल्स डेवलपमेंट — क्रिएटिंग फ्यूचर रेडी लैंडस्केप* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. मनोदर्पण–शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की एक पहल. 29, 28–29 फरवरी.

कपूर, एस. 2024. ए कम्प्यूटेशनल एप्रोच फॉर इक्वल विद्थ इक्वेशन. *कॉम्प्लेक्स एनालिसिस एंड फ्लूइड डायनामिक्स* पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. के.आई.आई.टी. डीम्ड यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर. 16–18 फरवरी.

———. 2024. हीट एंड मास ट्रांसफर ऑफ डबल डिफ्यूजिव कन्वेक्शन इन वर्टिकल फ्लैट प्लेट. *रिसेंट डेवलपमेंट इन डेटा साइंस* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. फकीर मोहन विश्वविद्यालय, बालासोर. 2–3 मार्च 2024.

———. 2024. लिनियर स्टेबिलिटी एनालिसिस ऑफ फ्री कनेक्टिव फ्लो इन पोरस मीडियम. *रिसेंट डेवलपमेंट इन डेटा साइंस* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. फकीर मोहन विश्वविद्यालय, बालासोर. 2–3 मार्च 2024.

———. 2024. लिनियर स्टेबिलिटी एनालिसिस ऑफ थर्मोसोल्यूटल मिक्स्ड कन्वेक्शन इन ए वर्टिकल पाइप — ए लोकल थर्मल नॉन-इक्विलिब्रियम एप्रोच. *रिसेंट डेवलपमेंट इन डेटा साइंस* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. फकीर मोहन विश्वविद्यालय, बालासोर. 2–3 मार्च 2024.

———. 2024. स्टेबिलिटी एनालिसिस ऑफ एनर्जी-बेस्ड इंटर्नली हीटेड डिस्ट्रिब्यूशंस ऑन बीनर्ड पोरस कन्वेक्शन इन ए माइक्रोपोलर फ्लूइड लेयर विद सोल्यूबिलिटी पैरामीटर. *रिसेंट डेवलपमेंट इन डेटा साइंस* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. फकीर मोहन विश्वविद्यालय, बालासोर. 2–3 मार्च 2024.

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु

शोध पत्र और लेख

बतूल, जेड., के. सिंह और एस. गैरोला. 2024. न्यूट्रास्यूटिकल एंड एंटीआक्सिडेंट पोटेंशियल ऑफ सेलेक्टेड वाइल्ड एडिबल प्लांट्स फ्रॉम द कोल्ड-एरिड डेजर्ट ऑफ लद्दाख, भारत. *नोटुले बोटानिकी होर्टी एग्रोबोटेनिकी क्लूज-नापोका, एल.* (52), पृ. 13286–13286.

सिंह, ए., के.एस. वर्मा, एम. सैनी, जे. प्रसाद, डी. सिंह, एस.एल. कोठारी, ए. कोठारी-छाजेर, यू. तोमर और वी.एस. गौर. 2024. इस्टेब्लिशमेंट ऑफ मॉरफोलॉजिकल मार्कर्स टू डिफरेंशिएट मेल एंड फीमेल प्लांट्स इन एलांथस एक्सेल्स रॉक्सब. यूजिंग मल्टीपल लॉजिस्टिक रिग्रेशन. *फ्लोरा*. 314, पृ. 152495.

श्रीकांत, वाई. 2024. फॉर-ईयर इंटीग्रेटिड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम्स एट आर.आई.ई., मैसूरु — ए रिव्यू इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ एन.ई.पी. 2020. *यूनिवर्सिटी न्यूज*. 62(12), पृ. 3–9.

तांग्पू, वी. और नंदाकिरिन नाइक. 2023. स्टडी ऑन मॉर्फोजेनेटिक ट्रेट्स ऑन बाल्डनेस एंड इअर्लोब अटैचमेंट अमंग द आर.आई.ई. मैसूरु पॉपुलेशन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसेंट साइंटिफिक रिसर्च*. 14(8), पृ. 4014–4016.

वेतुकुरी, राजू पी.एस. 2023. एफर्मेटिव एक्शन इन सेकेंडरी एजुकेशन इन इंडिया — ए स्टडी ऑफ नेशनल मीन्स-कम-मेरिट स्कॉलरशिप स्कीम. *इनोवेशन — द रिसर्च कन्सेप्ट*. 8(10), पृ. ई 137–146.

———. 2023. अल्टरनेटिव मेथड्स ऑफ फाइनेंसिंग हायर एजुकेशन इन इंडिया — ए केस स्टडी ऑफ सेंट्रल सेक्टर स्कॉलरशिप स्कीम फॉर कॉलेज एंड यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स. *इनोवेशन — द रिसर्च कन्सेप्ट*. 8, पृ. ई 1–11.

———. 2023. एलिमेंटरी एजुकेशन ऑफ मुस्लिम्स इन आंध्र प्रदेश. श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका. 11(4), पृ. ई 16–28.

संपादित पुस्तकों में अध्याय

श्रीकांत, वाई. 2023. हाउ टू स्टूडेंट्स परफॉर्म एट स्कूल लेवल? — ए क्रॉस सेक्शनल एनालिसिस एट नेशनल लेवल. वर्गीज, एन.वी., अंजाना मंगलागिरी और ए. मैथ्यू (सपादक). *द परसिस्टिंग चैलेंज — क्वॉलिटी एंड इन्क्लुजन इन एजुकेशन*. पृ. 30–45. रूटलेज इंडिया, लंदन.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

वेतुकुरी, राजू पी.एस. 2024. स्टूडेंट एड इन हायर एजुकेशन — ए केस स्टडी ऑफ सेंट्रल सेक्टर स्कॉलरशिप स्कीम. फाइनेंशियल रिसोर्स मैनेजमेंट इन हायर एजुकेशन पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र. इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली, शैक्षिक वित्त विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली. 13–14 फरवरी.

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), उमियम

शोध पत्र और लेख

डे, तूलिका और एन. प्रधान. 2023. डिटरमिनेंट्स ऑफ अर्ली मैरेज अमंगस्ट गर्ल चिल्ड्रेन इन दसदा ब्लॉक ऑफ त्रिपुरा स्टेट. *स्कोप*. 13 (3), पृ. 5–20.

सीमा, आर., माधवी सिंह और लवानिया सेशु. (प्रकाशनाधीन). लीफ एपिडर्मल कैरेक्टराइजेशन ऑफ सेलेक्टेड स्पेसीज ऑफ जेनस कुरकुमा एल. (जिंजिबेरेसी). *जर्नल ऑफ इंडियन बोटेनिकल सोसायटी*. 104(2).

पुस्तकें

दखार, बी.आर. (संपादक). 2023. प्री-स्कूल एजुकेशन इन मेघालय (स्टेट्स एंड प्रोब्लम्स). ईस्टर्न पैनोरमा ऑफसेट, शिलांग.

घिल्डियाल, पी. और के. थापा. 2022. इंटीग्रेटिव एप्रोचेज टू साइकोथेरेपी — इनसाइट्स फ्रॉम कल्चरल एंड स्पिरिचुअल साइकोलॉजी. आर.सी. त्रिपाठी, बी.आर. कर एंड एन. पांडे (संपादक). *टुवर्ड्स एन इंटीग्रेटिव*

साइकोलॉजिकल साइंस — इश्यूज, एप्रोचीज एंड एप्लिकेशन्स. पृ. 193–212. स्प्रिंगर नेचर, स्विट्ज़रलैंड एजी. https://doi.org/10.1007/978-981-16-9565-0_10

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

अग्रवाल, एस. और बी. दखर. 2023. रिलेशनशिप बिटवीन एन.ई.पी. 2020, लाइफलांग लर्निंग एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (एस.डी.जी.एस.) 2030. *टीचर एजुकेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ इम्प्लीमेंटिंग एन.ई.पी. 2020* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग. 9–10 नवंबर.

बेहरा, एल. 2022. इनोवेशन्स इन टीचर एजुकेशन. *एन.ई.पी. 2020 टुवड्‌र्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में पैनल चर्चा की अध्यक्षता की. आर.आई.ई. भुवनेश्वर. 24–26 फरवरी.

———. 2022. टीचर एजुकेशन एज एनविजनेड इन एन.ई.पी. 2020 — प्रैक्टिस एंड प्रायोरिटीज. *ट्रांसफॉर्मिंग विजन इनटू एक्शन इन हायर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य वक्ता. बी.डब्ल्यू.टी.टी.सी., रांची. 7 मई.

देवी, सरजूबाला. 2023. इंट्रा एंड इंटर लिंग्विस्टिक पजल्स इन द मल्टीलिंगुअल एजुकेशन — ए केस ऑफ मणिपुर. *मल्टीलिंगुअलिज्म एंड पॉवर ऑफ लैंग्वेज* पर क्षेत्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. एन.ई.आर.आई.ई., 9 जून.

———. 2023. अचीविंग फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमरेसी — मल्टीलिंगुअलिज्म इन द क्लासरूम एंड टीचर प्रीपेयर्डनेस. *टीचर एजुकेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ इम्प्लीमेंटिंग एन.ई.पी. 2020* पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. एन.ई.आर.आई.ई., 9–10 नवंबर.

दखर, बी.आर. और बी. खारलुखी. 2023. ट्रांसफॉर्मिंग असेसमेंट थ्रू होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड (एच.पी.सी.) एट द फाउंडेशनल एंड प्रीपेरेटरी स्टेज. *टीचर एजुकेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ इम्प्लीमेंटिंग एन.ई.पी. 2020* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग. 9–10 नवंबर.

घिल्डियाल, पी. 2023. प्रोमोशन ऑफ सोशल इन्क्लुजन सी.बी.एस.ई. *गाइडेंस एंड काउंसलिंग* पर राष्ट्रीय शिक्षक सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. सी.बी.एस.ई., गुवाहाटी. 10–11 अक्तूबर.

गौरम्मा, आई.पी. 2022. इनोवेशन्स इन टीचर एजुकेशन. *एन.ई.पी. 2020 टुवड्‌र्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में पैनल चर्चा की अध्यक्षता की. आर.आई.ई. भुवनेश्वर. 24 –26 फरवरी.

वालंग, जी.एम. 2023. इनेबलिंग टी.एल.एम. फॉर मल्टीलिंगुअलिज्म इन क्लासरूम प्रैक्टिस. *मल्टीलिंगुअलिज्म एंड द पॉवर ऑफ लैंग्वेज* पर क्षेत्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. एन.ई.आर.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प., शिलांग. 9 जून.

———. 2023. फोस्टरिंग इन्क्लुसिविटी एंड इक्विटी इन लैंग्वेज एजुकेशन— ए टीचर एजुकेशन परस्पेक्टिव इन लाइट ऑफ एन.ई.पी. *टीचर एजुकेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ इम्प्लीमेंटिंग एन.ई.पी. 2020* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. एन.ई.आर.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प., शिलांग. 9–10 नवंबर.

सीमा, आर. 2023. मेटाकॉग्निशन — टुवड्‌र्स क्वॉलिटी टीचर्स. *टीचर एजुकेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ इम्प्लीमेंटिंग एन.ई.पी. 2020* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. एन.ई.आर.आई.ई., उमियम. 9–10 नवंबर.

———. 2023. टीचर एजुकेशन करिकुलम. *टीचर एजुकेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ इम्प्लीमेंटिंग एन.ई.पी. 2020* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र. एन.ई.आर.आई.ई., उमियम. 9–10 नवंबर.

रा.शै.अ.प्र.प. संकाय के पर्यवेक्षण में वर्ष के दौरान प्रदान की गई एम.फिल./पीएच. डी. डिग्रियाँ

क्र.सं.	अध्ययन का शीर्षक	पर्यवेक्षक का नाम	अनुसंधान अध्येता का नाम	रा.शै.अ.प्र.प. की घटक इकाई	विश्वविद्यालय का नाम	वर्ष
1.	हायरार्किकल कपलिंग बिटवीन मेंटल हेल्थ डाइमेंशन्स एंड एकेडमिक अचीवमेंट अमंग बी.एड. ट्रेनीस ऑफ अरुणाचल प्रदेश	सुमिन प्रकाश	वर्षा पटनायक	डी.ई.जी.एस.एन.	शिक्षा विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय अरुणाचल प्रदेश	2023
2.	ए स्टडी ऑफ मल्टीपल इंटेलिजेंस एंड स्टडी स्किल्स ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स ऑफ असम इन रिलेशन टू देयर एकेडमिक अचीवमेंट	सुमिन प्रकाश	कृष्णा छेत्री	डी.ई.जी.एस.एन.	शिक्षा विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय अरुणाचल प्रदेश	2023
3.	पब्लिकेशन परफॉर्मेंस ऑफ टीचर्स एंड रिसर्च स्कॉलर्स ऑफ हायर एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस इन रिलेशन टू यू.जी.सी. केयर लिस्ट ऑफ जर्नल्स	सुमिन प्रकाश	मोनिका शर्मा	डी.ई.जी.एस.एन.	शिक्षा विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय अरुणाचल प्रदेश	2023
4.	इम्पैक्ट ऑफ पार्टिसिपेटरी एक्शन टू प्रोमोट इन्क्लूजन इन स्कूल्स ऑफ चंडीगढ़— ए मिक्स्ड मेथड रिसर्च	स्नेह बंसल	हरप्रीत कौर	डी.ई.जी.एस.एन.	चितकारा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, चितकारा यूनिवर्सिटी, पंजाब	2024
5.	समग्र शिक्षा के अंतर्गत विद्यालय के पर्यवेक्षण एवं शिक्षा गुणवत्ता संवर्धन हेतु डिस्ट्रिक ब्लॉक स्तर पर शुरू की गई नई प्रशासनिक व्यवस्था की वास्तुस्थिति का अध्ययन	भाभाग्रही प्रधान	सिदाना निखिल	डी.टी.ई.	शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, डीम्ड विश्वविद्यालय, लाडनूं, राजस्थान	2024

6.	विद्यार्थियों में सृजनात्मकता के संवर्धन का उपगम— एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	भाभाग्रही प्रधान	पुष्पा गुप्ता	डी.टी.ई.	शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, डीम्ड विश्वविद्यालय, लाडनूं, राजस्थान	2024
7.	असेसमेंट ऑफ न्यूट्रीशनल स्टेट्स ऑफ रुरल स्कूल चिल्ड्रन (7–9 इयर्स) ऑन द बेसिस ऑफ फूड इंटेक एंड फूड एडेक्वेसी (इन स्पेशियल रेफरेंस ऑफ डिस्ट्रिक्ट–कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश)	पी. खन्ना	अनूप गौतम	पी.एस.सी.सी.आई.वी.ई., भोपाल	खाद्य एवं पोषण विभाग, ग्रामीण विकास विद्यालय, डॉ. बी.आर. अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू	2023
8.	ओमप्रकाश वाल्मिकी के साहित्य में दलित विमर्श	अरुणाभ सौरभ	पूर्णिमा कथरोलिया	आर.आई.ई., भोपाल	बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय	2023
9.	इफेक्ट्स ऑफ मेटाकॉगनाइटिव स्ट्रेटेजीज ऑन प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल्स एंड लर्निंग आउटकम इन फिजिकल साइंस ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स	पी.सी. अग्रवाल	मोह. जमालुद्दीन	आर.आई.ई., भुवनेश्वर	उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर	2023
10.	इफेक्टिवनेस ऑफ आई.सी.टी. इंटीग्रेटेड 5ई मॉडल ऑन हॉट्स इन साइंस एट सेकेंडरी लेवल	आर. मोहालिक	प्रियंक कुमार शिवम	आर.आई.ई., भुवनेश्वर	उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर	2023
11.	स्टडीज ऑन सीड ऑयल फ्रॉम एलांथस एक्सेल्स ए रॉक्सब. एंड इट्स एप्लीकेशन पोटेंशियल्स	विनोद सिंह गौर	विजय पाल	आर.आई.ई., मैसूरु	एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, एमिटी यूनिवर्सिटी राजस्थान, जयपुर	2024
12.	ए स्टडी ऑफ जेनरेशन जेड-एडोलेसेंट्स' रिलेशनशिप विद एडुकेटेड वर्किंग पेरेंट्स ऑफ न्यूक्लियर फैमिलीज इन अलप्पुझा एंड देयर म्यूचुअल एक्सपेक्टेशंस	पी. घिल्डियाल	वी.ए. फिलिप	एन.ई.आर.आई.ई., उमियम	मार्टिन लूथर क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी, शिलांग	2023

परिशिष्ट III

पुरस्कार और अध्येतावृत्तियाँ

पुरस्कार

- मध्य प्रदेश रोज सोसाइटी, भोपाल द्वारा पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. को मध्य प्रदेश में दूसरे सर्वश्रेष्ठ "लघु उद्यान" से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार शैक्षणिक संस्थानों की श्रेणी में संस्थान द्वारा विकसित सर्वश्रेष्ठ गुलाब उद्यानों के लिए दिया जाता है।
- वालांग, जी.एम. 2023, 'मेघालय साइन बैंक ऐप', दिव्यांग व्यक्तियों के लिए आयुक्त कार्यालय, मेघालय सरकार और एन.आई.सी., मेघालय के सहयोग से विकसित किया गया।
- डॉ. टी. डे को अखिल भारतीय बाल शैक्षिक ई-सामग्री प्रतियोगिता 2023–2024, सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली द्वारा आयोजित सरकारी संगठनों की ओर से बुनियादी स्तर की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ वीडियो/एनिमेशन कार्यक्रम निर्माण (द एंट एंड द पिजन) के लिए सम्मानित किया गया।
- डॉ. टी. डे को अखिल भारतीय बाल शैक्षिक ई-सामग्री प्रतियोगिता 2023–2024, सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली द्वारा आयोजित सरकारी संगठनों की ओर से माध्यमिक स्तर की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ वीडियो/एनिमेशन कार्यक्रम निर्माण (राष्ट्रीय गौरव— आदित्य एल1 और सोलर डायनेमिक्स) के लिए सम्मानित किया गया।
- डॉ. गर्ग ने 30 दिसंबर 2023 को 17वें अखिल भारतीय रामानुजन गणित क्लब से गणित को लोकप्रिय बनाने के लिए पुरस्कार प्राप्त किया। अखिल भारतीय रामानुजन गणित क्लब एक राष्ट्रीय स्तर का संगठन है जिसकी शुरुआत डॉ. चंद्रमौली जोशी ने वर्ष 1993 में राजकोट, गुजरात में की थी। वर्तमान में, दो हजार स्कूल, हजार से अधिक व्यक्तिगत सदस्य और सौ से अधिक अंतरराष्ट्रीय सदस्य इस क्लब से जुड़े हुए हैं। अखिल भारतीय रामानुजन गणित क्लब परस्पर क्रिया शिक्षण के नवीन विचारों को विकसित करने, विद्यार्थियों में गणित के बारे में जिज्ञासा पैदा करने के लिए समर्पित है और विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए राष्ट्रीय स्तर का मंच प्रदान करता है।

रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टोरल अध्येतावृत्ति 2022

क्र.स.	डॉक्टरेट अध्येताओं का नाम और पता	शोध प्रबंध का शीर्षक
1.	अनामिका सिंह झारखंड	एक्सप्लोरिंग द मल्टी-डाइमेंशनल एस्पेक्ट्स ऑफ कल्चर, सोसायटी एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स ऑफ असुर ट्राइब इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ एजुकेशन
2.	राज बल्लव पंडा ओडिशा	अचीविंग एम्स ऑफ मैथेमेटिक्स एजुकेशन एनविसेज्ड इन एन.सी.एफ.–एस.ई. 2023 थ्रू इंडियन नोलेज सिस्टम एट एलिमेंटरी स्टेज
3.	शौकत अहमद डार जम्मू एवं कश्मीर	स्कूल क्लाइमेट, एडजेस्टमेंट एंड स्कॉलास्टिक अचीवमेंट— ए स्टडी ऑफ चिल्ड्रेन विद स्पेशियल नीड्स (दिव्यांग)
4.	तानिया सरकार पश्चिम बंगाल	डेवलपमेंट ऑफ ए सेल्फ-इंस्ट्रक्शन एएल जेंडर स्पेक्ट्रम मॉड्यूल फॉर हायर सेकेंडरी स्टूडेंट्स
5.	स्नेहा झा उत्तर प्रदेश	सेल्फ एस्टीम, पर्सीव्ड स्ट्रेस एंड एग्रेशन अमंग यंग एडोलेसेंट्स हेविंग एन अनफेवरेबल फैमिली क्लाइमेट — एन आर्ट बेस्ड इंटरवेंशन

6.	राजन पटेल उत्तर प्रदेश	छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष शिक्षा विद्यालयों की स्थिति एवं कार्यप्रणाली का मूल्यांकन — एक अध्ययन
7.	इंदुचूडन आर. केरल	डेवलपमेंट एंड एनालिसिस ऑफ अनसर्टेंटीज इन मैथेमेटिकल मॉडलिंग
8.	सोनिया सागर उत्तर प्रदेश	माध्यमिक स्तर पर द्विभाषी शिक्षण का विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, शैक्षिक समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन
9.	रजनी कर्णवाल उत्तर प्रदेश	इफेक्ट ऑफ फाइन मोटर स्किल्स इंटरवेंशन इन ग्राफ मोटर स्किल ऑफ प्री-स्कूल चिल्ड्रेन
10.	श्रुति एस. केरल	एजुकेशनल एस्पिरेशन इन रिलेशन टू होम एनवायरमेंट, सेल्फ रेगुलेशन एंड जेंडर सेंसिटिविटी ऑफ तमिल लिंगुइस्टिक माइनॉरिटी स्टुडेंट्स ऑफ केरल
11.	भारती भारद्वाज उत्तर प्रदेश	एकेडमिक प्रोक्रेस्टिनेशन इमोशनल मैच्योरिटी एंड सेल्फ एफिकेसी एज डिटरमिनेंट्स ऑफ एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्टुडेंट्स
12.	सलोनी उत्तर प्रदेश	उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिंतन, विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि पर मस्तिष्क आधारित अधिगम-व्यूह रचना के प्रभाव का अध्ययन
13.	अथिरा ओ.एस. केरल	इन्फ्लुएंस ऑफ डिजिटली इंड्यूस्ड कॉग्निटिव एंड बिहेवियरल फैक्टर्स ऑन फैमिली डायनामिक्स अमंग एडोलेसेंट्स
14.	रंजना पवार मध्य प्रदेश	स्टडी ऑफ लीडरशिप बिहेवियर ऑफ स्कूल हेड्स, स्कूल क्लाइमेट एंड इम्प्लीमेंटेशन ऑफ गवर्नमेंट प्रोग्राम्स इन एलिमेंटरी स्कूल ऑफ मध्य प्रदेश
15.	हेमंत यादव उत्तर प्रदेश	सेकेंडरी स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं तनाव में उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन
16.	आशीष कुमार बिहार	इफेक्टिवनेस ऑफ वैदिक मैथमेटिक्स स्ट्रैटेजीस फॉर एन्हान्सिंग प्रॉबल्म सॉल्विंग स्किल्स इन केमिस्ट्री ऑफ हायर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स
17.	नीतू सिंह उत्तर प्रदेश	माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि, अभिरुचि और संज्ञानात्मक संबंधों पर टेक्नो-पेडागॉजिकल स्किल्स के प्रयोग के प्रभाव का अध्ययन
18.	अमनदीप कौर उत्तराखंड	ट्रांजिशन ऑफ चिल्ड्रेन फ्रॉम प्री-स्कूल टू ग्रेड 1 इन स्कूल्स रन बाय द दिल्ली गवर्नमेंट
19.	सरबजीत कौर चावला उत्तर प्रदेश	साइबर बुलीइंग एंड इट्स साइकोलॉजिकल कॉन्सिक्वेंसीज
20.	दीपांकी गुप्ता दिल्ली	इम्पैक्ट ऑफ अफोर्डेबिलिटी, एक्सेसिबिलिटी एंड अवेलेबिलिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एडोप्शन ऑन टीचर एफिसेसी एंड स्टूडेंट लर्निंग
21.	रुचि राणा हिमाचल प्रदेश	टॉय इंटीग्रेटिड पेडागॉजी फॉर कॉन्सेप्ट फॉर्मेशन इन मैथेमेटिक्स एट प्रीपेरेटरी स्टेज
22.	सोनाली प्रियदर्शनी साहू ओडिशा	द इम्पैक्ट ऑफ मल्टी-लिटरेसिस एम्बेडेड सोशल इमोशनल लर्निंग एप्रोच ऑन द राइटिंग ऑफ इंडियन ई.एस.एल. लर्नर्स — एन एक्सप्लोरेटरी स्टडी

23.	दिगंत वैश्य असम	द इम्पैक्ट ऑफ सोशल नेटवर्किंग ऑन वेल-बीइंग, हेल्पिंग बिहेवियर, एंक्साइटी एंड डिप्रेशन — ए कंपेरेटिव स्टडी ऑफ सिक्किम एंड असम स्टूडेंट्स
24.	नीता वी.टी. केरल	डेवलपिंग एनिमेटेड वीडियो बेस्ड इंस्ट्रक्शनल पैकेज फॉर एन्हासिंग ग्रामर कंपीटेंस, क्रिएटिव राइटिंग एंड एक्स्ट्रापोलेटेड लर्निंग ऑफ इंग्लिश अमंग हायर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स
25.	अक्षयलक्ष्मी वी.आर. तमिलनाडु	एन्हासिंग इमोशनल इंटेलिजेंस एंड नेचर रिलेटेडनेस अमंग गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन तमिलनाडु

वर्ष 2023–24 के लिए बहिर्नियमावली में उल्लिखित रा.शै.अ.प्र.प. की समितियों का विवरण

- महानिकाय
- कार्यकारिणी समिति
- वित्त समिति
- स्थापना समिति
- भवन निर्माण समिति
- कार्यक्रम सलाहकार समिति
- शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति
- राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की शैक्षणिक समिति

महानिकाय

(i)	शिक्षा मंत्री *अध्यक्ष* (पदेन)	1.	माननीय शिक्षा मंत्री *शिक्षा मंत्रालय* शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
(ii)	*अध्यक्ष*, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (पदेन)	2.	*अध्यक्ष* विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह ज़फर मार्ग नई दिल्ली – 110002
(iii)	*सचिव*, शिक्षा मंत्रालय (पदेन)	3.	*सचिव* विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
(iv)	भारत सरकार द्वारा नामित प्रत्येक क्षेत्र से विश्वविद्यालयों के चार कुलपति	4. से 7.	नामांकन प्रक्रियाधीन है
(v)	प्रत्येक राज्य सरकार और विधान सभा वाले संघ राज्य-क्षेत्र का एक-एक प्रतिनिधि, जो राज्य एवं संघ राज्य-क्षेत्र का शिक्षा मंत्री (अथवा उसका प्रतिनिधि) हो और दिल्ली के मामले में दिल्ली का मुख्य कार्यकारी पार्षद (अथवा उसका प्रतिनिधि)	8.	विद्यालय शिक्षा मंत्री आंध्र प्रदेश सरकार आंध्र प्रदेश सचिवालय भवन हैदराबाद – 500022 आंध्र प्रदेश
		9.	विद्यालय शिक्षा मंत्री अरुणाचल प्रदेश सरकार ईटानगर – 791111 अरुणाचल प्रदेश
		10.	विद्यालय शिक्षा मंत्री असम सरकार जनता भवन, दिसपुर – 781006 असम
		11.	विद्यालय शिक्षा मंत्री बिहार सरकार नया सचिवालय भवन पटना – 800015 बिहार
		12.	विद्यालय शिक्षा मंत्री छत्तीसगढ़ सरकार रायपुर – 492007 छत्तीसगढ़

13. विद्यालय शिक्षा मंत्री
गोवा सरकार
गोवा सचिवालय
पणजी – 403001
गोवा

14. विद्यालय शिक्षा मंत्री
गुजरात सरकार
ब्लॉक नंबर 1, सचिवालय
गाँधी नगर – 382010
गुजरात

15. विद्यालय शिक्षा मंत्री
हरियाणा सरकार
हरियाणा सिविल सचिवालय
चंडीगढ़ – 160001
हरियाणा

16. विद्यालय शिक्षा मंत्री
हिमाचल प्रदेश सरकार
शिमला – 171002
हिमाचल प्रदेश

17. विद्यालय शिक्षा मंत्री
झारखंड सरकार
राँची – 834004
झारखंड

18. विद्यालय शिक्षा मंत्री
कर्नाटक सरकार
विधान सौंध
बेंगलुरु – 560001
कर्नाटक

19. विद्यालय शिक्षा मंत्री
केरल सरकार
अशोक नंथेनकोडे
तिरुवनंतपुरम – 695001
केरल

20. विद्यालय शिक्षा मंत्री
मध्य प्रदेश सरकार
भोपाल – 462001
मध्य प्रदेश

21. विद्यालय शिक्षा मंत्री
महाराष्ट्र सरकार
मंत्रालय मेन
मुम्बई – 400032
महाराष्ट्र

22. विद्यालय शिक्षा मंत्री
मणिपुर सरकार
मणिपुर सचिवालय
इम्फाल – 795001
मणिपुर

23. विद्यालय शिक्षा मंत्री
मेघालय सरकार
मेघालय सचिवालय
शिलॉन्ग – 793001
मेघालय

24. विद्यालय शिक्षा मंत्री
मिजोरम सरकार
आइजोल – 796001
मिजोरम

25. विद्यालय शिक्षा मंत्री
नागालैंड सरकार
कोहिमा – 797001
नागालैंड

26. विद्यालय शिक्षा मंत्री
ओडिशा सरकार
ओडिशा सचिवालय
भुवनेश्वर – 751001
ओडिशा

27. विद्यालय शिक्षा मंत्री
पंजाब सरकार
चंडीगढ़ – 160017
पंजाब

28. विद्यालय शिक्षा मंत्री
राजस्थान सरकार
सरकारी सचिवालय
जयपुर – 302001
राजस्थान

29. विद्यालय शिक्षा मंत्री
सिक्किम सरकार
सिक्किम सचिवालय, ताशिलिंग
गंगटोक – 737101
सिक्किम

30. विद्यालय शिक्षा मंत्री
तमिलनाडु सरकार
फोर्ट सेंट जॉर्ज
चेन्नई – 600009
तमिलनाडु

31. विद्यालय शिक्षा मंत्री
तेलंगाना सरकार
तेलंगाना सचिवालय
हैदराबाद – 500022
तेलंगाना

32. विद्यालय शिक्षा मंत्री
त्रिपुरा सरकार
सिविल सचिवालय
अगरतला – 799001
त्रिपुरा

33. विद्यालय शिक्षा मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
लखनऊ – 226001
उत्तर प्रदेश

34. विद्यालय शिक्षा मंत्री
उत्तराखंड सरकार
देहरादून – 248008
उत्तराखंड

35. विद्यालय शिक्षा मंत्री
पश्चिम बंगाल सरकार
विकास भवन
साल्ट लेक
कोलकाता – 700001
पश्चिम बंगाल

36. विद्यालय शिक्षा मंत्री
जम्मू और कश्मीर सरकार
श्रीनगर – 180001
जम्मू और कश्मीर सरकार

37. विद्यालय शिक्षा मंत्री
पुदुच्चेरी सरकार
मुख्य सचिवालय
विक्टर सिमोनल स्ट्रीट – 605001
पुदुच्चेरी

38. विद्यालय शिक्षा मंत्री
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय
आई.पी. एस्टेट
नई दिल्ली – 110002

39. राज्य शिक्षा मंत्री
शिक्षा मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली – 110001

(vi) कार्यकारिणी समिति के वे सभी सदस्य जो ऊपर दी गई सूची में सम्मिलित नहीं हैं

40. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016

41. जे.एस. राजपूत
पूर्व निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.
ए-16, सेक्टर पी-7, मित्रा एन्क्लेव
ग्रेटर वैली स्कूल के सामने
ग्रेटर नोएडा – 201308
उत्तर प्रदेश
(04 अक्तूबर 2023 तक)

सुधीर जैन
कुलपति
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
वाराणसी – 221005
उत्तर प्रदेश
(29 नवंबर 2023 से)

42. चंद किरण सलूजा
अकादमिक निदेशक
संस्कृत प्रमोशन फाउंडेशन
11204/5 मंदिर मार्ग
गौशाला मार्ग, डोरीवालान
नई दिल्ली – 110006
(04 अक्तूबर 2023 तक)

अनिल डी. सहस्रबुद्धे
अध्यक्ष, एन.ई.टी.एफ.
नेल्सन मंडेला मार्ग, वसंत कुंज
नई दिल्ली – 110070
(29 नवंबर 2023 से)

43. कृष्ण मोहन त्रिपाठी
सदस्य, एन.ई.पी. मसौदा समिति
पूर्व निदेशक, विद्यालय शिक्षा
सी-448 पनकी
कानपुर – 208020
उत्तर प्रदेश
(04 अक्तूबर 2023 तक)

रश्मि दास
अध्यक्ष
हिगाशी ऑटिज्म स्कूल, 9वीं एवेन्यू
चर्च रोड, वसंत कुंज
नई दिल्ली – 110070
(29 नवंबर 2023 से)

44. बी.आर. कुकरेती
डीन और *प्रमुख*
महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड
विश्वविद्यालय
सी-46/47, नीलकंठ
सुरेश शर्मा नगर, बरेली – 243006
उत्तर प्रदेश
(04 अक्तूबर 2023 तक)

राबिन छेत्री
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
शिक्षा विभाग, सिक्किम सरकार
गंगटोक – 737103, सिक्किम
(29 नवंबर 2023 से)

45. कौस्तुभ चंद्र जोशी
प्रधानाचार्य
एस.के.एस.जी.आई.सी., पत्थरखानी
पी.ओ. – बिलोई, ब्लॉक – मुनाकोट
जिला – पिथौरागढ़ – 262520
उत्तराखंड
(04 अक्तूबर 2023 तक)

एच.एस. वाणी
प्रधानाध्यापिका (हेड मिस्ट्रेस)
आर.वी. टीचर्स कॉलेज बिल्डिंग
द्वितीय ब्लॉक, जयनगर
बेंगलुरु – 560011
कर्नाटक
(29 नवंबर 2023 से)

46. बी. उषारानी
प्रधानाचार्य
श्री राम दयाल खेमका विवेकानंद विद्यालय
नंबर 9 एलायम्मन कोइल स्ट्रीट
तिरुवोट्टियूर, चेन्नई – 600019
तमिलनाडु
(04 अक्तूबर 2023 तक)

विवेक शर्मा
प्रधानाचार्य
सरस्वती विद्या मंदिर
उच्चतर माध्यमिक आवासीय विद्यालय
शारदा विहार, केरवा डैम रोड
भोपाल – 462044
मध्य प्रदेश
(29 नवंबर 2023 से)

47. श्रीधर श्रीवास्तव
संयुक्त निदेशक
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016

48. शंकर शरण
सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016
(04 अक्तूबर 2023 तक)

पी.के. मंडल
आई.आर.डी., रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016
(29 नवंबर 2023 से)

49. प्रकाश चंद्र अग्रवाल
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (रा.शै.अ.प्र.प.)
भुवनेश्वर
सचिवालय मार्ग
भुवनेश्वर – 751022, ओडिशा
(04 अक्तूबर 2023 तक)

दिनेश कुमार
प्रमुख, पी.एम.डी.
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016
(29 नवंबर 2023 से)

50. इंद्राणी भादुड़ी
शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016
(04 अक्तूबर 2023 तक)

रंजना अरोड़ा
प्रमुख, डी.सी.एस. एवं डी.
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016
(29 नवंबर 2023 से)

51. *संयुक्त सचिव* (संस्थान)
शिक्षा मंत्रालय
(विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग)
शास्त्री भवन
नई दिल्ली – 110001

52. संयुक्त सचिव और वित्तीय सलाहकार
शिक्षा मंत्रालय
(विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग)
शास्त्री भवन
नई दिल्ली – 110001

(vii) (क) *अध्यक्ष*
केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,
दिल्ली
(पदेन)

53. *अध्यक्ष*
केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा सदन – 17
राउज़ एवेन्यू, संस्थागत क्षेत्र
बाल भवन के पास
नई दिल्ली – 110001

(ख) *आयुक्त* केंद्रीय विद्यालय संगठन नई दिल्ली (पदेन)	54.	*आयुक्त* केंद्रीय विद्यालय संगठन 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया शहीद जीत सिंह मार्ग नई दिल्ली – 110016
(ग) *निदेशक* केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो नई दिल्ली (पदेन)	55.	*निदेशक* केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (डी.जी.एच.एस) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय कोटला रोड नई दिल्ली – 110002
(घ) *उप महानिदेशक* कृषि शिक्षा प्रभारी आई.सी.ए.आर., कृषि मंत्रालय नई दिल्ली (पदेन)	56.	*उप महानिदेशक* प्रभारी, कृषि शिक्षा आई.सी.ए.आर., कृषि अनुसंधान भवन, पूसा नई दिल्ली – 110012
(ङ) *प्रशिक्षण निदेशक* प्रशिक्षण और रोज़गार महानिदेशालय श्रम मंत्रालय नई दिल्ली (पदेन)	57.	*प्रशिक्षण निदेशक* प्रशिक्षण और रोज़गार महानिदेशालय श्रम रोजगार मंत्रालय, एक्सचेंज भवन पूसा (आई.टी.आई.) राजेंद्र प्लेस मैट्रो स्टेशन के पास, पूसा रोड, नई दिल्ली – 110012
(च) प्रतिनिधि, शिक्षा प्रभाग योजना आयोग नई दिल्ली (पदेन)	58.	शिक्षा सलाहकार नीति आयोग योजना भवन नई दिल्ली – 110001
भारत सरकार द्वारा मनोनीत अधिक से अधिक छह व्यक्ति, जिन में कम से कम चार स्कूल के अध्यापक हों।	59.–64.	नामांकन प्रक्रियाधीन है
विशेष आमंत्रित	65.	*सचिव* भारतीय स्कूल प्रमाणपत्र परीक्षा परिषद् प्रगति भवन, तीसरी मंज़िल 47, नेहरू प्लेस नई दिल्ली – 110019
संयोजक	66.	*सचिव* रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली – 110016

कार्यकारिणी समिति

(i)	परिषद् के अध्यक्ष जो कार्यकारिणी समिति के *पदेन अध्यक्ष* होंगे	1.	*माननीय शिक्षा मंत्री* शिक्षा मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
(ii)	(क) शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री जो कार्यकारिणी समिति के *पदेन उपाध्यक्ष* होंगे	2.	राज्य मंत्री विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग शिक्षा मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
	(ख) परिषद् के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत शिक्षा उप मंत्री	3.	________
	(ग) परिषद् के *निदेशक*	4.	दिनेश प्रसाद सकलानी *निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016
	(घ) *सचिव* शिक्षा मंत्रालय पदेन	5.	*सचिव* विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार शास्त्री भवन, नई दिल्ली – 110001
(iii)	*अध्यक्ष*, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (पदेन सदस्य)	6.	*अध्यक्ष* विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह ज़फर मार्ग नई दिल्ली – 110002
(iv)	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत विद्यालय शिक्षा में रुचि रखने वाले छह जाने-माने शिक्षाविद् (जिनमें से दो स्कूल के अध्यापक हों)	7.	जे.एस. राजपूत *पूर्व निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. ए-16, सेक्टर पी-7, मित्रा एन्क्लेव ग्रेटर वैली स्कूल के सामने ग्रेटर नोएडा – 201308 उत्तर प्रदेश (04 अक्तूबर 2023 तक) सुधीर जैन *कुलपति* बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बी.एच.यू.), वाराणसी – 221005, उत्तर प्रदेश (29 नवंबर 2023 से)

8. चंद किरण सलूजा
अकादमिक निदेशक
संस्कृत प्रमोशन फाउंडेशन
11204/5 मंदिर मार्ग
गौशाला मार्ग, डोरीवालान
नई दिल्ली – 110006
(04 अक्तूबर 2023 तक)

अनिल डी. सहस्रबुद्धे
अध्यक्ष, एन.ई.टी.एफ.
नेल्सन मंडेला मार्ग, वसंत कुंज
नई दिल्ली – 110070
(29 नवंबर 2023 से)

9. कृष्ण मोहन त्रिपाठी
सदस्य, एन.ई.पी. मसौदा समिति
पूर्व निदेशक, विद्यालय शिक्षा
सी – 448 पनकी
कानपुर – 208020
उत्तर प्रदेश
(04 अक्तूबर 2023 तक)

रश्मि दास
अध्यक्ष
हिगाशी ऑटिज्म स्कूल
9वीं एवेन्यू, चर्च रोड, वसंत कुंज
नई दिल्ली – 110070
(29 नवंबर 2023 से प्रभावी)

10. बी.आर. कुकरेती
पूर्व डीन और *प्रमुख*
महात्मा ज्योतिबा फुले, रोहिलखंड विश्वविद्यालय
नीलकंठ, सी – 46/47
सुरेश शर्मा नगर
बरेली – 243006
उत्तर प्रदेश
(04 अक्तूबर 2023 तक)

राबिन छेत्री
निदेशक
राज्य शैक्षिक एवं अनुसंधान परिषद एवं प्रशिक्षण शिक्षा विभाग
सिक्किम सरकार गंगटोक – 737103
सिक्किम
(29 नवंबर 2023 से प्रभावी)

11. कौस्तुभ चंद्र जोशी
प्रधानाचार्य
एस.के.एस.जी.आई.सी., पत्थर खानी
पी.ओ. – बिलोई, ब्लॉक – मुनाकोट
जिला – पिथौरागढ़ – 262520
उत्तराखंड
(04 अक्तूबर 2023 तक)

एच.एस. वाणी
प्रधानाध्यापिका (हेड मिस्ट्रेस)
आर.वी. टीचर्स कॉलेज बिल्डिंग, द्वितीय ब्लॉक, जयनगर
बेंगलुरु – 560011
कर्नाटक
(29 नवंबर 2023 से)

12. बी. उषारानी
प्रधानाचार्य
श्री राम दयाल खेमका विवेकानंद विद्यालय
नंबर 9 एलायम्मन कोइल स्ट्रीट
तिरुवोट्टियूर, चेन्नई – 600019
तमिलनाडु
(04 अक्तूबर 2023 तक)

विवेक शर्मा
प्रधानाचार्य
सरस्वती विद्या मंदिर
उच्चतर माध्यमिक आवासीय विद्यालय शारदा विहार
केरवा डैम रोड
भोपाल – 462044
मध्य प्रदेश
(29 नवंबर 2023 से)

परिषद् के *संयुक्त निदेशक*

13. श्रीधर श्रीवास्तव
संयुक्त निदेशक
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016

परिषद् *अध्यक्ष* द्वारा मनोनीत परिषद् के संकाय के तीन सदस्य जिनमें कम से कम दो सदस्य *प्रोफेसर* तथा *विभागाध्यक्ष* के स्तर के हों

14. शंकर शरण
सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016
(04 अक्तूबर 2023 तक)

पी.के. मंडल
आई.आर.डी., रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016
(29 नवंबर 2023 से)

15. प्रकाश चंद्र अग्रवाल
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (रा.शै.अ.प्र.प.) भुवनेश्वर
सचिवालय मार्ग
भुवनेश्वर – 751022 ओडिशा
(04 अक्तूबर 2023 तक)

दिनेश कुमार
प्रमुख, पी.एम.डी.
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016
(29 नवंबर 2023 से)

16. इंद्राणी भादुड़ी
शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016
(04 अक्तूबर 2023 तक)

रंजना अरोड़ा
प्रमुख, डी.सी.एस. एवं डी.
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016
(29 नवंबर 2023 से)

(v) शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि

17. *संयुक्त सचिव* (संस्थान)
शिक्षा मंत्रालय
(विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग)
शास्त्री भवन, नई दिल्ली – 110001

(vi) वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि जो परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा

18. *संयुक्त सचिव* और वित्तीय सलाहकार
शिक्षा मंत्रालय
(विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग)
शास्त्री भवन
नई दिल्ली – 110001

(vii) परिषद् के *सचिव* कार्यकारी समिति के सचिव होंगे

19. *सचिव*
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016

वित्त समिति

(रा.शै.अ.प्र.प. के नियमों के नियम 62 के अंतर्गत)

(i)	*निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प. (पदेन)	*अध्यक्ष*	दिनेश प्रसाद सकलानी *निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली – 110016
(ii)	*वित्तीय सलाहकार* शिक्षा मंत्रालय (पदेन)	*सदस्य*	*संयुक्त सचिव* और *वित्तीय सलाहकार* शिक्षा मंत्रालय (विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
		सदस्य	*संयुक्त सचिव* (संस्थान) शिक्षा मंत्रालय (विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
		सदस्य	पवन कुमार शर्मा (सेवानिवृत्त) *प्रोफेसर, प्रबंधन* 664–ए, आर.के.पुरम वर्धमान महावीर ओपन यूनिवर्सिटी कोटा – 324005, राजस्थान
		सदस्य	पवन कुमार तोमर *लेखक*, लोक नीति एवं शासन 31बी/4, राजपुर रोड, सिविल लाइंस दिल्ली – 110054
(iii)	*सचिव* रा.शै.अ.प्र.प.	*सदस्य-संयोजक*	*सचिव* रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016

स्थापना समिति

(i)	परिषद् के *निदेशक* पदेन (*अध्यक्ष*)	1.	दिनेश प्रसाद सकलानी *निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016
(ii)	*संयुक्त निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प. (*पदेन*)	2.	श्रीधर श्रीवास्तव *संयुक्त निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016
(iii)	*अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा शिक्षा मंत्रालय के एक उम्मीदवार को नामांकित किया जाना है	3.	*संयुक्त सचिव* (संस्थान) शिक्षा मंत्रालय (स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
(iv)	*अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. मनोनीत चार शिक्षाविद् जिन में कम से कम एक वैज्ञानिक हो	4.	रवींद्र कान्हेरे समिति (प्रवेश और शुल्क नियामक समिति) मध्य प्रदेश टैगोर छात्रावास संख्या टी-2 जी-फ्लोर, लेफ्ट विंग, श्यामला हिल्स भोपाल – 462002 मध्य प्रदेश
		5.	मनरूप सिंह मीणा *पूर्व प्रधानाचार्य* राजकीय महिला महाविद्यालय गुरुद्वारा, पटियाला बाग पैलेस रोड धौलपुर – 328001 राजस्थान
		6.	नचिकेता तिवारी मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग आई.आई.टी., कानपुर, एन.एल.–201ए यांत्रिक इंजीनियरिंग विभाग आई.आई.टी. कानपुर कानपुर – 208016 उत्तर प्रदेश

		7.	दिनेश कांबले (सेवानिवृत्त) *पूर्व रजिस्ट्रार*, मुम्बई विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र निवास का पता – कृष्णा गैलेक्सी सी – 201/202 वीवा वृंदावन टाउनशीप न्यू वीवा कॉलेज के पास विरार पश्चिम, तालुका – वसई पालघर – 401303 महाराष्ट्र
(v)	*अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा मनोनीत किए गए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान से एक प्रतिनिधि	8	प्रकाश चंद्र अग्रवाल *प्रधानाचार्य* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (रा.शै.अ.प्र.प.) भुवनेश्वर सचिवालय मार्ग भुवनेश्वर – 751022 ओडिशा
(vi)	*अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा मनोनीत किए गए राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली से एक प्रतिनिधि	9	ज्योत्सना तिवारी *विभागाध्यक्ष*, कला और सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016
(vii)	परिषद् के विनियमों के परिशिष्ट में निर्दिष्ट श्रेणी, निर्वाचित में से दो प्रतिनिधि नियमित शैक्षिक और गैर शैक्षिक कर्मचारियों में प्रत्येक में से एक	10	अभय कुमार *सहायक प्रोफेसर* सी.आई.ई.टी. (निर्वाचित प्रतिनिधि शैक्षणिक कर्मचारी) रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016
		11	दिनेश टोकस *सहायक* डी.ई.आर. (निर्वाचित प्रतिनिधि गैर-शैक्षणिक कर्मचारी) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली – 110016
(viii)	*वित्तीय सलाहकार* रा.शै.अ.प्र.प.	12.	*संयुक्त सचिव* और *वित्तीय सलाहकार* शिक्षा मंत्रालय (स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
(ix)	*सचिव* रा.शै.अ.प्र.प. सदस्य – संयोजक	13.	*सचिव* रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016

भवन निर्माण समिति

1.	*निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प. अध्यक्ष (पदेन)	दिनेश प्रसाद सकलानी *निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली – 110016
2.	*संयुक्त निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प. उपाध्यक्ष (पदेन)	श्रीधर श्रीवास्तव *संयुक्त निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016
3.	*मुख्य अभियंता* सी.पी.डब्ल्यू.डी. या उनके नामित (*सदस्य*)	*अधीक्षण अभियंता* दिल्ली सर्कल – 6 सी.पी.डब्ल्यू.डी.सी. विंग चौथा तल आई.पी. भवन, आई.टी.ओ., नई दिल्ली
4.	शहरी विकास (कार्य) मंत्रालय के एक प्रतिनिधि	*निदेशक* (आई.एफ.डी.) शहरी विकास मंत्रालय वित्त प्रभाग निर्माण भवन नई दिल्ली – 110001
5.	रा.शै.अ.प्र.प. के परामर्शदाता वास्तुकार	*मुख्य वास्तुकार* (एन.डी.आर.) सी.पी.डब्ल्यू.डी. 303, 'ए' विंग निर्माण भवन मौलाना आजाद रोड नई दिल्ली – 110011
6.	परिषद् के वित्त सलाहकार या उनके नामांकित व्यक्ति	*संयुक्त सचिव* और *वित्तीय सलाहकार* शिक्षा मंत्रालय (स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
7.	शिक्षा मंत्रालय के नामांकित व्यक्ति	*संयुक्त सचिव* (संस्थान) शिक्षा मंत्रालय (स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
8.	जाने-माने सिविल इंजीनियर (*अध्यक्ष* द्वारा नामांकित)	मुकुल चंद्र बोरा *निदेशक* डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संस्थान डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय असम

9.	प्रतिष्ठित इलेक्ट्रिकल इंजीनियर (*अध्यक्ष* द्वारा नामांकित)	अशोक कुमार शर्मा *एसोसिएट प्रोफेसर* और *पूर्व विभागाध्यक्ष* विद्युतीय अभियांत्रिकी विभाग यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग राजस्थान टेक्निकल यूनिवर्सिटी कोटा – 324010 राजस्थान
10.	कार्यकारी समिति के एक सदस्य (*अध्यक्ष* द्वारा नामांकित)	बी.आर. कुकरेती *प्रोफेसर*, शिक्षा और संबद्ध विज्ञान संकाय रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली उत्तर प्रदेश
11.	*सचिव* रा.शै.अ.प्र.प. (*सदस्य – संयोजक*)	*सचिव* रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016

कार्यक्रम सलाहकार समिति

(i) दिनेश प्रसाद सकलानी — *अध्यक्ष*
निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.

(ii) श्रीधर श्रीवास्तव — *उपाध्यक्ष*
संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.

(iii) हर्ष कुमार — *सदस्य*
सचिव, रा.शै.अ.प्र.प.

रा.शै.अ.प्र.प. के अध्यक्ष द्वारा नामित पाँच प्रोफेसर

(i) जॉय सेन — *सदस्य*
प्रोफेसर
वास्तुकला और क्षेत्रीय योजना
आई.आई.टी., खड़गपुर

(ii) के. रामासुब्रमण्यन — *सदस्य*
प्रोफेसर
संस्कृत में भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ
आई.आई.टी., मुंबई

(iii) विरूपाक्ष वी. जड्डीपाल — *सदस्य*
सचिव
महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद
विद्या प्रतिष्ठान
उज्जैन

(iv) खेम सिंह डहेरिया — *सदस्य*
इंदिरा गाँधी नेशनल ट्राइबल यूनिवर्सिटी
अमरकंटक
मध्य प्रदेश

(v) ऋषि गोयल — *सदस्य*
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.) हरियाणा

एस.आई.ई. और एस.सी.ई.आर.टी. के पाँच निदेशक, अध्यक्ष, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा मनोनीत सदस्यों के रूप में

(i) *निदेशक* — *सदस्य*
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.), उत्तर प्रदेश

(ii) *निदेशक* — *सदस्य*
गुजरात शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (जी.सी.ई.आर.टी.)
गुजरात

(iii) *निदेशक* — *सदस्य*
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.), असम

(iv)	*निदेशक* राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.), कर्नाटक	*सदस्य*
(v)	*निदेशक* राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.), जम्मू और कश्मीर	*सदस्य*

रा.शै.अ.प्र.प. के सदस्य

(i)	ए.पी. बेहरा *संयुक्त निदेशक* सी.आई.ई.टी. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	*सदस्य*
(ii)	प्रो. शशि प्रभा *विभागाध्यक्ष* पी.आर.डी., सी.आई.ई.टी रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	*सदस्य*
(iii)	दीपक पालीवाल *संयुक्त निदेशक* पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. श्यामला हिल्स भोपाल – 462013 मध्य प्रदेश	*सदस्य*
(iv)	पिंकी खन्ना *प्रोफेसर* पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. श्यामला हिल्स भोपाल – 462013 मध्य प्रदेश	*सदस्य*
(v)	एस.वी. शर्मा *प्रधानाचार्य* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान कैप्टन डी.पी. चौधरी मार्ग अजमेर – 305004 राजस्थान	*सदस्य*
(vi)	बी. बरठाकुर *प्रोफेसर* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान कैप्टन डी.पी. चौधरी मार्ग अजमेर – 305004 राजस्थान	*सदस्य*

(vii)	जयदीप मंडल *प्रभारी प्रधानाचार्य* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान श्यामला हिल्स भोपाल – 462013 मध्य प्रदेश	*सदस्य*
(viii)	पी.सी. अग्रवाल *प्रधानाचार्य* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान सचिवालय मार्ग भुवनेश्वर – 751007 ओडिशा	*सदस्य*
(ix)	प्रो. मानसी गोस्वामी *अनुदेश संकाय* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान सचिवालय मार्ग भुवनेश्वर – 751007 ओडिशा	*सदस्य*
(x)	वाई. श्रीकांत *प्रधानाचार्य* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान मानस गंगोत्री मैसूरु – 570006 कर्नाटक	*सदस्य*
(xi)	सी.जी. वेंकटेश मूर्ति *अनुदेश संकाय अध्यक्ष* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान मानस गंगोत्री मैसूरु – 570006 कर्नाटक	*सदस्य*
(xii)	एफ.जी. डखार *प्रभारी प्रधानाचार्य* पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान उमियम (री-भोई), बारापानी मेघालय	*सदस्य*
(xiii)	सुनीति सनवाल *विभागाध्यक्ष* प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	*सदस्य*

(xiv) उषा शर्मा — *सदस्य*
प्रोफेसर
प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)
रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली

(xv) फारूक अंसारी — *सदस्य*
विभागाध्यक्ष
भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xvi) संध्या सिंह — *सदस्य*
विभागाध्यक्ष
भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xvii) विनय कुमार — *सदस्य*
विभागाध्यक्ष
विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xviii) मोना यादव — *सदस्य*
प्रोफेसर
विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xix) मिली रॉय आनंद — *सदस्य*
विभागाध्यक्ष
जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xx) गौरी श्रीवास्तव — *सदस्य*
विभागाध्यक्ष और *संकाय अध्यक्ष* (समन्वय)
सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxi) सुनीता फरक्या — *सदस्य*
विभागाध्यक्ष
विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.) और डी.ई.के.
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxii) रंजना अरोड़ा — *सदस्य*
विभागाध्यक्ष
पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग (डी.सी.एस. एंड डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxiii) आर.आर. कोइरंग — *सदस्य*
एसोसिएट प्रोफेसर
पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग (डी.सी.एस. एंड डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxiv) ज्योत्सना तिवारी — *सदस्य*
विभागाध्यक्ष
कला और सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग (डी.ई.ए.ए.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxv) शरबरी बनर्जी — *सदस्य*
सहायक प्रोफेसर
कला और सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxvi) अंजुम सिबिया — *सदस्य*
डीन (अकादमिक) और *विभागाध्यक्ष*
शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxvii) शरद सिन्हा — *सदस्य*
विभागाध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxviii) बी.पी. भारद्वाज — *सदस्य*
प्रोफेसर और *विभागध्यक्ष*, डी.ई.आर.
अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)
शैक्षिक अनुसंधान विभाग (डी.ई.आर.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxix) डॉ. विशाल डी. पजंकर — *सदस्य*
शैक्षिक अनुसंधान विभाग (डी.ई.आर.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxx) इंद्राणी भादुड़ी — *सदस्य*
प्रमुख
शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxi) सुखविंदर — *सदस्य*
एसोसिएट प्रोफेसर
शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxii) प्रो. आर. मेघनाथन — *सदस्य*
प्रमुख
अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxiii) सत्य भूषण — *सदस्य*
सहायक प्रोफेसर
अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxiv) शिप्रा वैद्य — *सदस्य*
प्रमुख
पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxv) एम. सामंतराय — *सदस्य*
उप पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxvi) दिनेश कुमार — *सदस्य*
प्रमुख
योजना और अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.) और डीन (अनुसंधान)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxvii) आशिता रवींद्रन — *सदस्य*
एसोसिएट प्रोफेसर
योजना और अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxviii) पी.डी. सुभाष — *सदस्य*
एसोसिएट प्रोफेसर
योजना और अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxix) अनूप राजपूत — *सदस्य*
प्रमुख
प्रकाशन प्रभाग (पी.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxx) सुभाष चंदर — *सदस्य*
प्रभारी
मुख्य लेखा अधिकारी (सी.ए.ओ.)

विशेष आमंत्रित

(i) *संयुक्त सचिव* (अनु. 4)
स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग
शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन
नई दिल्ली – 110001

(ii) *संकाय अध्यक्ष* (अकादमिक)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(iii) *संकाय अध्यक्ष* (अनुसंधान)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(iv) *संकाय अध्यक्ष* (समन्वय)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(v) *मुख्य लेखा अधिकारी* (सी.ए.ओ.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति

(i) दिनेश प्रसाद सकलानी — *अध्यक्ष*
निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.

(ii) श्रीधर श्रीवास्तव — *उपाध्यक्ष*
संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.

(iii) ए.पी. बेहरा — *सदस्य*
संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान

(iv) दीपक पालीवाल — – तदैव –
संयुक्त निदेशक, पी.एस.एस.सी.आई.वी.

बाह्य सदस्य
(अध्यक्ष, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा नामांकित)

(i) जे.वी. मधुसूदन — – तदैव –
प्रोफेसर
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद, तेलंगाना

(ii) भरत ढोलई — – तदैव –
नियामक, कच्छ कल्याण संघ
गाँधीधाम, जिला कच्छ
गुजरात

(iii) रेणु नंदा — – तदैव –
प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
जम्मू विश्वविद्यालय
जम्मू और कश्मीर

(iv) बबली चौधरी — – तदैव –
प्रोफेसर
अध्यापक शिक्षा विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी
असम

(v) प्रेम नारायण सिंह — – तदैव –
विभागाध्यक्ष
शिक्षा विभाग
संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

(vi)	आर. प्रभाकर राय *प्रोफेसर* प्रबंधन अध्ययन विभाग पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुदुच्चेरी	– तदैव –
(vii)	हरमीत सिंह राजनीति विज्ञान विभाग गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर	– तदैव –
(viii)	उमेश अशोक कदम *प्रोफेसर* स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	– तदैव –

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एस.सी.ई.आर.टी.) के प्रतिनिधि

(i)	*निदेशक* एस.सी.ई.आर.टी. तेलंगाना सामने – एल.बी. स्टेडियम ई-गेट बशीरबाग, हैदराबाद – 500001 तेलंगाना	*सदस्य*
(ii)	*निदेशक* एस.सी.ई.आर.टी., कहिलीपारा जिला – कामरूप मैट्रो, असम गुवाहाटी – 781019 असम	– तदैव –

रा.शै.अ.प्र.प. संकाय

(i)	संकाय अध्यक्ष *अकादमिक* एन.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प.	– तदैव –
(ii)	*संकाय अध्यक्ष* अनुसंधान एन.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प.	– तदैव –

आर.आई.ई. से दो प्रधानाचार्य

(i)	*प्रधानाचार्य* आर.आई.ई. भुवनेश्वर सचिवालय मार्ग भुवनेश्वर – 751022 ओडिशा	– तदैव –
(ii)	*प्रधानाचार्य* एन.ई.आर.आई.ई., शिलॉन्ग उमियम, रीभोई जिला शिलॉन्ग – 793013 मेघालय	– तदैव –

एन.आई.ई. विभागों/प्रभागों के पाँच विभागाध्यक्ष

(i)	*विभागाध्यक्ष*, अध्यापक शिक्षा विभाग रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	– तदैव –
(ii)	*प्रमुख*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	– तदैव –
(iii)	*विभागाध्यक्ष*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	– तदैव –
(iv)	*विभागाध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	– तदैव –
(v)	*विभागाध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	– तदैव –
(vi)	बी.पी. भारद्वाज *प्रमुख*, शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	*संयोजक*

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की शैक्षणिक समिति

(i) अंजुम सिबिया (*अध्यक्ष*)
संकाय अध्यक्ष (अकादमिक)

(ii) बाह्य विशेषज्ञ

(क) हीरामन तिवारी
प्रोफेसर
स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज जे.एन.यू., नई दिल्ली

(ख) अनंत राम नौटियाल (सेवानिवृत्त)
प्रोफेसर
गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल

(ग) विभा जोशी
प्रोफेसर
इग्नू, नई दिल्ली

(घ) सी.ए. मावलोंग
प्रोफेसर
नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलॉन्ग

(iii) सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. और पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल के संयुक्त निदेशक

ए.पी. बेहरा
संयुक्त निदेशक
सी.आई.ई.टी.
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दीपक पालीवाल
संयुक्त निदेशक
पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल

(iv) एन.आई.ई. विभागों/प्रभागों/प्रकोष्ठों के अध्यक्ष

(क) ए.पी. बेहरा, *संयुक्त निदेशक*, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी)

(ख) दीपक पालीवाल, *संयुक्त निदेशक*, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल

(ग) सुनीति सनवाल, *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

(घ) मोहम्मद फारूक अंसारी, *विभागाध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)

(ङ) विनय कुमार सिंह, *विभागाध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

(च) मिली रॉय आनंद, *विभागाध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)

(छ) गौरी श्रीवास्तव, *संकाय अध्यक्ष*, (समन्वयक) और विभागाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

(ज) सुनीता फरक्या, *विभागाध्यक्ष*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.) और शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

(झ) रंजना अरोड़ा, *विभागाध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग (डी.सी.एस. एंड डी.)

(ञ) ज्योत्सना तिवारी, *विभागाध्यक्ष*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग (डी.ई.ए.ए.)

(ट) बी.पी. भारद्वाज, *विभागाध्यक्ष*, शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग (डी.ई.आर.)

(ठ) शरद सिन्हा, *अध्यक्ष*, अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)

(ड) इंद्राणी भादुड़ी, *विभागाध्यक्ष*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

(ढ) आर. मेघनाथन, *प्रमुख*, अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)

(ण) शिप्रा वैद्य, *प्रमुख*, पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)

(त) दिनेश कुमार, *प्रमुख*, योजना और अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

(थ) अनूप कुमार राजपूत, *प्रमुख*, प्रकाशन प्रभाग (पी.डी.)

(v) एन.आई.ई., सी.आई.ई.टी और पी.एस.एस.सी.आई.वी. के संकाय

(क) संध्या सिंह, *विभागाध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)

(ख) मोना यादव, *विभागाध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

(ग) हुमा कयूम, जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)

(घ) विजयन के., *विभागाध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग (डी.सी.एस. एंड डी.)

(ङ) शरबरी बनर्जी, *सहायक प्रोफेसर*, कला और सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग (डी.ई.ए.ए)

(च) प्रभात कुमार मिश्रा, *विभागाध्यक्ष*, शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)

(छ) डॉ. विशाल डी. पजंकर, शैक्षिक अनुसंधान विभाग (डी.ई.आर.) और शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

(ज) सुखविंदर, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

(झ) सत्य भूषण, सहायक *प्रोफेसर*, अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)

(ञ) एम. सामंतराय, *उप पुस्तकालयाध्यक्ष*, पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)

(ट) आशिता रवींद्रन, योजना और अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

(ठ) राजेन्द्र पाल, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)

(ड) पिंकी खन्ना, गृह विज्ञान एवं आतिथ्य प्रबंधन विभाग (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)

परिशिष्ट V

31 मार्च, 2024 को रा.शै.अ.प्र.प. के समेकित संस्वीकृत पदों की संख्या और आरक्षण की स्थिति

समूह	स्वीकृत पद	पदों की संख्या	अनु. जाति	अनु. जाति के कर्मचारियों का प्रतिशत	अनु. जनजाति	अनु. जनजाति के कर्मचारियों का प्रतिशत	अन्य पिछड़ा वर्ग	अन्य पिछड़ा वर्ग के कर्मचारियों का प्रतिशत	दिव्यांग	दिव्यांग कर्मचारियों का प्रतिशत
क	648	416	71	17.06	28	6.73	92	22.11	4	0.96
ख	704	337	57	16.91	40	11.86	65	19.28	9	2.67
ग और घ	1492	385	102	26.49	59	15.32	54	14.02	12	3.11
कुल	**2844**	**1138**	**230**	**20.21**	**127**	**11.15**	**211**	**18.54**	**25**	**2.19**

31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्तियाँ एवं भुगतान लेखा

राशि रुपये में

प्राप्तियाँ	चालू वर्ष 2023–24	पिछला वर्ष 2022–23	भुगतान	चालू वर्ष 2023–24	पिछला वर्ष 2022–23
1. आरंभिक शेष			1. व्यय		
क) नकद शेष	-	-	क) स्थापना व्यय	2,70,26,98,980	2,51,25,42,339
ख) बैंक शेष	-	-	ख) अकादमिक व्यय	1,19,02,69,059	3,02,34,79,570
(i) चालू खातों में	43,300	57,400	ग) प्रशासनिक व्यय	1,56,24,04,834	1,49,10,20,528
(ii) जमा खातों में	18,101	18,076	घ) परिवहन व्यय	1,43,61,880	1,36,38,822
(iii) बचत खातों में	1,16,26,85,435	55,86,20,931	ङ) मरम्मत एवं रख-रखाव व्यय	29,94,30,525	28,78,60,637
			च) पूर्व अवधि व्यय	-	-
2. प्राप्त अनुदान					
क) भारत सरकार से	3,49,97,00,000	3,98,29,60,705	2. निश्चित/अक्षय निधि के लिए भुगतान	-	-
ख) राज्य सरकार से	-	-			
ग) अन्य स्रोतों से	-	-	3. प्रायोजित परियोजनाओं/ योजनाओं के लिए भुगतान	4,18,33,98,385	3,17,60,44,578

(पूँजीगत एवं राजस्व व्यय के लिए अनुदान, यदि उपलब्ध हो तो पृथक दर्शाया जाएगा)	-	-	4. प्रायोजित अध्येतावृत्तियों/छात्रवृत्तियों के लिए भुगतान	1,23,81,735	1,31,05,836
3. अकादमिक प्राप्तियाँ	5,03,90,834	11,29,51,518			
			5. किए गए निवेश एवं जमा—		
4. निश्चित/अक्षय निधि के लिए प्राप्तियाँ	-	-	क) निश्चित/अक्षय निधियों से	-	-
			ख) स्व-निधि से (अन्य निवेश)	-	-
5. प्रायोजित परियोजनाओं/ योजनाओं के लिए प्राप्तियाँ	7,84,89,74,251	3,09,81,71,514			
			6. अनुसूचित बैंकों में सावधि जमा	10,82,00,00,000	11,82,00,00,000
6. प्रायोजित अध्येतावृत्तियों तथा छात्रवृत्तियों की प्राप्तियाँ	-	-			

			7. स्थायी परिसंपत्तियों और चालू कार्य पूँजी पर व्यय		
7. निवेश पर आय			क) स्थायी परिसंपत्तियाँ	19,50,04,176	36,44,71,543
क) निश्चित/अक्षय निधि	-	-	ख) चालू कार्य पूँजी	-	-
ख) अन्य निवेश	6,06,76,109	5,69,81,360			
			8. सांविधिक भुगतानों सहित अन्य भुगतान	1,09,06,77,482	1,03,73,92,505
8. निम्नवत पर प्राप्त ब्याज					
क) बैंक जमा ख) ऋण एवं अग्रिम	80,62,59,911 6,92,843	28,30,55,637 6,34,459	9. अनुदानों की वापसी		
ग) बचत बैंक खाते	2,79,76,692	2,05,50,597	10. जमा एवं अग्रिम	3,46,08,385	3,87,89,155
घ) बैंक गारंटी	-	-			
9. नकदीकृत निवेश	-	-	11. अन्य भुगतान	10,13,89,73,405	11,83,07,60,702
10. अनुसूचित बैंकों में सावधि जमा नकदीकृत	10,75,60,00,000	11,77,00,00,000	12. अंत: शेष		
			क) हस्तगत नकद	-	-
11. अन्य आय (पूर्व-अवधि आय सहित)	2,88,18,05,124	3,74,80,36,559	ख) बैंक शेष	-	-
			(i) चालू खाते में	25,500	43,300
12. जमा एवं अग्रिम	7,92,71,730	1,88,36,516	(ii) बचत खाते में	1,16,46,40,930	1,16,26,85,435

			(iii) जमा खाते में	18,101	18,101
13. सांविधिक प्राप्तियों सहित विविध प्राप्तियाँ	3,31,77,06,138	7,43,85,57,092			
14. कोई अन्य प्राप्तियाँ	2,91,66,92,910	5,68,24,20,688			
कुल	**33,40,88,93,378**	**36,77,18,53,052**	**कुल**	**33,40,88,93,378**	**36,77,18,53,051**

हस्ताक्षरित
मुख्य लेखाधिकारी
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली–110 016

हस्ताक्षरित
सचिव
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली–110 016

वर्ष 2023–24 के दौरान जारी किए गए प्रकाशन

पाठ्यपुस्तकें

कक्षा 1

- *सारंगी – 1*
- *मृदंग – 1*
- *जॉयफुल मैथमेटिक्स – 1*
- *आनंदमय गणित – 1*

कक्षा 2

- *सारंगी – 2*
- *मृदंग – 2*
- *जॉयफुल मैथमेटिक्स – 2*
- *आनंदमय गणित – 2*

कक्षा 3

- *रिमझिम, भाग – 3*
- *मैथ-मैजिक – 3*
- *गणित का जादू – 3*
- *मैरीगोल्ड – 3*
- *आस-पास (ई.वी.एस.)*
- *लुकिंग अराउंड (ई.वी.एस.)*

कक्षा 4

- *रिमझिम – 4*
- *मैरीगोल्ड – 4*
- *मैथ-मैजिक – 4*
- *गणित का जादू – 4*
- *आस-पास (ई.वी.एस.)*
- *लुकिंग अराउंड (ई.वी.एस.)*

कक्षा 5

- *रिमझिम – 5*
- *मैरीगोल्ड – 5*
- *मैथ-मैजिक – 5*
- *गणित का जादू – 5*
- *आस-पास (ई.वी.एस.)*
- *लुकिंग अराउंड (ई.वी.एस.)*

कक्षा 6

- *वसंत – 1*
- *दूर्वा – 1*
- *रुचिरा, भाग – 1*
- *बल राम कथा (हिंदी पूरक पठन की पुस्तक)*
- *मैथमैटिक्स*
- *गणित*
- *साइंस*
- *विज्ञान*
- *हनीसकल (इंग्लिश रीडर)*
- *ए पैक्ट विद द सन (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर)*
- *दि अर्थ— अवर हैबिटेट*
- *पृथ्वी— हमारा आवास*
- *सोशल एंड पॉलिटिकल लाइफ*
- *सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन*
- *अवर पास्ट्स – 1*
- *हमारे अतीत – 1*

कक्षा 7

- *वसंत – 2*
- *बाल महाभारत कथा (हिंदी पूरक पठन की पुस्तक)*
- *दूर्वा – 2 (द्वितीय भाषा)*
- *रुचिरा भाग – 2*
- *हनीकॉम्ब (इंग्लिश टेक्स्टबुक)*
- *ऐन ऐलियन हैंड (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर)*
- *मैथमैटिक्स*
- *गणित*
- *साइंस*

- विज्ञान
- अवर पास्ट्स – 2
- हमारे अतीत – 2
- अवर एनवायरनमेंट
- हमारा पर्यावरण
- सोशल एंड पॉलिटिकल लाइफ – 2
- सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन – 2

कक्षा 8

- वसंत – 3
- भारत की खोज (हिंदी पूरक पठन की पुस्तक)
- दूर्वा – 3
- रुचिरा – 3
- हनीड्यू
- इट सो हैपन्ड (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर)
- मैथमैटिक्स
- गणित
- साइंस
- विज्ञान
- रिसोर्सेज एंड डेवलपमेंट
- संसाधन और विकास
- सोशल एंड पॉलिटिकल लाइफ – 3
- सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन – 3
- अवर पास्ट्स – 3
- हमारे अतीत – 3

कक्षा 9

- क्षितिज, भाग – 1 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)
- कृतिका, भाग – 1 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)
- स्पर्श, भाग – 1 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)
- संचयन, भाग – 1 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)
- बीहाइव (इंग्लिश टेक्स्टबुक, इलेक्टिव कोर्स)
- मोमेंट्स (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर)
- शेमुषी, भाग – 1
- अभ्यासवान भव अभ्यास पुस्तिका
- मैथमैटिक्स
- गणित
- साइंस
- विज्ञान
- इकोनॉमिक्स
- अर्थशास्त्र
- डेमोक्रेटिक पोलिटिक्स – 1
- लोकतांत्रिक राजनीति – 1
- इंडिया एंड दि कंटेंपरेरी वर्ल्ड – 1
- भारत और समकालीन विश्व – 1
- कंटेम्परारी इंडिया – 1
- समकालीन भारत – 1
- वर्ड एंड एक्सप्रेशंस – 1 (वर्क बुक इन इंग्लिश)
- हेल्थ एंड फिजिकल एजुकेशन
- इंफॉर्मेशन एंड कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी

कक्षा 10

- क्षितिज, भाग – 2 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)
- कृतिका, भाग – 2 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)
- स्पर्श, भाग – 2 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)
- संचयन, भाग – 2 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)
- फर्स्ट फ्लाइट (इंग्लिश टेक्स्टबुक, इलेक्टिव कोर्स)
- फुटप्रिंट्स विदाउट फीट (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर, इलेक्टिव कोर्स)
- शेमुषी, भाग – 2
- व्याकरणविदी (9वीं से 10वीं संस्कृत व्याकरण)
- मैथमैटिक्स
- गणित
- साइंस
- विज्ञान
- इंडिया एंड दि कंटेंपरेरी वर्ल्ड – 2
- भारत और समकालीन विश्व – 2
- डेमोक्रेटिक पोलिटिक्स – 2
- लोकतांत्रिक राजनीति – 2
- कंटेम्परारी इंडिया – 2
- समकालीन भारत – 2

- *अंडरस्टैंडिंग इकोनॉमिक डेवलपमेंट*
- *आर्थिक विकास की समझ*
- *वर्ड एंड एक्सप्रेशन*
- *हेल्थ एंड फिजिकल एजुकेशन*
- *इंफार्मेशन एंड कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी*

कक्षा 11

- *आरोह, भाग – 1 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)*
- *वितान, भाग – 1 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)*
- *अंतरा, भाग – 1 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)*
- *अंतराल, भाग – 1 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)*
- *वोवन वर्ड्स (इंग्लिश इलेक्टिव कोर्स)*
- *भाष्वती, भाग – 1*
- *शाश्वती, भाग – 1*
- *अभ्यासवान भव अभ्यास पुस्तिका*
- *मैथमैटिक्स*
- *गणित*
- *बायोलॉजी*
- *जीवविज्ञान*
- *केमिस्ट्री, भाग – 1*
- *केमिस्ट्री, भाग – 2*
- *रसायन विज्ञान, भाग – 1*
- *रसायन विज्ञान, भाग – 2*
- *फिजिक्स, भाग – 1*
- *फिजिक्स, भाग – 2*
- *भौतिकी, भाग – 1*
- *भौतिकी, भाग – 2*
- *थीम्स ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री*
- *विश्व इतिहास के कुछ विषय*
- *फंडामेंटल्स ऑफ फिजिकल जियोग्राफी*
- *भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत*
- *इंडिया — फिजिकल एनवायरनमेंट*
- *भारत — भौतिक पर्यावरण*
- *प्रैक्टिकल वर्क इन जियोग्राफी, भाग – 1*
- *भूगोल में प्रयोगात्मक कार्य, भाग – 1*
- *स्टैटिस्टिक्स टू इकोनॉमिक्स*
- *अर्थशास्त्र में सांख्यिकी*
- *इंडियन इकॉनोमिक डेवलपमेंट*
- *भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास*
- *इंडियन कांस्टीट्यूशन एट वर्क*
- *भारत का संविधान — सिद्धांत और व्यवहार*
- *पॉलिटिकल थ्योरी – 2*
- *राजनीति सिद्धांत*
- *इंट्रोड्यूसिंग सोशियोलॉजी*
- *समाजशास्त्र का परिचय*
- *अंडरस्टैंडिंग सोसायटी*
- *समाज का बोध*
- *बिजनेस स्टडीज*
- *व्यावसायिक अध्ययन*
- *एकाउंटेंसी, भाग – 1*
- *लेखाशास्त्र, भाग – 1*
- *एकाउंटेंसी, भाग – 2*
- *लेखाशास्त्र, भाग – 2*
- *अभिव्यक्ति और माध्यम*
- *साइकोलॉजी*
- *मनोविज्ञान का परिचय*
- *सृजन – 1 (टेक्स्टबुक इन क्रिएटिव राइटिंग एंड ट्रांसलेशन)*
- *लिविंग क्राफ्ट ट्रेडिशन ऑफ इंडिया (टेक्स्टबुक इन हेरिटेज क्राफ्ट्स)*
- *द स्टोरी ऑफ ग्राफिक डिजाइन*
- *भारतीय हस्तकला की परंपराएँ*
- *एक्सप्लॉरिंग द क्राफ्ट ट्रेडिशन इन इंडिया*
- *ग्राफिक डिजाइन एक कहानी*
- *भारतीय हस्तकला परंपराओं की खोज*
- *एन इंट्रोडक्शन टू इंडियन आर्ट*
- *ह्यूमन इकोलॉजी एंड फैमिली साइंस, भाग – 1*
- *ह्यूमन इकोलॉजी एंड फैमिली साइंस, भाग – 2*
- *मानव पारिस्थितिकी एवं परिवार विज्ञान, भाग – 1*
- *मानव पारिस्थितिकी एवं परिवार विज्ञान, भाग – 2*

- *इंफॉर्मेशन प्रैक्टिसेस*
- *बायोटेक्नोलॉजी*
- *कंप्यूटर साइंस – 1*
- *हेल्थ एंड फिजिकल एजुकेशन*
- *संगीत, तबला एवं पखावज*

कक्षा 12

- *आरोह, भाग – 2 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)*
- *वितान, भाग – 2 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)*
- *अंतरा, भाग – 2 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)*
- *अंतराल, भाग – 2 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)*
- *फ्लोमिंगो (इंग्लिश कोर कोर्स)*
- *विसटास (इंग्लिश कोर कोर्स)*
- *कैलाइडोस्कोप (इंग्लिश इलेक्टिव कोर्स)*
- *भाष्वती, भाग – 2*
- *शाश्वती, भाग – 2*
- *मैथेमैक्टिस भाग – 1*
- *मैथेमैक्टिस भाग – 2*
- *गणित, भाग – 1*
- *गणित, भाग – 2*
- *बायोलॉजी*
- *जीवविज्ञान*
- *केमिस्ट्री, भाग – 1*
- *केमिस्ट्री, भाग – 2*
- *रसायन विज्ञान, भाग – 1*
- *रसायन विज्ञान, भाग – 2*
- *फिजिक्स, भाग – 1*
- *फिजिक्स, भाग – 2*
- *भौतिकी, भाग – 1*
- *भौतिकी, भाग – 2*
- *थीम्स इन इंडियन हिस्ट्री, भाग – 1*
- *थीम्स इन इंडियन हिस्ट्री, भाग – 2*
- *थीम्स इन इंडियन हिस्ट्री, भाग – 3*
- *भारतीय इतिहास के कुछ विषय, भाग – 1*
- *भारतीय इतिहास के कुछ विषय, भाग – 2*
- *भारतीय इतिहास के कुछ विषय, भाग – 3*
- *फंडामेंटल ऑफ फिजिकल जियोग्राफी*
- *मानव भूगोल के मूल सिद्धांत*
- *प्रैक्टिकल वर्क इन जियोग्राफी, भाग – 2*
- *भूगोल में प्रयोगात्मक कार्य, भाग – 2*
- *इंट्रोडक्टरी माइक्रोइकॉनोमिक्स*
- *व्यष्टि अर्थशास्त्र — एक परिचय*
- *इंट्रोडक्टरी माइक्रोइकोनॉमिक्स*
- *समष्टि अर्थशास्त्र — एक परिचय*
- *कंटेंपोरेरी वर्ल्ड पॉलिटिक्स*
- *समकालीन विश्व राजनीति*
- *पॉलिटिक्स इन इंडिया सिंस इंडिपैंडेंस*
- *स्वतंत्र भारत में राजनीति*
- *सोशल चेंज एंड डेवलपमेंट इन इंडिया*
- *भारत में सामाजिक परिवर्तन और विकास*
- *इंडियन सोसायटी*
- *भारतीय समाज*
- *बिजनेस स्टडीज, भाग – 1*
- *बिजनेस स्टडीज, भाग – 2*
- *व्यावसायिक अध्ययन, भाग – 1*
- *व्यावसायिक अध्ययन, भाग – 2*
- *एकाउंटेंसी 1 — नॉट फॉर प्रोफिट आर्गेनाइजेशन एंड पार्टनरशिप एकाउंट्स*
- *लेखाशास्त्र 1 — अलाभकारी संस्थाएँ एवं साझेदारी खाते*
- *एकाउंटेंसी 2 — कंपनी एकाउंट्स एंड एनालिसिस ऑफ फाइनेंशियल स्टेटमेंट्स*
- *लेखाशास्त्र 2 — कंपनी खाते एवं वित्तीय विवरणों का विश्लेषण*
- *साइकोलॉजी*
- *मनोविज्ञान का परिचय*
- *एकाउंटेंसी — कम्प्यूटराइज्ड एकाउंटेंसी सिस्टम*
- *क्राफ्ट ट्रेडिशन ऑफ इंडिया टेक्स्टबुक इन हेरिटेज क्राफ्ट*
- *ग्राफिक डिजाइन*

- *सृजन – 2 (टेक्स्टबुक इन क्रिएटिव राइटिंग एंड ट्रांसलेशन)*
- *टूवर्ड्स ए न्यू एज ऑफ ग्राफिक डिजाइन*
- *ह्यूमन इकोलॉजी एंड फैमिली साइंसेज, भाग – 1*
- *ह्यूमन इकोलॉजी एंड फैमिली साइंसेज, भाग – 2*
- *मानव पारिस्थितिकी एवं परिवार विज्ञान, भाग – 1*
- *मानव पारिस्थितिकी एवं परिवार विज्ञान, भाग – 2*
- *सूक्ष्म रसायन प्रयोगशाला किट निर्देशिका*
- *कम्प्यूटर साइंस*
- *एन इंट्रोडक्शन ऑफ इंडियन आर्ट – 2*
- *इंफॉर्मेटिक्स प्रैक्टिसेस*
- *संगीत, तबला एवं पखावज*

उर्दू की पाठ्यपुस्तकें

कक्षा 1

- *दिलचस्प रियाज़ी*
- *शहनाई*

कक्षा 2

- *दिलचस्प रियाज़ी*
- *शहनाई*

कक्षा 3

- *रियाज़ी का जादू 3*
- *आस-पास (ई.वी.एस.)*
- *इब्तेदाई उर्दू 3*

कक्षा 4

- *रियाज़ी का जादू – 4*
- *इब्तेदाई उर्दू – 4*
- *आस-पास (ई.वी.एस.)*

कक्षा 5

- *रियाज़ी का जादू – 5*
- *इब्तेदाई उर्दू – 5*
- *आस-पास (ई.वी.एस.)*

कक्षा 6

- *अपनी ज़बान – 1*
- *उर्दू गुलदस्ता (सप्लीमेंटरी रीडर)*
- *हिसाब*
- *साइंस*
- *ज़मीन हमारा मस्कन*
- *हमारे माज़ी – 1*
- *समाजी और सियासी ज़िदंगी – 1*
- *जान-पहचान (दूसरी भाषा)*

कक्षा 7

- *अपनी ज़बान – 2*
- *उर्दू गुलदस्ता (सप्लीमेंटरी रीडर)*
- *हिसाब*
- *साइंस*
- *हमारे माज़ी – 2*
- *समाज और सियासी ज़िदंगी*
- *जान-पहचान (दूसरी भाषा)*
- *दूर-पास (तीसरी भाषा)*

कक्षा 8

- *अपनी ज़बान*
- *उर्दू गुलदस्ता (सप्लीमेंटरी रीडर)*
- *साइंस*
- *हिसाब*
- *वसाइल और तरक्की (ज्योग्राफी)*
- *समाजी और सियासी ज़िदंगी*
- *हमारे माज़ी 3, भाग – 1*
- *हमारे माज़ी 3, भाग – 2*
- *जान-पहचान (दूसरी भाषा)*
- *दूर-पास (तीसरी भाषा)*

कक्षा 9

- *नवा-ए-उर्दू*
- *गुलज़ार-ए-उर्दू (सप्लीमेंटरी रीडर)*
- *रियाज़ी*
- *साइंस*

- *जम्हूरी सियासत – 1*
- *असरी हिन्दुस्तान – 1*
- *हिंदुस्तान और असरी दुनिया – 1*
- *इल्म-ए-मआशियात (इकोनॉमिक्स)*
- *जान-पहचान (दूसरी भाषा)*
- *दूर-पास (तीसरी भाषा)*
- *सब रंग*

कक्षा 10

- *नवा-ए-उर्दू*
- *गुलज़ार-ए-उर्दू (सप्लीमेंटरी रीडर)*
- *रियाज़ी*
- *साइंस*
- *हिंदुस्तान और असरी दुनिया – 2*
- *जम्हूरी सियासत – 2*
- *मआशी तरक्की की समझ*
- *जान-पहचान (दूसरी भाषा)*
- *दूर-पास (तीसरी भाषा)*
- *सब रंग*

कक्षा 11

- *गुलिस्तान-ए-अदब*
- *खयाबान-ए-उर्दू (सप्लीमेंटर रीडर)*
- *रियाज़ी*
- *तबीईयात, भाग – 1*
- *तबीईयात, भाग – 2*
- *शुमारियात बराए मआशियात*
- *हिंदुस्तानी तबीई माहौल*
- *हिंदुस्तान की मआशी तरक्की*
- *समाजियात का तआरुफ़*
- *हिंदुस्तान आईन और काम*
- *सियासी नज़रिया*
- *कारोबारी उलूम*
- *नफ़्सियात*
- *तबाई जुगराफ़िया के मुबादियात*
- *जुगराफ़िया में अमली काम*
- *तारीख-ए-आलम पर माबनी मौज़ूआत (हिस्ट्री)*
- *समाजियात का तआरुफ़*
- *मुताला-ए-मुआशरा*
- *कीमिया, भाग – 1*
- *कीमिया, भाग – 2*
- *हयातियात, भाग – 1*
- *हयातियात, भाग – 2*
- *खातादारी, भाग – 1*
- *खातादारी, भाग – 2*
- *धनक (सप्लीमेंटर रीडर)*
- *नई आवाज़ (कोर उर्दू टेक्स्टबुक)*
- *कम्प्यूटर साइंस (उर्दू टेक्स्टबुक)*

कक्षा 12

- *गुलिस्तान-ए-अदब*
- *खयाबान-ए-उर्दू (सप्लीमेंटरी रीडर)*
- *रियाज़ी, भाग – 1*
- *रियाज़ी, भाग – 2*
- *तबीईयात, भाग – 1*
- *तबीईयात, भाग – 2*
- *कीमिया, भाग – 1*
- *कीमिया, भाग – 2*
- *हयातियात*
- *तारीख-ए-हिंद के मौज़ूआत, भाग – 1*
- *तारीख-ए-हिंद के मौज़ूआत, भाग – 2*
- *तारीख-ए-हिंद के मौज़ूआत, भाग – 3*
- *खातादारी, भाग – I*
- *खातादारी, भाग – II*
- *कुल्ली मुआशियत का तआरुफ़*
- *जुज़्वी मुआशियत का तआरुफ़*
- *धनक (सप्लीमेंटरी रीडर)*
- *इंसानी जुगराफ़िया के बुनियादी उसूल*
- *जुगराफ़िया में अमली काम*
- *हिंदुस्तान अवाम और मुआशियत*
- *हिंदुस्तान में समाजी तब्दीली और तरक्की*

- इंसानी जुगराफ़िया के मुबादियात
- असरी आलमी सियासत
- आज़ादी के बाद हिंदुस्तान की सियासत
- हिंदुस्तानी समाज
- कारोबारी उलूम, भाग – 1
- कारोबारी उलूम, भाग – 2
- नफ़्सियात
- नई आवाज़ (कोर उर्दू टेक्स्टबुक)
- उर्दू कवायद और इंशा माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए
- उर्दू ज़बान-ओ अदब की तारीख़ और माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए
- उर्दू की अदबी असनाफ़ माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए

व्यावसायिक शिक्षा की पुस्तकें

- गुड़िया निर्माण
- मध्य स्तर पर पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा (6 – 8)
- सोलोनियस फसल कृषक, कक्षा बारहवीं
- डोमेस्टिक डेटा एंट्री ऑपरेटर (जॉब रोल), कक्षा 9
- हस्त कशीदाकार (अड्डावाला), कक्षा 9
- नि:शस्त्र सुरक्षा गार्ड, कक्षा 9

सेतु पाठ्यक्रम पुस्तकें

- आनंद — बालवाटिका के लिए गतिविधि पुस्तक
- प्लेइंग विद् नंबर्स मैथ, स्तर – 4

प्रश्न प्रदर्शिकाएँ और प्रयोगशाला पुस्तिकाएँ

- केयर ऑफ द हाउसहोल्ड ए एक्जैम्प्लर इंस्ट्रक्शन मटीरियल्स, कक्षा 9 – 10
- विद्या प्रवेश, कक्षा 1 के बच्चों के लिए तीन महीने का खेल आधारित स्कूल तैयारी मॉड्यूल
- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा मैनुअल में जागरूकता के लिए संसाधन पैकेज
- मैनुअल फॉर हायर सेकेंडरी मैथमेटिक्स किट
- मैनुअल फॉर सैकंडरी मैथमेटिक्स किट
- मिसाली सवालात, विज्ञान उदाहरण समस्याएँ, कक्षा 10
- साइंस एक्जेम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 7
- मैथेमेटिक्स एक्जैम्पलर प्रॉब्लम्स, कक्षा 10
- फिजिक्स एक्जेम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 11
- मैथेमेटिक्स एक्जैम्पलर प्रॉब्लम्स, कक्षा 7
- साइंस एक्जैम्पलर प्रॉब्लम्स, कक्षा 10
- साइंस एक्जैम्पलर प्रॉब्लम्स, कक्षा 8
- गणित प्रश्न प्रदर्शिका, कक्षा 11
- फिजिक्स लैबोरेटरी मैनुअल, कक्षा 11
- कैमिस्ट्री लैबोरेटरी मैनुअल, कक्षा 11
- बायोलॉजी लैबोरेटरी मैनुअल, कक्षा 11
- जादुई पिटारा यूजर मैनुअल
- साइंस एक्जैम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 6
- बायोलॉजी एक्जैम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 12
- कैमिस्ट्री एक्जैम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 11
- बायोलॉजी एक्जैम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 11
- साइंस एक्जैम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 7
- साइंस एक्जैम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 8
- साइंस एक्जैम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 9
- रसायन प्रयोगशाला पुस्तिका, कक्षा 11
- मैथेमेटिक्स एक्जैम्पलर प्रॉब्लम्स, कक्षा 6

अनुपूरक पाठमाला

- चलो सर्कस चलें
- घर की खोज
- कव्वे का बच्चा
- चिड़ियाघर की सैर
- प्यारे-न्यारे बोल
- अगड़ धप्पी (पोस्टर)
- नानी कहें कहानी (पोस्टर)
- जंगल (पोस्टर)
- मिट्टी के रंग (पोस्टर)

- *चिरैया (पोस्टर)*
- *बरस रहा भाई, बरस रहा (पोस्टर)*
- *पतंग के पेंच*
- *तोता और बिल्ली*
- *आओ खेल खेलें*
- *दक्षिण भारत की काव्य कथाएँ*
- *कुवि भाषा शिक्षा*
- *देशीय भाषा शिक्षा*
- *मुस्कुराता हुआ फूल*
- *हमारा गुजरात*
- *डॉ. भीमराव अम्बेडकर जीवन और कार्य*
- *हमारा भारतवर्ष - बाल्मीकि प्रसाद*
- *सुनो कहानी*
- *वीर गाथा — स्टोरीज ऑफ परमवीर चक्र अवॉडीज*
- *हमारी मदद कौन करेगा?*
- *वीर गाथा — परमवीर चक्र विजेताओं की कहानी*
- *पहाड़ से ऊँचा आदमी*

चिल्ड्रेन लिटरेचर

- *फिलेटली*
- *ग्रम्पी गीता*
- *नॉक नॉक*
- *गो ग्रीन*
- *फायर एंड स्टेम्पीड*
- *मे बी इट इज*

शिक्षक संदर्शिकाएँ

- *आवश्यक खेल सामग्री की किट शिक्षक मार्गदर्शन और किट मैनुअल पूर्व-अध्येता*
- *उन्मुख — बालवाटिका के लिए प्रशिक्षक पुस्तिका*
- *पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए दिशानिर्देश*
- *कमज़ोर दृष्टि वाले बच्चे — प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए*
- *चिल्ड्रन विद लो विज़न— प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए*
- *कला समेकित अधिगम, माध्यमिक चरण के लिए दिशानिर्देश*
- *कला शिक्षा शिक्षकों की पुस्तिका, कक्षा 3 के लिए*
- *कार्य अनुभव, कक्षा 1 और 2 शिक्षक पुस्तिका*
- *गणित अधिगम किट, अध्यापक संदर्शिका कक्षा 1 एवं 2*
- *उन्मुख, बालवाटिका के लिए प्रशिक्षक पुस्तिका*
- *उन्मुख, बालवाटिका हेतु प्रशिक्षण संदर्शिका*

रिसर्च रिपोर्ट्स/मोनोग्राफ्स

- *बालिका का सकारात्मक आत्मबोध विकास*
- *द रोल ऑफ बेगम्स ऑफ भोपाल*
- *वर्क एक्सपीरियंस इन स्कूल एजुकेशन*
- *द हिस्टोरिक ट्रायल ऑफ महात्मा गाँधी*
- *सम एमिनेंट इंडियन साइंटिस्ट एंड टेक्नोलॉजिस्ट*
- *उर्दू तदरीसी इस्तेलाहत की वज़ाहती फरहंग*
- *लैंग्वेज पेडागॉजी इंग्लिश वॉल्यूम I टेक्स्ट बुक फॉर टू ईयर बी.एड. कार्स*
- *जॉयज़ की अमोज़िश बी.एड. के लिए पाठ्यपुस्तक*
- *पर्यावरण शिक्षा — करें, सीखें और बताएँ, कक्षा 6*
- *पर्यावरण शिक्षा — करें, सीखें और बताएँ, कक्षा 7*
- *पर्यावरण शिक्षा — करें, सीखें और बताएँ, कक्षा 8*
- *हस्तशिल्पों के धरोहर आधार पत्र*
- *भारत सांस्कृतिक विविधता में एकता*
- *आधुनिक भारत में सामाजिक विचारक*
- *योग, ए हेल्थी वे ऑफ लिविंग, अपर प्राइमरी स्टेज*
- *योग, ए हेल्थी वे ऑफ लिविंग, सेकेंडरी स्टेज*
- *योग स्वस्थ जीवन जीने का तरीका, माध्यमिक स्तर*
- *मध्यकालीन काव्य का पाठन-पाठन*

- *सुनो कहानी, उच्च प्राथमिक स्तर के लिए हिंदी की पूरक पुस्तक*
- *संस्कृत वांग्मय में विज्ञान का इतिहास, उच्च माध्यमिक स्तर के लिए पूरक पुस्तक*
- *एन इंडियन आर्मी — ए ग्लोरियस हैरिटेज*
- *इंडिया यूनिटी एंड कल्चर्र डाइवरसिटी*
- *लिविंग विद होप*
- *अंग्रेजी वर्कशीट, कक्षा 6*
- *अंग्रेजी वर्कशीट, कक्षा 7*
- *अंग्रेजी वर्कशीट, कक्षा 8*

पत्रिकाएँ

- *भारतीय आधुनिक शिक्षा, अक्तूबर 2021*
- *फिरकी बच्चों की, जून 2023*
- *फिरकी बच्चों की, दिसंबर 2023*
- *द प्राइमरी टीचर, अक्तूबर 2018*
- *द प्राइमरी टीचर, जनवरी 2022*
- *प्राथमिक शिक्षक, जुलाई 2021*
- *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, नवंबर 2021*
- *स्कूल साइंस, मार्च 2020*
- *स्कूल साइंस, दिसंबर 2017*
- *स्कूल साइंस, जून–सितंबर 2018*
- *प्राथमिक शिक्षक, अप्रैल 2022*
- *भारतीय आधुनिक शिक्षा, जनवरी 2022*
- *प्राथमिक शिक्षक, अक्तूबर 2022*
- *द प्राइमरी टीचर, जनवरी 2019*
- *स्कूल साइंस, जून 2020*
- *प्राथमिक शिक्षक, जनवरी 2023*
- *प्राथमिक शिक्षक, जुलाई 2022*

मूल्यरहित प्रकाशन

- *एनुअल अकाउंट 2022–23*
- *वार्षिक लेखा 2022–23*
- *एनुअल रिपोर्ट 2022–23*
- *वार्षिक रिपोर्ट 2022–23*
- *चंद्रयान उत्सव मॉड्यूल (बहुभाषी)*
- *हमारा चंद्रयान*
- *मेरा प्यारा चंदा*
- *भारत का चंद्रमा पर अभियान*
- *चंद्रयान – जर्नी टुवड्र्स द मून*
- *एक्सप्लोरिंग द मून मिशन ऑफ भारत*
- *टुवड्र्स द मून एंड बियॉन्ड*
- *एक्सप्लोरिंग चंद्रयान*
- *भारत ऑन मून*
- *भारत स्पेस मिशन*
- *फिजिक्स ऑफ चंद्रयान 3*
- *विद्यालयी बस्ता नीति 2020*
- *राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह 2023–24*
- *50वीं राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी 2023*
- *50वीं राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी 2023 एक्जिबिट्स ऑफ 2023 (द्विभाषी)*

प्रकाशन प्रभाग और इसके क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र

क्र.सं.	केंद्र का नाम	शामिल क्षेत्र
1.	प्रकाशन प्रभाग रा.शै.अ.प्र.प. परिसर श्री अरविंद मार्ग नयी दिल्ली – 110 016 फ़ोन – 011-26562708 फैक्स – 011-26851070 ई-मेल – cbm.ncert@nic.in	विदेशी देश, दिल्ली, राजस्थान, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश के भाग तथा उर्दू अकादमी, दिल्ली
2.	क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा नवजीवन ट्रस्ट बिल्डिंग डाकखाना नवजीवन, अहमदाबाद – 380 014 फ़ोन – 079-27541446	गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और राजस्थान के भाग
3.	क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. 108, 100 फीट रोड होस्केरे हल्ली एक्सटेंशन बनशंकरी फेज-3 बेंगलुरु – 560 085 फ़ोन – 080-26725740	तमिलनाडु, पुदुच्चेरी, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, लक्षद्वीप, मिनीकॉय और अमिनदिवी द्वीप समूह
4.	क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. सी.डब्ल्यू.सी. परिसर (पहला तल) किशोरी मोहन बनर्जी रोड धनकल बस स्टॉप के सामने, डाकखाना पणिहाटी कोलकाता – 700 114 फ़ोन – 033-25530454	पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और सिक्किम
5.	क्षेत्रीय वितरण केंद्र रा.शै.अ.प्र.प., सी.डब्ल्यू.सी. गोडाउन मालीगांव, गुवाहाटी – 781 011 फ़ोन – 0361-2674869	पूर्वोत्तर राज्य

रा.शै.अ.प्र.प. के संघटक और संकाय

क. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.)

कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग (डी.ई.ए.ए.)

प्रोफेसर

(i) ज्योत्स्ना तिवारी (*अध्यक्ष*)

(ii) पवन सुधीर (31.07.2023 को सेवानिवृत्त)

सहायक प्रोफेसर

(iii) शर्बरी बनर्जी

प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

प्रोफेसर

(i) सुनीति सनवाल (अध्यक्ष)

(ii) अनूप कुमार राजपूत

(iii) उषा शर्मा

(iv) संध्या संघई

(v) वीरेंद्र प्रताप सिंह

(vi) पद्‌मा यादव

(vii) कविता शर्मा

(viii) वरदा मोहन निकलजे

सह प्रोफेसर

(ix) रमेश कुमार

(x) रोमिला सोनी

(xi) धन्या कृष्णन

(xii) बीर अभिमन्यु कुमार

सहायक प्रोफेसर

(xiii) रीतू चंद्रा (शिक्षा मंत्रालय में प्रतिनियुक्ति पर)

(xiv) मोनू सिंह गुर्जर

(xv) अजय शर्मा

(xvi) गेयिन बोली

(xvii) संदीप कुमार

(xviii) पूजा पाटिल

(xix) चोंगथम बिद्याबती चानू

मुख्य अध्यापिका

(xx) ज्योति कांत प्रसाद

नर्सरी अध्यापिका

(xxi) सुनयना मित्तल

(xxii) पूनम

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

प्रोफेसर

(i) विनय कुमार सिंह (*अध्यक्ष*)

(ii) मोना यादव

(iii) एस.सी. चौहान

सह प्रोफेसर

(iv) रंजन बिस्वास

(v) सुमिन प्रकाश

(vi) आर. शिल्पा मनोगना

सहायक प्रोफेसर

(vii) स्नेह लता गर्ग

(viii) गुगुलोथु बालाजी

शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)

प्रोफेसर

(i) अंजुम सिबिया (*विभागाध्यक्ष* और *संकाय अध्यक्ष अकादमिक*)

(ii) प्रभात कुमार मिश्रा

सह प्रोफेसर

(iii) सुकांत कुमार महापात्रा

(iv) शालिनी दीक्षित

सहायक प्रोफेसर

(v) सुष्मिता चक्रवर्ती

(vi) रुचि शुक्ला

(vii) दीपमाला

(viii) प्रियम शर्मा

(ix) रेखा रानी

(x) सरिता चौधरी

(xi) अशोक कुमार

(xii) अनीता शीरहा
(xiii) पारुल
(xiv) एम. लक्ष्मी नरसिम्हा
(xv) नवीन कुमार मोक्टा

विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)

प्रोफेसर

(i) सुनीता फरक्या (*अध्यक्ष*)
(ii) दिनेश कुमार
(iii) आर.के. पाराशर
(iv) ए.के. वझलवार
(v) अंजनी कौल
(vi) रचना गर्ग
(vii) रुचि वर्मा
(viii) तिल प्रसाद शर्मा

सह प्रोफेसर

(ix) गगन गुप्ता
(x) चोचांग वी. शिमरे
(xi) प्रमिला तँवर
(xii) पुष्पलता वर्मा
(xiii) सुदेश कुमार
(xiv) पी.वी. राघवेंद्र
(xv) जुबली पद्‌मनाभन
(xvi) मुनींद्र रुवाली
(xvii) अरुण प्रताप सिकरवार

सहायक प्रोफेसर

(xviii) लालमिनथांग किपगेन

सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

प्रोफेसर

(i) गौरी श्रीवास्तव (*अध्यक्ष*)
(ii) नीरजा रश्मि (30.09.2023 को सेवानिवृत्त)
(iii) प्रत्युष कुमार मंडल
(iv) शिप्रा वैद्य
(v) अपर्णा पांडे

(vi) शंकर शरण

(vii) सीमा शुक्ला ओझा

(viii) जया सिंह

(ix) एम.वी . श्रीनिवासन

(x) तनु मलिक

सह प्रोफेसर

(xi) प्रतिमा कुमारी

(xii) बिजय कुमार मलिक

(xiii) मुकेश कुमार वर्मा

(xiv) भैरू लाल यादव

(xv) रश्मि

सहायक प्रोफेसर

(xvi) हरीश कुमार मीणा

(xvii) वनथांगपुई खोबुंग

(xviii) सुभाष सिंह

(xix) प्रियदर्शिनी सामंतराय

(xx) कुमारी रोहिणी

(xxi) अतुल दुबे

(xxii) सविता सागर

(xxiii) साईनाथ शंकरराव कबाड़े

(xxiv) मृणमयी रे

(xxv) बीरबल लूनीवाल

भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)

प्रोफेसर

(i) संध्या सिंह (*अध्यक्ष*)

(ii) लालचंद राम

(iii) संजय कुमार सुमन

(iv) के.सी. त्रिपाठी (31.08.2023 को सेवानिवृत्त)

(v) जतींद्र मोहन मिश्रा

(vi) दीवान हन्नान खाँ

(vii) मो. फारूक अंसारी

(viii) मो. मोअज्जमुद्दीन (31.01.2024 को सेवानिवृत्त)

(ix) कीर्ति कपूर

(x) आर. मेघनाथन

सह प्रोफेसर

(xi) चमन आरा खान

(xii) नरेश कोहली

(xiii) मीनाक्षी खार

सहायक प्रोफेसर

(xiv) वाचस्पतिनाथ झा 'मणि'

(xv) मीनाक्षी

(xvi) गिरीश कुमार तिवारी

(xvii) अश्विनी प्रवीण तातुगडे

जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)

प्रोफेसर

(i) मिली रॉय आनंद (*अध्यक्ष*)

सहायक प्रोफेसर

(ii) श्वेता तंवर

(iii) अमलेश कुमार

(iv) हुमा कायोम

अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)

प्रोफेसर

(i) शरद सिन्हा (*अध्यक्ष*)

(ii) ब्रह्म प्रकाश भारद्वाज

सह प्रोफेसर

(iii) सरला वर्मा (प्रारंभिक शिक्षा विभाग के कर्तव्य भार के अतिरिक्त)

(iv) भबाग्रही प्रधान

(v) सुशील कुमार तिवारी

सहायक प्रोफेसर

(vi) जितेंद्र कुमार पाटीदार

(vii) प्रियंका वार्ष्णेय

(viii) अरुणा कुमारी

पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग (डी.सी.एस. एंड डी.)

प्रोफेसर

(i) रंजना अरोड़ा (*अध्यक्ष*)

(ii) के. विजयन (प्रारंभिक शिक्षा विभाग के कर्तव्य भार के अतिरिक्त)

सह प्रोफेसर

(iii) शरद कुमार पांडे

(iv) आर.आर. कोइरेंग

सहायक प्रोफेसर

(v) के.वी. श्रीदेवी (दिसंबर 2023 में आर.आई.ई., अजमेर में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में शामिल हुईं)

(vi) शिवानी सैनी

प्रकाशन प्रभाग (पी.डी.)

(i) अनूप कुमार राजपूत (*अध्यक्ष*)

(ii) विज्ञान सुतार, *मुख्य संपादक* (प्रभारी) (सितंबर 2023 तक)

(iii) श्वेता उप्पल, *मुख्य संपादक* (अक्तूबर 2023 से)

(iv) अरुण कुमार चितकारा, *मुख्य उत्पादन अधिकारी*

(v) विपिन दिवान, मुख्य व्यापार प्रबंधक (31 जनवरी 2024 तक)

(vi) अमिताभ कुमार, *मुख्य व्यापार प्रबंधक* (प्रभारी) (1 फरवरी 2024 से)

पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)

प्रोफेसर

(i) शिप्रा वैद्य (*अध्यक्ष*) (सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग के कर्तव्य भार के अतिरिक्त)

उप-पुस्तकालयाध्यक्ष

(ii) मूर्ति मति सामंतराय

सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष

(iii) पूजा जैन

अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)

प्रोफेसर

(i) आर. मेगनाथन (*अध्यक्ष*) (डी.ई.एल. के कर्तव्य भार के अतिरिक्त)

सह प्रोफेसर

(ii) सत्य भूषण

(iii) दर्शना बी.जी.

योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

प्रोफेसर

(i) दिनेश कुमार (*अनुसंधान अध्यक्ष* एवं *डीन*)

सह प्रोफेसर

(ii) अशिता रवींद्रन

(iii) पी.डी. सुभाष

शैक्षिक अनुसंधान विभाग (डी.ई.आर.)

प्रोफेसर

(i) ब्रह्म प्रकाश भारद्वाज (*अध्यक्ष*) (अध्यापक शिक्षा विभाग के कर्तव्य भार के अतिरिक्त)

(ii) अनीता नूना

(iii) ज्योति बवाने

सह प्रोफेसर

(iv) विश्वजीत बेहरा

सहायक प्रोफेसर

(v) विशाल डी. पजनकर

शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

प्रोफेसर

(i) इंद्राणी भादुड़ी (*अध्यक्ष*)

(ii) श्रीधर श्रीवास्तव — प्रतिनियुक्ति पर (*संयुक्त निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. के पद पर)

(iii) वाई. श्रीकांत — प्रतिनियुक्ति पर (*प्राचार्य*, आर.आई.ई., मैसूरु के पद पर)

सह प्रोफेसर

(iv) सुखविंदर

सहायक प्रोफेसर

(v) सत्य भूषण

(vi) गुलफ़ाम

(vii) विशाल डी. पजनकर

(viii) शिशुपाल सिंह

(ix) गिरिजा रावत

(x) पीयूष कमल

(xi) प्रीतम प्यारी

शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

प्रोफेसर

(i) सुनीता फरक्या (*अध्यक्ष*) (विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग प्रमुख के रूप में अपने कर्तव्य के अतिरिक्त)

सहायक प्रोफेसर

(ii) आशीष कुमार श्रीवास्तव

(iii) पुनीत शर्मा

राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ (सी.एन.सी.एल.)

प्रोफेसर

(i) उषा शर्मा, प्रभारी (प्रारंभिक शिक्षा विभाग के कर्तव्य भार के अतिरिक्त)

सह प्रोफेसर

(ii) चमन आरा खान (भाषा शिक्षा विभाग के कर्तव्य भार के अतिरिक्त)

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई. ई.टी.)

(i) ए.पी. बेहरा (*संयुक्त निदेशक*)

प्रोफेसर

(ii) राजेंद्र पाल

(iii) इंदु कुमार

(iv) शशि प्रभा

(v) शिरीष पाल सिंह

(vi) गौरव सिंह

सह प्रोफेसर

(vii) राजेश कुमार निमेश

(viii) भारती

(ix) राजेश डी.

(x) उपासना रे

(xi) तगाराम कोंडाला राव

(xii) प्रवेवेन बॉबी बिंझा

(xiii) प्रकाश के. बडिगर

सहायक प्रोफेसर

(xiv) एंजेल रत्नाबाई

(xv) अभय कुमार

(xvi) नीलकंठ कुमार

(xvii) रज़ा उल करीम बरभुइया

(xviii) अमित रंजन

(xix) रिज़वानुल हक

(xx) प्रणिता गोपाल

(xxi) जगनमोहन राव गुरुगुबेली

(xxii) रवीन्द्र कुमार

(xxiii) ऋषिकेश कुमार

(xxiv) कन्नन सुब्रमणि

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), भोपाल

प्रोफेसर

(i) दीपक पालीवाल (*संयुक्त निदेशक*)

(ii) राजीव कुमार पाठक

(iii) विनय स्वरूप मेहरोत्रा

(iv) सौरभ प्रकाश

(v) अभिजीत नायक

(vi) पिंकी खन्ना

(vii) पी. वीरैया

(viii) दीपक शुधलवार

(ix) मुनेश चंद्र

सह प्रोफेसर

(x) विपिन कुमार जैन

(xi) आर. रविचंद्रन

(xii) विनोद कुमार यादव

(xiii) प्रवीण नारायण महामुनि

सहायक प्रोफेसर

(xiv) प्रकाश चंद्र राउत

(xv) संगमेश हुगर

(xvi) राकेश कुमार रमन

(xvii) सोनम सिंह

(xviii) अनूप कुमार राठौड़

(xix) रजनीश

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), अजमेर

प्रोफेसर

(i) सत्य वीर शर्मा (*प्राचार्य*)
(ii) विद्याधर बरठाकुर (*निर्देशन के डीन*)
(iii) एलिजाबेथ गंगमेई
(iv) मीनाक्षी मीणा
(v) कोंडुरु चंद्रशेखर
(vi) आयुष्मान गोस्वामी
(vii) राम बाबू पारीक
(viii) प्रवीण कुमार चौरसिया
(ix) राजेश मिश्रा
(x) प्रीतीश चन्द्र आचार्य

सह प्रोफेसर

(xi) अमृता कात्यायनी
(xii) के.वी. श्रीदेवी
(xiii) आनंद कुमार आर्य
(xiv) अनिल कुमार नैनावत
(xv) संदीप कौशल
(xvi) राम निवास
(xvii) अल्बर्ट होरो

सहायक प्रोफेसर

(xviii) राजीव रंजन
(xix) दिबेंदु कुमार बेज
(xx) गणेश दत्त
(xxi) बिदिशा हाजरा
(xxii) जी. तिरुमूर्ति
(xxiii) यास्मीन अशरफ
(xxiv) शेष कुमार शर्मा
(xxv) पूजा पंत
(xxvi) अश्विनी कुमार गुप्ता
(xxvii) वेद प्रकाश आर्य
(xxviii) जय प्रकाश नारायण
(xxix) ओम प्रकाश मीणा
(xxx) राणा प्रताप
(xxxi) राजेंद्र कुमार शर्मा

(xxxii) पतंजलि शर्मा

(xxxiii) चिदानंद बडिगर

(xxxiv) अनंत एस. नायक

(xxxv) संजीब कुमार दास

(xxxvi) आरती शर्मा

(xxxvii) स्नेह सुधा

(xxxviii) अरखिता बेहरा

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भोपाल

प्रोफेसर

(i) जयदीप मंडल (*प्रभारी प्राचार्य* एवं अनुदेश संकाय अध्यक्ष)

(ii) चित्रा सिंह

(iii) बी. रमेश बाबू

(iv) आई.बी. चुगताई

(v) रत्नमाला आर्य

(vi) निधि तिवारी

(vii) सारिका सी. साजू

(viii) रश्मि सिंघई

(ix) लल्लन कुमार तिवारी

सह प्रोफेसर

(x) संजय कुमार पंडागले

(xi) एन.सी. ओझा

(xii) मंजू

(xiii) सौरभ कुमार

(xiv) अश्विनी कुमार गर्ग

(xv) आर.पी. प्रजापति

(xvi) रश्मि शर्मा

(xvii) संतोष कुमार

सहायक प्रोफेसर

(xviii) पवन कुमार

(xix) त्रिलोकी प्रसाद

(xx) राजेश कुमार

(xxi) जयंत शंकर बोरगांवकर

(xxii) मधुसूदनन पी.वी.

(xxiii) सुरेश मकवाना

(xxiv) श्रुति त्रिपाठी
(xxv) सोयहुनलो सेबू
(xxvi) संगीता पेठिया
(xxvii) अरुणाभ सौरभ
(xxviii) गंगा महतो
(xxix) अलका सिंह
(xxx) कुलवीर सिंह चौहान
(xxxi) वेंकट बाबूराव सूर्यवंशी
(xxxii) प्रद्युम्न सिंह लखावत
(xxxiii) दक्ष एम. परमार
(xxxiv) एजी थॉमस
(xxxv) कल्पना मस्की
(xxxvi) लोकेंद्र सिंह चौहान
(xxxvii) शिवालिका सरकार
(xxxviii) चक्रधर बेहरा
(xxxix) मनोज मंडल
(xl) मुकेश कुमार
(xli) रमेश सेठी
(xlii) कुसुम
(xliii) रजत कौशिक

उप-पुस्तकालयाध्यक्ष

(xliv) पी.के. त्रिपाठी

सहायक प्रधानाध्यापक

(xlv) इश्वंत कौर

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भुवनेश्वर

प्रोफेसर

(i) पी.सी. अग्रवाल (प्राचार्य)
(ii) एस.आर. साहू
(iii) एच.के. सेनापति
(iv) एम. गोस्वामी
(v) एस.के. दास
(vi) डी.एल. दास
(vii) चौ.ए. रामुलु
(viii) ऋतांजलि दास

(ix) आई.पी. गौरम्मा

(x) लक्ष्मीधर बेहरा

(xi) आर.के. मोहलिक

(xii) नित्यानंद प्रधान

सह प्रोफेसर

(xiii) रश्मि रेखा सेठी

(xiv) के. केतकी

(xv) ई. गंगमेई

(xvi) मुजम्मिल हसन

(xvii) जीना के.जी.

(xviii) वेद प्रकाश वर्मा

सहायक प्रोफेसर

(xix) ए.के. साहा

(xx) सौरभ कपूर

(xxi) देबब्रत बागुई

(xxii) वी. शशिकला

(xxiii) मोइरांगथेम एभियोन सिंह

(xxiv) मार्कण्डेय दीक्षित

(xxv) जिप्सी मल्होत्रा

(xxvi) वरुण अशोकन

(xxvii) मनोज कुमार यादव

(xxviii) शालिनी कौशिक

(xxix) अमन भारद्वाज

(xxx) चिंताकुंतला महेंदर

(xxxi) अश्वनी कुमार

(xxxii) शुशांत कुमार सिंह

(xxxiii) एच.एन. दीपा कुमारी

(xxxiv) नोमिता पचार

(xxxv) सरिता एम.

(xxxvi) भावना वैष्णव

(xxxvii) अम्बेश कुमार पांडे

(xxxviii) राज कुमार

(xxxix) सुमिस्ता रानी

(xl) देबासिस महापात्रा

(xli) राहुल सहाना

उप-पुस्तकालयाध्यक्ष

(xlii) पी.एल. नेगी

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), मैसूरु

प्रोफेसर

(i) वाई. श्रीकांत (*प्राचार्य*)
(ii) सी.जी. वेंकटेश मूर्ति (*निर्देशन* के डीन)
(iii) मल्ली गाँधी
(iv) गीता प्रसन्नन
(v) रामदास वी.
(vi) के. अनिल कुमार
(vii) कल्पना वेणुगोपाल
(viii) वी.एस. प्रसाद
(ix) पी.आर. हरिनाथ
(x) जी. विश्वनाथप्पा
(xi) राजेश कुमार साहा

सह प्रोफेसर

(xii) वी. प्रसाद
(xiii) पी. तमिल सेलवन
(xiv) वी. चंद्रन्ना
(xv) शिवानंद चिन्नप्पनवर
(xvi) करुणाकरण बी. शाजी
(xvii) पांडुरंगा सत्यनारायण राजू वेटुकुरी
(xviii) विनोद सिंह गौर
(xix) दीपक कुमार
(xx) रवि प्रकाश यादव

सहायक प्रोफेसर

(xxi) वरिशांग तंगपुई
(xxii) टी.वी. सोमशेखर
(xxiii) रानी प्रमिला विनगोलू
(xxiv) सुजाता बी. हंचिनालकर
(xxv) मधु बी.
(xxvi) के. सुरेश कुमार
(xxvii) सर्वेश मौर्य
(xxviii) श्री भगवान

(xxix) प्रवीण कुमार एस.

(xxx) राहुल रंजन

(xxxi) विश्वास

(xxxii) कंवलजीत सिंह

(xxxiii) नवीन्द्रा बाई

(xxxiv) राहुल गेरा

(xxxv) केमंत

(xxxvi) अर्पण कुमार नायक

(xxxvii) पिंकी यादव

(xxxviii) सुषमा यादव

एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय)

प्रोफेसर

(i) फ्लोरेट जी. डखर (*प्रभारी प्राचार्य* एवं अनुदेश संकाय *अध्यक्ष*)

(ii) सुभाष चंद्र रॉय

(iii) बलइदा आर. डखर

सह प्रोफेसर

(iv) शतरूपा पालित

(v) ब्रजयंती देवी

(vi) तूलिका डे

(vii) सीमा सहगल

(viii) सरजूबाला देवी

(ix) बसंसी खरलुखी

(x) मेलिसा जी. वालांग

सहायक प्रोफेसर

(xi) राम अवधेश सिंह

(xii) टी. न्यूमेई

(xiii) प्राची घिल्डियाल

(xiv) अर्नब सेन

(xv) बी. उमेश कुमार शर्मा

(xvi) सीमा आर.

(xvii) शनमुगम भाषा

(xviii) निर्जेश

(xix) साग्निका साहू

UN413

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING